[४०] श्री आवश्यक सूत्रम् (उत्तरभाग:)

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

“आवश्यक” निर्युक्ति एवं चूर्णि: [भाग:-२]

[मूलं + भद्रबाहुस्वामी कृत् निर्युक्ति; + भाष्यं + जिनदासगणि रचिता चूर्णि:]

[आद्य संपादक: - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म. सा.]

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

01/02/2017, बुधवार, २०७३ महा शुक्ल ५ jain_e_library’s Net Publications

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

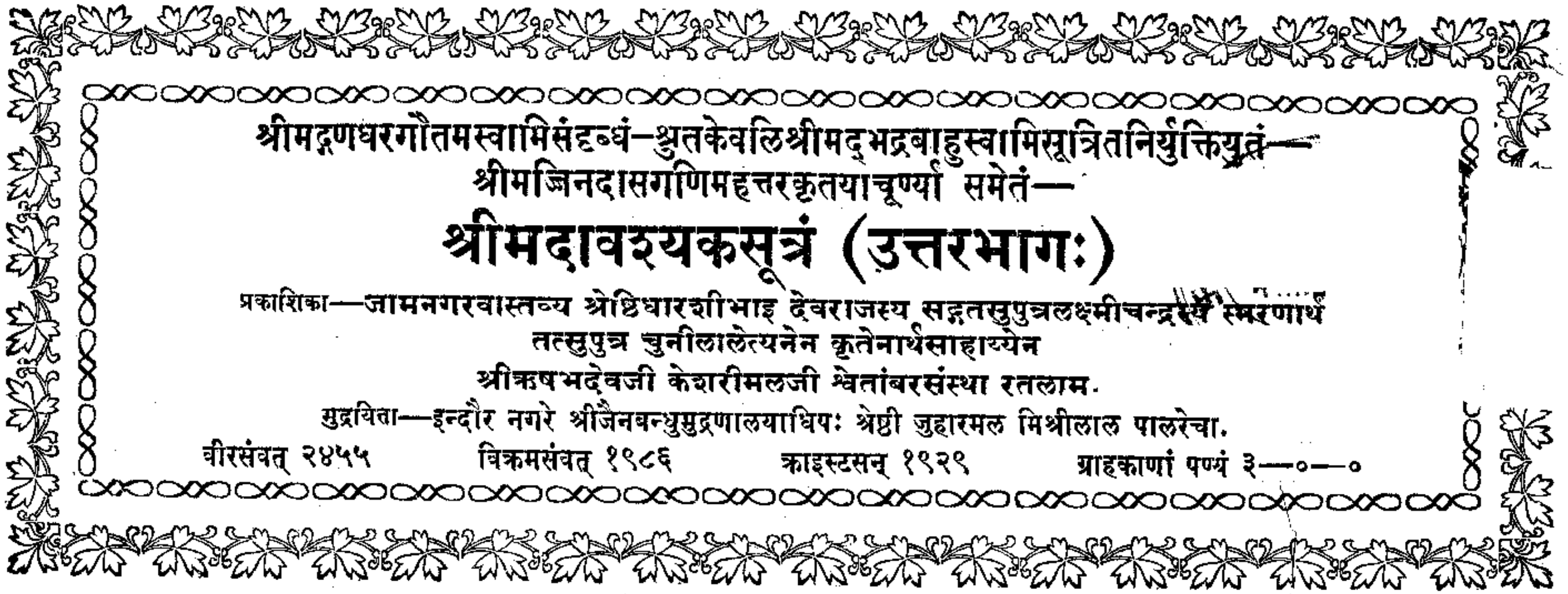

श्रीमद्गणधरगौतमस्वामिसंदृब्धं–श्रुतकेवलिश्रीमद्भद्रबाहुस्वामिसूत्रितनिर्युक्तियुतं—
श्रीमज्जिनदासगणिमहत्तरकृतयाचूर्ण्या समेतं—

श्रीमदावश्यकसूत्रं (उत्तरभागः)

प्रकाशिका—जामनगरवास्तव्य श्रेष्ठिधारशीभाइ देवराजस्य सद्गतसुपुत्रलक्ष्मीचन्द्रस्य स्मरणार्थं
तत्सुपुत्र चुनीलालेत्यनेन कृतेनार्थसाहाय्येन
श्रीऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबरसंस्था रतलाम.

मुद्रयिता—इन्दौर नगरे श्रीजैनबन्धुमुद्रणालयाधिपः श्रेष्ठी जुहारमल मिश्रीलाल पालरेचा.

वीरसंवत् २४५५ विक्रमसंवत् १९८६ क्राइस्टसन् १९२९ ग्राहकाणां पण्यं ३—०—०

आवश्यकसूत्रस्य मूल “टाइटल पेज”

आवश्यक चूर्णे: मूल संपादने लिखित: विषयानुक्रम:

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

॥ अथावश्यकोत्तरार्धक्रमः ॥

१ सामायिकाध्ययनेन संबन्धः चतुर्विंशतिस्तवयोर्निक्षेपाः
२ द्रव्यस्तवे शुभानुबन्धो निर्जरा च
३ लोकनिक्षेपाः उद्योतनि० धर्मनि० तीर्थनि० करनिक्षेपाः
९ ऋषभादिनामान्वर्थः
१२ जिनभक्तिफलं

वन्दनकाध्ययनम्.

१४ वन्दनकादिषु शीतलक्षुल्लक-कृष्णसेवकशाम्बदृष्टान्ताः
१९ अवन्दनीयाः
२१ चम्पकाप्रियकथा द्विजपुत्रकथा च
२३ दोषगुणानां संसर्गजत्वं
२५ लिङ्गमात्रे कर्त्तव्यता
२८ ज्ञानदर्शनपक्षौ
३५ नित्यवासादिषु संगमकवज्र-स्वाम्यर्णिकापुत्रोदायनदृष्टान्ताः
४१ वन्दनकसंख्याऽऽवर्त्तो दोषाश्च
४५ वन्दनकसूत्रव्याख्या

प्रतिक्रमणाध्ययनं.

५२ प्रतिक्रमणशब्दार्थादि
५४ प्रतिक्रमणादिषु दृष्टान्ताः
७३ शयनविधिः
७५ अतिक्रमादिस्वरूपं
८१ ध्यानाधिकारः
८७ क्रियाभेदाः
९६ पारिष्ठापनिकीस्वरूपं
१०२ संयतपारिष्ठापनिकी
११२ लेश्याषट्कं
११६ ब्रह्मचर्यगुप्तयः
११८ श्रावकप्रतिमाः
१२२ भिक्षुप्रतिमाः
१२७ क्रियास्थानानि
१३२ गुणस्थानानि
१४० परीषहाः
१४३ भावनाः
१४९ मोहनीयस्थानानि
१५२ योगसंग्रहाः
२१२ आशातनाः
२१७ अस्वाध्यायिकव्याख्या

२४६ कायोत्सर्गाध्ययनं.

२४६ द्रव्यभावव्रणौ
२४७ कायोत्सर्गयोर्निक्षेपाः
२४९ कायोत्सर्गभेदाः
२५१ सूत्राणां व्याख्या
२५७ अर्हच्चैत्यस्तवव्याख्या
२५८ श्रुतस्तवव्याख्या
२६२ सिद्धस्तवव्याख्या
२६३ प्रतिक्रमणविधिः
२६८ कायोत्सर्गदोषाः

२७१ प्रत्याख्यानाध्ययनं.

२७४ श्रावकभंगाः
२८२ श्रावकव्रतानि सातिचार दृ०
३०८ प्रत्याख्यानानितदृष्टांताश्च

॥ इत्यावश्यकोत्तरार्धक्रमः ॥

***चूर्णि के मूल संपादकने ये अनुक्रम बनाया था इसीलिए जिन स्थानो पर मूल संपादकीय ये ‘विषय’ आते है, उन सभी पृष्ठो की फ़ूटनोटमें हमने इन सभी विषयो की नोंध कर दी है |

मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक		मूलांक:	अध्ययनं			मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक:
				०१-०२	१-सामायिकं	५१८				

आवश्यक सटीकं (संक्षिप्त) विषयानुक्रम

निर्युक्ति	पीठिका →→→	००७	¤	नि./भा.	--उपोद्घात-निर्युक्तिः	पृष्ठांक		नि./भा.	अध्ययनं-१- सामायिकं	पृष्ठांक:
		----	¤	०८१	--वीरआदिजिनवक्तव्यता	१३४		८९०	नमस्कार-व्याख्या	५०९
---	--मंगलं	००९	¤	३४३	--भरतचक्री-कथानकं	१८८		९१९	अर्हत्, सिद्धादेः निर्युक्तिः	५४३
			¤	भा.०३९	--बलदेव-वासुदेव कथानकं	२२२		९६०	सिद्धशिला वर्णनं	५८९
००१	--ज्ञानस्य पञ्चप्रकाराः	०१२	¤	५४३	--समवसरण वक्तव्यता	३३१		९९३	आचार्य-आदीनाम निक्षेपाः	५९१
			¤	५८८	--गणधर वक्तव्यता	३३५				
०१३	--उपक्रम-आदिः	०८१	¤	६६६	--दशधा सामाचारी	३४७		१०१३	सामायिक- व्याख्या,	५९८
			¤	७५४	--निक्षेप, नय, प्रमाणादि	३८३		-----	उद्देश-वाचना-अनुज्ञा आदिः	---
			¤	७७८	--निह्नव वक्तव्यता	४१७		-----	सूत्र स्पर्श भङ्गाः	---
			¤	७८९	--सामायिकस्वरुपम्	४३६		-----	सामायिक-उपसंहारः	---
			¤	८१२	--गति आदि द्वाराणि	४४६				
			¤							
			¤							
			¤							
			¤							
			¤							
			¤							
			¤							

मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक		मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक		मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक:
---	---------------	---		०३-०९	२-चतुर्विंशतिस्तव:	००७		१०- --	३-वंदनकं	०२०
११-३६	४-प्रतिक्रमणं	०५८	¤	३७-६२	५-कायोत्सर्गं	२५१		६३-९२	६-प्रत्याख्यानं	२७७

आवश्यक सटीकं (संक्षिप्त) विषयानुक्रम

निर्युक्ति / भाष्य	अध्ययनं	पृष्ठांक:		नि./भा.	अध्ययनं	पृष्ठांक:		नि./भा.	अध्ययनं	पृष्ठांक:
					अध्ययनं-४- प्रतिक्रमणं	०५८				
	अध्ययनं-२-	००७			नमस्कार व सामायिक-सूत्रं	०७४			अध्ययनं-५- कायोत्सर्ग:	२५१
	सूत्रपाठ:, कीर्तनं, प्रतिज्ञा,	००९			चत्वार: लोकोतम-मङ्गल एवं --------------शरणभूत	०७४			सूत्रपाठ:, कायोत्सर्गस्थापना	२५६
	--अर्हत: विशेषणं,	००९							श्रुतस्तव, सिद्धस्तवादि	२६४
	--ऋषभादि नामानि,	०१५			संक्षिप्त व ईर्यापथ	०७८				
					शयन संबंधी प्रतिक्रमणं	०७९				
	अध्ययनं-३- वन्दनं	०२०			भिक्षाचर्याया: प्रतिक्रमणं	०८०			अध्ययनं-६- प्रत्याख्यानं	२७७
	--गुरुवन्दन सूत्रपाठ:	०५१			स्वाध्याय,	०८१			सम्यक्त्व एवं श्रावकव्रत-प्रतिज्ञा	२८१
	--मितावग्रह प्रवेशयाचना	०५३			असंयम आदि ३३-	०८२				
	--क्षमापना, प्रतिक्रमण-	०५४			सूत्रोच्चारणे मिथ्यादुष्कृतम्	२२३			विविध प्रत्याख्यानादि:	३१९
					प्रवचनस्तुति, वंदना,	२४८				

[आवश्यक-चूर्णि] इस प्रकाशन की विकास-गाथा]

यह प्रत सबसे पहले "आवश्यकसूत्र (पूर्वभाग)" के नामसे सन १९ २९ (विक्रम संवत १९ ८६) में रुषभदेवजी केशरमलजी श्वेताम्बर संस्था द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराज साहेब |

वृत्ति की तरह चूर्णी के भी दुसरे प्रकाशनों की बात सुनी है, जिसमे ऑफसेट-प्रिंट और स्वतंत्र प्रकाशन दोनों की बात सामने आयी है, मगर मैंने अभी तक कोई प्रत देखी नहीं है |

✤ - हमारा ये प्रयास क्यों? - ✤ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, ४५-आगम सटीक भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है, किन्तु लोगो की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने उन सभी प्रतो को स्केन करवाई, उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया, जिसके बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर शीर्षस्थानमे आगम का नाम, फिर श्रुतस्कंध-अध्ययन-उद्देशक-मूलसूत्र-निर्युक्ति आदि के नंबर लिख दिए, ताकिँ पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा अध्ययन, उद्देशक आदि चल रहे है उसका सरलतासे ज्ञान हो शके, बायीं तरफ आगम का क्रम और इसी प्रत का सूत्रक्रम दिया है, उसके साथ वहाँ 'दीप अनुक्रम' भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके| हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रों के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ कौंस [-] दिए है और जहां गाथा है वहाँ ||-|| ऐसी दो लाइन खींची है|

इस आगम चूर्णि के प्रकाशनोमें भी हमने उपरोक्त प्रकाशनवाली पद्धत्ति ही स्वीकार करने का विचार किया था , परंतु चूर्णि और वृत्ति की संकलन पद्धत्ति एक-समान नही है, चूर्णिमे मुख्यतया सूत्रों या गाथाओ के अपूर्ण अंश दे कर ही सूत्रो या गाथाओ को सूचित कर के पूरी चूर्णि तैयार हुई है , कई निर्युक्तियां और भाष्य दिखाई नही देते, कोइ-कोइ निर्युक्ति या भाष्य के शब्दो के उल्लेख है, उनकी चूर्णि भी है पर उस निर्युक्ति या भाष्य स्पष्टरूप से अलग दिखाई नहि देते | इसीलिए हमें यहाँ सम्पादन पद्धत्ति बदलनी पड़ी है | हमने यहाँ उद्देशक आदि के सूत्रो या गाथाओ का क्रम, [१-१४, १५-२४] इस तरह साथमे दिया है, निर्युक्ति तथा भाष्यो के क्रम भी इसी तरह साथमे दिये है और बायीं तरफ़ उपर आगम-क्रम और नीचे इस चूर्णि के सूत्रक्रम और दीप-अनुक्रम दिए है, जिससे आप हमारे आगम प्रकाशनोंमे प्रवेश कर शकते है|

अभी तो ये jain_e_library.org का 'इंटरनेट पब्लिकेशन' है, क्योंकि विश्वभरमें अनेक लोगो तक पहुँचने का यहीं सरल, सस्ता और आधुनिक रास्ता है, आगे जाकर ईसिको मुद्रण करवाने की हमारी मनीषा है|

......मुनि दीपरत्नसागर.

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [१...]

दीप अनुक्रम [२...]

चतुर्विंशतिस्तव चूर्णौ ॥ १ ॥

॥ श्रीजिनदासगणिमहत्तरकृताया आवश्यकचूर्णेरुत्तरार्धम् ॥

प्रस्तावना निक्षेपादि

भणितं सामाइयज्झयणं,इदाणिं चउवीसत्थयादीणि भण्णंति, येन सामायिकव्यवस्थितेन पत्तकालं उक्किसणादीणिवि अवस्सकातव्वाणि, तत्थ सामाइयाणंतरं चउवीसत्थओ भण्णति, अस्य चायमभिसम्बन्धः-यैरेव तत्सामायिकमुपदिष्टं (तैरिदमपि) तेषां परया भक्त्या गुणसंकीर्तनं वा द्रष्टव्यमिति, अहवा तस्स सामाइये ठितस्स के पूज्या मान्याश्च ?, ये ते सामायिकोपदेष्टारः ते पूज्या मान्याश्चेति तेषां समुत्कीर्तना अनेन वा संबंधेन चतुर्विंशतिस्तवस्यावसरः संप्राप्तः, अस्य च समुत्कीर्तनाध्ययनस्य चत्वार्यनुयोगद्वाराणि, जथा नगरस्य,तंजथा-उवक्कमो निक्खेवो अणुगमो णयो,एतं नेतव्वं जथा पेढिताए उवक्कमो छव्विहोवि णिक्खेवो तिविहो वण्णेतव्वो, नामनिप्फण्णो चउवीसत्थउत्ति, सुत्तालावगनिप्फण्णो निक्खेवो 'लोउज्जोयकरो'त्ति, तत्थ ताव पढमं नामनिप्फण्णो भण्णति- ॥ १०६७ ॥

चउवीसं थवं च, चउवीसंति संखा, तत्थ निक्खेवो नामचउव्वीसा ठवणच० दव्वच० खेत्तच० कालच० भावचउव्वीसा, दो गताओ, दव्वचउव्वीसा तिविहा-सचित्ता आमाणं चतुव्विसा, अचित्ता करिसावणाणं, मीसिया संभियगुडियाणं हत्थीणं, अहवा

***अत्र आवश्यक-सूत्रस्य द्वितियम् अध्ययनम् आरभ्यते

***सामायिकस्य चतुर्विंशति सह संबंध:,

*** चतुर्विंशते: नामादि निक्षेपा:

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक ||१-७||

दीप अनुक्रम [३-९]

चतुर्विंशतिस्तव चूर्णौ ॥ २ ॥

स्तव-निक्षेपः ॥ २ ॥

दुपदाणं चउप्पदाणं अपदाणं च विभासा, खेत्तचउव्वीसा चउवीसं खेत्ताणि, चउवीसं वा आगासपदेसा, चउवीसपदेसोगाढं वा दव्वं, एवमादि विभासा, कालचउव्वीसा चउव्वीसवासा एवमादि विभासा, चउवीससमयाट्ठितियं वा दव्वं, भावचउवीसा चउवीसं भावयोगा चउवीसगुणकालगादि विभासा । एत्थ दुपदचउवीसाएवि अधिगारो ।

इदाणिं थवो, ‘ष्टुं स्तुतौ’, सो थवो चउव्विहो, णामट्ठवणाओ गताओ, दव्वत्थओ पुप्फादीहिं, आदिग्रहणेण वत्थगंधालंकारादिग्रहणं, भावत्थओ संताण गुणाण उक्कित्तणा, जथा-पुरवरकवाडवच्छे फलिहभुजे दुंदुभीथणितघोसे । सिरिवच्छंकितवच्छे वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ १ ॥ चोत्तीसं बुद्धातिसेसा एवमादि, शिष्यमनभिधार्यापि अयमाचार्यः इदमब्रवीत्, आयरिओ अचोदितस्सावि णिण्णयं भणति, स्यादिति आशंका- इयं ते मतिः स्यात् ‘दव्वत्थयो बहुगुणो’त्ति ये एवंवादिणो ते अणिपुणमातिणो, तेसिं अनिपुणमतीणं वयणं इदं, जथा- दव्वत्थयो बहुगुणोत्ति, कहं ?, जेण छज्जीवहितं जिणा बेंति, दव्वत्थए तु जीववहोवि दीसतित्ति, पर आह- यदि एवं तो वरं भावत्थयं चेव करेमो, होतु दव्वत्थयेणं, आयरिओ भणति- जदि तुमं सव्वातो जीववहातो नियत्तो तो एवं भवतु, पुणो आह- जदिवि अहं सव्वाओ न नियत्तो तथावि कहं धम्मबुद्धीए जीववहं पेक्खंतो दव्वत्थए वट्टिस्सं इति, धम्मबुद्धी जीववहे विरुज्झतीत्यभिप्रायः, उच्यते, जो कसिणो छव्विहजीवकायसंजमो सो दव्वत्थए विरुज्झति-अजुत्तो भवति, कसिणो नाम संपुण्णो, जो पुण अकसिणो सो न विरुज्झति पत्तकाले दव्वत्थये, तेण जे कसिणसंजमविऊ मुणी ते पुप्फादीयं न इच्छंति, ये पुण अकसिणपवत्तगा– विरताविरता तेसिं एस दव्वत्थयो पत्तकालो जुत्तो, अकसिणे पवत्तंते अकसिणपवत्तगा, नणु कहं हिंसात्मकोऽपि युक्तो भविष्यति ?, भण्णति- संसारपतणुकरणो- संसारं पकीरेसण तणुयं करेति,

*** अत्र ‘स्तव’ शब्दस्य व्याख्या: क्रियते

*** द्रव्यस्तवे शुभ-अनुबन्ध:

प्रत
सूत्रांक
||१-७||

दीप
अनुक्रम
[३-९]

चतुर्विंश-
तिस्तव
चूर्णौ

॥ ३ ॥

कहं ?, एत्थ कूवः दिट्ठंतो, जथा नवनगरसंनिवेसादिसु कोई पभूयजलाभावतो तण्हाविपरिगता तदपनोदार्थं कूवं खणंति, तेसिं च जदिवि तण्हादीया वड्डंति मट्टिककद्दमादीहि य मइलिज्जंति तथापि तदुद्भवनवपाणिएण तेसिं तण्हादीया सो य मलो पुव्वगो य फिट्टंति, सेसकालं च ते तदन्ने य सत्ता सुहभागिणो भवन्ति, एवं दव्वत्थये जदिवि असंजमो तहावि ततो चेव सा परिणामसुद्धी भवति जा तं असंजमोवज्जितं अण्णं च णिरवसेसं खवतित्ति, तम्हा विरताविरताण एस दव्वत्थओ जुत्तो, सुभाणुबंधी पभूततरनिज्जराफलो इतिकातूण इति । एवं नामनिप्फण्णो गतो ॥ इदाणिं सुत्तालावगनिप्फण्णो निक्खेवो पत्तलक्खणोवि न निक्षेप्पति लाघवत्थं, ततिए अनुयोगदोर निक्खिप्पिहिति । इदाणिं अणुगमो, निज्जुत्तीअणुगमो जहा हेट्ठा विभासा, सुत्ताणुगमे सुत्तं अणुगंतव्वं अक्खलितं एवमादि, तत्थ संहिता य० सिलोगो, तत्थ संहिता—

■ लोयस्सुज्जोयगरे, धम्मतित्थंकरे जिणे । अरहंते किइस्सामि, चउवीसंपि केवली ॥*१॥

एतस्स सुत्तस्स आदाणपदेणं लोउज्जोतकरोत्ति नाम भण्णति । इदाणिं पदच्छेदः-लोक इति पदं १ उज्जोय इति पयं२ कर इति पदं३ धम्म इति पदं४ तित्थगर इति पदं५ जिण इति पदं६ अरहंत इति पदं७ कित्तइस्सामित्ति पदं८ चउवीसंति पदं९ अपित्ति पदं१० केवलित्ति पदं११ एगारसपदं सुत्तं । इदानिं पदार्थः-'लोकृ दर्शने' लोक्यत इति लोकः, 'द्युति दीप्तौ' 'धृं धरणे' तस्य मत्प्रत्ययांतस्य रूपं धर्म इति, दुर्गतिप्रसृतान् जीवान्यस्माद्धारयते ततः । धत्ते चैतान् शुभे स्थाने, तस्माद्धर्म इति स्मृतः ॥ १ ॥ 'तॄ प्लवनतरणयोः,' त्रिभिर्वा अर्थैयुक्तं तीर्थं, 'डुकृञ् करणे' 'जि जये' 'अर्ह योग्यत्वकीर्तनसंशब्दने' चतुर्व्वीसंति संखा, अपि पदार्थसंभावने, केवलः प्रतिपूर्णत्वे ॥ लोको पंच अत्थिकाया तस्स उज्जोतं करेतीति प्रकटनं करेतीति प्रकाशयतीत्यर्थः तत्तथा, धम्मपहाणो तित्थगरोत्ति

लोकपद
व्याख्या

॥ ३ ॥

■ लोगस्स सूत्रस्य गाथा-१

*** अत्र 'लोक' पदस्य व्याख्या क्रियते

प्रत
सूत्रांक
||१-७||

दीप
अनुक्रम
[३-९]

चतुर्विंश-
तिस्तव
चूर्णौ

|| ४ ||

धम्मतित्थगरा तान्, तथा रागदोसजयाज्जिनाः तान्, के ते एवंभूता ?- अरहंता- असोगादिपाडिहेरपूजां अरिहंतीति ते अर्हन्तः तान्, कीर्तयिष्यामि- संशब्दयिष्यामि, एतेन तदुत्कीर्तनावश्यकस्य करणाभ्युपगमं दर्शयति, केत्तिए ?- चउव्वीसंपि, पुनरपि किंविशिष्टाः ?- केवली, केवलाणि- संपुण्णाणि णाणदरिसणचरणाणि येसिं ते केवली तान् । इदाणिं पदविग्गहो यत्थ समासो तत्थ कातव्वो । एत्थ ताव सुत्तफासितं भणामो । चालणापसिद्धीओवि भण्णिहिति । तत्थ पढमं पदं लोक इति, तस्स अट्ठविहो निक्खवो–

लोकपद
व्याख्या

नामं ठवणा दविए खेत्ते काले भवे य भावे य । पज्जवलोए य० ॥ ११ ॥ ७ ॥ १०६८ ॥ नामट्ठवणाओ गयाओ

दव्वलोगे जीवमजीवे ॥११॥८॥ तत्थ य काणि य इंदिएहिं लोक्कंति काणि य इंदियवतिरित्तेणं णाणेणं अहवा पच्चक्खादीहिं पमाणेहिं । जीवा कहं ! लोक्यन्ते ?, लिंगैः, प्राणापाननिमेषोन्मेषजीवनमनोगतींद्रियान्तरविकारसुदुक्खेच्छा द्वेषो प्रयत्नश्चेत्यात्मलिंगानि, सामान्यं वा लक्षणं उपयुक्तवान् उपयुज्यते उपयोक्ष्यते इति च जीवः, तद्विपरीतेन लक्षणेन अजीवा लोक्यंते, तत्र जीवा दुविहा-रूवी अरूवी य, रूवी संसारी अरूवी सिद्धा । देवे णं भंते ! महिड्ढीए (फु) पुव्वामेव रूवी भवित्ता पच्छा अरूवी भवित्तए०' आलावगा भाणितव्वा । अजीवा दुविहा-रूवी पोग्गला अरूवी तिण्णि, जीवा रूवी सपदेसा य कालादेसेणं नियमा सपदेसा लद्धिआदेसेणं सपदेसा वा अप्पदेसा वा, अरूवी कालादेसेणवि लद्धिआदेसेणवि सप्पदेसा वा अपदेसा वा अरूवी घा रूवी वा, चउव्विहो- दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ, दव्वओ परमाणू अपदेसो सेसा सपदेसा, खेत्तओ एगपदेसोगाढो अपदेसो सेसा सपदेसा, कालओ एकसमयट्ठितिओ अपदेसो सेसा सपदेसा, भावतो एगगुणकालओ अपदेसो सेसा सपदेसा, अहवा

|| ४ ||

*** अत्र 'लोक' पदस्य निक्षेपा: दर्शयते

प्रत सूत्रांक ||१-७||

दीप अनुक्रम [३-९]

चतुर्विंश तिस्तव चूर्णौ ॥ ५ ॥

लोकपद व्याख्या ॥ ५ ॥

वण्णगंधरसफासेहिं चउहा सपदेसत्तं वा अपदेसत्तं वा, अरूवीअजीवाणं तिण्हं अत्थिकायाणं परनिमित्तं सपदेसत्तं वा अपदेसत्तं वा, ते चेव जीवा अजीवा य निच्चा अणिच्चा य, लोगोत्ति जीवा चउव्विहा सादी सपज्जवसिया ४ भंगा, गति सिद्धा भविया य अभविया य, अहवा दव्वट्ठताए णिच्चा पज्जवट्ठताए अणिच्चा। अजीवे पोग्गला अणागतद्धा य तीतद्ध तिण्णि काया एवं जथा पेढिताय दव्वकाले, अहवा अजीवा दव्वट्ठताए णिच्चा, वण्णादिएणं परादेसेण य अणिच्चा एवं विभासा जथाविधिं।

इदाणिं खेत्तलोगो, सो केरिसो ?, तत्थ गाथा **आगासस्स पदेसा अहवा उड्ढं तिरियं** ॥ ११-१० ॥ १९९ भा० खेत्तं कहं लोकति ?, छउमत्थो उग्गाहणं दट्ठूणं जीवाणं पोग्गलाण य , एवं अणुमाणियाए, आलोयणाए जाणाहि खेत्तलोगं अणंतजिणपदेसितं संमं अवितहं, अहवा अणंता मिच्छत्तादीता सांसारिया भावा जिणन्ति अणंतजिणा, अणंता वा जिणा अनन्तजिणा। इदाणिं काललोगो, काल एव लोकः,स कहं?,लोक्यत इति लोकः,वर्तमानलक्षणः कालः, परापरत्वेन लोक्यत इति लोकः, उदाहरणं यथा घटस्य अनुत्पत्तिकालो दृष्टः उत्पत्तिः विगमकालश्च मृत्पिण्डघटकपालत्वे,एवं सर्वद्रव्येषु योज्यं। तत्थ कालविभागे निज्जुत्तिगाथा— **समयावलिय मुहुत्ता दिवस अहोरत्त पक्खमासा य** ॥ ११-११ ॥ २०० ॥ भा. समयो अणुमाणेण दीसति, दोधारच्छेदेण उप्पलवेहेण य पट्टसाडियादिट्ठंतेण य, सेसो तेण माणेण णालियाए य सूरोदयमज्झण्हत्थमणाविभागेहिं, सेसेसु उवमा विभासितव्वा, वर्त्तना परिणामः क्रिया परापरत्वे च कालस्य लिंगानि। इदाणिं भवलोगो, तत्थ गाथा- **णेरइय देवा तिरिय मणुया०** ॥ ११-१२ ॥ २०१ ॥ भा. सन्ति चेव णेरइया, अहो एस णेरइयपडिरूवियं वेदणं वेदेतित्ति लोक्कति, देवा, अहो एस पुरिसो असुरकुमारोपमो य रूवेणं ललिएण यत्ति। अहवा पच्चक्खितेणं लोकतित्ति पुव्वं भणितं। इदाणिं भाव-

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
||१-७||

दीप
अनुक्रम
[३-९]

चतुर्विंश-
तिस्तव
चूर्णौ

॥ ६ ॥

लोकपद
व्याख्या

लोको, सो कहं लोक्कति ?, उदाहरणं, कोहादीणं उदयेण लोक्कति उदइओ, अणुदएणं उवसामिओ, अणुप्पत्तीए खइओ, देसवि-सुद्धीए खओवसामिओ, परिणवणाए परिणामिओ, संजोगेणं संनिवाइओ , एत्थवि कोवि पच्चक्खेण कोवि परोक्खेणं । इदाणिं पज्जवलोगो परिस्समंता अयः परि अय इति पर्यायः, सो चउव्विहो- दव्वस्स गुणा खेत्तस्स य गुणा कालस्स अणुभावो भावस्स परिणामो । दव्वस्स गुणा एत्थ गाथा—

वण्णरसगंधसंठाण फासठाणगतिवण्णभेदे य । परिणामे य बहुविहे पज्जवलोगं समासेणं ॥११-१६॥२०५ भा.

वण्णस्स भेदा कालगातीता, रस भेदा ५, गंध २ संठाणे परिमंडलादी पंच, फासे कक्खडादी अट्ठ, ठाणं ओगाहणा, एगदेसा-दिगता फुसणा, चसद्देण जधा वण्णभेदा एवं सेसा पदेसभेदा, कालवण्णस्स परिणामो बहुविहो एगगुणकालादी,सव्वत्थ विभासा, अहवा परिणामो बहुविहोत्ति सो चेव पसत्थो होऊण अपसत्थपरिणामो भवति । इदाणिं खेत्तपज्जवा भरहे पज्जवा जाव एर-वए, दीवसागरपण्णत्ती वा, उड्ढलोगे तिरिए अहोलोगे, अण्णे भणंति-खेत्तपज्जवा अगुरुलघ्वादयः,ते तेन लक्षणेन लोक्यंते । इदाणिं भवपज्जवलोगो, णेरइयाणं-अच्छिनिमीलणमेत्तं नत्थि सुहं दुक्खमेव अणुबद्धं । णरए णेरइयाणं अहोनिसिं पच्चमाणाणं ॥ १ ॥ असुभा उव्वियणिज्जा सद्दरसरूवगंधफासा य । नेरए नेरइयाणं दुकयकम्मोवलित्ताणं ॥ २ ॥ अहवा सीतादिवेदणाओ तंमि भवे अणुभागो, अहवा जे सुहा पोग्गला पक्खिप्पंति तेवि दुक्खत्ताए परिणमंति, जेण वा न मरंति तेण दुक्खेणं, मणुयाणं तिरियाणं च वेमाया, देवाणं नारगेहिंतो विपरीता विभासा । ते एवं लोक्कंति ।

इदाणिं भावपरिणामो, सो पसत्थोऽपसत्थो य, पसत्थो णाणादीहिं ३, विवरीतो अपसत्थो, अहवा जीवो जेण जेण भावेण

॥ ६ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
||१-७||

दीप
अनुक्रम
[३-९]

चतुर्विंशतिस्तव चूर्णौ
|| ७ ||

परिणमति, एवं अजीवाणवि पसत्थो अपसत्थो य विभासितव्वो, जथा कालओ पोग्गलाण परिणममाणो य २ कालकत्तं जहितूण नीलओ होति एवमादी, सोवि श्वेतलक्षणेन लोक्कति । तस्स लोगस्स एगट्ठिताणि आलोक्कती पलोक्कति० १०६९ ॥ गाथा विभासितव्वा वंजणपरियावण्णा एस लोगो सम्मत्तो ।

उद्योत-व्याख्या

इदाणिं उज्जोतो, उद्योतनं उद्योतः, सो दुविहो-दव्वुज्जोतो अग्गिमादि, अहवा ये लोगिया विभंगणाणिणो सव्वाणि करेत्ता परमाति विमलं करेंति । अप्पणएण य पत्तियावेंति, एस दव्वुज्जोतो । नाणं, जथा जिणेहिं भणितं तहेव जेण उवलब्भति, कहं तं भावुज्जोतो ?. जतो जदा तेसु संमं णाणभावेसु उवउत्तो भवति तदा भावुज्जोतो भवति, उवउत्तो भावोत्तिकातुं, भावो य सो उज्जोतो य भावुज्जोयो, जेण भणितं नाणं पगासगंति, अह जदि णाणं पगासयं घडपडादी पगासेति एवं चंदादिच्चावि घडपडादी पगासेंति तेण ते किन्न भावुज्जोतो ?, उच्यते, चंदादिच्चा घडपडादीण रूवगंधे पगासयंति, गुरुलहुयाणि दव्वाणि, णाणं पुण अट्ठविहंपि लोगं पगासेति अरूविदव्वाणिवि, दृश्यन्ते च निमित्तगणियजोतिसेहिं पच्चक्खं भावा, तेण सिद्धं नाणं भावुज्जोतोत्ति ।

आह-किं ते बहुगा तो भणह भावुज्जोतकरेत्ति ?, उच्यते-नणु मए पुव्वं भणितं चउव्वीसाए अधिगारोत्ति, एत्थ जिणवरा भावुज्जोतं करोति, जतो तदुवदेसेणं तं नाणं भवति जेण लोगो तथा पयासिज्जइ, किं च-दव्वुज्जोतभावुज्जोताण इमं अंतरं दव्वुज्जोतो० ॥१०७३॥ उज्जोतो सम्मत्तो ।

|| ७ ||

इदाणिं धम्मो, धर्मः स्थितिः समयो व्यवस्था मर्यादेत्यनर्थान्तरं, सो दुविहो-दव्वधम्मो भावधम्मो य, दव्वधम्मो धम्मत्थिकायो वा जस्स दव्वस्स भावो सो दव्वधम्मो, भावधम्मो सुयधम्मो चरित्तधम्मो य, सुयधम्मो सज्झायो, चरित्तधम्मो समण-

*** अत्र उद्द्योत एवं धर्म शब्दस्य व्याख्या क्रियते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
||१-७||

दीप
अनुक्रम
[३-९]

चतुर्विंश-
तिस्तव
चूर्णौ
॥ ८ ॥

धर्मतीर्थ-
कराणां
व्याख्या

धम्मो, सो उ पंचविहो-सामाइयचरित्तादि, अहवा खंतिमाती दसविहो, एतेण सावगधम्मोऽवि सूइतो,सज्झातो नाम सामाइयमादी जाव दुवालसंगं गणिपिडगं। धम्मो सम्मत्तो।

इदाणिं तित्थं प्राग्विहितनिवर्चनं, तं च दुविहं-दव्वतित्थं भावतित्थं च, दव्वतित्थं मागहमादी य परसमया वा मिच्छत्तदोसेणं मोक्खमग्गममाहगा, असाहगत्तेण य मोक्खं न मग्गति तेहिं, एवं कार्याकरणे दव्वतित्थं भवति। तत्थ मागहाइयदव्वतित्थे निरुत्तगाथा दाहोवसमं०॥ ११--२५ ॥ १०७७ ॥ भावतित्थंपि तेहिं निउत्तं- कोधम्मि उ निग्गहिते०॥ ११--२६ ॥ सिद्धं। अहवा दंसणनाण० ॥११-२८॥१०६०॥ अहवा दव्वतित्थं चउव्विहं-सुओयारं सुउत्तारं ४ भंगा,भावेवि सुओयारं सुउत्तारं ४ भंगा, सरक्खा तव्वन्निता बोडिया साधुत्ति जथासंखं।

इदाणिं करो, सो छव्विहो, दो गता, दव्वकरे गाथा–गोमुहिसुहिपसूणं० ॥११-३०॥१०८२-३॥ कत्थवि विसए गावीओ करं लभंति, अहवा पडिएण वा अड्डिएण वा एवं सव्वत्थ विभासा, सीतकरो खेत्तं जं वाविज्जति भोगे वा जो लइज्जति, अण्णत्थ उस्सारियं अण्णत्थ जोत्तियाओ जंघाओ, सेसं गाथासिद्धं, एते सत्तरस, अट्ठारसमो उप्पत्तिओ, अप्पणियाए इच्छाए जो उप्पाइज्जति सो उप्पत्तिओ खेत्तकरो, जथा सुंकमादि, गामादिसु वा जंमि वा खेत्ति करो वण्णिज्जति। कालकरो जंमि काले करो अहवा कालेण एच्चिरेणं तुमे दातव्वंति विभासा। भावकरो पसत्थो अपसत्थो य, अपसत्थो - कलहकरो० ॥ ११-१३ ॥ १०८५ ॥ सिद्धं । पसत्थो लोगो लोगुत्तरो य, अत्थकरो य० ॥ ११-३४ ॥ १०८६ ॥ सिद्धं। इदाणिं जिणोत्ति-- जितकोहमाणमाया जितलोभा तेण ते जिणा होंति। अरिहा हंता रयं हंता अरिहंता ॥ ८ ॥

*** अत्र तीर्थ एवं कर शब्दस्य व्याख्या क्रियते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
||१-७||

दीप
अनुक्रम
[३-९]

चतुर्विंशतिस्तव चूर्णौ
|| ९ ||

लोक-शब्दार्थः तीर्थकृन्नामान्वर्थं

तेण वुच्चंति ॥११-३५॥१०८७॥ जहा नमोक्कारनिज्जुत्तीए। इदाणिं कित्तयिस्सामित्ति, कित्तोमि कित्तणिज्जे० ॥११-३६॥१०८८॥ कस्स ?- सदेवासुरमणुयस्स लोगस्स, किमिति ?- दंसणणाणचरित्ते तवो विणओ य जेण दंसितो, अतस्ते पूज्या इत्यर्थः। ते कइ ?, उच्यन्ते-चउव्वीसं,अपिशब्दो सव्वेसिं एतद्गुणवत्वं ख्यापयति। इयाणि केवलित्ति,कम्हा ते केवली?, तत्थ गाथा- कसिणं केवलकप्पं० ॥११-३८॥१०९०॥

इयाणिं चालणा,आह-लोगं उज्जोतेंति अलोगं न उज्जोतेंति?,उच्यते-(लोए)उज्जोतो,जीवाः संसारांधकारे मग्गा तेषां मोक्षोपदेशनं उज्जोतो, अलोगे णत्थि जीवा नो वा अजीवा तत्र किमुज्जोएंतु ?, अहवा लोक उज्जोतकरा इति पठितव्वं, एवं पाठोऽस्तु, लोक उद्योतकरा इति ब्रुवद्भिः असर्वज्ञं ख्यापितं, येन लोकस्य अन्तो दृष्टः परितत्वात्, अलोकाकाशं न दृष्टमित्यर्थापत्तितः, आचार्य आह- लोकस्त्वया न ज्ञायते, लोको नाम पंचास्तिकायात्मकः, एतावंति च ज्ञेयानि, योऽसावाकाशास्तिकायः स संपूर्णोऽलोके, लोके तु तस्य देशः प्रदेशाश्च, तेन सूक्तं पंचास्तिकाया लोकः,तेन शोभनः पाठः लोकोद्योतकरा इति, एवं सव्वविसेसणाणं साफल्लं उपयुज्ज विभासितव्वं, के त जे कित्तणिज्जा केवलनाणी वत्ति ते भाणितव्वा, ते इमे उसभादीया वद्धमाणपज्जवसाणा। इदाणिं तेसिं संतगुणकित्तणा कातव्वा, सा य संतगुणकित्तणा सामण्णलक्खणसिद्धा य विशेसलक्खणसिद्धा य, सा महंतीए भत्तीए भण्णति, सामान्यं लक्खणं- वृष उद्वहने, उव्वूढं तेन भगवता जगत्संसारमग्गं तेन ऋषभ इति, सर्वे एव भगवंतो जगदुद्धहन्ति अतुलं नाणदंसणचरित्तं वा एते सामण्णं वा, विसेसो ऊरुसु दोसुवि भगवतो उसभा ओपरामुहा तेण निव्वत्तबारसाहस्स नामं कतं उसभोत्ति, किंच- पढमं उसभो महासुविणे दिट्ठो, सेसाणं मातीहिं पढमं गतो १ अजितोत्ति अजितो परीसहोवस-

|| ९ ||

*** अत्र लोक-उद्ध्योतकर शब्दस्य व्याख्या क्रियते

*** अत्र लोगस्स सूत्रस्य गाथा: २,३,४ मध्ये निर्दिष्ट ऋषभ आदि तीर्थकराणां नाम्नार्थ प्रस्तूयते

प्रत
सूत्रांक
||१-७||

दीप
अनुक्रम
[३-९]

चतुर्विंस-
तिस्तव
चूर्णौ

|| १० ||

ग्गोहिं सामण्णं, विसेसो घतं रमंति पुव्वं राया जिणियाइओ गब्भे आभूते माता जिणति सदाविति तेण अक्खेसु अजितत्ति अजितो जातो २ संभवे सामण्णं चोत्तीसबुद्धातिसेसा सव्वेसुवि संभवंति अतिसया गुणा य, विसेसो अब्भधिया सासाणं सइ जातत्ति ३ अभिणंदणे अभिमुहा अभिमुख्ये 'टुनदि समृद्धौ' अहवा सव्वेवि देवेहिं आणंदिया,विसेसेणं भगवतो माया गब्भगए४ सर्वेषामेव शोभना मतिरस्य सुमतिः, विसेसो गब्भगते भट्टारए माताए दोण्हं सवत्तीणं छम्मासितो ववहारो छिण्णो-एत्थं असोगवरपादवे एस मम पुत्तो महामती छिंदिहिति, ताए जावत्ति भणिताओ, इतरी भणिति· एवं होतु, पुत्तमाता णेच्छतित्ति णातूणं छिण्णो एतस्स गब्भगतस्स गुणेणंति सुमती जातो ५ सव्वे पउमगब्भसुकुमाला, विसेसओ पउमगब्भगोरे, पउमसयणीयदोहलोत्ति ६ सव्वेसिं सोभणा पासा तित्थकरमातूणं च, विसेसो माताए गुव्विणीए सोभणा पासा जातत्ति, पढमं विकुक्षिया आसी७ सामण्णं सव्वे चंद इव सोमलेसा, विसेसो चंदपियणंमि दोहलो चंदाभो यत्ति ८ सामण्णं सव्वे सव्वविधीसु णाणाइयासु कुसला, विसेसो माताए अतीव कोसल्लं जातं गब्भगते ९ सामण्णं सीतला अरिस्स मित्तस्स वा, विसेसोवि पुणो दाहो जातो ओसहेहिं न पउणति, देवीए परामट्ठे पउणो १० सामण्णं सव्वे सेया लोके, अहवा तेण निर्वर्तितसरीरा, विसेसो तस्स रण्णो परंपरागता सेज्जा देवताए परिग्गहिता अच्चिज्जंति अच्छाति, न कस्सति ढोकं देति, देवीए गब्भगते दोहलो, तं सेज्जं विलग्गा, देवता रडितूण पलाता, तेण सेज्जंसो ११ वसू-देवा वासवो इंदो तेण सव्वेवि अभिगच्छितपुव्वा, विसेसेण इमोत्ति, अहवा वसूणि-रयणाणि वासवो-वेसमणो सो वा अभिगच्छति १२ सामण्णं सव्वे विमलमती, विसेसो माताए सरीरं अतीवविमलं जातं बुद्धी तत्ति १३ सामण्णं सव्वेहिं कम्मं जितं, विसेसो माताए सुविणए अणंतं महंतं रतणचितं दामं दिट्ठं अंतो से नत्थि तेण अणंतई, बितियं से नामं १४ सर्वेऽपि

लोक-
शब्दार्थः
तीर्थकृन्ना-
मान्वर्थः

|| १० ||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक ||१-७||

दीप अनुक्रम [३-९]

चतुर्विंशतिस्तव चूर्णौ ॥ ११ ॥

शोभनधर्मा: सुधर्मा च, विसेसो अंमापितरो सावगधम्मे सुज्जो चुक्के खलंति, उववण्णे दढव्वताणि १५ सामण्णं सव्वेवि संतिकरा जिणा, विसेसो जाते असिवं पसंतं १६ सामण्णं कुत्ति-भूमी ताए वसुहाए सव्वे भूमिट्ठिता आसी, विसेसो माताए थूभो सव्वरतणामतो सुविणे दिट्ठो भूमित्थो तेण कुंथू १७ अरणामर्थः-सव्वे धणकणगसमिद्धेसु जाया कुलेसु, विसेसो सुमिणे सव्वरतणामओ अरओ दिट्ठो १८ सामण्णं सव्वेहिवि परीसहमल्ला मलिता, विसेसो मल्लसयणे दोहलो १९ सामण्णं सव्वेसिं सुव्वता, विसेसो गब्भगते माता पिता य सुव्वता जाता २० सामण्णे सव्वेहिं परीसहा नामिता कोहादयो य, विसेसो णगरं रोहिज्जति, देवी अट्टे संठिता दिट्ठा, पच्छा पणता रायाणो, अण्णे य पच्चंतिया रायाणो पणता तेण नमी २१ अरिष्टं- अप्रशस्तं तदनेन नामितं नेमि सामान्यं, विसेसो रिट्ठरयणमइ नेमि उप्पयमाणी सुविणे पेच्छति २२ सामण्णं सव्वे जाणका पासका य सव्वभावाणं, विसेसो माता अंधारे सप्पं पासति, रायाणं भणति-हत्थं विलएह सप्पो जाति, किह एसं दीसति?, दीवएणं पलोइओ, दिट्ठो २३ सामण्णं सव्वेवि णाणादीहिं गुणेहिं वड्ढंती, विसेसा नातकुलं धणरतणेण संवड्ढति २४ । एते कित्तिया चउव्वीसंपि इति ।

■ एवं मए अभित्थुता विहुतरयमला (*५) । थुतीणामएगट्ठिताणि अभित्थुणणा० ॥ ११०३ ॥ सिद्धा । 'धूञ् कंपने' विविधप्रकारा धुणणा विधुणणा, किं विधूतं ?-रयो मलो य, कम्मपायोगो रयो बद्धो मलो, अहवा रयो बद्धमाणो मलो पुव्वोवचितो, अहवा बद्धो रयो निकाइओ मलो अहवा इरियावहितं रयो संपराइयं मलो, पधीणं जरा य मरणं च जेसिं ते पहीणजरामरणा, ते पुव्वुत्ता चउव्वीसंपि जिणवराः, वरा वरिष्ठा इत्यर्थः, अन्नेवि जिणा अत्थि, न पुण तेसु वरसद्दो । ते तित्थंकरा पसीदंतु । कित्तिया उसभादीया, वंदिया 'वदि स्तुत्यभिवादनयोः' उद्देसे पुव्वभणिता तेच्चेवत्ति । लोगस्स उत्तमा उद्–उद्धवो-

तीर्थकृत्स्वरूपं ॥ ११ ॥

■ लोगस्स सूत्रस्य गाथा-५, ६ आरभ्यते

प्रत
सूत्रांक
||१-७||

दीप
अनुक्रम
[३-९]

चतुर्विंश-
तिस्तव
चूर्णौ
॥ १२ ॥

बोधिलाभ-
प्रार्थना

र्थगमनोच्छेदनेषु, तिविधातो तमातो उंमुक्का, तेण उत्तमा। को तमो ?—

मिच्छत्तवेदणिज्जं० ॥ ११०४ ॥ अहवा तमो-संसारो ताओ उम्मुक्का तेण उत्तमा, ओघातितो वा तमो यैस्ते उत्तमाः, सिद्धा इत्यर्थः। **आरोग्गबोधिलाभं समाधिवरमुत्तमं दिंतु** । आरोग्गं मोक्खो, बोधिलाभः- प्रेत्यधर्मावाप्तिः, सो बोधिलाभो समाधिवरमुत्तमः तं देंतु, दव्वसमाधी यमुद्धियं दव्वं यं वा सुसंगोवितं, भावसमाधिनाम यो रागदोसेहिं नावहीरति, मरणकाले वा मग्गमारूढो न ओरुभति, झाणसेढीओ वा ण पल्हत्थति, सो तस्स समाधीए वरो, तस्सवि अणेगाइं तारतम्माइं तेण उत्तमग्गहणं आह- किं ते पसीदंति?, जेण तुमे भण्णह तित्थगरा मे पसीदंतु, तहा आरोग्गबाहिलाभं समाधिवरमुत्तमं च मे देंतु, किं णुहु णिदाणमेतं ?, णु इति वितक्के, किमिदं निदाणं न कीरति?, उच्यते- विभासा एत्थ भवति। तंजहा— **भासा असच्चमोसा०** ॥ ११०६ ॥ सा असच्चामोसा दुवालसविहा, जा सा जायणी सा एसा, साधू संसारविमोक्खणं मग्गंति, ण हु **खीणपेज्जदोसा देन्ति समाधिं च बोधिं च** । आह—जदि न पसीदंति न वा देंति तो किं नमुक्कारो कीरति ?, उच्यते—जथा अग्गी न तूसति न वा देति तहवि जो सीतपरीगतो सो आल्लियति, सो य सकज्जं निप्फाएति, एवं तेवि खीणरागदोसमोहा न किंचिवि देन्ति, न वा तूसंति, जो पुण पणमति सो इच्छितमत्थं लभति, उक्तं च—"चंद्रं द्रष्ट्वा यथा तोयं०" श्लोकः, अवि य- **जं तेहिं दातव्वं०** ॥ ११०७ ॥ तेहिं तिन्निवि आरोग्गादीया लाभा लब्भंति, जम्हा एतेसिं एते गुणा तेण परमा भत्ती कातव्वा। उक्तं च—**भत्तीए जिणवराणं०** ॥ ११०८ ॥ अहवा कहं तेसिं अरुसंताणवि आरोग्गादीणि पाविज्जति ?, भणति- **भत्तीए जिणवराणं खिज्जंति पुव्वसंचिता कम्मा** । ततो अत्था सिज्झंति, जथा लोके आयरियाणं नमोक्कारेणं भत्तीए ॥ १२ ॥

***जिन-भक्ते: फ़लम् प्रदर्शयते

प्रत
सूत्रांक
||१-७||

दीप
अनुक्रम
[३-९]

चतुर्विंश-
तिस्तव
चूर्णौ
॥ १३ ॥

मंतादी सिज्झंति, एवं अत्थावि । आह- जदि एवं तो वरं तित्थगरत्थुतिं चेव करेमो, किं एवड्डाए खडफडाए ?, किंच-पुणोवि एतप्पभावेण बोधिं लभिस्सामो, ततो अण्णं करेस्सामो, इदाणिं पुण न सक्कामो, किल एत्थ भण्णति-लद्धेल्लियं च०॥११०९॥ एत्थ लहिऊणं बोहिं जं कातव्वं तं जदि न काधिसि तदा पुण किर बोधिं लभेत्ता किं करिस्ससित्ति, ता तं दच्छिसि जह तं विम्हलो, इमं च चुक्किहिसि, दच्छिसित्ति द्रक्ष्यासि, विम्हलात्ति हे विब्भला, इमाओवि बाधिओ चुक्किहिसि, अण्णाओवि, तओ परिति-णिहिसि, जथा सो जंबुओ मंसपेसिं जहितूण मच्छं पत्थंतो इमं च अण्णं च चुक्को, अयमभिप्रायः—यदुत ण केवलाओ तित्थगर-त्थुतीओ आरोग्गादीणि भवंति, किं तु एसावि णिमित्तं आरोग्गादीणं, तुमं पुण बोहिं लहितूण असदालंबणेहिं पमायंतो इमाओ चुक्किहिसि, पमादपच्चइएहि य कंमेहिं पुणो बोधि दुल्लभा चोल्लगादीहिं दिट्ठंतेहिं, अतो अण्णं च चुक्किहिसित्ति । किं च-इह उत्थिताणुट्ठाणपवित्तीए सुभकम्मोदएणं अण्णा बोधी निव्वत्तिज्जति, जथा अत्थेण अत्थो बज्झति, तुमं पुण इमं पमायंतो अण्णं कतरेण मोल्लेण लब्भिसि ?, लभिहिसीत्यर्थः, स्याद् बुद्धि :-तित्थगरत्थुतीए, तण्ण, जतो अम्हेहिं पुव्वं भणितं जथा न केवलाए तित्थगरत्थुतीए एताणि लब्भंति, किंतु तवसंजमुज्जमेण, एत्थ य उज्जमंतेण सव्वत्थ कतं भवति चेव, भणितं च भद्दा-रएहिं—चेतिय कुलगणसंघे०॥११-६०।१११२॥ तवो १२, संजमो १, एत्थ उज्जमितव्वं, तेसिं वयणे ठितेण तवसंजमभुज्जमं-तेण तेसिं भत्ती कता भवति, न इतरेण इति ■चंदेहिं निम्मलतरा० ॥ ७ ॥ चंदादिच्चेहिंतो कहमाधितं पगासंति ?, चंदाति-तिच्चाणं उड्ढं अधे य तिरियं च परिमितं खेत्तं पगासणे, केवलियनाणलंभो लोगमलोगं पगासेति । सागरवरो सयंभुरमणो, ततोवि गंभीरतरा, ण तीरंति परीसहोवसग्गादीहिं खोभेतुं । एवंगुणा ते भगवंतो सिद्धिं गता, मे सिद्धा सिद्धिं दिसंतु, एवं तेसिं मह-

तपःसंयमो-
द्योगः
॥ १३ ॥

■ लोगस्स सूत्रस्य गाथा-७ आरभ्यते

प्रत
सूत्रांक
||१-७||

दीप
अनुक्रम
[३-९]

वन्दना-
ध्ययन
चूर्णौ

तीए भत्तीए समुकीत्तणा कता ॥ सुत्तफासिया गया, नया तहेव जहा सामाइगे दोण्णि गाथा, इत्यादि चर्चः ॥ चउव्वीसत्थयचुण्णी समत्ता, अहवा लोओज्जोयगरचुण्णी आदाणपदेणं ॥ संबन्धः

॥ १४ ॥ अह वंदणगज्झयणं, चउव्वीसत्थयाणंतरं वंदणगज्झयणं, एतस्स कोऽभिसंबंधः ?, जेहिं सामाइकमुपदिट्ठं तेसिं समुक्कित्तणा कातव्वत्ति तदणंतरं अरिहसमुक्कित्तणा कता, गणधरादीहिवि एतं पणीतं अतो गणधरआयरियादीणवि वंदणं कातव्वंति भण्णति, अहवा सामाइए ठितस्स जथा तित्थगरा पूज्या मान्याश्च तथा गणधरादीवि, अतस्तदर्थं वंदणगं भण्णति, एवमादिसंबंधेणायातस्स वंदणगज्झयणस्स चत्तारि अणुयोगद्दाराणि उवक्कमादीणि तहेव वण्णेतव्वाणि जाव नामनिप्फण्णो निक्खेवो वंदणगंति, एत्थ यऽत्थाधिगारो गुणवंतस्स गणधरादिस्स पडिवत्ती-वंदणगमिति, कोऽर्थः ?-' वदि अभिवादनस्तुत्योः ' शुभेषु वा अर्थेषु वागादीनां दानं ॥ वंदनं चतुव्विहं, दो गता, दव्ववंदणगं दव्वभूतस्स दव्वनिमित्तं वा, अण्णउत्थियाण वा, भाववंदणगं निज्जरट्ठियस्स साधुस्स वंदमाणस्स । तस्स एगट्ठिताणि वंदणगन्ति वा चितिकंमंति वा कितिकंमंति वा पूजाकंमंति वा विणयकंमंति वा। तत्थ वंदणए उदाहरणं—

एगस्स रण्णो पुत्तो सीतलो नाम, सो य निव्विण्णकामभोगो पव्वइओ, पढंतो आयरिओ जातो, तस्स य भगिणी पुव्वदिण्णा अण्णस्स रायाणगस्स, तीसे चत्तारि पुत्ता, सा तेसिं कहंतरेसु कहेति, जथा तुब्भं तु मातुलो पव्वइओ, एवं कालो वच्चति। ॥ १४ ॥
तेऽवि अण्णदा तथारूवाण थेराण अंतिए पव्वइता, चत्तारि बहुसुता जाता, माउलगं वंदआ जंति, एगंमि नगरे सुतो, तत्थ

आवश्यक सूत्रस्य द्वितियं अध्ययनं समाप्तं

अथ तृतीय अध्ययनं आरभ्यते

*** वंदनकं विषये शितलाचार्यस्य कथानक

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दना-ध्ययन चूर्णौ

॥ १५ ॥

वन्दनादिषु दृष्टान्ताः

गता, विगालो जातुत्ति बाहिरियाए ठिता, सावओ य नगरं पविसितुकामो, सो मेहिं भणितो-सीतलाणं आयरियाणं कहेज्जहत्ति जं जे तुब्भ भाइणेज्जा ते आगता, विगालोत्ति न पविट्ठा, तेण कहितं, ते तुट्ठा, इमेसिंपि रत्तिं सुभेणज्झवसाणेणं चउण्हवि केवलनाणं उप्पण्णं, पभाते आयरिया दिसाओ पलोएंता अच्छंति-एत्ताए मुहुत्तेण एहिन्ति, सुत्तपोरिसिंपि मण्णे करेंतित्ति अच्छंति, उग्घाडाए अत्थपोरिसिंति, अतिचिरावेंते तं देउलियं गता, ते वीतरागा णाढायंति, डंडओ ठवितो, पडिक्कंतो, आलोइयं, संदिसह कतो वंदामि ?, तेहिं भणितं-जतो रोयति, सो चिंतेति-अहो दुट्ठसेहा णिल्लज्जात्ति, तथावि रोसेणं वंदति, केवली य किर पुव्वपवत्तं उवयारं न भंजति जाव न पडिभिज्जति, एस जीवकप्पो, तेसु नत्थि पुव्वपवत्तो उवगारोत्ति भणंति- अज्जो दव्ववंदणएण वंदितं, एत्ताहे भाववंदणएण वंदाहित्ति, ते य किर तं वंदंतं कसायकंडएहिं छट्ठाणपडितं वड्ढंतं पेच्छंति तेण पडिचोदितो, सो भणति- एतंपि णज्जति ?, तेहिं भणितं- बाढं, किं अतिसयो अत्थि ?, आमं, किं छउमत्थिओ केवलिओ ?, भणंति- केवलिओ, ताहे सो किर तहेव उद्धसितरोमकूवो अहो मया मंदभग्गेण केवली आसाइतत्ति संवेगं गतो तेहिं चेव कंडगट्ठाणेहिं पडिनियत्तो जाव अपुव्वकरणज्झाणं अणुप्पविट्ठो जाव केवलनाणं समुप्पण्णं चउत्थगं वंदंतस्स समत्तीए, सच्चेव काइया चेट्ठा एगंमि बंधाय एगंमि मोक्खाय । पुव्विं दव्ववंदणगं जातं ॥

इदाणिं चितिकंमं, दव्वचिती भावचिती य,'चिं चयने' दव्वचिती पेढं, अहवा रयहरणादी बाहिरं लिंगं, एस लोउत्तरिया, लोइया बोडियानिण्हगतच्चणियाणं लिंगगहणं । भावचिती णाणदंसणचरणाण उवचयो । तत्थ उदाहरणं- खुड्डओ । एगो आयरिओ, तेणं कालं करेमाणेणं लक्खणजुत्तो आयरिओ ठवितो, सो खुड्डओ, ते सव्वे पव्वइया तस्स भएण य पाभेण य अतीव

॥ १५ ॥

*** चितिकर्म-विषये क्षुल्लक-साधोः कथानकम्

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[१०]

वन्दना-
ध्ययन
चूर्णौ

॥ १६ ॥

वन्दनादिषु
दृष्टान्ताः

वड्ढति, तेसिं च कडादीणं थेराणं अंतियं पढति, अण्णदा मोहणिज्जेण वाहिज्जंतो भिक्खाए गतेसु साधुसु वितिज्जएणं सण्णापाणियं आणावेत्ता मत्तयं गहाय उवहतपरिणामो वच्चति, दूरं गतो परिसंतो एगत्थ वणसंडे वीसमति, तत्थ वणसंडस्स पुप्फियफलियस्स मज्झे समी असणवसणादिया चेइयाए पेढियाए य सुपरिग्गहिता, तीसे तद्दिवसं जत्ता, लोको महतीइड्ढीए अच्चति थुव्वति, किं एतं अच्चेह ?, इमे असोगवरपादवे ण अच्चेह, ते भणंति-पुव्वएहिं एयं कतेल्लयं तं जणो वंदति, तस्स चिंता जाता-पेच्छह जारिसिया समी तारिसओमि अहं, अण्णेवि तत्थ बहुस्सुता रायइब्भपुत्ता अत्थि ते ण ठविता, अहं ठवितो, तो ममं पूयंति, कतो मज्झ समणत्तणं?, रतहरणचितीगुणेणं वंदंति जेण आयरिएहिं जितो ठवितो, एरिसियं रिद्धिं मुइत्ता किह गच्छामि ?, तत्थेव णिव्विण्णो वेयालियं पडिनियत्तो, इतरेवि भिक्खातो आगता, मग्गंति, ण लहंति सुतिं वा पवत्तिं वा, सो आगतो आलोएति- जहाऽहं सन्नाभूमिं गतो, सूलो उद्धाततो, तत्थ पडितो, पुणो वोसिरावणियाए दुक्खवितो अच्छितो, इदाणिं उवसंतो आगतो मि, ते तुट्ठा, पच्छा कडादीणं आलोएति, पादच्छित्तं च पडिवज्जति, पच्छा तस्स भावचिती जाता, णाणदंसणचरित्ताणि भावचिती । चितित्ति गतं ॥

इदाणिं किइकंमं, कृत्यं कर्म गुरूणां, दव्वकितिकम्मं णिण्हगादीणं अणुवउत्ताणं उवउत्ताणं वा दव्वाणिमित्तं वा, भावकितिकंमं णीतागोतादिकंमक्खवणट्ठताए जं कीरति, तत्थ दव्वकितिकंमे भावकितिकंमे य उदाहरणं—बारवती वासुदेवो, वीरओ कोलिओ, सो वासुदेवभत्तो. सो य किर वासुदेवो वरिसारत्ते बहवे जीवा वहिज्जंतित्ति ण णीति, सो वीरओ बारमलहंतो पुप्फपुडियाए बारस्स मूले अच्चणितं काऊण वच्चति दिणे दिणे, ण य जेमेति, ओरूढमंसु जातो, वत्ते वरिसारत्ते राया णीति, सव्वेवि ॥ १६ ॥

*** कृतिकर्म-विषये वीरक एवं कृष्णवासुदेवस्य कथानकम्

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दना-ध्ययन चूर्णौ

॥ १७ ॥

रायाणो उवट्ठिता, वीरओवि पाएसु पडितो, राया पुच्छति-वीरओ दुब्बलोत्ति, बारवालेहिं जहावत्तं कहितं, रन्नो अणुकंपा जाता, अवारितोवाती सो कतो। वासुदेवो य किर धीताओ जाहे विवाहकाले पादवंदियाओ एन्ति ताहे पुच्छति-किं पुत्तगे! दासी होहिसि सामिणित्ति ?, ताओ भणंति-सामिणिओ होमित्ति, राया भणति-तो खाइं पव्वयह भट्टारगस्स पादमूले, पच्छा महता णिक्खमण-सक्कारेण सक्कारियाओ पव्वयंति, अन्नदा एगाए देवीए धीया, सा चिंतेति-सव्वातो पव्वाविज्जंति, ताए धिता सिक्खाविता-भणाहि-दासी होमित्ति, तहेव अलंकितविभूसिता उवणीता, पुच्छिया भणति-दासी होमित्ति, भणिता-दुक्खिता होहिसित्ति, वासुदेवो चिंतेति-मम धीता संसारे हिंडिहित्ति तो ण लट्ठगं एतं, को उवाओ होज्जा? जेण अन्नावि एवं ण करेज्जत्ति, लद्धो उवाओ, वीरगं पुच्छति-अत्थि ते किंचि कतपुव्वं ?, भणति- णत्थि, चिंतेहि, ता सुचिरं चिंतेत्ता भणति-अत्थि, बदरीए उवरि सरडो सो पाहाणेण आहणित्ता मारितो, सगडवट्टाय पाणितं वहंतं वामपादेण धरितं उव्वेल्लं गतं, पज्जणघडियाए मच्छियातो पविट्ठाओ हत्थेण आहाडिताओ गुमुगुमेंतीओ होडन्ति, बितिए दिवसे अत्थाणीआए सोलसण्हं रायसहस्साणं मज्झे भणति- सुणेह भो एतस्स वीरगस्स कुलुप्पत्ती मए सुता,कंमाणि य, वासुदेवो भणति-जेण रत्तासिरो णागो, वसंतो बदरीवणे। पाडितो पुढविसत्थेण, वे मती णाम खत्तिओ ॥ १ ॥ जेण चक्खुक्खया गंगा, वहंती कलुसोदगं। धारिया वामपादेण, वे मती णाम खत्तियो ॥ २ ॥ जेण घोसवती सेणा, वसंती कलसीपुरे। वारिया वामहत्थेण, वे मती णाम खत्तिओ ॥ ३ ॥ एतस्स धीतं देमि, दिन्ना, सो भणतितो-धीतं ते देमि, णेच्छति, भिउडी कता, दिन्ना, णीया, सयणिज्जेणच्छति, इमो से सव्वं करेति। अन्नदा राया पुच्छति-किह वयणं करेति ण करेतित्ति ?, वीरओ भणति-ताए अहं सामिणीए दासोत्ति, राया भणति-जति सव्वं ण कारवेसि तो ते णत्थि

वन्दनादिषु दृष्टान्ताः

॥ १७ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दनाध्ययन चूर्णौ ॥ १८ ॥

वन्दनादिषु दृष्टान्ताः

फेडओ, तेण रन्नो आकूतं णाऊणं घरं गतेण भणिता, जहा-पज्जणं करेहित्ति, सा उड्डिता, कोलिया ! अप्पाणगं ण याणसित्ति, तेण उद्वेऊणं रज्जुणा पहता, कूवेंती रंनो मूलं गता, पादपडिता भणति- अहं तेण कोलिएण हता, राया भणति-तेण चेवासि मते भणिया-सामिणी होहित्ति, तो तुमे दासत्तणं मग्गितं, अहं एत्ताहे ण वसामि, सा भणति-एत्ताहे सामिणी होमि, राया भणति-जति वीरओ संमणिहिति, मोइया, पव्वतिया। अरिट्ठणेमिसामी समोसरितो, राया णिग्गतो, अट्ठारसवि समणसाहस्सीओ वासुदेवो वंदेउकामो भट्टारयं पुच्छति- अहं साहू कतरेण वंदणएण वंदामि ?, केण पुच्छसि- दव्ववंदणएणं भाववंदणएण?, सो भणति-जेण तुब्भे वंदिता होह, सामी भणति-भाववंदणएणं, ताहे सव्वे साहुणो बारसावत्तेणं वंदणएणं वंदति, रायाणो परिसंता ठिता, वीरतो वासुदेवाणुवत्तीइ वंदति, कण्हो बद्धसेतो जातो, भट्टारओ पुच्छिओ जहा अहं तिहिं सट्ठेहिं संगामसएहिं ण एवं परिसंतोम्मि,सामी भणति-तुमे खतियं संमत्तं उप्पाडितं,तुमए एयाए सद्धाए तित्थकरणामगोतं कंमं णिव्वात्तियं, यदा किर विद्धो सि तया णिदणगरहणाए सत्तमाए पुढवीए बद्धेल्लयं आउयं उव्वेढंतेणं तच्चं पुढविमाणितं, जदि आउयं धरंतो तो पढमपुढविमाणेंतो, अन्ने भणंति-इहेव वंदंतेणंति, भावकितिकंमं वासुदेवस्स, दव्वे वीरगस्स ॥

इदाणिं पूयाकंमं,पुरस्तात् पूज्जा पूजा,दव्वपूया णिण्हगादीणं, भावपूया परलोगट्ठिताणं । तत्थ उदाहरणं-दो सेवगा, तेसिं अल्लिणा गामा, तेसिं सीमाणिमित्तं भंडणं जातं, ताहे ते णगरं रायसमीवं संपत्थिता, तेहिं साधू दिट्ठो, तत्थ एगो भणति- साधुं दृष्ट्वा ध्रुवा सिद्धित्ति पदाहिणं काऊणं वंदित्ता गतो । बितिओवि तस्स किर ओग्घइयं करेति, सोऽवि वंदति , तं चेव भणति, ववहारे आबद्धे जितो, दव्वपूया तस्स, इतरस्स भावपूया ॥ ॥ १८ ॥

*** पूयाकर्म-विषये कथानक

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दना-ध्ययन चूर्णौ ॥ १९ ॥

वन्द्या-वन्द्याः

इदाणिं विणयकंमं । विनयनं विनयः, दव्वविनयो विभासियव्वो,भावे य । तत्थ साम्बपालगा उदाहरणं-बारवती वासुदेवो; नेमी समोसढो, वासुदेवो भणति-जो कल्लं सामिं पढमं वंदति सो जं मग्गति तं देमि, संबेण य सयणिज्जाओ उट्ठेत्ता वंदितो, पालतो रज्जलोभा एसिग्घेणं आसेणं पए गतो वंदति, सो य किर अभवसिद्धिओ वंदति, हियएण अक्कोसति, वासुदेवो गतो, पुच्छति-केण तुब्भे पढमं वंदिया ?, सामी भणति-दव्वतो पालएणं, भावतो संबेणं, ताहे संबस्स दिन्नं । एवं भाववंदणएण वंदितव्वं ।

एयं कितिकम्मं कातव्वंति दिट्ठं । तत्थ इमाणि दाराणि-कस्स केण काहे कतिखुत्तो कतिओणयं कतिसिरं कतिहि व आवस्सएहिं परिसुद्धं कतिदोसविप्पमुक्कं कीस कीरंतित्ति दाराणि॥कीसत्ति-दारं, कास कितिकम्मं, कास ण कायव्वंति, तत्थ ताव इमेसिं ण कायव्वं- असंजताण ण कायव्वं, जदि ते पुव्वं पुज्जा आसी, कतो ?, मातरं पितरं गुरुं सेणावतिं पसत्थारो रायाणं देवताणि य, माया ताव लोगे देवतं, सा ण वंदितव्वा असंजयत्ति, एवं पितावि, भातावि, गुरू णायपित्तियओ मातुलओ ससुरओ एवमादि, उवज्झातो वा सिप्पकलादिसु होज्जा, सेणावती जहा गणराया,पसत्थारो जे पसत्थेहिं कंमेहिं अत्थं उवणिज्जंति जहा सत्थवाहादओ, राया पंचमो लोगपालो, देवताणिवि ण वट्टंति, किमंग पुण मणुया?, चसद्देण पुव्वं जेहिं कला गाहितपुव्वा अन्नातित्थियावि, जतिवि ते लोइए धम्मे ठिता तहवि ण य वंदियव्वा । केसिं पुण कायव्वं कितिकम्मंति ?, भण्णति— ॥ १९ ॥

समणं वंदेज्ज० ॥ १२.५ ॥ ११११८ ॥ 'श्रमु तपसि खेदे च' श्राम्यतीति श्रमणः तं वंदेज्ज, केरिसं ? 'मेधाविं' मेरया धावतीति मेधावी, अहवा मेधावी- विज्ञानवान् तं, पाठांतरं वा समणं वंदेज्ज मेधावी, तेण मेधाविणा मेधावी वंदितव्वो, चउ-

*** विनयकर्म-विषये शांब एवं पालकस्य कथानक

प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१०]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

वन्दनाध्ययन चूर्णौ

॥ २० ॥

भंगो, चउत्थे भंगे कितिकंमफलं भवतीति, सेसएसु भयणा । तथा 'संजतं' संमं पावोवरतं, तहा 'सुसमाहितं' सुट्ठु समाहितं सुसमाहितं णाणदंसणचरणेसु समुज्जतमितियावत्, को य सो एवंभूतः ?, जो पंचसमितो तिगुत्तो अट्ठहिं पवयणमाताहिं ठितो असंजमं दुगुंछतित्ति, एवंगुणसंपउत्ता वंदणिज्जा, ण पुण जे समणा मेधावी संजता जाव दुगुंछगा इव प्रतिभासंते, जहा णिण्हगा, जेण ण ते इह भट्टारगाण सकलं मेरं धावेतित्ति ॥ किं च-इमेवि पंच ण वंदियव्वा समणसद्देवि सति, जहा आजीवगा तावसा परिव्वायगा तच्चंणिया,बोडिया समणा वा इमं सासणं पडिवन्ना, ण य ते अन्नतित्थे ण य सतित्थे,जेवि सतित्थे न प्रतिज्ञामणुपालयंति तेवि पंच पासत्थादी ण वंदितव्वा । एत्थ दारगाथा—

पंचण्हं कितिकम्मं ॥ १२-३ ॥ १११९ ॥ णणु किं जातं ? जं एते ण वंदिज्जंति ओवाते?, **पासत्थादी०** ॥१२-८॥ ११२०॥ एते वंदमाणस्स णेव कित्ती- अहो इमो विणीओत्ति एवमादि, अकित्तिं पुण आवहति ते वंदंतो, जहा एरिसो महप्पा एत्तो एवं एते वंदंति, नूणं एसवि एरिसोत्ति अकित्ती भवति, णिज्जरा होज्जा सावि णत्थि ?, कहं ? , ते जिणाणं अणाणाए वट्टंति, ते वंदमाणस्स जिणाणं आणावतिक्कमेणं कम्मं बज्झति, कतो णिज्जरा ?, एवं च काइया चेट्ठा णिरत्था णाम कुणति तें वंदंतो, तहा कंमबन्धं च, जतो आणादीया दोसा, कहं ?, ते भगवतो अणाणाए वट्टमाणे अवंदणिज्जे वंदमाणस्स आणालोवो, सो अ णं वंदति पासत्थादि, ते वंदिज्जमाणे दट्ठूणं सेहस्स वा सड्ढस्स वा पडिगमणादयो दोसा भवेज्जा, जं ते गया काहिंति सो तस्स उवरिं कंमबंधोत्ति, तदणुमतिमादीहिं संजमादिविराधणा, एवं विभासा, चसद्दा संसारं च सुचिरं हिंडिहिति। एसो वंदमाणस्स दोसो, जो पुण तेसु ठाणेसु वट्टमाणो वंदावेति तस्स इमे दोसा— ॥ २० ॥

वन्द्यावन्द्याः

*** वंद्य-अवंद्य साधुनाम् वर्णनं

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दनाध्ययन चूर्णौ ॥ २१ ॥

कुशील-संसर्ग-त्यागः

जे बंभचेरभट्ठा० ॥ १२-९ ॥ ११२१ ॥ जो ताव अब्बंभं सेवति सो ताव भट्ठवतो चेव, नट्ठो य भट्ठो य, बंभचेरं नाम संजमचरणं, ततो जे भट्ठा गुणहीणा गुणाहिते पादेसु पाडेंति ते संसारं वड्ढेंति, दुल्लोधिलाभियं च कम्मं करेंति, सुचिरंपि हिंडिऊणं जयावि माणुसत्तणं वा लभंति तदावि विगलिंदिया कुंटमेंटगा अंधबहिरा रोगिया य भवंति, जथा- लद्धूणवि धम्मं न सक्केति कातुं, अविय० ते नासितुकामा नट्ठा जे संजमे न उज्जमंति, सुट्ठुतरं नासंती ॥ १२·१० ॥११२२॥ के णं ते सुसमणा?, उवरिल्लएहिं कंडगट्ठाणेहिं वट्टमाणा सुसमणा भवंति, जे ण य जधुत्तं करेंति, गुरुजणा चरित्ताधिगा, चसद्दा कारयंति उवदिसंति य जहुत्तं, एवं ते णट्ठा णासंति पुणरवि, जम्हा एते दोसा तम्हा ण ते ते वंदितव्वा, ण वा तेहिं वंदावेतव्वं । आह-जे पुव्विं वेहारुया, पच्छा पासत्थादी जाता तेसिं किं ?, एवं चेव, यतो—असुहट्ठाणे०, अहवा न केवलं पासत्थादीणं एतं, जेवि इतरा तेहिं समं संवसंति तेसिंपि एतं, जतो असुह०गाथा ॥१२ ११- ॥ ११२३ ॥

एगो चंपगपिओ कुमारो, सो चंपगमालाए सेहरं रयेतूण आसेण जाति, सा से चंपगमाला विगलिता, मीढस्स उवरिं पडिता, तेण हत्थो पसारितो, मीढं दट्ठूण मुक्का, सो य चंपएहिं विणा धितिं न लभति तथावि ठाणदोसेण मुक्का, एवं जथा माला तारिसा सुविधिता साधू, जारिसतं तट्ठाणं तारिसया पासत्थादी ठाणा, जेहिं पदेहिं पडिसेविएहिं पासत्थो होति सेज्जातरपिंडादीहिं तेसु जे पडिता ते परिहरितव्वा, जहा माला, अहवा पासत्थादीट्ठाणेसु वट्टमाणो नाम जे सुद्धावि पासत्थादीहिं समं संवसन्ति संवासेंति वा तेवि परिहरणिज्जा इति । अहवा इमं उदाहरणं, एवं वा परिहरितव्वा । तत्थ गाथा-- ॥ २१ ॥

पक्कणकुले वसंतो० ॥ १२·१२ ॥ ११२४ ॥ एगस्स धिज्जातियस्स पंच पुत्ता, ते पंचवि अवणीयपारगा चोद्दसविज्जा-

*** पासत्थादि साधूनां संसर्ग-त्याग:, *** अत्र चंपकप्रियकुमारस्य द्रष्टांत

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दनाध्ययन चूर्णौ ॥ २२ ॥

कुशील-संसर्ग-त्यागः

द्वाणाणि ससुत्तत्थाणि जाणंति, तत्थ एगो एगाए दासीए समं संपलग्गो, सा मज्जं पिज्जति, इमो य ण पिबति, तीए भण्णति-जदि तुमं पिबेज्जासि तो णे रती होज्जत्ति, इहरथा विसरिसो संजोगोत्ति, एवं सो ताव बहुसो २ भणंतीए पाइतो, सो य पुव्वं अण्णेण आणावेति, पच्छा पच्छण्णं सयमेव आणेति, एवं काले वच्चंते आढत्ते पक्कणकुलेसुवि पिबितुं, तेहिं चेव पियति य वसाति य, तेणं तस्स सयणेण सव्वबज्झो कतो अब्भोज्जो य कतो, अण्णदा सो पडिभग्गो, एगो से भाता णेहेणं कुडिं पविसिऊणं पुच्छति देति य से किंचि, सो णिच्छूढो, अण्णो बाहिं पाडिएसत्तओ देति पुच्छति य, सोऽवि निच्छूढो, ततिओ ण जाति, बाहिरपाडए संतओ देति पुच्छति, परंपरएणं दवावेति, सोऽवि निच्छूढो, पंचमो गंधंपि न सहति, करणं जाइउं तेण मरुयएणं तस्स पुत्तस्स सव्वं दिण्णं, इतरे चत्तारिवि निच्छूढा, लोगे गरहिता य जाता, एस दिट्ठंतोऽयमर्थोपनयः-जारिसया पक्कणा तारिसया पासत्थादि, जारिसयो धीयारो तारिसा आयरिया, जारिसया पुत्ता तारिसया साहवो, जथा तेण णिच्छूढा एवं निच्छूब्भंति, कुसीलसंसग्गि करेंता बज्झा गरहिता य भवन्ति, जो पुण परिहरति सो पुज्जो सादीयं सपज्जवसितं च निव्वाणं पाविहिति। णणु को दोसो संसग्गीए जेण ते परिहरिया ?, णवरं अखंडियचारित्तेण होतव्वं, भण्णति-संसग्गीवि विणासिता कुसीलेहिं, उक्तं च "जारिसएहिं मित्तिं करेंति अचिरेण तारिसो होति। कुसुमेहिं सह वसंता तिलावि तग्गंधिता होंति ॥१॥" आह-न एस नियमो जथा संसग्गीए दोसेहिं लिंपिज्जति, कहं?-सुचिरंपि अच्छमाणो० ॥११२५॥ जथा-वेरुलिओ कायमणीणं मज्झे सुचिरंपि अच्छमाणो कायमणी न भवति, एवं साहूवि सुचिरंपि अच्छमाणो न चेव पासत्थादी भविहितित्ति अत्थ न दोस इति, न चैतत् प्रतिज्ञायते, यतोऽभिप्रायं त्वं न वेत्सि, तथाहि- न मयोक्तं यथा मनुष्यः तिर्यग्योगात्तिरश्चो भवति, यदि मयैतदुक्तमभ- ॥ २२ ॥

प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१०]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

वन्दनाध्ययन चूर्णौ ॥ २३ ॥

कुशील-संसर्ग-त्यागः

विष्यत्ततो युक्तमेवं वक्तुं यथा वैडूर्यः काचसम्मिश्रः किं न काचीभवति ?, किंतु मयोक्तं तस्स पासत्थादीसंवासेणं णाणदंसणादयो गुणा परिहायंति, आदर्शवत्, जथा आदरिसो अपरिसीलणाए सामाए वच्छो मलिणीभवति, या सा रूपदर्शनक्रिया सा तत्र परिहायति, तथा नानादर्शीभवति, एवं मयोक्तं-शीलं नश्यति मलिनीभवति, घनमूलोद्वर्तनेन सर्व एव नश्यति, अतो अनुक्तोपालंभः, किंच- वैडूर्यस्यापि वमणविरेयणउप्पादीहिं छाया कज्जति, आदर्शवत्, यो तु कायमणीणं मज्झगतो धरिज्जति, उप्पणादीणि न कीरंति, तस्स वण्णरसगंधफरिसादीणो हायंति, तम्हा संसग्गीवि विणासिया गुणाणं ॥ किंच-दुविहाणि दव्वाणि-भावुगाणि अभावुगाणि य, तत्थ वइरादीणि गंधादीहिं अभाविताणि, तहाविहा उ केवलिमाई, जं ते भावेतुं न सक्किज्जंति पासत्थट्ठाणेहिं, भावुगं छउमत्थस्स गंधो, सो न सक्काति तदभाविगं गंधतो, भाविगं तु पाडलादीहिं कवेलुगादी, स्याद् बुद्धिः-जीवदव्वंपि अभावुगमज्झे भविष्यति, अत उच्यते-(११२७) जीवो अणादिनिहणो पमादभावणभावितो य संसारे सो य मेलणदोसाणुभावेणं खिप्पं भाविज्जातित्ति । एत्थ संसग्गिविणासे दिट्ठंतो—

अंबस्स य० ॥ ११२८ ॥ निंबोदएणं कडुयएणं भूमि भाविता, अंबओ तत्थ जातओ, पुणोवि तेसिं परोप्परओ मूला संपलग्गा, तेण संसग्गिदोसेणं कडुयओ जातो, तम्हा संसग्गी विणासका अपात्रेहिं सह । आह- जदि संसग्गी गुणदोसे पमाणं ततो निग्गुणोवि गुणवंतेहिं सह मिलितो तारिसो भवतु, न च भवति, जओ सुचिरंपि अच्छ० ॥ ११२९ ॥ नलत्थंभो उच्छुमज्झे परिमलेणं उदएण य मूलेहि य कीस मधुरो ण जायति ?, उच्यते- विहितोत्तरमेतत्, भावुगअभावुगाणि य० गाथाए, यतः नलत्थंभो अभावुगो, जो पुण भावुको सो भाविज्जाति दोसेहिं वा गुणेहिं वा, जदि हि संसग्गिमविनासिका स्यात्ततो युक्त- ॥ २३ ॥

*** दोष-गुणानाम् संसर्गत्वं वर्णयते

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[१०]

वन्दना-ध्ययन चूर्णौ
॥ २४ ॥

कुशील-संसर्ग-त्यागः

मेवं वक्तुं, यस्मात्तु संसग्गी विनासिका भवत्यविनासिका च ततः प्रतिषिध्यते, अपत्थसंदेहोवि निविचीए अंगमित्तिकातुं। किंच-जे भगवन्तो जिनादयस्तेषां यत्र वा तत्र वापि वसतां नैव दोषा यत् आत्मसमुत्था उत्पद्यन्ते, किंतु तं वेतालेतूण गेण्हितव्वं जं सहूणं असहूणं च सव्वेसामेव वारणं अणवत्थपसंगाद्, अदोसवारणं च, जथा मरुएणं सेसावि परिचत्ता पुत्ता एयस्स परिरक्खण-निमित्तं अणवत्थादिनिवारणत्थं च, एवमिहावि, उक्तं च-"रण्णो गिहवतीणं च, रहस्सारक्खियाणि य ॥" सिलोगो। तत्थ यद्यपि सव्वेसिं ते दोसा न उप्पज्जंति तथावि सव्वेसामेव वारणं कतं, एवमिहापि वारणं, अहवा एक्को न विनट्ठ इति न घेत्तव्वं, सिद्धोऽप्यनयो न प्रशंसितव्यः, तस्मात्तैः सह संसगी वर्जनीया इति। पुणो आह- आलावादिमेत्तं संसग्गिं जदि करेज्ज ता किं ?, भण्णति- न कप्पति, यतो–

ऊणगसयभागेणवि० ॥ ११३० ॥ जथाऽरिट्ठे कट्ठं वा सिला वा लोहं वा दुपदं वा चतुप्पदं वा पडितं समाणं लवणी-भवति, तस्स लवणस्स उवरियो अंतो तस्स दव्वस्स हेट्ठिल्ला भाया जो तंमि लोणे पतिट्ठितो सो सहस्सतिमो होज्जा अतिरित्तो वा, एत्तिल्लियाएवि संसग्गीए उवरिमं असंबद्धमवि लोणीभवति अचिरेणं, एवमिहापि, एवं खलु सीलमंतो० ॥११३२॥ सीलमंतोवि होन्तओ ताणं थोवाएवि संसग्गीए णासति संवसणाणुमोदणादीहिं संजमाओ, इहलोगेवि ताणं तणएहिं दुच्चरिएहिं घेप्पेज्जा, एसोवि ताण मज्झेत्ति, आदिग्गहणेण न केवलं लवणागरे, अण्णोऽवि भंडखाइया नाम रसो अत्थित्ति सुणिज्जति, तत्थ लोहंपि जाव ओगाहिज्जति ताव फुट्टति, ओक्खिप्पंतो जत्तियं अवगाढं तं तत्थेव णट्ठं, जत्तियं न ओगाढं तत्तियं अच्छति, अतः एवमा-दिसु कारणेसु खणमवि ण खमं काउं० ॥११३३॥ किं पुण चिरओ ?, एवं सीलवान् तैर्मिलितः लहुं चेव भंडखाइयादिट्ठंतेण

॥ २४ ॥

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[१०]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

वन्दनाध्ययन चूर्णौ ॥ २५ ॥

लिंग-विचारः

नासति । तथा-गवासनानां स गिरः शृणोति, अहं च राजन् ! मुनिपुंगवानाम् । प्रत्यक्षमेतद्भवतापि दृष्टं, संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति ॥ १ ॥ तथा--हन्दि समुद्दमुवगतं उदगं लवणत्तणमुवेति हन्दीति उपप्रदर्शनार्थः । सीसो आह—दुविण्णेयो सुविहितदुविहितभावो, अहं च छउमत्थो, सव्वण्णूणमेव स विसयो, किं तु लिंगं दट्ठुं णमामि तिकरणपरिसुद्धेण भावेणत्ति । आयरिओ भणति--एवं तुमे लिंगं पमाणं कतं, अतः यदि ते लिंगं पमाणं तो नाम तुमं निण्हए वंदाहि सव्वे, सीसो भणति--न वंदामि, किं कारणं ?, जेण ते मिच्छादिट्ठी, जदि निण्हए लिंगी न वंदसि तो तुमं अप्पाणं अप्पमाणं करेसि, एवं लिंगमेत्तस्स वंदणगपवित्तिए अप्पमाणतायां प्रतिपादितायां सत्यामणभिनिविट्ठो चेव सामायारिजिण्णासया सीसो आह—

जदि लिंग० ॥ ११३६ ॥ जदि लिंगप्पमाणेणं पणमंतस्स य दीसते दोसो निण्हएणं, भावो य निच्छएण ण णज्जति, तो अम्हेहिं समणलिंगं दट्ठूणं किं कातव्वंति ?, आयरिया भणंति, तत्थ--

अप्पुव्वं० ॥ ११३७ ॥ अपुव्वं दट्ठूणं अब्भुट्ठेतव्वं, न नज्जति को सो? तेण विधाणेण एति, सो य इहइएहिं पारलोइएहि य अतिसएहिं जुत्तो, सो य आगतो एस तस्स देमित्ति, तेण नब्भुट्ठितो, तेन दुट्ठरुट्ठेण न दिण्णं, जथा सुवण्णभूमिं गता अज्जकालगा पसीसस्स मूलं, आसादणा य गुरूणं, तम्हा अब्भुट्ठेतव्वा, किमालंबणं किच्चा ?, साधुत्ति, अदिट्ठपुव्वे एवं, दिट्ठपुव्वाण जदि अब्भुट्ठाणरहितो अब्भुट्ठिज्जति, इतरो नवि, लिंगी पुण अप्पसुतो वा बहुसुतो वा उस्सग्गेण णऽब्भुट्ठिज्जति,अववादिण पुण ॥ २५ ॥ कारणं पडुच्च जतणाए सव्वंपि कीरेज्ज णिद्धंधसस्सावि, तत्थ गाथा--

वायाए नमोक्कारो०॥ ११३९ ॥ पढमं वायाए आलविज्जति अम्मुगत्ति, सागतंति वा, तथाविहं पडुच्च सहीलं नमो तंति,

***लिंग्मात्रे कर्तव्यता

प्रत

सूत्रांक

[१]

दीप

अनुक्रम

[१०]

वन्दना-
ध्ययन
चूर्णौ

॥ २६ ॥

हत्था वा उस्साविज्जंति, सीसेण वा वइसेसिति, संपुच्छणं किहं स्येयं भोत्ति,एताणि बाहिं एताणि चेव अंतोवि करेज्जा,उल्लावसं-
ल्लावे, सद्धिं वा अच्छेज्जावि, तत्थ छोभवंदणगं वा देज्जा अणाढाए आरभडं, सो वा संविग्गो अ,सो जाणति ताहे परिसुद्धंपि
दिज्जति, पुण वंदिज्जति एवं भट्टारगाणं गुणे पूयंतेणं, तत्थ पुण किं आलंबणं कातव्वं-

परियाय० ॥ ११४० ॥ परियाओ दीहो बंभचेरस्स पुव्वंति, परिसा वा से विणीतादी, एसो जदिवि न लइओ, पुरिसं
जाणाति कुलगणसंघकज्जाणि आयत्ताणि, आघवओ जदि न वंदिहामि तो लोगो सण्णतिं सुतिहितात्ति । अपि च-' प्रावचनी
धम्मकथी ' श्लोकः । तंमि वा खेत्ते तस्स गुणेण अच्छिज्जति, ओमोदरीयादीए वा काले पडितप्पति, आगमो वा से अत्थि
जथा ममं(संम)तिवायगस्स तं जुगमासज्ज,एवमादि कारणजातं पडुच्च जं जस्स अरिहं तं जोगं वावारं कुज्जा,अहवा कारणजातं
नाम पढिउकामो वा, तेण सुतणाणभत्तिए वंदिज्जत्ति । अह पुण पत्तकालाणिवि एताणि वायादीणि ण पउंजति तो इमे दोसा-

एताणि अकुव्वंतो० ॥ ११४१ ॥ जति न कुव्वति तो पवयणभत्ती न कता होति, ततो जे अभत्तिमन्तेहिंतो दोसा ते सो
करेज्जा रुट्ठो, जथा अजवालगवायगेणं बंधाविता साधू, जे य सो अभत्तिमंतो दोसे काहिति तेण सयं चेव कता भवंति, एसा
णाहव्वविही, जस्स जं जोगं तस्स तं कातव्वं । एत्थ सीसो आह-कोत्ति एत्तियं जाणिति ?, किं ताव तेहिं सव्वेहिवि ? जो होइ
सो होउ, आतविसुद्धिए णमन्तस्स निज्जरा फलं होइ, विवरीए न होति, जथा तित्थगरस्स जे तित्थयरगुणा पडिमासु०
॥ ११४२ ॥ लिंगं जिणपण्णत्तं० ॥ ११४३ ॥ आयरिओ भणति-अप्पणममति ! वंदणगं न जाणासि, यतो संता तित्थयर-
गुणा० ॥ ११४४ ॥ जे तित्थगरे संता गुणा आसी ते तित्थगरपडिमासु अध्यात्मना आलंबिऊण पणमिज्जंति, न पुण तत्थ

लिंग-
विचारः

॥ २६ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दनाध्ययन चूर्णौ ॥ २७ ॥

द्रव्यभावलिंगे

पणमिज्जति लट्ठगं चित्तकम्मं वण्णगादि वात्ति, णणु जदि एवं तो संता साधुगुणा जे ते पासत्थादिसु अध्यात्मना आलंबिऊण पणमिज्जओ को दोसो ?, उच्यते,पडिमासु सावज्जा किरिया नत्थि,जतो पडिमाओ न किंचि सावज्जं चिट्ठंति, ततः भट्टारगाणं गुणा तासु आरोवितूण वंदिज्जंति, एताए य बुद्धीए कम्मबंधो न भवति, निज्जरा चेव भवति, इतरेसु पुण पासत्थादिसु धुवा सावज्जा किरिया तो कहं तत्थ साधुगुणाध्यारोपः, सावज्जकिरियाजुत्तेवि य णं वंदमाणस्स समणुण्णाया ते भविस्संति, पासत्थेसु जे दोसा तेहिं लग्गिहिसीत्यर्थः । पुणो आह परः—

जइ सावज्ज० ॥ ११४५ ॥ आयरिओ भणति—कामं० ॥ ११४६ ॥ जादिविय पडिमाओ जथा मुणिगुणसंसरण-(कप्प)कारणं लिंगं । उभयमवि अत्थि लिंगे णवि पडिमासू भयं अत्थि॥११४७॥ नियमा जिणेसु उ गुणा पडिमाओ दिस्स जे मणे कुणति । अण्णे अ वियाणंतो कं मणउ मणे गुणे काउं ? ॥ ११४८ ॥ जह वेलंबगलिंगं जाणंतस्स नमतो भवति दोसो । निद्धंधसं विणातूण वंदमाणे धुवं दोसो ॥ ११४९ ॥ एवं न लिंगमेत्तमकारणतो अवगतसावज्जकिरियं नमणीयमिति ठावितं, भावलिंगमवि दव्वलिंगरहितमेवं चेव विभासितव्वमिति, भावलिंगगब्भं तु दव्वलिंगं न मणागवि विकप्पं, इतरत्थ उ विभासेति दर्शयन्नाह—

रुप्पं० ॥ ११५० ॥ उस्सग्गेणं जहिं दव्वलिंगं भावलिंगं च अत्थि सो वंदणिज्जो,जथा रूपकं जत्थ सुद्धं टंकं समक्खरं सो छेको भवति, रुप्पं जत्थ सुद्धं टंकं विसमाहतक्खरं सोवि रूवओ व छेओ न भवति, रुप्पं जत्थ असुद्धं टंकं सुद्धं सोवि सुतरां छेओ न भवति,रुप्पं जत्थ असुद्धं टंकंपि असुद्धं सोऽवि सुतरां छेदो न भवति, किं तु जत्थ दोण्णिवि सुद्धाणि सो छेओ, एवं सो ॥ २७ ॥

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दनाध्ययन चूर्णौ ॥ २८ ॥

संववहार्यः जत्थ उभयमवि अत्थि, एत्थ य रुप्पगत्थाणीया पत्तेयबुद्धा, जदा वा दव्वलिंगं नत्थित्ति न कोइ तेण पणमति । भणितं च-किह लिंगं न पमाणं उप्पण्णे केवलंमि जं णाणे । न नमंति जिणं देवा सुविहितणेवत्थपरिहीणं ॥ १ ॥ जदा दव्वलिंगं गहितं ताहे नमिज्जाति, टंकत्थाणीया निण्हगा, सच्चगं तेवि रयहरणगोच्छगधारी तथावि मिच्छद्दिट्ठी, जे पासत्थादी तेहिं भगवतो लिंगं गहितं,ण पुण सव्वं अणुपालेंतित्ति विसमाहतक्खरा,अहवा संविग्गावि जदा निक्कारणे वाउसगा हिंडंति एवमादि,तेवि विसमाहतक्खरा एवमादि विभासा ।वेरुलियएत्ति गतं प्रसंगेण भणितं ।

इदाणिं णाणेत्ति,आह-किं एतहिं सव्वाहिवि तिरिविडाहिं?, जो णाणी तं वंदामि,अण्णे गुणा होंतु मा वा, येन ज्ञानपूर्विका सर्वक्रिया, उक्तंच- जं अण्णाणी कंमं खवेति बहुयाहि वासकोडीहिं । तं णाणी तिहि गुत्तो खवेति उस्सासमेत्तेणं ॥१॥ जेण य सूयी जधा ससुत्ता ण णस्सती कयवरंमि पडियावि । जीवो तथा ससुत्तो ण नस्सति गतोवि संसारे ॥२॥ जेण य-णाणं गेण्हति णाणं गुणेति णाणेण कुणति किच्चाइं । भवसंसारसमुद्दं णाणी णाणट्ठिओ तरति ३ ॥ एवं भणिए आयरिओ भणति-लोगेवि णाणेण केवलेण कज्जं न साहिज्जति एगंतेण, किमंग पुण लोउत्तरे, जथा-

आउज्जणट्टकुसला णट्टिया० ॥ ११५६ ॥ जथा णट्टिया सा वीणाइयाउज्जणट्टेसु तत्थ जाणियावि रंगपरिवारिया जदि न णच्चति न वा भावत्थादीणि दावेति तो कुसलावि ण तं जणं तोसेति, अपि च णिंदं खिंसं च सा लभिति, जथा जाणमाणीवि पेच्छ ण णच्चति, छट्टासु ढुंकिया वा, एवमादि, चसद्दातो लाभमाओ य चुक्कति, एवं लोउत्तरेवि- **इय लिंगणाणसहिओ०** ॥ ११५७ ॥ एवं नट्टियात्थाणिओ समणो, आउज्जादित्थाणीयं बाहिरगं लिंगादि, नट्टसुत्तत्थाणीयं णाणं, जोगजुं-

ज्ञानवाद-खण्डनं

॥ २८ ॥

*** ज्ञानपक्षस्य खंडनं

जणत्थाणीयं चरणं, जदि चरणं णाणुपालेति तो सपक्खपरपक्खेहिं निंदिज्जति, जथा सा नट्टिया, मोक्खसोक्खं च न लभति ॥ जथा वा णतिं तरंतो जाणंतोऽविय तरितुं० ॥ ११५८ ॥ जदि काइयं किरियं न करेति तो वुज्झति, तम्हा दोण्णिवि संपदं लएति, मा णाणं गेण्हाहि एगंतेणं । उक्तं च-नाणं पगासयं० ॥ पुणो सीसो भणति- तुब्भेहिं गुणाधिके वंदणगं उवदिट्ठं, गुणहीणे पुण कंमबंधया, छउमत्थेण य सतिवि लिंगे अब्भंतरिया भावविसुद्धी ण णज्जति, अयाणंतो य गुणाधियं वा वंदावेज्जा गुणहीणंपि वा वंदेज्जा, जदि य गुणाधिकं वा बंदावेति न वंदाति वा तो पुव्वभणितेहिं दोसेहिं संबज्झति, एवं गुणहीणवंदणेवि, तेण वाउलिया मो किं अम्हेहिं कातव्वं ?, वरं तुण्हिक्का अच्छामो, अजाणमाणा किं काहामो इत्यभिप्रायः, आयरिया भणंति- नायमेकान्तः जथा न चेव नज्जंति गुणाहिया गुणहीणा वा, किं तु छउमत्थेणवि णज्जंति, कहं?-

आलएण० ॥ ११६० ॥ आलयो- वसही विहारो- मासकप्पादी ठाणं- हरियादिविरहितं चंकमणं- जुगंतरनिरुद्धदिट्ठी भासा- निरवज्जं वेणयियं तथा-विणयकंमं, आह- एतेहिवि न सक्का, जेण उदाइमारगमथुराकोट्टइल्लगादी केण जाणिता ? जथा एते एतसमायारत्ति, तेण न सक्का जाणितुं भावं ?, किंच- यं एतं बाहिभावं करणं एतं अणेगंतियं, तो किं इमेणं वंदणगादिवावारेणं ?, वरं अज्झप्पयसुद्धिं चेव पक्खीकरेमो, जतो एतस्सेवायत्ता फलसिद्धिः, तथाहि–

भरहो पसण्ण० ॥ १२-५१ ॥ ११६२ ॥ अब्भंतरं भरहो, जतो तस्स बाहिकरणविहूणस्सवि आभरितविभूसितस्स अज्झप्पविसुद्धीए चेव केवलनाणं उप्पण्णं, तस्स तं बज्झकरणं दोसउप्पादणकरं न जातं, बाहिरगं च रयहरणवंदणगादि गुणकरं ण जातं, बाहिरं उदाहरणं पसण्णचंदो, जतो तस्स पगिट्ठबाहिरकरणवतोवि अब्भिंतरकरणविगलस्स अहे सत्तमपुढविपायोग्गकम्मबं- ॥ २९ ॥

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दना-ध्ययन चूर्णौ

॥ ३० ॥

धोऽभूत् , पच्छावत्तीए अज्झप्पसुद्धीतो मोक्खो जातो, तस्सवि तं बज्झकरणं गुणकरणं न जातं, किं तु अज्झप्पविसुद्धी, अन्नो बाहिरकरणमणेगंतियंति किमणेणंति। एवं ववहारविधिमवियाणगं चोदगमवगाच्छिऊण एतंमि पक्खे अपायसंदंसणगब्भं पण्णविंति गुरुवो, जहा वच्छ! एते पत्तेयबुद्धा, तेसिं कदाइ एवं लाभो, सोऽविय पुव्वभवे उभयसंपदाए पत्तपुव्वो,तेण चेव भण्णति,आहच्च-भावकहणे करणं णासेंति जिणवरिंदाणं। सब्भावमयाणंता पंचहिं ठाणेहिं पासत्था ।११६३।।आहच्चभावो नाम कादा-चित्कः पत्तेयबुद्धलाभादी तस्स कहणे सति आगमे तं आलंबितूण केयी करणं- बाहिरमणुट्ठाणं णासेंति- परिहरंतीति भावः, य एवं करेंति ते जिणवरिंदाणं सब्भावमयाणंता तित्थगराणं जो सब्भावो जथा कत्थति ववहारविहीए पयट्टितव्वं,कत्थय निच्छयवि-धीए, कत्थ य उभयविधीए, कत्थ य बाहिरकरणं, एवं अभिंतरकरणे, उभये, एवमादि अनियतपवित्तिनिवत्तीहिं कज्जसिद्धित्ति, न पुण नियतं केणति, एस सब्भावो, तं अयाणंता पंचहिं ठाणेहिं-णाणायारादीहिं अहवा पाणातिवातादीहिं अहवा पासत्थादीहिं जाणि ठाणाणि तेहिं विषयभूतेहिं चरणं णासेंति, पासत्था सिद्धिपहस्स पासे ठिता, ते य आहच्चभावं पत्थिता कीसिहिन्ति, जथा सो बोद्दो, कोइ बोद्दो एगाए इट्टगाए अप्फिडिओ, तत्थ तेण दीणारो दिट्ठो, सो तेणं न लइओ, भणति- अण्णाओवि इट्टगाओ अत्थित्ति सो गतो, सो य अण्णेणं लइओ, घरं गतो माताए कहेति, सा भणति- दुट्ठु ते कतं जं सो न लइओ, सो भणति-कित्तिओ आणेमित्ति, बाहिरियाए जत्थ जत्थ इट्टगं पेच्छति तत्थ तत्थ पादे अक्खलिओ अप्पगं पाडेति, सो छोडियडिक्को गतो, न य किंचिवि लद्धं, एवं तुमंपि संसारे सुचिरं भमिहिसि, बोहिदीणारं लद्धुं आहच्चभावालंबणेण अकरेंतो अण्णे बोधिदीणारे अलभंतो इत्ययमभिप्रायः, जथा- ववहारविधी एसो, तेण पायं आलयादीहिं लक्खिज्जति सुविहितऽसुविहिता, जदिवि य कत्थइ

ज्ञानवाद खण्डनं

॥ ३० ॥

प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१०]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

वन्दनाध्ययन चूर्णौ ॥ २१ ॥

दर्शनपक्ष खण्डनं

न लक्खिज्जति तहवि आगमोवयोगतो पयत्तो सुद्धो चेव, तम्हा आगमोवउत्तेहिं पयत्तेहिं सव्वमणुट्ठाणमणुसीलणीयंति एस कप्पो अम्हंति, जे पुण जदिच्छालंभं गहाय अण्णोसिं सत्ताणं संसारं नित्थरितुकामाणं उम्मग्गं देसयंति तत्थ गाथा-॥ १२-५३ ॥ ॥ ११६४ ॥ उम्मग्गदेसणाए करणं- अणुट्ठाणं णासेंति जिणवरिंदाणं, संमत्तं अप्पणो अन्नेसिं च तं वावण्णं ते वावण्णदंसणा, जेण ते करणं न सद्दहंति, मोक्खे य विज्जाए करणेण य भणितो, अण्णेसिं च मिच्छत्तुप्पायणेणं एवमादिएहिं कारणेहिं वावण्णदंसणा, खलुसद्दा जदिवि केई निच्छयविधीए अवावण्णदंसणा तहवि वावण्णदंसणा इव दट्ठव्वा, ते य दट्ठुंपि न लब्भा, किमंग पुण संवासो सभाजणो संथवो वा, तुसद्दो अविसद्दत्थो, सो य ववहितसंबंधो दरिसितो चेव, न लब्भा नाम न कप्पंतीति। णाणेत्ति गतं।

इदाणिं दंसणेत्तिदारं, दंसणं गहाय उवट्ठितो सीसो,जदि वावण्णदंसणा दट्ठुंपि न कप्पंति तो जे दंसणिणो ते मम पुज्जतरा, तत्थ चेव घणं लग्गितव्वं, जेण य सम्मत्तमूलियाणि सव्वाणि ठाणाणि, उक्तं च--द्वारं मूलं प्रतिष्ठासं० ॥ अतः सम्यग्दर्शनावगाढेन भवितव्यं। एवं च जारिसा आलंबंति तान् भणति आयरिओ--धम्मनियत्तमईया० ॥१२-६१॥ ११६९ ॥ चरित्तधम्माओ नियत्तमतीया, परलोगो-निव्वाणं तस्स परंमुहा, किंनिमित्तं ते एवंविधा ?, जतो विसएसु गिद्धा जेण विसयलोलुयसाए य चरणकरणं काउमसत्ता,ते य एवंविधा-सपक्खसंधारणत्थं सेणियरायं आलंबणं करेंति,किहं?-ण सेणिओ आसि तथा बहुस्सुओ० ॥ ११७० ॥ वृत्तं वंशस्थं। अविय- मोक्खस्स परमं साहणं संमत्तं चेव, तेण भट्ठेण चरित्ताओ० ॥ ११७१ ॥चरित्तविसुद्धीए भट्ठेण सुद्दुतरं दंसणे लग्गितव्वं, जेण सिज्झंति चरणरहिता दंसणरहिता ण सिज्झंतित्ति। एत्थ आयरिया भणंति-

॥ २१ ॥

*** दर्शनपक्षस्य खंडनं

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[१०]

नाणचरणरहितेणं दंसणेणं मोक्खो न भवति, जथा—

जह तिक्खरुईवि० ॥ २२ प्र. । इय नाण० ॥ २३ प्र. ॥ जं च भणासि न सेणिओ आसि तदा बहुस्सुओ न यावि पण्णत्तिधरो न वायगो तेणं चेव (नरगं गतो, जहा) बोराणि, जथा--एगो भाइणेज्जस्स घरं गतो पाहुणओ, तेण तस्स बोरचुण्णो दिण्णो, भणति-माम! मए अइसमं करिसणं न कतं, पच्छा सो भणति--भाइणेज्जातो चेव बोराणि । एवं सिस्सा जेणेव सेणिओ अबहुस्सओ तेण चेव नरगं गतो, तथा च--दसारसीहस्स य सेणियस्स० वृत्तं उपेन्द्रवज्जा (११७२) दसारसीहो कण्हवासुदेवो, सेणिओ उ पसेणइसुतो, पेढालपुत्तो सच्चती, एतेसिं अणुत्तरा खाइयदंसणसंपदा तदावि चरित्तेण विणा अधरं गतिं-नरकगतिं गता । अण्णं च--सव्वाओवि गतीओ० ॥ ११७३ ॥ जदि चरणरहिता सिज्झंता दंसणनाणेहिं चेव तो तव बुद्धीए नेरतिया तिरियावि देवावि अकंमभूमिगावि सिज्झेज्जा, जतो णाणदंसणा तत्थावि अत्थि, न य सिज्झंति, तेण दंसणं चेव असाहगं, अविय-मिच्छद्दिट्ठीयावि अणंतरागता मणुस्सेसु उववण्णा चरणगुणेण केइ सिज्झति, तो को व तव दंसणे असग्गहो ?, जं तुमं भणसि--दंसणं घणं परिघेत्तव्वंति ?, किं च-चरित्ते ठितेण दंसणं घणं गहितं चेव भवति । जतो-संमत्तं अचरित्तस्स होज्ज भयणाए नियमसो नत्थि । जो पुण चरित्तजुत्तो तस्स हि नियमेण संमत्तं ॥ ११७४ ॥ जो पुण चरित्तं कातुमसमत्थो तस्स ताव दंसणपक्खोवि भवतु, जतो--

दंसणपक्खो सावग चरित्तभट्ठे य मंदधम्मे य० ॥ ११७७ ॥ सावओ न सक्केति विसयगिद्धो पव्वइतुं, सो भणति--दंसणंपि ता मे होतुत्ति तस्स स पक्खो, चरित्तभट्ठे वा एवं चेव, मंदधम्मे वा जो गहितं भंजति, जो पुण चरित्तं कातुं सत्तो

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[१०]

वन्दना-ध्ययन चूर्णौ

॥ ३३ ॥

नेव्वाणकंखी समणो तेण दंसणपक्खो चरित्तपक्खो य लएतव्वो, दंसणे नियमा नाणंति तिण्हं समायोगेण णेव्वाणं लब्भतित्ति। पुणब्भूतलोयणेण सीसो आह--जदि अणुत्तराएवि दंसणसंपदाए णाणे य होन्तएण अधरिं गतिं गम्मति, चरित्तं चेव पहाणं मोक्खसाहणं, तंमि चेव वरं पयथितव्वं, किं णाणदंसणेहिं ?, आयरिया भणंति--तं चरित्तं णाणदंसणविरहितं न चेव भवति, तम्हा तमिच्छंतेण णाणदंसणेसु पयइतव्वं, अन्नहा न चेव पयतितं चरणे भवति, जतो तप्पुव्विगा चरणस्स य सिद्धी इति, आह च--

पारंपरप्पसिद्धी०॥११७८॥ दंसणणाणेहिं पारंपर्येण चरणस्स पगिट्ठा सिद्धी भवति, जथा रुईए विण्णाणे दंसणे य तहाविहाणं अण्णपाणाणं पारंपर्येण पगिट्ठा सिद्धी भवतित्ति। णणु जदि एवं से तो किं चरणं विसेसिज्जति?, भण्णति, **जम्हा दंसणणाणा०**। आह--णाणदंसणचरित्ततवेसु जेत्तियं सकति उज्जमितुं तात्तिएण चेव गुणो भवति, तुम्हच्चए पुण चरणे जदि सव्वं न पालति तो विराहगं भणह, तो कहं उज्जमितित्था?, जेत्तियं पुण सक्केमो तेत्तियं उज्जमंताणं सेसं अकरेंताण किमिति गुणं न भणह ?, भण्णाति, **अणिगूहेन्तो विरियं न विराहति करणं तवसुतेसु** (११८१) तपःश्रुतयोः यत्करणं तं अनिगूहंतो विरियं जदि करेति तो न विराहेति। एवं जदि संजमेवि विरियं न निगूहज्जा-न हावेज्जा। **संजमजोगेसु सदा०** ॥ ११८२ ॥ आह-जे पुण आलंबणमासृत्य बाहिरकरणालसा भवंति तेसिं का वार्ता इति ?, उच्यते--

आलंबणेण० ॥ ११८३ ॥ आलंबणेण 'काहं अछित्तिं अदुवा अधीहं' इत्यादिना केणइति जे **भणणे संजमं पमादेंति** न हु तं-आलंबणमेत्थं पमाणं भवति, किंतु भूयत्थगवेसणं कुज्जा किं तु पुट्ठआलंबणं तहेव उयाहु अपुट्ठं-अण्णहा, एवमादिभूतत्थगवेसणं कुज्जा। णणु पुट्ठालंबणेण संजमं पमादेंतस्स किं कोति विसेसो उपजायते जेण सो आराहगो भवति ?, उच्यते--

आलम्बन-वाद खण्डनं

॥ ३३ ॥

*** आलंबनवादस्य खंडनं

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दना-ध्ययन चूर्णौ ॥ ३४ ॥

आलम्बन-वाद खण्डनं

सालंबणो पडंतो० ॥११८४॥ इहालंबणं दुविहं- दव्वालंबणं भावालंबणं च, दव्वालंबणं गड्डादिसु पवडंतेहिं आलंबिज्जति जं दव्वं, तंपि दुविहं-पुट्ठमपुट्ठं च, अपुट्ठं दुब्बलं कुसप्पयगादि, पुट्ठं बलियं तथाविहं वेल्लिमादि, एवं भावालंबणंपि अपुट्ठं जं णाणादिउवगारे ण सुट्ठु वहति, पुट्ठमितरं, उक्तं च--काहं अछित्तिं अदुवा अधीहं, तवोवहाणे उ उज्जमिस्सं । गणं व णीती अणुसारविस्सं, सालंबसेवी समुवेति मोक्खं ॥ १ ॥ तदेवं जधा पुट्ठालंबणो पडंतोवि अप्पगं दुग्गमे धारेति एवं पुट्ठालंबणसेवा धारेति जतिं विराहणागड्डए पडंतं असढभावं । व्यतिरेकमाह-आलंबणहीणो० ॥ ११८५ ॥ एवं दंसणंति गतं । इदाणिं णीयावासे य जे दोसेत्ति दारं--

जे जत्थ जदा० ॥ ११९६ ॥ अयमभिप्रायः-जथा चोरगहितो असमत्थो वाउलिओ विप्पलवति एवं एतेवि चरित्तादीणि असमत्था अणुपालेतुं तो जत्थ चेव ठिता तत्थ चेव बितिज्जगं, मग्गं वा इमं पहाणं घोसंति, जथा सिणपल्लिं सत्थो पविट्ठो, अण्णो जणोवि उत्तिण्णो, सीतलासु छायासु पाणियाणि पिइत्ता सुहं सुहेण विहरति, अण्णे पुण परिस्संता पविरलासु छायासु जेहिं वा तेहिं वा पाणिएहिं पडिबद्धा एगवासे अच्छंति, अण्णे य सद्दावयंति, इहं इमं चेव पहाणं, इहवि ते चेव गुणा तत्थवि ते चेव, तत्थ य सत्थे केइ तेसिं पडिसुणेंति केइ न सुणेंति, जे सुणेंति ते तण्हाछुहातवादियाणं दुक्खाण आभागी जाता, जे न सुणंति ते खिप्पामेव अद्धाणसीसयं गंतु उदगस्स सीतलस्स छायाणं आभागी जाता, एवं इमे पासत्थादयोऽवि सकलं चारित्तं असमत्था अणुपालेतुं तो भणंति इमाणि पाणात्रिधाणि आलंबणाणि णाणदंसणादीणि, किं च-जाणि थेरेहिं कारणाणि आसेवियाणि असढेहिं ताणि ते आलंबणाणि करेंति, एवं जथा ते पुरिसा सीदंति तहा एतालंबणा पासत्थादीवि, जथा ते निच्छिण्णा

॥ ३४ ॥

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

वन्दनाध्ययन चूर्णौ || ३५ ||

आलम्बन वाद खण्डनं

तथा सुसाहुत्ति । काणि पुण थेरेहिं कारणेहिं आसेविताणि असढेहिं जाणि ते आलंबंति ?, भण्णति—

नीयावासविहारं० || ११८७ || केण पुण कारणेण ते एवं आलंबेंति?, उच्यते-जाहेविय **परितंता०**|| ११८८ || तथाहि-एगो पव्वइओ परितंतो भमिउं ताहे एगत्थ अच्छति, अण्णे साधवो भणंति-किं अज्जो ! हट्ठसमट्ठो अच्छासि?, न वहसि, विहराहि, भणितं च '**अणियतवासो**'त्ति, सो भणति- को एत्थ दोसो जदि अच्छिज्जति, जादि दोसो होति तो **संगमथेरा ण** अच्छंता, किह संगमथेरात्ति ?, तेसिं उप्पत्ती-कोल्लइरं नगरं संगमथेरा, दुब्भिक्खेणं पव्वइयगा विसज्जिता, ते तं नगरं नवभागे कातूणं जंघाबलपरिहीणा विहरंति, नगरदेवता य तेसिं किर उवसंता, तेसिं सीसो दत्तो नाम आहिंडओ, चिरेणं कालेणं उदंतवाहओ आगतो, सो तेसिं पडिस्सयं न पविट्ठो नियतवासित्ति, भिक्खावेलाए ओगाहितं हिंडंताणं संकिलिस्सइ, कोंटो सड्ढकुलाइं न दावेतित्ति, तेहिं नातं, एगत्थ सेट्ठिकुले रोइणियाए गहितओ दारगओ, छम्मासा रोवयंतस्स, आयरिएहिं चप्पुडिता कता--मा रोवात्ति, वाणमंतरीए मुक्को, तेहिं तुट्ठेहिं पडिलाभिता जहिच्छितेणं. सो विसज्जितो, एताणि अकुलाणित्ति आयरिया सुचिरं हिंडितूणं अन्तं पन्तं गहाय आगता, समुद्दिट्ठा , आवस्सए (भणंति-) आलोएहि, भणति-तुब्भेहिं समं हिंडितो मि, धातीपिंडो ते भुत्तो, भणति-अतिसुहुमाइं पेच्छिहित्ति बइट्ठो, देवताय अड्ढरत्ते वासं अंधकारो य विगुरुव्वितो एसो हीलोतित्ति, आयरिएहिं भणितो-अतीहित्ति, सो भणति-अंधकारोत्ति, आयरितेहिं अंगुलीए दाइतं, सा पज्जालिता, आउट्टो आलोएति, आयरियावि से णवभागे परिकहंति, एवं एस पुट्ठालंबणो ण होति सव्वेसिं नितियावासीणं व्यपदेशः । अण्णे चेतियाणि नीसं करेंति, अहं चेइयाणि सारवेमि, णत्थि कोइ सारवेन्तओत्ति,तेण ण उज्जमामि, कुलकज्जं वा करेमि, एवं गणसंघ० एतेसिं चेव वेयावच्चं कातव्वं चेव, || ३५ ||

***नित्यवासे संगमस्थवीरादिनां द्रष्टांतानि

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दना-ध्ययन चूर्णी ॥ ३६ ॥

आलम्बन-वाद खण्डनं

जथा विण्हुणा मधुरासमणगेण वा कतं, अण्णं वा किंचि आलंबेति, अहवा अज्जवइरसामी किं अजाणओ ?, तो दव्वत्थओ भट्टारगाणं कओ, तो अहंपि करेमि, नत्थि एत्थ दोसो। एवमादीणि अभिगिज्झ अकिच्चाणि सेवंति, ताणि पुण पुप्फाणि अग्गिघरे पुव्वुक्खताणि धूवेण य अचित्तीकताणि अण्णाणि य कारणाणि न गणंति, ताहे ते भणंति-अज्जो! चेइयकुलगणसंघे आयरियाणं च पवयण सुते य। सव्वेसुवि तेण कतं तवसंजममुज्जमंतेण ॥ १ ॥

अण्णो पुण अज्जिताहिं भत्तपाणं आणीतं लएति, सो भण्णति- अज्जो ! न वट्टति, भणति-को दोसो?, जदि ण वट्टेज्जा तो अण्णियपुत्ता पुप्फचूलाए आणिएल्लयं न भुंजंतो, तेणेव य भवेणं सिद्धो, तो के अत्थ दोसोत्ति। कहाणगं जोगसंगहे भ-ण्णिहिति। सो भण्णति-जे थेरा जंघाबलपतिहीणा तवस्सी बहुस्सुता ता कज्जं अकज्जं वा जाणंति तुमं छिद्दगाही परिपूणगो जथा, एक्केण असंमं आचरितं पमाणं, जं रिसिसहस्सेहिं अणाचरितं तं गेण्हासि असब्भावं, थेरीकरितुं मग्गासि, अप्पाणंपि दुहहतं करेसि, एकं ता चरसि, बीयं पण्णवेसि असब्भावं। अण्णो रसपडिबद्धो साहूहिं वारिज्जति-ण वट्टति रसपडिबंधो, रसपरिवज्जणता तवो, सो भणति-को दोसो ?, जदि अकप्पो होज्जा तो उदाइणो रज्जं परिचत्ता ण तं भुंजेज्जा, तस्स उप्पत्ती-उदाइणो राया पव्वइओ, तस्स भिक्खाहारस्स वाही जातो, सो वेज्जेण भणितो-दधिणा भुंजाहि, सो किर भट्टारओ वतियाए पत्थितो, अण्णदा तं नगरं गतो वितिभयं, तस्स भाइणेज्जो केसी तेणं चेव रज्जे ठवितओ, सो कुमारामच्चेहिं भण्णति-एस परिसहपराजितो आगतो, रज्जं मग्गति, देमि, ते भणंति- न एस रायधम्मोत्ति वुग्गाहेंति, सुचिरेण पडिस्सुतं, किं कज्जतु ?, विसं से दिज्जउ, एगाए पसुवालि-याए घरे पउत्तं दहिणा समं देहित्ति, सा पदिण्णा, देवताए अवहितं, भणिओ य-महारिसी ! तुब्भं विसं दिण्णं, परिहराहि दधिं,

॥ ३६ ॥

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[१०]

वन्दना-ध्ययन चूर्णौ

॥ ३७ ॥

आलम्बन-वाद खण्डनं

सो परिहरति, सो रोगो वद्धति, पुणो य जिमितो, पुणो देवताय अवाहितं, ततियाए वेलाए देवताए वुच्चति, पुणरवि दिण्णंति, तंपि अवहितं, सा तस्स पहिंडिता, अण्णदा पमत्ताए देवताए दिण्णं, कालगतो, तस्स य सेज्जातरो कुंभारो सावओ, तंमि कालगए देवताए पंसुवरिसं पाडितं, सो सेज्जातरो अवाहितो, णाहं अब्भंतरोत्ति, सिणवल्लीए कुंभारपक्खेवं नाम पट्टणं तस्स नामेणं जातं, तत्थ सो अवहितो, तं सव्वं नगरं पंसुणा पेल्लितं, अज्जवि पव्वतो अच्छति । ते एत्थ उदायणं, सो त पासत्थादी भत्तं वा पाणं वा० ॥११९७॥ भत्तं-ओदणादि पाणं-मुद्दियपाणगादि भुंजंताणं लावलवियं-लोलियाए उववेयं असुद्धं-विगतिमिस्सादि, तथा च अकारणे पडिसिद्धो चेव विगतिपरिभोगो, उक्तं च-विगइं विगतीभीओ विगतगतं जो य भुंजए साहू। विगती विगतिसहावा विगतिं विगती बला नेइ ॥१॥ तो केणति साहुणा चोदिता वज्जपडिच्छित्ता ओदायणं ववदिसंति, अहवा जे वज्जेण पडिच्छादिता ते एवं ववदिसंति-ते भणंति, तेणं वाधितेणं सेवितं तुमं किं वाहितो?, ते चेव पुव्वभणिता दोसा एत्थावि, किं च-तुमं नवि मासं मासं अच्छासि, जदि तं आलंबसि तो सणंकुमारं किं न आलंबसि?, एवं नीयावासादिसु मंदधम्मा संगमथेरादीणि आलंबणाणि आलंबिऊण सीयंति, अण्णे पुण सुत्तत्थादीणि अधिकृत्य सीदंति । तथा च--

सुत्तत्थ बालवुड्ढे असह दव्वादिआवतीओ या । निस्साण (ग्रं.१४०००) पदं काउं संथरमाणा विसीदंति ॥ ११९०

॥ ३७ ॥

सुत्तं जथा- अहं पढामि ताव किं मम अण्णेण ?, एवं अत्थं, एवं बालत्तं, बालो अहं,बालो वा मम परिवारो तं ताव पालेमि, एवं वुड्ढा, असहू वा अहं, असहू वा मम परिवारो, एवं दव्वावदा दुल्लभमिदं दव्वं, खेत्तावदा खिलत्तं खेत्तं, कालावती दुब्भिक्खादि, भावावदी गिलाणोऽहं, एवमादी णिस्सापदं कातुं संथरमाणावि जदिवि तथावि संथरंति तोवि केई मंदधम्मा विसीदंति अप्प-

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दनाध्ययन चूर्णौ

॥ ३८ ॥

सत्ता, जदि पुण जं वा तं वा आलंबणं आलंबिज्जति तो—

आलंबणाण लोगो भरितो० ॥ १२०० ॥ किं च-दुविधा जीवा- मंदसद्धा तिव्वसद्धा य, तत्थ जे मंदसद्धा ते एवंविहे आलंबेति, जे जत्थ जदा० ॥ १२०१ ॥ जे केति पासत्थादी जत्थ गामे वा णगरे वा जदा काले आसी बहुसुता चरणकरणपब्भट्ठा ते मंदधम्मा णीसाणं करेंति- अमुतो आयरिओ बहुस्सुतो सो पासत्थो, सो किं अयाणओ ?, णूणं एवंविधो चेव धम्मो भट्टारएहिं दिट्ठोत्ति निद्धम्मा आलंबेंति, ते य भाणितव्वा- जदि तेण नीसाणेण पडिसेवसि तो तेसु खेत्तेसु तंमि काले बहुस्सुता उत्थिता य तेसिं पच्चएण सुट्ठुतरं करेहि, अह ते ण आलंबसि इतरे आलंबसि तो सड्ढादी आलंबणं करेत्ता सड्ढादी होहि निस्सीलो, जदि आलंबणेहिं कज्जं तो अण्णाणिवि एयप्पगाराणि आलंबणाणि, ताणं च सव्वलोगो भरितो, अजतुकामो य जं जं पेच्छति तं तं सव्वं चेव आलंबति, सड्ढियाण पुण जे जत्थ जदा० ॥ १२०२ ॥ तम्हा- दंसणणाणचरित्ते० ॥ १२०३ ॥ दंसणायारे अट्ठविहे नाणायारे अट्ठविहे चरित्ते अट्ठविहे तवे बारसविहे विणए चउव्विहे जो पासे अच्छति सो पासत्थो, पासत्थो वा जो वीसत्थो अच्छति, एते जसघाती पवयणस्स, कहं ?, जदि एत्थ एतं न वट्टति तो कीस एते सेवंति ?, णूणं एस विधी अत्थित्ति, पुव्वं समणगुणेहिं अहिज्जंतेहिं जसो आसी, इमेहिं सेवंतेहिं ताणि ठाणाणि जसो घातितो तेणं ते जसघाती पवयणस्स, तम्हा ते णूणं अवंदणिज्जा, णणु ते जदि किंचि काहिंति तेसिं चेव मत्थए पडिहिति अम्हे किमिति तेहिं समं वेरं लएमो ?, भण्णति- कितिकम्मं च पसंसा० ॥ १२०६ ॥ जो करेति पसंसति वा बहुस्सुतो सुसीलो विणीतो एवमादि सो कंमबंधे वट्टति, कहं ?, जेण जे जे पमादट्ठाणा पंचसु महव्वतेसु उत्तरगुणेसु य ते ते उववूहिता ता मोति- समत्थिता, अणुमता इत्यर्थः, पुव्वं ते संकंति,

आलम्बनवाद खण्डनं

॥ ३८ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दनाध्ययन चूर्णौ

॥ ३९ ॥

वन्द्यवन्दक विचारः

वंदिज्जंता ते नीसंकिता होंति, एतेसिंपि अणुमतंति । अहवा अण्णे पव्वतितुकामा तेसिं मूले न पव्वयंति पासत्थत्ति, संविग्गेहिं वंदिज्जमाणे दट्ठुं तत्थ पव्वयंति,एवमादिणा उववूहिता भवंति,तो न केवलं तेसिं मत्थए, तत्थवि अणुमती होज्जा, जे पुण विपरीता संविग्गा तेसु कितिकंमं पसंसा य निज्जरट्ठाए, जेण जे जे विरतिठाणा ते ते अणुमता होंति । नीतावासेत्ति गतं ॥ एते पासत्थादी पसंगेण भणिता, एते सव्वे किल न वंदेज्जा, जे पसत्थगुणेहिं वट्टंति ते वंदितव्वा, इमे य ते संगहतो–

आयरिय उवज्झाए० ॥ १२०७ ॥ एते विभासितव्वा । तत्थ आयरिया वंदेयव्वा सव्वेहिवि, जदिवि ओमरायणिया पच्चक्खाणआलोयणादिसु, तंमि वंदिते इमऽवि अतिसेसतित्ति तेवि वंदितव्वा, पच्छा उवज्झाओ ओमराइणिओवि, पवित्तीवि पवत्तयतीति, सीदंतं थेरो थिरीकरोतीति सामायारीए,पच्छा ओमोवि गणावच्छेदिओ सो गच्छस्स वत्थपातादीहिं उवग्गहं करेति, एते किर ओमावि वंदिज्जंति. एसो एतेसिं आदेसो । अण्णे पुण भणंति- अण्णोवि जो तथाविहो रायणिओ सो वंदितव्वो, रायणिओ नाम जो दंसणणाणचरणसाधणेसु सुट्ठु पयतो, एतेसिं कितिकंमं णो इहलोगट्ठताए वंदेज्जा नो परलोगट्ठताए नो कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठताए, नण्णत्थ निज्जरट्ठताए,विसेसओ नीयागोत्तकंमक्खवणट्ठताए अट्ठविहंपि माणं निहाणिऊणं। कस्सत्ति गतं।

इदाणिं केणंति दारं । एतेहिं को कितिकंमं कारवेतव्वो?, ताव तत्थ उस्सग्गतो इमे ण कारवेज्जा, मातरं०॥ १२०८ ॥ किंनिमित्तं? लोएवि गरहितं,ताणं च विप्परिणामो होज्जा, पुव्विं अम्ह एतस्स पुज्जाणि आसि,इदाणिं अवमाणेति,(अव)माणो य तेसिं जथा पुत्तो वंदावेति, देवताणि अम्हे एतस्सत्ति, एवमादि । एवं पिता जेट्ठभाता, रायाणियावि । एताणि य पव्वतिगाणि गहिताणि, सड्ढेसु का पुच्छा ?, ताणि वंदंति चेव, जदि पुण ताणिवि भणेज्जा- अम्हे तुमे विणयमूलाओ धम्माओ फेडिता होमो

वंद्य- वंदकस्य विचारणा क्रियते

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दना-ध्ययन चूर्णौ ॥ ४० ॥

वन्द्यावन्द्य-कालः

मा वारेहित्ति, तो वंदावेति । जदि पुण पढंति तो सव्वाणिवि वंदाविज्जंति जतणाए, किमिति ?, सुतं भट्टारगं वंदिज्जातित्ति, इहरहा णाणविणओ विराहितो भवति, एते दिट्ठा जे न कारेतव्वा,नवरं कारणे उद्देसादीए कारवेतव्वा,अहवा धम्मसड्ढिया भणेज्जा-अम्हे वंदामो, ताहे वंदाविज्ज, जे पुण अण्णे साधुणो ते कारवेतव्वा, तेहि य एवंविहेहिं होतव्वं–

पंचमहव्वत० ॥१२०९॥ पंचहिं महव्वएहिं जुत्तो अणलसो-ण परितंमति अट्ठमयट्ठाणवज्जितमतीओ, संविग्गो दव्वे मिगो भावे संविग्गो सव्वतो अवज्जस्स बीहेति, उक्तं च--मृगा यथा मृत्युभयस्य भीता, उद्विग्नवासे न लभंति निद्राम् । एवं बुधा ज्ञान-विशेषबुद्धाः, संसारभीता न लभंति निद्राम् ॥ १ ॥ नीयागोतादिस्स कंमस्स निज्जरट्ठी य, एरिसो कितिकंमकरो भवति ॥ काहेत्ति दारं । काहे कातव्वं काधे न कातव्वं, इहं ताव न कातव्वं––

वक्खित्त० ॥ १२१० ॥ वक्खित्तं पोल्लादीहिं सुत्तत्थचिंतणादीहिं वा परंमुहं पमत्तयं कोधादिणा पमादेण आहारंते अंतरादीयं सीतलं वा होज्जा, एवमादि वित्थरतो विभासेज्जा ॥ इह कातव्वं––

पसंते० ॥ १२११ ॥ पसंतो ण आकुलमणो आसणे णिसेज्जाए सुहनिविट्ठो उवसंतो न उ कुद्धो उवाट्ठितो छंदेणंति भणति,अणुण्णवणाए दुवे आदेसा,जाणि धुवाणि वंदणगाणि तेसु ण संदिसावेति,जाणि कज्जेसु उप्पात्तियाणि तेसु संदिसावेति,तो सुहं पच्छा होहिति, मेहावी पुव्वभणितो ॥ इदाणिं कतिक्खुत्तो कातव्वं दारं, तत्थ नियताणि अनियताणि वंदणाणि भवन्ति, ॥ ४० ॥
अतो उभयट्ठाणाणि दारगाथाए दंसेति—

पाडिक्कमणे सज्झाए० ॥ १२१२ ॥ तत्थ नियमा चोद्दसखुत्तो, उप्पात्तियाणि बहुधावि होज्जा, पुव्वसंझाए चत्तारि-पाडि-

*** वंदन-संख्या दर्शयते

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[१०]

वन्दना-
ध्ययन
चूर्णौ
॥ ४१ ॥

कमणे वंदित्ता आलोएंति एक्कं, बितियं जं अब्भुत्थितावसाणे मज्झे वंदंति, मज्झवंदणए कति वंदितव्वा ?, जहण्णेणं तिण्णि मज्झिमेणं पंच वा सत्त वा उक्कोसेणं सव्वेवि, जदि वाउला वक्खेवो वा तो एगेण ऊणगो दोहिं तिहिं जाव तिण्णि अवस्स वंदितव्वा, एवं देवासिएवि, पक्खिते पंच अवस्सं, चातुम्मासिए संवत्सरिए य सत्त अवस्सं, ते वंदितूण जं आयरियस्स अल्लिवि- ज्जति तं ततियं कितिकंमं, पच्चक्खाणे चउत्थं कितिकम्मं । तिण्णि सज्झाए-वंदित्ता पट्ठवेति पढमं, पट्ठविते पवेयंतस्स बितियं, पच्छा पढति, ततो जाहे चउब्भागावसेसा पोरिसी ताहे पादे पाडिलेहिति, जदि न पढति तो वंदति, अह पढति तो अवंदित्ता पातं पडिलेहेतूणं पच्छा पढति, कालवेलाए वंदितु पडिक्कमति, अह उग्घाडकालियं न पढति ताहे वंदितुं पाए पडिलेहिति, एतं ततियं, एवं पुव्वण्हे सत्त, एताणि अब्भत्तट्ठितस्स नियमा, भत्तट्ठितस्स पच्चक्खाणं अब्भहितं, एताणि अवस्सं चोद्दस । इमाणि कारणिजाणि उद्देससमुद्देसअणुण्णवण्णासु सत्त, विगति आयंबिल काउस्सग्गे परियट्टिएँ समाणे । उवसंपज्जणअवराधविहारा उत्तिमट्ठालोयणाए य ॥१॥ एतेसुवि दो दो वंदणगाणि, अवराधसंवरणआपुच्छणाकालप्पवेयणादिसु एक्केकं, अवराधो गुरूणं कतो तंपि वंदित्ता खामेति, पक्खियवंदणगाणिवि अवराहे पडंति, पाहुणगत्ति एत्थ भण्णति-पाहुणगाणमागताणं वंदणगं दात- व्वं वा पडिच्छितव्वं वा, तत्थ को विधी?, जदि संभोइया तो आयरिए आउच्छित्ताणं वंदंति, अह न संभोइया तो अप्पणगं आय- रियं वंदित्ता संदिसावेत्ता वंदति,एवं उभयपक्खेऽवि। आलोयणंति,जाहे विहारालोयणा अवराहालोयणा वा उवसंपज्जणालोयणा वा, संवरणं वेतालियं अंतरा वा, भत्तट्ठे गहिते इच्छा जाता अज्ज अभत्तट्ठं करेमित्ति,अहवा न जीरातित्ति भत्तट्ठं लाएमि एवं संवरणं, एवमादिसु,उत्तिमट्ठं भत्तपच्चक्खाणं कातुकामो संलेहे वोसिरणे एवमादिसु विभासा। कतिखुत्तोत्ति गतं॥कतिओणयंति दारं,

वन्दन-
संख्या

॥ ४१ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दना-ध्ययन चूर्णौ ॥ ४२ ॥

दुओणतं जाए वेलाए पढमं वंदति जाहे य निप्फेडितूणं पुणो वंदाति, अहाजाते सामण्णे जोणिणिक्खमणे य, सामण्णे रयहरणं मुहपोत्तिया चोलपट्टो य,जोणिणिक्खमणे अंजलिं सीसे कातूण णीति। बारसावत्तं पढमं छ आवत्ता निक्खमितुं पविट्ठेवि छ, अहो-कायादी तिन्नि तिन्नि,एते बारस,एताणि अन्तरदाराणि,दोण्णिवि कति ओणयत्ति एतेण सइताणि। कतिसिरंति, चतुसिरं,पढमं दोण्णि निक्खंतस्स, बितियाए परिवाडीए दोण्णि, एताणि चत्तारि सिराणि। तिगुत्तं मणेग वंदणे मणो वायाए वंजणाणि अक्खंडे वा काएणं काइया आवत्तातो न विराहेति । दो पवेसा-पढमो इच्छामि खमासमणो०,आवस्सियाए पडिकंतो जं उग्गहं पविसति सीसो बितिओ। एगनिक्खमणं आवस्सियाएत्ति। कतिआवस्सगसुद्धंति, पणुवीसं आवस्सगाणि अवस्स कातव्वाणि, कितिकंमे ओणामा दोण्णि २ अहाजातं ३ आवत्ता बारस १५ चत्तारि सिरा १९ तिगुत्तं २२ दो पवेसा २४ एगं निक्खमणं २५ ॥ कितिकंमंपि करें० ॥ १२१७ ॥ जदिवि अन्ना किरिया आओएति तहवि तप्पच्चतियाए निज्जराए अणाभागी भवति जो पण-वीसाए आवस्सयाणं अण्णतरं विराहेति, को दिट्ठंतो?, जहा विज्जाए एगंपि विहाणं फिट्टति नो सिज्झति, एवं इह चिति-कंमं जो न विराधेति तस्स विपुलं निज्जराफलं, एतं आवस्सगसुद्धं कितिकंमं जो करेति सो णेव्वाणं पावति, जथा सीतलो, विमाणवासं, जथा सावगा अणेगा विमाणवासं वत्ति, अरहंतत्तणं वा गणहरत्तणं वा चक्कवट्टित्तणं वा एवमादिए सुद्धकारी भवति।

कतिदोसविप्पमुक्कन्ति दारं, बत्तीसं दोसा, अणाढियं० ॥१२१९॥ मच्छुव्वत्तं० ॥ १२२०॥ तेणियं० ॥ १२२१ दिट्ठमदिट्ठं०॥१२२२॥ मूयं० ॥१२२३॥ अणाढियं नाम अणादरेण वंदति १ थद्धं अट्ठण्हं अण्णतरेण मत्तो२पविद्धं वंदणमं देंतओ चेव उद्वेत्ता णासति३ परिपिंडितं, भणति-एतं से सव्वस्स चेव कालप्पगतस्स वंदणगं,अहवा न वोच्छिण्णो आवत्ते वंज-

अवना-माधाः ॥ ४२ ॥

*** वंदन-विषये ३२ दोषाणां वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दनाध्ययन चूर्णौ

॥ ४३ ॥

णाणि वा करेति, पिंडलओ वा जाहओ वंदति, संकुंयओ उप्पीलणसंपीलणाए वा वंदति ४ टोलगंति टोलो जथा उड्डेत्ता अण्णमण्णस्स मूलं जाति५ अंकुसो दुविहो, मूले गंडस्स, रयहरणं गहाय भणति-निवेस जा ते वंदामि, अहवा दोहिवि हत्थेहिं अंकुसं जथा गहाय भणति-वंदामि ६ कच्छभरिंगियं एक्कं वंदित्ता अण्णस्स मूलं रंगंतो जाति, ततोवि अण्णस्स मूलं जाति ७ मच्छुव्वत्तं एक्कं वंदितूणं छड्डति बितिएण पासेंति परियत्तति रेचकावर्त्तेन ८ मणसा पदुट्ठं, सो हीणो केणाति, ताहे हियएण चिंतेति-एतेण एवग्गतेणं वंदाविज्जामि, अण्णं वा किंचि पओसं वहति ९ वेदियाबद्धं नाम तं पंचविहं-उवरिं जाणुगाणं हत्थे निवेसितूणं वंदति हेट्ठा वा जानूकाणं एगं वा जाणुं अंतो दोण्हं हत्थाणं करेति उच्छंगे वा हत्थे कातूणं वंदति १० भयसा भएणं वंदति, मा निच्छुब्भिहामि संघातो कुलाओ गणाओ गच्छाओ खेत्ताओत्ति ११ भयंतं नाम भयति अम्हाणं अम्हेवि पडिभयामोत्ति १२ मेत्तीए स मम मित्तोत्ति, अहवा मेत्ति तेण समं काउं मग्गंति १३ गारवा नाम जाणंतु ता ममं जहेस सामायारीकुसलोत्ति १४ कारणं नाम सुत्तं वा अत्थं वा वत्थं वा पोत्थगं वा दाहितित्ति कज्जनिमित्तं वंदति १४ तेणियं नाम जदि दीसति तो वंदति, अहवा न दीसति अंधकारो वा ताहे न वंदति१५ पडिणीयं नाम सण्णभूमं पधाइयं वंदति भोत्तुकामं,पट्ठितं वा भणति-भट्टारखा अवस्स वंदितव्वगा १७ रुट्ठं रुट्ठं नाम रोसिओ केणति तो धमधमेंतेण हियएण वंदति १८ तज्जितं नाम भणति-अम्हे तुमं वंदामो, तुमं पुण न वाहिज्जासि न वा पसीदासि जथा थूभो, अंगुलिमादीहिं वा तज्जेंतो वंदति १९ सढं नाम हट्ठसमत्थो निद्धम्मत्तेण रज्जुगोज्जं करेति, संघसं करोतीत्यर्थः २० हीलितं नमामि वायगा वंदितुं गणी महत्तरगा जेट्ठज्ज एवमादि २१ पलिकुंचितं नाम वंदंतो देसरायजणपदाविकहाओ करेति २२ दिट्ठमदिट्ठं नाम एवं सिग्घं वंदति जथा केणइ दिट्ठो केणइ

३२ दोषाः

॥ ४३ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[१०]

वन्दना-ध्ययन चूर्णौ

॥ ४४ ॥ न दिट्ठो २३ सिंगं नाम सीसे एगेण पासेण वंदति, अहवा अण्णेहिं साधूहिं समं संगेण जह वा तह वा वंदति २४ करो नाम एसोवि राणओ करो जह व तह व समाणेतव्वओ,वेट्ठी एसा न निज्जरत्ति मंणति२५ मोयणं नाम न अन्नहा मोक्खो,एतेण पुण दिण्णेण मुच्चामित्ति वंदति २६ आलिद्धमणालिद्धं रयणहरणे य निडाले य किंचि आलभति किंचि नालभति, एत्थ चउभंगो, सीसे आलिद्धं रयहरणे आलिद्धं ४, पढमो सुद्धो २७ ऊणं वंजणेहिं आवस्सएहिं वा २८ उत्तरचूलिया नाम एतेहिं वंजणेहिं आवस्सएहिं वंदित्ता भणति- मत्थएणं वंदामित्ति २९ मूयं नाम मूयो वंदति न किंचिवि उच्चारेति ३० महता सद्देण ढड्डरं ३१ चुडली नाम चुडलं जधा रयहरणं गहाय वंदति, अहवा दिग्घं हत्थं पसारेति, भणति- वंदामि, अहवा हत्थं भमाडेति, सव्वे मे वंदामित्ति ३२। एते बत्तीसं दोसा, एतद्दोसविप्पमुक्कं कितिकंमं कातव्वं। जो एतेसिं बत्तीसाए अण्णतरेणं अविसुद्धं वंदति सो ताए वेणयिताए निज्जराए अणाभागी भवति। जो पुण—

बत्तीसदोसपरिसुद्धं० ॥ १२२५ ॥ कहं पुण सो एताओ एतं पाविति?, भणति— आवस्सएसु जह जह० ॥१२२६॥ दोसा गता। इदाणिं कीस कीरतित्ति दारं, तत्थ विणयोवयार० ॥ १२२७ ॥ विणयोवयारो कतो भवति, जतो— विणओ सासणे मूलं०॥१२२८॥ विणयस्स पुण इमा णिरुत्तगाथा-जम्हा विणयति कंमं, विणयति नाम विविहं नयति विनयति, अणेगधा विणासयतित्ति जं भणितं, किमत्थं ?, चातुरंतमोक्खाय चातुरंतो—चतुग्गतिओ संसारो तस्स मोक्खत्थं, तस्माद्वदन्ति विद्वांसः विणय इति,विलीणसंसारास्तीर्थकरादयः, अहवा विणीयसंसारा विनष्टसंसारा इत्यर्थः,सो सासणे मूलं धम्मस्स,भणितं च-विणयमूलए दुविधे धम्मे- अगारे अणगारेत्ति, एक्केको पंचविधो- पाणातिपातादि, जो विणीतो स संजतो, अविणीतस्स

वन्दन-फलम्

॥ ४४ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दना-ध्ययन चूर्णौ

॥ ४५ ॥

वन्दन-सूत्रार्थः

कओ धम्मो कओ तवो ?, उक्तंच- वुज्झती से अविणीतप्पा कट्ठं सोयगतं जथा संसारसोतेणं, विणीतो पुण सव्वसंपत्तीओ लभति, उक्तंच- 'तथारूवं णं भंते ! समणं वा माहणं वा पज्जुवासेमाणस्स किंफला पज्जुवासणा ?, गोतमा ! सवणफला, एवं विभासा जह पण्णत्तीए। एवं विणओवयारो कतो भवति,तथा माणस्स भंजणा अट्ठविहस्सवि माणस्स भंजणा कता भवति,गुरुपूया य कता भवतित्ति, तित्थगराणं च आणा,सुतधंमो एस गुणवतो पडिवत्तित्ति आवासए भणितं, एतं च सुतं, तेण सुतधम्माराधणा कता भवति, अहवा सुतधम्माराधणा, जतो वंदणपुव्वगं सुतग्गहणं एवमादि, किरिया य कृत्यमेतत् । तं च कतं भवति, अहवा किरिया भविस्सति-एस विणीओत्ति, अहवा किरिया- कंमखवणं कतं भवतित्ति, एवमत्थं कीरति कितिकंमंति ।

एवं नामनिप्फण्णो गतो, इदाणिं सुत्तालावगनिप्फण्णो निक्खेवो, सो य पत्तलक्खणोऽवि न भण्णति इत्यादि जथा सामाइए, सुत्ताणुगमो सुत्तं अणुगंतव्वं अक्खलितं अमिलितं जाव कितिकम्मपदं वा णोकितिकम्मपदं वा, तत्थ 'संहिता य पदं चेव०' सिलोगो, तत्थ संहिता-इच्छामि खमासवणो! सव्वं उच्चारेतव्वं, पदमिदाणिं-इच्छामित्ति पदं, खमासमणोत्ति पदं, एवं वंदितुं जावानिज्जाए निसीधियाए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वतिक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो ! देवासियं वितिकमं आवास्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवासियाए आसायणाए तित्तीसण्णयराए जंकिंचिमिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए एवं सव्वधम्माइक्कमणाए आसातणाए जो मे अतियारो कतो तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामित्ति पदानि । इयाणिं पयत्थो, तत्थ 'इषु इच्छायां' 'क्षमूष् सहने' 'श्रमु तपसि

॥ ४५ ॥

***अत्र 'वंदन' सूत्र लिखितम्

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दनाध्ययन चूर्णौ ॥ ४६ ॥

खेदे च' श्राम्यतीति श्रमण: क्षमाप्रधानः श्रवण: क्षमाश्रवणः, वंदनम्-उक्तनिर्वचनं, एवं पगतिपच्चयविभागेण पदत्थो भाणितव्वो, एत्थ पुण भावत्थो भण्णति—

तत्थ किर अप्पच्छंदेण [अप्पच्छंदे] अविसए असत्तस्स अविहीए करणं न वट्टतित्ति वंदगो गुरुं वंदितु उज्जुत्तो उवग्गहाओ बाहिं ठितो ओणयकायो दोहिवि हत्थेहिं मज्झे गहितरयहरणो एवमाह-इच्छामि खमासवणो! इच्चादि, वंदितुं इच्छामि तुमं भो खमासवणो !, खमागहणे य मद्दवादयो सूइता, ततो खमादीयो जदिधंमो, तप्पहाणो समणो खमासमणो तं आमंतेति, जावणिज्जाए निसीहियाए यावणीया नाम जा केणति पयोगेण कज्जसमत्था, जा पुण पयोगेणवि न समत्था सा अजावनीया, ताए जावनिज्जाए, काए ?-निसीहियाए, निसीहिनाम सरीरगं वसही थंडिलं च भण्णति, जतो निसीहिता नाम आलयो वसही थंडिलं च, सरीरं जीवस्स आलयोत्ति, तथा पडिसिद्धनिसेवणनियत्तस्स किरिया निसीहिया ताए, तत्कोऽर्थः ?- हे समण-गुणजुत्त ! वंदितुं इच्छामि, कहं ?, विसत्तया तन्वा, कहं ?- विपडिसिद्धनिसेहकिरियाए य, अप्परोगं मम सरीरं, पडिसिद्धपावकंमो य होंतओ तुमं वंदितुं इच्छामित्तियावत्, एत्थ वंदितुमित्यावेदनेन अप्पच्छंदता परिहरिता, खमासमणोत्ति अणेण अविसयो परिहरियो, जावनिज्जाए निसीहियाएत्ति अणेण शत्तत्वं विधीय दरिसिता, सेसपदाणि पुण विधीए विभासितव्वाणित्ति । एस विसयविभागो । कहिं २ पुण एत्थ उवरमो ?, भण्णति- इच्छामि खमासवणो ! वंदितुं जावनिज्जाए निसीहियाए, एस एक्को फुडवियडसुद्धवंजणो उच्चारेतव्वो सव्वविधीए, तत्थ जदि बाधा अत्थि काइ तो भणति-अच्छ ताव, जदि तं अक्खाइसव्वं तो अक्खाति, अह रहस्सं तो रहकस्स चेव कज्जति, जदि पडिच्छितुकामो ताहे भणति- छंदेणं, छंदेणं नाम अभिप्पाएणं, ममावि-

वन्दनसूत्रार्थ: ॥ ४६ ॥

*** अथ वंदन-सूत्रस्य व्याख्या वर्णयते

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[१०]

वन्दनाध्ययन चूर्णौ ॥ ४७ ॥

प्रेतमित्यर्थः । ताहे सीसो भण्णति- अणुजाणह मे मितोग्गहं, एत्थ उग्गहो आयरियस्स आतप्पमाणं खेत्तं, तं आयरिओग्गहो, तं अणणुण्णवेत्ता न वट्टति पविसेतुं, तो वंदितुकामो तं अणुण्णावेति, जथा- मम परिमितं उग्गहं अणुजाणह, ताहे आयरिओ भणति- अणुजाणामि, ताहे सीसो आयरियउग्गहं पविसति । पविसित्ता संमं रयहरणं भूमीए ठावेत्ता तं निडालं च फुसंतो भणति- अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण दिवसो वतिक्कंतो?, रायणियस्स संफासोवि अणणुण्णवेत्ता ण वट्टति कातुं तो एवमाह- अहोकायं आसृत्य मम कायसंफासं, अणुजाणहत्ति एत्थवि संबज्झति, अहोकायो पादाः, ते हि रयहरणे णिवेसित्ता अप्पणो कायेण हत्थेहिं फुसिस्सामि, तं च मे अणुजाणहत्ति, भणति य- खमणिज्जो भे किलामो, 'क्षमूष् सहने' सहितव्वो तुब्भेहिं किलामो, 'क्लमु ग्लानौ' संफासे सति वेदणारूवे, किंच- अप्पकिलंताण बहुसुभेण दिवसो वितिक्कंतो, अल्प इति अभावे स्तोके च, अप्पवेदणाणं बहुएणं सुभेणं भवतां दिवसो वितिक्कंतो?, दिवसो पसत्थो अहोरत्तादी य तेण दिवसो गहितो, राती पक्खो इच्चादिवि भाणितव्वं, एत्थ आयरिओ भणति-तहत्ति, एसा पडिसुणणा । अव्वाबाहपुच्छा गता, एवं ता सरीरं पुच्छितं, इदाणिं तवसंजमनियमजोगेसु पुच्छति-जत्ता भे संजमतवनियमसज्झायआवस्सएहिं अपरिहाणि, चरणजोगा उस्सप्पंतित्ति भणितं भवति, ताहे आयरिओ भणति- तुब्भंपि वट्टती?, जत्तापुच्छा गता । इदाणिं नियमितव्वेसु पुच्छति-जवणिज्जं च भे जवणिज्जं २-इंदियणोइंदिय०, इंदियजवणिज्जं निरुवहताणि वसे य भे वट्टंति इंदियाणि १, णो खलु कज्जस्स बाधाए वट्टंतीत्यर्थः, एवं ता इंदियजवणिज्जं, कोधादीएवि णो भे बाहेंति २ । एवं पुच्छति पराए भत्तीए, विणओ य कतो भवति, एवं पडिसुणणा । जवणिज्जपुच्छा गता । इदाणिं अवराधखामणा, ताहे सीसो पुच्छति

वन्दनसूत्रार्थः ॥ ४७ ॥

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दनाध्ययन चूर्णौ

॥ ४८ ॥

पादेसु पडितो- जं किंचि अवरद्धं खामेतुकामो भणति- खामेमि खमासमणो ! देवसियं वतिक्कमं, वतिक्कमो नाम अतिक्कमस्स बीओ अवराधो, सो य वतिक्कमो जे अवस्सं करणिज्जा जोगा विराधिता तत्थ भवतित्ति आवस्सियाए गहणं, दिवसे भवो देवसिओ, देवसियग्गहणेण राइयोत्रि गहितो, ताहे आयरिओ भणति- अहमवि खामेमि तुमे, पच्छा एगनिक्खमणं निक्खमति । सीसो ताहे भणति- पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसियाए आसातणाए तेत्तीसण्णतराए जं किंचि इच्चादि, पडिक्कमामि नाम अपुणक्करणताए अब्भुट्ठेमि, अहारिहं पायच्छित्तं पडिवज्जामि खमासमण !, देवसियगहणं तहेव । आसातणा तेत्तीसं, जथा दसासु, तेत्तीसाए अण्णतराए, सव्वाओ न राइंदिए संभवंति तेण अण्णतरग्गहणं, एक्का वा दो वा कता होज्जा, जंकिंचि अवरद्धं तत्, किमुक्तं ?- खमासमणा ! देवसिओ जो वतिक्कमावराधो आवस्सिगाविसयो तं खामेमि, अपुणक्करणताए य अब्भुट्ठेमि, अथारिहं पायच्छित्तं पडिवज्जामि, तथा खमासमणाणं देवसियाए आसातणाए तेत्तीसअण्णतराए जं किंचि अवरद्धं तंपि खामेमि, अपुणक्करणताए अब्भुट्ठेमि, अहारिहं पायच्छित्तं पडिवज्जामि इतियावत् , एगो किच्चाणं अकरणे अवराधो तं खामेमि पडिक्कमामि य, बीओ पडिसिद्धकरणे तंपि खामेति पडिक्कमति य इत्यर्थः, एवं देवसियं खामितं, एतेण पुण सव्वं सव्वकालियं खामेति जंकिंचिमिच्छाए इच्चादिणा, जं किंचिसद्दो एत्थवि संबज्झति, मिच्छाभावेण कता मिच्छा, मणेण दुट्ठु कता मणदुक्कडा, एवं वइदुक्कडा कायदुक्कडावि, कोधभावेण कतो कोधो, एवं माणो माया लोभो, सव्वकाले भवा सव्वकालिगी, पक्खिका चातुम्मासिया संवत्सरिया, इह भवे अण्णेसु वा अतीतेसु भवग्गहणेसु सव्वमतीतद्धाकाले, सव्वमिच्छोवयारं नाम सव्वेण जेणं केणवि पगारेण दूसितभावेण कता, सव्वधम्माइक्कमणाए धम्मा करणिज्जा जोगा सव्वे जे

वन्दनसूत्रार्थः

॥ ४८ ॥

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[१०]

वन्दनाध्ययन चूर्णौ

॥ ४९ ॥

केइ करणिज्जा जोगा तेसिं विराधणा अतिक्कमणा तीए सव्वधम्मातिक्कमणाए आसातणाए पडिसिद्धकरणं तीए आसातणाए, जो मए अतियारो कतो अतियारो नाम अतिक्कमवतिक्कमाणं ततिओ अवराधो, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि निंदणगरिहणवोसिरणाणि जथा सामाइत्ते, तदयमर्थः मिच्छाभावादिएहिं अण्णेणवि जेण केणइ पगारेण दूसितभावेण कता सव्वकालिया सव्वकरणिज्जजोगविराधणा तीए जंकिंचि अवरद्धं तं खामेमि, तस्स चेव अपुणक्करणताए अब्भुट्ठेमित्ति, पडिक्कमामि निंदामि, पच्छातावकरणेण हा दुट्ठु कतं० गरिहामि परसक्खिगं अथारिहपायच्छित्तपडिवज्जणेण, अप्पाणं वोसिरामित्ति तथा मिच्छाभावादीएहिं अण्णेण य जेणवि केणवि पगारेण दूसितभावेण कता सव्वकालियाए पडिसिद्धकरणरूवाए आसातणाए तीए सव्वाए जो मए अतियारो ततिओ अवराधो कतो तंपि खामेमि, तस्स पडिक्कमामि य निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामित्ति। एवं पुणोऽवि इच्छामि खमासमणो तहेव जाव वोसिरामित्ति। एवं सीसेण पदे पदे संवेगमावज्जंतेणं नीयागोतखवणट्ठताए अगोत्तस्स य ठाणस्स फलं हितदए कातूण वंदणगं कातव्वं। एवं पयत्थो भणितो। पदविग्गहोवि समासपदेसु जाणितव्वो। इदाणिं सुत्तफासियनिज्जुत्ती—

इच्छादयः

इच्छा य० ॥ १२-१२२ ॥ ॥ १२३० ॥ छंदेणऽणुजा० ॥ १२-१२३ ॥ १२३१ ॥ तत्थ इच्छा य छव्विहा, दो गताओ, दव्विच्छा जो जं दव्वं सचित्तं वा ३ इच्छति, खेत्तिच्छा--खेत्तं जो जं इच्छति भरहादिं, कालिच्छा जो जं कालं इच्छति, जथा 'रयणिमहिसारियाओ चोरा परदारिया व इच्छंति। तालायरा सुभिक्खं बहुधन्ना केइ दुब्भिक्खं ॥१॥ भावेच्छा२ पसत्था अपसत्था य, पसत्था णाणादीणि इच्छति, अप्पसत्था अण्णाणादीणि इच्छति, एत्थ पसत्थिच्छाए अधिगारो, सेसपदाणि ॥ ४९ ॥

*** अत्र सूत्र-स्पर्शिक निर्युक्ति: प्रस्तूयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णिः- 2

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दना-ध्ययन चूर्णौ

॥ ५० ॥

पुण णए फुसंति एताए दिसाए विभासितव्वाणि। तत्थ दव्वखमा जो असमत्थयाए सहति, भावखमा संसारभया परस्स पीडा ण कत्तव्वत्ति सहति, दव्वसमणा णिण्हगादी, भावसमणा जे सब्भाविएसु अहिंसादिसु जतंति, भावखमाए भावसमणेण य अधिकारो। वंदणगं कातुं वंदितुं, वंदणगं पुव्वं भणितं, जावनिज्जाए निसीहियाए, दव्वजावणिया जं दव्वं केणति पयोगेण जाविज्जति वाहिज्जति, जथा उग्गमणमादीहिं गंडिमादीणि वाहिज्जंति, भावजावणिज्जा भावो जाविज्जति, दुविहाए अधिगारो। दव्वनिसीहिया सरीरं, भावनिसीहिया निसेहकिरिया, दुविहाएवि अधिकारो। अणुण्णा छव्विहा विभासितव्वा, खेत्ताणुण्णाए अधिगारो। एवं अव्वाबाधादीणिवि सवित्थरं विभासेज्जा। इदाणिं चालणापसिद्धीओ भण्णंति, तत्थ आह--णणु किमिति पढमं पवेसे वंदितुं खामेतुं पुणोऽवि य पवेसेण वंदति?, उच्यते--लोगे जथा रायादीणं दूतादयो बहुमाणाणुरागेण पुव्वं पणमितूण कुसलवट्टमाणिं आपुच्छिय खामेत्ता पुणो पुणो पणमंति पुच्छंति खामेंति, ततो पणमित्ता वच्चंति, एवं लोगुत्तरेवि बहुमाणो, भत्तीए पुव्विं वंदणपुरस्सरं विणयं पयुंजित्ता पच्छा खामेंति आवस्सिगमादि, पुणरवि पणमति। तहेव पुणो आह-जदि तुब्भे वाइगं काइगं च जोगं एकत्थ करेह ता दोकिरियपसंगो होति, निवारियाओ सुत्ते दो किरियाओ एकदा बहुसो, तो एवं करेतु सव्वं पकड्ढितूण तुण्हिक्को आवत्तादी करेतु, एवं सेयं, आयरिओ भणति--तुमं सिद्धंतं न याणसि, जदा भिण्णविसया भोगा होंति तदा एकदा णिसिद्धा, जथा अणुप्पेहाति य चक्कमतीया, णो पुण एगलक्खधा भोगे, दिट्ठिवादे एगंमि काले वायाए उच्चारेति काएण य भंगे करेति मणेण य तदुवउत्ते, एवं अम्ह एगंमि वेणइए पयोगे दोकिरियादोसा न होंतित्ति। अण्णे पुण एवं परिहरंति, जथा किर एगंमि समए दोसु किरियासु उवयोगो निसिज्झति, न पुण किरियामेत्तं, जतो तिण्हवि जोगाणं जुगवसंपातो दिट्ठो भंगियसुतादिसुत्ति।

इच्छादयः

॥ ५० ॥

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१०]

वन्दनाध्ययन चूर्णौ ॥ ५१ ॥

एवं दिवसओ वंदणगाविधाणं भणितं । रत्तिमादिसुवि जेसु ठाणेसु दिवसग्गहणं तत्थ राइगादीवि भाणितव्वा । पादोसिए जाव पोरिसी न उग्घाडेति ताव देवासियं भण्णति, पुव्वण्हे जाव पोरिसी न उग्घाडेति ताव राइयंति । तेणावि आयारिएण उक्कुडुएणं अंजलिमउलियहत्थेणं वंजणे पादे य उवउत्तेणं अव्वग्गमणेणं पुण्णाए सरस्सतीए अणुभासितव्वं, जथा तस्स सीसस्स संवेगो भवति, संवेगो नाम मोक्खोत्कंठः । संवेगाओ विपुलं निज्जरा फलंति । अणुगमो गतो । इच्छादयः

इयाणिं नया इच्छितव्वा, तत्थ सत्त मूलनया-नेगमसंगमववहारउज्जुसुतसद्दसमभिरूढएवंभूता, ते सव्वेवि दोसु समोतरंति-उवएसे चरणे य, नेगमसंगहववहारा उवदेसनयो, उज्जुसुतसद्दसमभिरूढएवंभूता चरणनयो । तत्र जाणणाणयो ज्ञानोपलब्धिमात्रः, अविशेषितं द्रव्यास्तिक इत्यर्थः, तस्य वंदनाध्ययनस्य सुत्तत्थजाणओ-मोक्खगमणाय भवति--

णातंमि गिण्हितव्वे० ॥ १०६५-१७१८ ॥ जतितव्वं नाम करणीयमिति तस्य पिंडार्थः, अयं अत्थिभावं अत्थीति वदति, नत्थिभावं नत्थीति भणाति । परमविसुद्धचरणनयो ब्रूते--

सव्वेसिंपि णयाणं ॥ १०६६-१७१९ ॥ चरणनयः पर्याय इत्यर्थः, तस्य सर्वनयानुमतस्य चरणनयस्य पिंडार्थोऽयं-चरणसंपन्नः साधुर्मोक्षाय भवतीत्येतन्मतं, को हेतुः?, जम्हा जस्स चरित्तं तस्स नियमा संमं नाणं संमं दंसणं च भवति, यस्य पुनर्दर्शनज्ञाने भवतस्तस्य चारित्रं (भजनया) स्यात्, तस्माद् चरणसंपन्नः साधुर्मोक्षाय सर्वनयानुमतो भवतीति नयाः समाप्ताः ॥ ॥ ५१ ॥

संमत्तं च वंदणज्झयणं ॥ इइ वंदणगज्झयणचुण्णी संमत्ता ॥

अत्र अध्ययनं -३- 'वन्दनं' परिसमाप्तं

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[१०]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ५२ ॥

इयाणिं पडिक्कमणज्झयणं, अथ कोऽस्याभिसंबंधः ?, सामाइकव्ववस्थितेन यथा पत्तकालं उक्कित्तणादीणि अवश्यकातव्वाणि, एवं क्वचित् स्खलितेन निंदणअपुणकरणादीणि अवस्सकातव्वाणीति पडिक्कमणस्सज्झयणं भण्णति, तस्स चत्तारि अणुओगद्दाराणि उवक्कमणादीणि पुव्वगमेण भाणितव्वाणि, अत्थाधिगारो पुण से खलितस्स निंदणा। कमागते नामनिप्फण्णे निक्खेवे पडिक्कमणंति नामं,प्रतिक्रमणमिति कोऽर्थः?, प्रतीत्युपसर्गः,'क्रमु पादविक्षेपे'प्रतीपं क्रमणं प्रतिक्रमणं,प्रतिनिवृत्तिरित्यर्थः, उक्तं च-"स्वस्थानाद्यत्परं स्थानं, प्रमादस्य वशाद् गतः। तत्रैव क्रमणं भूयः, प्रतिक्रमणमुच्यते॥१॥क्षायोपशमिकाद्वापि,भावादौदयिकं गतः। तत्रापि हि स एवार्थः, प्रतिकूलगमात् स्मृतः॥२॥"प्रति प्रति क्रमणं शुभयोगेसु प्रवर्तनमित्यर्थः, उक्तं च-"पति पति पवत्तणं वा सुभेसु जोगेसु मोक्खफलदेसु। निस्सल्लस्स जतिस्सा जं तेणं तं पडिक्कमणं॥१॥" करणेण य तिविधा सूया भवति--कर्ता करणं कार्यं, एवमिहापि प्रतिक्रमकः प्रतिक्रांतव्यं च प्रतिक्रमणेन सूचितं भवति,तत्थ गाथा पडिकमओ पडिकमणं पडिकमितव्वं च आणुपुव्वीए। तीते पच्चुप्पण्णे अणागते चेव कालंमि ॥१३--१॥१२४३॥ तत्थ पडिकमओ जीवो पडिक्कमणं भणितनिर्वचनं पाडिक्कमितव्वं- खलितं, एत्थ गाथा--

जीवो उ पडिक्कमओ० ॥ १३-२ ॥ १२४४ ॥ उसद्दो विसेसणे, तेण निंदणादिपरिणओ तदुवउत्तो जीवो पडिक्कमओ॥ केसिं ?-- असुभाण पावकंमजोगाणं स्खलितानामित्यर्थः, जे पुण झाणपसत्था जोगा तेसिं न पडिकंमो॥'ध्यै चिंतायां' ध्यानं चित्तं ज्ञानमित्यर्थः, ये ज्ञाने उपयुक्तेन प्रशस्ता योगा निरवद्यीभूतास्तेषां न प्रतिक्रमति, तं च पडिक्कमणं तीतकालविसयं पच्चुप्पण्णकालविसयं अणागतकालविसयं होज्जा। तत्थ अतीते निंदणादिपडिक्कमणं, सेसे अपुणकरणताए अब्भुट्ठाणंति।

प्रतिक्रमणस्वरूपं

॥ ५२ ॥

अत्र अध्ययनं -४- 'प्रतिक्रमणं' आरभ्यते

*** अत्र चतुर्थ-अध्ययने 'प्रतिक्रमण'स्य स्वरुपम् वर्णयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ५३ ॥

एवं तिविहेवि पडिक्कमणं होज्जा, तस्स इमाणि एगट्ठियाणि जथा-वंदण चितिकितिकंमं पूया विणयो एवमादी, एवं इहवि, प्रतिक्रमणेऽष्वदृष्टान्तः
पडिकमणं पडियरणा० ॥ १३-३ ॥ १२४८ ॥ पडिक्कमणंति वा पडियरणंति वा पडिहरणंति वा वारणंति वा णियत्तीति वा निंदत्ति वा गरहत्ति वा विसोहित्ति वा,तत्थ पडिक्कमणं पुनरावृत्तिः, प्रति प्रति तेष्वर्थेषु अत्यादरात् चरणा पडिचरणा-अकार्यपरिहारः कार्यप्रवृत्तिश्च, परिहरणा चरणप्रमाददोसेहिंतो, आत्मनिवारणा वारणा, असुभभावनियत्तणं नियत्ती, निंदा आत्मसंतापः, गर्हा प्राकाश्ये, सोही विसोहणं, एतेसिं एगट्ठिताणं इमाणि तु अट्ठ उदाहरणानि--
अद्धाणे पासादे० ॥ १३-४ ॥ १२५४ ॥ तत्थ पडिकमणं छव्विहं--नाम० ठवणा० दव्व० खेत्त० काल० भाव०, दो गता, दव्वस्स दव्वाण एवमादिकारकवचनयोजना कार्या, दव्वनिमित्तं दव्वभूतो वा, पत्तयपोत्थयलिहितं वा, अहवा पासत्थादीणं जं पडिकमणं तं दव्वपडिकमणं, खेत्तपडिकमणं खेत्तस्स चर्चा, जंमि खित्ते ठितो पाडिकमति वण्णेति वा तं खेत्तपडिकमणं, चर्चा दुविहा--धुवं अधुवं, धुवं जहा भरहेरवएसु खेत्तेसु पुरिमपच्छिमाणं तित्थगराणं तित्थेसु संजताणं अवराधो होतु मा वा उभयोकालं अवस्सं पडिकमियव्वं, अधुवं सेसाणं तित्थगराणं, कारणजाते पडिकमणं तं अधुवं, होति वा ण होति वा, एवं बुद्धया अभिसमीक्ष्य वक्तव्यं। भावपडिकमणं जं संमदंसणाइगुणजुत्तस्स पडिकमणंति। तत्थ अद्धाणे उदाहरणं जथा--एगो राया नगरबाहिरियाए पासादं काउकामो सोहणे तिहिकरणंमि सुत्ताणि पाडिताणि रक्खावेति, जदि कोइ पविसेज्जा सो मारेतव्वो, जो नाम न मारेत- ॥ ५३ ॥
व्वओ सो जदि तेहिं चेव पदेहिं अण्णत्तो अणक्कमेंतो पडिनियत्तति तो णं मुएज्जाह, एवं रक्खावेति, तस्स य वत्थुस्स एकासीति विभागा, कहं पुण ते ?, चतुरंसं तं वत्थुं, तं तिधा छिन्नं, पुणो तिधा छिन्नं, एवं नवधा होति, एकेक्कं तिधा तेधा छिन्नं, एक्का-

प्रतिक्रमण' शब्दस्य अष्ट पर्याया:, तेषाम् व्याख्या एवं कथा:

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ५४ ॥

प्रति-चरणायां प्रासाद-दृष्टान्तः

सीति जाता, तत्थ नवसु मूलवत्थुसु चउदिसि चत्तारि देवताणि--सोमवरुणजमवेसमणाणित्ति, मज्झे एक्कं, एवं पणयालीस देवता इति, कालहता य दोन्नि गामेल्लगा आगता तेसिं रक्खगाणं वक्खित्ताणं, नवरि अकेत दिट्ठा, भणिता अविवक्गहत्थेहिं-हा दासा ! कहिंत्थ पविट्ठा ?, तत्थ एगो भणति काकधट्ठो--को दोसोत्ति इतो ततो पधावितो, सो तेहिं तत्थेव मारितो, बितिओ भणति--अयाणंतोऽहं पविट्ठो मा मं मारेह, जं आणवेह तं करेमित्ति, तेहिं उद्वेतूण भण्णति-जदि अण्णतो न अवक्कमसि तो नवरि फिट्टिसि, सो भीतो वराओ तेहिं चेव पदेहिं पडिनियत्तो, मुक्को इहलोइयाण भाभी जातो, इतरो चुक्को, एस दिट्ठंतो, अयमत्थोवणओ--जारिसो राया तारिसो तित्थगरो, जथा पासायभूमी तथा अस्संजमो, जथा रक्खगा तथा संसारगाणि भयाणि, जथा ते गागेल्लगा तथा पव्वइतगा, जो नियत्तो सो आणाए ठितो, इतरे अणाणाए, विणासो संसारो, एवं भावो जत्तो निग्गतो होज्जा इंदियादिणा पमादेण ततो पढितव्वं झडत्ति मिच्छादुक्कडान्ति ।

पडियरणावि छव्विधा जथा पडिक्कमणे एवं विभासेज्जा । तत्थ पासादउदाहरणं--एगत्थ नगरे वाणियओ समिद्धो, तस्स आडुणुट्ठितयओ लक्खणजुत्तो पासादो रत्तरतणभरितो, सा भज्जं अप्पाहेतूण गतो देसयत्ताए, सा अप्पपलग्गा पासादस्स एगंमि देसे खंडिते विणासिते वा भणति-किं एत्तिल्लगं करेति ?, अण्णदा पिप्पलपोतओ जातो, भणति--किं एत्तिल्लओ करेति ?, वड्डितेण सव्वो पासादो भग्गो, वाणितओ आगतो पेच्छति विणट्ठं, निच्छूढा, अण्णो पासादो कारितो, अण्णा भज्जा आणीता, भणिता य-जदि विणस्सति ता ते सच्चेव गतित्ति, गतो, तीए दिट्ठं मणागं खंडं, वीसोवएणं सकारावितो, एवं चित्तकम्मे कट्ठकम्मे सव्वं तिसञ्झं पलोएति, तारिसगं चेव घरं अच्छति, आगतो तुट्ठो य, सव्वसामिणी जाता, एस दिट्ठंतो, जथा वाणियओ तथा आयरिओ,

॥ ५४ ॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ५५ ॥

वारणायां-विषविकलः

जथा पासादो तथा संजमो, जथा वाणिगिणी तथा साधू, जो तं सीदावेति उवेक्खति वा सो तथा अणाभागी भवति, एवं सारेति अवराधे पायच्छित्तं वहति संठवति य, तेण चारित्तं निम्मलं भवतित्ति ।

परिहरणावि छव्विहा तहेव, तत्थ दुद्धकायउदाहरणं-एगो कुलपुत्तओ,तस्स दो भगिणीओ अण्णेसु गामेसु, इमस्स धीता जाता, भगिणीण पुत्ता जाता, संवड्डिताणि, दोवि भगिणीओ समं चेव वरियाओ आगताओ, सो भणति-दोण्ह अच्छाण कतरं पितं ?, वच्चह, पुत्ते पेसेह, जो खेयण्णो तस्स देमित्ति, गताओ, पेसविता, दोण्हवि समा घडगा दिण्णा, जाह गोउलाओ दुद्धं आणेधत्ति, गता, दुद्धस्स घडगा भरिता, काउडीहिं समं, उच्चलिता, तत्थ दोण्णि पंथा, एगो परिहारो, सो समो, बितिओ उज्जुओ खाणुविसमबहुलो, एगो उज्जुतेण पत्थितो, सो अक्खडितो, भिण्णा दोवि घडगा, एगो अन्नेण भमित्ता आगतो, सो भणति,मए भणितं-दुद्धं आणेहित्ति,न मए भणियं-लहुं वा चिरेण वा एहत्ति, सो धाडितो, इतरस्स दिण्णा । एष दृष्टांतः। एवं चेव उवसंहारो भावे होति, जथा सो कुलपुत्तओ तथा तित्थकरो, जथा सा दारिया तथा सिद्धी, जथा ते दारगा तथा साधू , जथा दुद्धघडगा तथा चरित्तं, जथा पंथा तथा दव्वखेत्तकालभावा विसमा य समा य, एवं परिहरितव्वाणि कुत्सिताणि ठाणाणि, दव्वं खेत्तं कालो भावो य ।

वारणावि छव्विहा तहेव, तत्थ विसभोयणविकल उदाहरणं-एगो य राया अण्णस्स रायाणगस्स णगररोहओ जाति, तेण रायाणएण पाणियाणि विसेण भाविताणि, सत्थो य आवासावितो, विसकयं अण्णपाणं अदूरागतं जाणित्ता णासहत्ति इतरेण घोसावितं-जो एत्थ पाणितं पियति फलाणि वा खाति सो मरतित्ति, अण्णाउक्कंठिता उ विरसपाणियाओ अरसाविरसाणि य ॥ ५५ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ५६ ॥

निवृत्तौ कन्योदाहरणं

फलादीणि तेहिं किच्चं करेधात्ति, गतो राया, अंणेहिं परिहरितं ते जीविता, जे ण करेंति ते विणट्ठा, तहेव उवणयो--रायत्थाणीया तित्थगरा, विसपाणीयत्थाणीयाणि असंजमट्ठाणाणि, मणूसत्थाणीया साधुणो, एवं भावेवि जो परिहरति आधाकम्मादीणि सो नित्थरति संसाराउत्ति ॥

नियत्तीवि छव्विहा तहेव, तत्थ एगा कंणा उदाहरणं-एगंमि नगरे कोलिओ, तस्स सालाए धुत्ता विणंति,तस्स धूया य, तत्थ एगो कोलियो मधुरेण सरेणं गायति, सा तेणं अक्खित्ता, घडितो संजोगो, भणति--नासामो, सा भणति-मम वयंसिता ताए विणा न वच्चामि, सो भणति-सावि याणिज्जउ, तीए साऽऽक्खाता, पडिस्सुतं, पधाविताणं महल्लो पच्चूसो, तत्थ अतिप्पउत्ति अच्छंति, तत्थ केणइ उग्गीतं-जदि फुल्ला कणियारडा० ॥ १२५५॥ ताए अत्थो अणुगुणितो, एस चूतो वसंतेण उवालद्धो-जदि कणियारा फुल्लिता तव न जुत्तं पुप्फितुं, किन्नु तुमे अधिमासघोसणा ण सुता ?, रुक्खाणं अंतस्थाः कणियारा, एवं यदि एसा कोलिगिणी एवं करेति तो किं मएवि कातव्वंति?, एसा छिण्णा दव्वभिण्णा, ण से अवसद्दो,न वा किंचि,तत्थवि एसा कोलिगिणी, ममासत्तमस्स छायाघातो नगरे य उड्डाहो एवमादि वियालिऊणं रतनकरंडओ वीसरिउत्ति एतेण छलेण नियत्ता, भावेणं उवणयो-कण्णत्थाणीया साधू धुत्तत्थाणीया विसया गायणत्थाणियो उ आयरिओ गीतिगत्थाणीया पडिचोदणा, एवं भावि नियत्तितव्वं । बितियं उदाहरणं दव्वभावनियत्तणे-एगंमि गच्छे एगो तरुणो गहणधारणासमत्थोत्ति तं आयरिया वड्ढावेंति, अण्णदा सो असुभ-कंमोदयेण पडिगच्छामित्ति पधावितो, निग्गच्छंतो य गीतशब्दं सुणेति, तेण मंगलनिमित्तं उवयोगो दिण्णो, तत्थ य तरुणा खुर- ॥ ५६ ॥
जणा इममभिणयं गातंति—

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ५७ ॥

तरितव्वा य पतिण्णया मरितव्वं वा समरे समत्थएणं । असरिसवयणुप्फेसया नहु सहितव्वा कुले पसूयएणं ॥ १२५६ ॥ गीतीए भावत्थो, जथा केइ लद्धजसा सामिसंमाणिया सुभडा रणे पहारितुवरता भज्जमाणा एगेण सपक्खजसावलंबिणा अप्फालिता- नो सोभिस्सह पट्ठिप्पहरा गच्छमाणत्ति, तं सोतुं पडिनियत्ता, ते य ठिता, पडिता पराणीए, भग्गं च तेहिं पराणीयं,संमाणिया य पभुणा,पच्छा सुभडवादं सोभंति वहमाणा,एतं गीतत्थं सोतुं तस्स चिंता जातां-एमेव संगामत्थाणीया पव्वज्जा, जदि ततो पराभज्जामि तो असरिसजणेण हीलिज्जामि,एस समणपच्चोगलितोत्ति पडिनियत्तो,आलोइयपडिक्कंतेण आयरियाण इच्छा पडिपूरिता, एवं भावे पडिचोयणत्ति ॥

निन्दायां चित्रकरदारिका

निंदावि छव्विधा तहेव, तत्थ उदाहरणं-दोण्हं कण्णगाणं बितिया कण्णगा चित्तकरदारिया,जथा-एगो राया दूयं पुच्छति- किं मम नत्थि जं अण्णरातीणं अत्थि ?, चित्तसभा नत्थित्ति, आणत्ता णिम्माणिया, चित्तकारकसेणीए विरिक्का, एगस्स चित्तकारगस्स धीता पितुं भत्तं गहाय गच्छति, राया मग्गेण आसेण वेगविप्पमुक्केण एति, सा पलायंती किहवि फिडिता गता, पिता से तं ठवितूण सरीरचिंताए गतो, तीए वण्णेहिं तत्थ कोट्टिमे मोरपिच्छं लिहितं, रायावि तत्थ चंक्कमणयं करेति, सावि अणाचित्तेणं अच्छति, रायाए पिच्छे दिट्ठी गता, गेण्हामित्ति हत्थो पसारितो, नहाणि दुक्खाविताणि, ताए हसितं, भणति य-तिहिं पादेहिं मम मुक्खासणं न ठाति जाव चउत्थं मग्गामि, नवरं तुमं चउत्थो, राया पुच्छति- किहत्ति ?, सा भणति- अहं च पिताए कूरं आणामि जाव एगो पुरिसो नगरमज्झे आसं वाहेति, नत्थि से घिणा मा किहवि किंचि मारिज्जामित्ति, तत्थ अहं सएहिं पुण्णेहिं जीविता, बितियओ राया, तेण चित्तकराणं विरिक्का सहा, तत्थ एक्केक्के कुडुंबे बहुगा मणूसा चित्तकरा, मम पिता एक्कल्लओ ॥ ५७ ॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ५८ ॥

निन्दायां चित्रकर-दारिका

सो चित्तेति,तातियओ मम पिता,तेण चित्तसभं चित्तेंतेणं पुव्वविढत्तंपि बहुं निट्ठवितं, संपति जो वा सो वा आहारो, सो य सीतलो केरिसो होहिति ? तो आणिते सरीरचिंताए जाति, चउत्थो तुमं, कहं ?, सव्वोवि ताव चिंतति- कतो एत्थ मोरपिच्छं ?, जदिवि आणितेल्लगं होज्जा तोवि ताव दिट्ठीए सुट्ठु निज्झाइज्जति, सो भणति- सच्चगं मुक्खा, राया गतो, पिता से जिमितो, सावि सघरं गता,रायाए वरगा पेसिता, तीए मातापितं भणितं- दोहित्ति, भण्णइ य- अम्हे दरिद्दाणि, किहं रण्णा सपरिजणस्स पूयं काहामो ?, ताहे दव्वं से रण्णा दिण्णं, तेहिवि दिण्णा । दासी अणाए सिक्खाविता-ममं रायाणगं च संबाधंती अक्खाणगं पुच्छेज्जासित्ति, जाहे राया सोतुकामो ताहे दासी भणाति-सामिणि ! राया पवट्टति, किंचि अक्खाणगं कहेहि। भणति- कहेमि, एगस्स धूता अलंघणिज्जाणं तिण्हं वरगाणं मातिभातिपितीहिं दिण्णा जाव निव्वहणाणि आगताणि,सा रत्तिं अहिणा खइता मता, एगो तीए समं चितं विलग्गो, एगो अणसणं पयट्ठो, एगेण देवो आराधितो, तेण से संजीवणो मंतो दिन्नो, उज्जीविता चिता, तिण्णिवि उवट्ठिता, कस्स दातव्वा ?, किं सक्का- एक्का दोण्हं तिण्हं वा दातुं ?, तो अक्खाहात्ति, भणति-निद्दाइयामित्ति सुवामि, कल्लं कहेहामि, तस्स अक्खाणगस्स कोतुहल्लेणं बितियंपि दिवसं तीसेवि वारओ आणत्तो, ताहे सा पुणो पुच्छिता भणति-- जेण उज्जिताविता सो से पिता, जेण समं उज्जीविया सो से पितो भाया, जो अणसणगं पविट्ठो तस्स दातव्वत्ति ॥ अण्णं कहेहि, सा भणति-एगस्स राइणो सुवण्णगारा भूमिघरे मणिरयणकउज्जोता अणिगच्छन्ता, अंतेउरस्स आभरणगाणि घडाविज्जंति, एगो भणति- का पुण वेला वट्टति ?, एगो भणति- रत्ती वट्टति, सो कहं जाणति जो ण चंदं ण सूरं पेच्छति ?, सा भणति-निद्दाइया । बितियदिणे कहेति- सो रत्तिं अंधओ तेण जाणति, अंण्णं अक्खाहित्ति । भणति- एगो राया, तस्स दुवे चोरा उवट्ठविता, तेण से

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ५९ ॥

निन्दायां चित्रकरदारिका

॥ ५९ ॥

मंजूसाए पक्खिविऊण समुद्दे छूढा, ते किच्चिरस्सवि उच्छलिया, एगेण दिट्ठा मंजूसा, गहिता, मणूसे पेच्छइ, ताहे पुच्छइ- कतिच्चो दिवसो छूढाणं ?, एगो भणति-चउत्थो दिवसो, सो कह जाणति?, तहेव बितियादिणे कहेति-तस्स चाउत्थजरो तेण जाणाति। अण्णं कहेह, दो सवत्तिणीओ, एक्काए रयणाणि अत्थि, सा इयरीए ण विस्संभइ, मा हरेज्ज, ततो णाए जत्थ निक्खमंती पविसंती य पेच्छति तत्थ घडए छोढूण ठवियाणि, ओलित्तो घडओ, इयरीए विरहं णाउं रयणाणि हरियाणि, तहेव घडओ ओलित्तो, इयरीए णायं हरियाणित्ति, तो कहं जाणइ ओलित्तए हरियाणित्ति, बियदिणे भणइ- सो कायमओ घडओ, तत्थ ताणि परिभासंति, हरिएसु णत्थि। अण्णं कहेहि, भणइ-एगस्स रण्णो चत्तारि पुरिसरयणा, तं० **नेमित्ती रथकारो सहस्सजोधी तहेव विज्जो य। दिण्णा चउण्ह कण्णा परिणीया णवरमेक्केण ॥१॥** कहं?, तस्स रण्णो अइसुंदरा धूया, सा केणवि विज्जाहरेण हडा, ण णज्जइ कतोवि अक्खित्ता, रण्णा भणियं- जो कण्णगं आणेति तस्सेव सा, तओ नेमित्तिएण कहितं- असुगं दिसं नीता, रहकारेण आगासगमणो रहो कतो, ततो चत्तारिवि तं विलग्गिऊण पधाविया, अंमतो विज्जाहरो, सहस्सजोधिणा सो मारितो, तेणं मारिज्जंतेणं दारियाए सीसं छिण्णं, विज्जेण संजीवणोसहीहिं उज्जिवाविता, आणिता घरं, राइणा चउण्हवि दिण्णा, दारिया भणति- किह अहं चउण्हवि होमि ?, तो अहं अग्गिं पविसामि, जो मए समं पविसति तस्साहं, एवं होतुत्ति, ताए समं को अग्गिं पविसति ?, कस्स सा दातव्वा ?। बितियदिणे भणति- निमित्तिणा निमित्तेण णातं जहा एस न मरातित्ति तेण अब्भुवगतं, इतरेहिं नेच्छितं, दारियाएवि तट्ठाणस्स हेट्ठा सुरंगा खाणिता, तत्थ ताणि चितगाए णुवंणाणि, कट्ठाणि रयिताणि, अग्गी दिण्णो जाहे ताहे ताणि सुरंगाए निस्सरिताणि, तस्स दिण्णा। अण्णं कहेहि, सा भणति- एगाए अविरतियाए पगतं जंतियाए कडगा मग्गिता, ताए

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

रूवएहिं बंधएण दिण्णा, इयरीए धूताए आविद्धा, वत्ते पगते ण चेव अल्लिवेति, एवं कतिवताणि वरिसाणि गयाणि, कडुइत्तएहिं मग्गिता, सा भणति- देमित्ति, जाव दारिया महंती भूता, ताए न सक्कोंति अवणेतुं, ताहे ताए कडगाइत्तिया भणिता- अण्णेवि रूवए देमि सुयह, ते णेच्छंतित्ति किं सक्का हत्था छिंदितुं?, ताहे भणितं-एरिसच्चेव कडए घडावितुं देमो, ताहेवि णेच्छंति, तच्चेव दातव्वा, कहं संणवेतव्वा ?, जथा दारियाए हत्था ण छिज्जंति कहं तेसिमुत्तरं दातव्वं ?, आह- ते भणितव्वा 'अम्हवि तेच्चेव रूवए देह तो अम्हेवि ते चेव कडए देमो' । एरिसाणि अक्खाणगाणि कहंतीए दिवसे दिवसे राया छम्मासे आणीतो, सवत्तिणीओ से छिद्दाणि मग्गंति, सा य चित्तकरदारिया उव्वरयं पविसिऊण एक्काणिया चिराणए मणियए चीराणि य अग्गतो कातूण अप्पाणं निंदति-तुमं चित्तरदारिया, एताणि ते पितिसंतियाणि वत्थादीणि, इमा सिरी रायसंतिया, अण्णाओ उदितकुलपसूताओ रायधीताओ मोत्तूणं राया तुमं अणुवत्तइ तो मा गव्वं वहिहिसि, मा य अवरज्झिहिसित्ति, एवं दिवसे दिवसे दारं घट्टेऊणं करेति, ताहिं किहवि णातं, रण्णो पादपडिताओ भणंति- मा मारिज्जिहिसि एताए, एसा कंमणं करेति, ताहे रण्णा जाणितं, सुतं, तुट्ठो, महादेविपट्टो बद्धो । एवं भावनिंदाए साधुणावि अप्पा निंदितव्वो, जथा- जीव! तुमे संसारं हिंडंतेणं नरयतिरियगतीसु कहंचि माणुसत्ते सम्मत्तणाणचरित्ताणि आसादिताणि जेसिं पसाएण सव्वलोए माणणिज्जो पूयणिज्जो य जातो, तो मा गव्वं काहिसि-बहुस्सुतो एवमादि विभासा, मा य अवरज्झिहिसि, कहमवि अवरद्धेवि परितप्पिज्जिहिसित्ति ।

गरहावि छव्विहा तहेव, तत्थ पतिमारिया उदाहरणं-एगो मरुयओ थेरो अज्झावओ, तस्स भज्जा तरुणी, सा बलिवइस-देवं करेंती भणति- अहं कागाणं बीहेमित्ति, ततो उवज्झायानिउत्ता चट्टा दिवसे दिवसे धणुगहत्था रक्खंति, तत्थेगो चट्टो चिंतेति-

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ६१ ॥

ण एसा मुद्धा, अतिक्रिया एसा, तो तं पडिचरति, सा य णमदं तरन्ती अण्णदा घडगेणं पिंडारसगासं वच्चति, तोसिमेगो सुंसु- शुद्धौ वस्त्रा-
मारेण गहितो, सो रडति, ताए भण्णति-अच्छि ढोकेहत्ति, ढोकिते मुक्को, तीए भणिता-किं थ कुतित्थेण उत्तिण्णा ?, सो खंडिओ गददृष्टान्तौ
तं मुणेंतो च्चेव नियत्तो, सा य बितियदिवसे बलिं करेति, तस्स य रक्खणवारओ, ताहे तेण भणति-दिया कागाण बीभेसि,
रत्तिं तरसि नंमदं । कुतित्थाणि य जाणासि, अच्छीणं ढोंकणाणि य ॥१॥ तीए णातं-एतेण दिट्ठामित्ति तं उवचरति, सो
भणति- किं उवज्झायस्स पुरतो ?, ताए मारितो पती, पिडियाए छोढूण अडवीए उज्झिउमारद्धा, वाणमंतरीए थंभिता, अडवीओ
भमितुमारद्धा, छुधं न सक्केति अहियासेतुं, तं च से कुणवं उवरिं गलति, लोगेण हीलिज्जति-पतिमारिता पतिहिंडति, तीए पुण-
रावत्ती जाता, ताहे सा भणइ ते- देह अंमो ! पतिमारिताए भिक्खन्ति, मए मंदपुसत्ताए, पती मारितो थेरओ । तरुणगं
कंखमाणिए, कुलं शीलं च फुंसितं ॥१॥ ॥ सुचिरेण पाडितं,अंणेसिं एवं, अम्ह पुण अज्जाणं पाएसु पडंतीए पडिता पेडिता,
पव्वइता, एवं गरहितव्वं जं दुच्चिण्णं ॥

इदाणिं सोधी, दोसविणासणमित्यर्थः । सावि छव्विहा, तहेव विभासेज्जा, तत्थ दो दिट्ठंता--वत्थदिट्ठंतो अगडादिट्ठंतो
य । तत्थ वत्थदिट्ठंतो--रायगिहे सेणिओ राया, तेण खोमेज्जचेलं निल्लेवस्थ समप्पितं, कोमुदिवारो य वट्टति, तेण दोण्ह भज्जाणं
अणुचरंतेण दिण्णं,सेणिओ अभओ य कोमुदीए पच्छण्णं हिंडंति, दिट्ठं, तंबोलेण सित्तं,आगताओ अंबाडिताओ, तेण खारेण सोधि- ॥ ६१ ॥
ताणि,गोसे आणाविताणि, सब्भावं पुच्छितो, कहितं, तुट्ठो अहो सिप्पिउत्ति । एवं साधुणावि सव्वं आलोयणादीहिं सोहेतव्वंति ।
अगदो जथा हेट्ठा नमोक्कारे । एवं साधुणावि तहेव निंदादीएणं अगदेणं भावदोसाविसं ओतारेतव्वंति । सव्वत्थ उवणओ जथा-

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने
॥ ६२ ॥

संभवं समोतारेतव्वो ॥ एताणि एगाट्ठिताणि भणिताणि । इदाणिं कहं पडिक्कमितव्वंति भण्णति—

आलोयण० ॥ १२५७ ॥ एत्थ मालागारेण दिट्ठंतो, जथा—एगो मालागारो अप्पणच्चयं आरामं निच्चकालं तिसञ्झं आलोकेति-पुप्फाणि संति?,न संति?, सुक्खं मधुरं वा इमं एवमादि, पच्छा आलुंचति,मज्जायाय लुंचति-गेण्हतित्ति, एवं गहिताणि पच्छा वियडीकरेति, कहं ?, विभत्ताणि करेति, मउलाणि विभत्ताणि, फुल्लाणि विभत्ताणि, चिरेण जाणि फुल्लिहिंति ताणि विभत्ताणि करेति, खाराणि न उक्खणति, पच्छा नगरे वीहीए जत्तियाओ पुप्फजातीओ ताओ विभत्ताओ करेति, गाहताणुवट्ठवेति, इतराणि च जेत्तिगाणि से अत्थि ताणं दामं दामं उप्पि करेति, कइगा दट्ठूणं किणंति, सो फलं लभति, अण्णो विवरीतं,णालोएति एमेव नालुंचति न गेण्हति न वा वियडीकरेति,उदाहरिएणं करंडेणं अच्छति,सो फलं न लभति । एवं साधुणावि उच्चारपासवणभूमीओ पडिलेहेत्ता णिव्वाघाते काउस्सग्गे ठाइतव्वं, तत्थ सज्झायं अणुपेहेति, जाहे आयरिया ठिता ताहे ठितो चेव आवस्सगं अणुप्पेहेति, सो साधू मुहपोत्तियमादिं कातूणं सव्वं आलोकेति जाव इमो काउस्सग्गोत्ति, पच्छा आलुंचति गेण्हति इमो एरिसो २त्ति अवराहो, पच्छा आलोयणाणुलोमं पडिसेवणाणुलोमं च करेति,पच्छा वंदितूण सरसरस्स साहति,ताहे ओदइयस्स भावस्स सोही भवति, पुणो खओवसमिए ठितो भवति, एस विधी, एवं आलोयिए आराहगो, अणालोइए भयणा, कहं?, 'आलोतणापरिणओ संमं संपट्ठितो गुरुसकासं। जदि अंतरा उ कालं,करेज्ज आराहओ तहवि॥१॥ जथा पण्णत्तीए आलावगो, जे पुण-इड्ढिए गारवेणं बहुस्सुतमदेण वावि दुच्चरितं । जे न कहंति गुरूणं नहु ते आराहगा भणिता॥२॥एवं भयणा भणिता । एवंआलोयणमालुंचण वियडीकरणं च भावसोभी य। उभयो कालं मुणिणा सातियारेण कातव्वं॥१॥निरतियारेणवि एवं

आलोचनायां मालाकारः
॥ ६२ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ६३ ॥

आलोचनायां मालाकारः

पुरिमपच्छिमाणं तित्थगराणं, मज्झिमगाणं पुण तित्थगराणं कारणजाते पडिक्कमणं। तत्थ गाथा-सपडिक्कमणो धम्मो०॥१२५८॥ पुरिमपच्छिमएहिं उभयो कालं पडिकमितव्वं इरियावहियमागतेहिं उच्चारपासवणआहारादीण वा विवेगं कातूण,पदोसपच्चूसेसु वा अतियारो होतु वा मा वा तहावस्सं पडिकमितव्वं एतेहिं चेव ठाणेहिं, मज्झिमगाणं तित्थे जदि अतियारो अत्थि तो दिवसो होतु रत्ती वा पुव्वण्हो अवरण्हो मज्झण्हो पुव्वरत्तोवरत्तं वा अड्ढरत्तो वा ताहे चेव पडिक्कमंति, नत्थि तो न पडिक्कमंति, जेण ते असढा पंणावंता परिणामगा, न य पमादो बहुलो, तेण तेसिं एवं भवति, पुरिमा उज्जुजडा, पच्छिमा वक्कजडा नीसाणाणि मग्गंति पमादबहुला य, तेण तेहिं अवस्सं पडिक्कमितव्वं ॥ जो जाहे आवज्जति० ॥ १२४९ ॥ जो साधू जाहे दव्वे वा खेत्ते वा काले वा भावे वा अण्णतरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवति सो ताहे तस्सेव एगस्स पाडिसेविएन्तगस्स पडिक्कमति गुरुसगासे, एगल्लओ वा, जेण ते असढा,इमे हि सति नियमा गुरुमूले। तित्थगरा य किर सव्वत्तगेण णातूण जेण विधाणेण जीवाण विसुद्धी भवति तथा तथा उवदिसति, किं एसेव विसेसो उदाहु अंणोवि अत्थि?, बहुगा, बावीसं तित्थगरा० ॥ १२६० ॥ जाहे सामाइयं कतं ताहे चेव आरद्धो उवट्ठवितो साधुपरियाओ य गणिज्जति, पुरिमपच्छिमगाणं न एवं, यादिवि सामाइयं कतं तथावि न उवट्ठाविज्जति, एवं निरतियारो, सातियारो पुण जो पाडिसेवणाए मूलं पत्तो सो तेण अतियारेण उवट्ठाविज्जति, एवमादिविभासा, सचेलो अचेलो य चातुज्जामो पंचज्जामो य ठितो अट्ठिओ य एवमादिविसेसा, इमं पुण पडिक्कमणं देसियं भवति रातियं च, एवमादि, तत्थ गाथा--

पडिक्कमणं देसियं राइयं च० ॥ १२६१ ॥ दिवसओ देवसीयस्स रातो राइयस्स पक्खिते पक्खितस्स चातुम्मासिते

॥ ६३ ॥

*** प्रतिक्रमण'स्य दैवसिक आदि षड्भेदा:, प्रतिक्रमण-करणस्य कारणानि

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ६४ ॥

चातुम्मासितस्स संवच्छरिए संवच्छरियस्स, एतं इत्तिरियं, इमं पुण आवकहितं (१२६२) पंच महव्वयाणि रातीभोयणविरमण-छट्ठाणि चाउज्जामो वा, एस आवकहाए, दोण्हंपि य भत्तपच्चक्खाणं आवकहितंति । णणु देवासियं रातियं पडिकंतो किमिति पक्खियचातुम्मासियसंवत्सरिएसु विसेसेणं पडिक्कमति । उक्तं च-- "जह गेहं०" जथा लोगे गेहं दिवसे दिवसे पमज्जिज्जं-तंपि पक्षादिसु अब्भधितं अवलेवणपमज्जणादीहिं सज्जिज्जति, एवमिहावि ववसोहणाविसेसे कीरतित्ति, तथा इमंपि इत्तरं पडिक्कमणं—

उच्चारे पासवणे० ॥ १२६३ ॥ उच्चारं परिट्ठवेत्ता मत्तगं वा पासवणं वा पासवणमत्तो वा भत्तं वा पाणं वा पडिस्सय-कयगरो वा जदिवि पडिलेहियपमज्जिते परिट्ठवितं आउत्तो य आगतो तहवि पडिक्कमितव्वं, मत्तए जो परिट्ठवति सो पडिक्क-मति, खेले सिंघाणए जल्ले य जदि पडिलेहिय पमज्जिंय परिट्ठवेति न पडिक्कमति, इयरहा पडिक्कमणं भवति, तं पुण किह ?, मिच्छादुक्कडं, तत्थ पुणरावत्ती जाता ताहे पडिक्कमणं भवति, एस विधी, जाणंतेण कतं, पुणरावत्ती जाता पडिक्कमति, अणा-भोगो अजाणंतेण जं कतं, सहसक्कारो आउत्तेण वीरियंतरायदोसेण सहसा जं विराधितं, जथा-आउलियंमि य पादे इरिया०॥ गमणे आगमणे वीसमणे णदिसंतरणे एवमादिसु पडिक्कमणं, एतं पडिक्कमणं भणितं । इदाणिं पडिक्कामितव्वंति दारं, जस्स ठाणस्स पडिक्कमिज्जति तं विसेसतो भण्णति, तं पुण ओघतो पंचण्हं ठाणाणं पडिक्कमितव्वंति- **मिच्छत्तपडिक्कमणं०** ॥ १२६४ ॥ एतं पंचविहं । तत्थ **मिच्छत्तपडिक्कमणं** जं मिच्छत्तं आभोगेण अणाभोगेण सहस्सकारेण वा गतो पण्णवितं वा तस्स पडिक्कमति, असंजमो सत्तरसविधो पडिक्कमितव्वो, कसाया चत्तारि, जोगा तिन्नि, काइयवाइयमाणसा, ते पसत्था अप्प-

पंचधायावत्कथिकमित्वरं च प्रतिक्रमणं

॥ ६४ ॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ६५ ॥

सत्था य, अप्पसत्था पडिक्कमितव्वा, संसारपडिक्कमणं चतुव्विहं, निरइयादिभयस्स जं जं कारणं तस्स तस्स पडिक्कमितव्वं ।
अण्णे पुण भणंति- संसारपडिक्कमणं चतुव्विहं णेरइयाउयस्स जे हेतू महारंभादी तेसु जं अणाभोगेणं आभोगेण वा सहसक्कारेण
वा वट्टितं वितहं वा परूवितं तं तस्स पडिक्कमति-ते वज्जेति, तिरिएसु माइल्लता, माणुस्सगा देविगावि हेतू ण इच्छंति,माणुस्सदु-
ग्गतिहेतू वा जं एतेसु पडिक्कमति, एतं भावपडिक्कमणं ॥ एतं पुण तिविहं तिविहेण पडिक्कमितव्वं । कहं ?, मिच्छं न गच्छति
न गच्छावेति गच्छन्तं न समणुजाणति वा मणसा वयसा कायसा, किमुक्तं भवति?- मिच्छत्तं मणेण न गच्छति न गच्छावेति
गच्छंतं न समणुजाणति, स्वयं न गच्छति न गच्छावेति न चिंतेति अंणो मिच्छत्तगं गच्छेज्ज, केई तच्चण्णगादी होज्जा तं हु
मण्णेज्जा मणेणं एवं अणुजाणितं भवति, एवं वायाए काएण य विभासा, एवं पदे पदे जाव संसारोत्ति विभासा । एवं भावा
पडिक्कमितव्वा । एतं पुण सव्वमवि इमाहिं चउहिं मूलमातुगाहिं परिग्गहितं कोहेणं०, एतेहिं उदयभावतो खयोवसमादिभावं
उवणीतेहिं पडिक्कमितं भवतित्ति । एत्थ आयरिया उदाहरणं भणंति । जथा- किल केति दोण्णि संजता संगारं कातूण देवलोगं
गता, इतो य एगंमि नगरे सेट्ठी उवाइयसतेहिं णागदेवताए भण्णति- होहिति ते पुत्तो देवलोगचुतोत्ति, तेसिं च एगो देवो चुतो,
दारओ जातो, नागदत्तोत्ति से नामं कतं, बावत्तरिकलाविसारदो, गंधव्वं च से अतिप्पितं, तेण गंधव्वनागदत्तो से नामं कतं,
एवं बहुमित्तपरिवरितो अभिरमति, देवो य णं बहुसो बहुसो संबोहेति, सो ण संबुज्झति । अण्णदा सो देवो अव्वत्तेण लिंगेणं, नवि ॥ ६५ ॥
पव्वइतओ जेण से उवगरणं नत्थि, चत्तारि सप्पे करंडगे गहाय तस्स उज्जाणियं गतस्स अदूरसामंतेणं वीतिवयति, तस्स मित्ता
साहंति, तस्स मूलं गतो पुच्छति- किं एत्थ ?, भणति- सप्पा, गंधव्वनागदत्तो भणति- रमामो, सो न देति, अभिद्दवेति- तुमं

प्रतिक्रान्त्यानि

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ६६ ॥

गन्धर्वनागदत्त कथा

महच्चएहिं अहं तुहच्चएहिं, देवो तस्सच्चएहिं रमति, खइतोवि न मरति, सो तेणं अमरिसेणं भणति- अहंपि तवकेरएहिं रमामि, सो न संमण्णति, मा खज्जिधिसित्ति, न ठाति, भणितो-मरसि, तथवि ण ठाति, जाहे निब्बंधेण लग्गो ताहे मंडलगं आलिहितेल्लगं, तेण चतुद्दिसिंपि करंडगा ठविता,पच्छा सो सव्वं मित्तसयणपरियणं मेलेतूण तस्समक्खं इमं भणिताइओ—

गंधव्वनागदत्तो० ॥ १२६६ ॥ तेसिं च सप्पाणं पुण माहप्पं परिकहेति । तरुणदिवायर० ॥ १२६७ ॥ डक्को जेण० ॥ १२६८ ॥ एस कोहसप्पो, पुरिसे योजना स्वबुद्ध्या कार्या । जथा कोहवसगतो तरुणदिवायरणयणो भवति, एवमादि, एवं मेरुगिरि० ॥ १२६९ ॥ डक्को० ॥ १२७० ॥ एस माणसप्पो । एवं- सललित० ॥ १२७१ ॥ तं चासि० ॥१३७२॥ ह्रासेति ते० ॥ १२७३ ॥ एसा मायाणागी । एवं- ओत्थरमाणो० ॥ १२७४ ॥ डक्को० ॥ १२७५ ॥ एस लोभसप्पो सव्वविससमुदायोत्ति, जे हेट्ठिल्लेसु तिसु कसाएसु दोसा ते लोभे सव्वे सविसेसा अत्थित्ति । एते ते पावा० ॥१२७६॥एतेहि जो उ खज्जति० ॥ १२७७ ॥ एवं माहप्पं साहितूण जाहे न ठाति ताहे मुक्का, पक्खलितो, तेहिं खतिओ पडितो, मतो य,पच्छा सो देवो भणति- किह जातं ?, न ठाति वारिज्जंतो, पुव्वभणिता य तेण मित्ता, ते अगदे छुब्भंति, ओसहाणि य, किंचिवि गुणं ण करेंति, पच्छा तस्स सयणपरियणो तस्स पादेहिं पडिओ- जीवावेहत्ति, देवो भणति- अहंपि अणाडिओ आसी, ताहे अणेणं खावितो मतो य, ताहे भणति- जदि मम चरितं अणुचरति एते य सप्पे करंडगत्थे वहति तो णं जीवति, अण्णहा उज्जीवितोवि मरति, ताहे ममं सयणेण पडिस्सुतं, जीवितो तं अणुचरामि एते य वहामित्ति तं चरित्तं कहति, एतेहिं० ॥ १३-३६ ॥ १२७७ ॥ सेवामि०॥१३-३७॥१२७९॥ अच्चाहारो० ॥ १३-३८ ॥ १२८० ॥ उस्सण्णं० ॥ १३-३९ ॥ १२८१ ॥ थोवाहारो० ॥१३-४०॥१२८२॥ ॥ ६६ ॥

*** कषायप्रतिक्रमण" तस्य व्याख्या, कारणानि, तद् विषये नागदत्तकथा

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ६७ ॥

एवं एसोवि जदि एतं अणुपालेति तो उड्डवेमि, अण्णहा किं किलेसेणंति, भणंति वरं एवंपि जीवंतो, पच्छा सो पुव्वमुहो ठितो, किरियं पउंजिउकामो भणति—सिद्धे णमंसितूणं० ॥ १२८३ ॥ तृतीयौपधदृष्टान्त:

सव्वं पाणारंभं पच्चक्खाती य अलियवयणं च । सव्वं अदिण्णादाणं अब्बंभपरिग्गहं स्वाहा॥ १२८४ ॥

संसारत्था महावेज्जा केवलिचोद्दसपुव्वधरादयो, एवं भणिते उट्ठितो, अंमापिऊहिं से परिकहितं, न सद्दहति, पहाइओ, पडितो, पुणोवि तहेव देवेण उवाट्ठितो, पुणो पधावितो, पडितो, ततियाए वेलाए देवो णेच्छति, पसादितो, उट्ठवितो, पडिसुतं, अंमापितरं आपुच्छित्ता तेण समं पधावितो, एगंमि वणसंडे पुव्वभवं परिकहेति, संबुद्धो,पत्तेयबुद्धो जातो, देवोवि पडिगतो। एवं सो ते कसाए सरीरकरंडए छोढूण कतोइ संचरितुं न देति, एवं सो उदयियस्स भावस्स निंदणगरहणाए अपुणक्करणाए अब्भुट्ठितो पडिक्कंतो दीहेण सामण्णपरियाएण सिद्धो । एयं भावपडिक्कमणं । आह- किं निमित्तं पुणो पुणो पडिक्कमिज्जति?, जधा मज्झिमगाणं तथा कीस णवि कज्जे कज्जे पडिक्कमिज्जति?, आयरियओ आह- एत्थ विज्जेण दिट्ठंतो, जथा किल एगो राया, तेण विज्जा सद्दाविता,मम पुत्तस्स तिगिच्छं करेह, भणंति- करेमो, राया भणति- केरिसा तुम्ह जोगा ?, तत्थेगो भणति-जदि रोगो अत्थि तो उवसामेंति, अह नत्थि तो तं चेव जरिता मारेंति, बितिओ भणति- ममतणगा जदि रोगो अत्थि तो पउणावेंति, अह नत्थि तो नवि गुणं नवि दोसं करेंति, ततिओ भणति- जदि रोगो अत्थि तो हणंति रोगं, अहवा नत्थि तोवि वण्णरूवजोव्वणलायण्णत्ताए ॥ ६७ ॥ परिणमंति, ततिएणं रण्णा तिगिच्छा कारित्था । एवं इमंपि पडिक्कमणं, जदि दोसा अत्थि तो ते विसोहेति, जदि नत्थि तो झाणविसुद्धी सुभतरा भवतित्ति भणितं पडिक्कमणं । अज्झयणं पुव्वं भणितं, एवं एसो नामनिप्फण्णो निक्खेवो गतो । इदाणिं

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ६८ ॥

सूत्र

सुत्ताणुगमो सुत्तालावगनिप्फण्णो सुत्तफासितनिज्जुत्ती य तिन्निवि एगट्ठा वच्चंति, एत्थमादि चर्चा जाव इमं च तं सुत्तं-करेमि भंते! सामाइयं सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव वोसिरामि । एत्थ सुत्ते पदं पदत्थो चालणा पसिद्धी य जथा सामाइए तथा विभासितव्वा, चोदगो भणाति-एत्थ किं सामाइयसुत्तं भण्णति ?, उच्यते, सामाइयगाणुस्सरणपुव्वगं पडिक्कमंति तेणं भण्णइ । प्रस्तुतमभिधीयते--

चत्तारि मंगलं० दंसणसुद्धिनिमित्तं च तिन्नि सुत्ताणि,चत्तारि मंगलं अरहंता मंगलं०, साधुग्रहणेण आयरिया उवज्झाया य भाणिता, धम्मग्रहणेण सुतधम्मो य गहितो, मां पापेभ्य अरहंतादयो गालयंतीति पिंडार्थोऽयं सूत्रस्य । जतो य ते संसारनित्थरणकज्जे मंगलं भवंति तत एव लोगुत्तमत्ति । अरहंता लोगुत्तमा० ॥ सूत्रं । तत्थ अरिहंता ताव भावलोगस्स उत्तमा, कहं?, उत्तमा पसत्थाणं वेदणिज्जाउयनामगोत्ताणं अणुभावं पडुच्च उदइयभावस्स उत्तमा, एतमेव विसेसिज्जति-उत्तरपगडीहिं सातं मणुस्साउयं तासिं दोण्हं, इमासिं च नामस्स एक्कत्तीसाए पसत्थुत्तरपगडीणं, तंजथा- मणुस्सगति पंचिंदियजाति ओरालिय० तेयगं कम्मगं समचतुरंससंठाणं ओरालियंगोवंगं० वइरोसभणारायसंघयणं० वण्णरसगंधफासा अगुरुलघुं उवघातं पराघातं ऊसासं पसत्थविहगमती तसं बादरं पज्जत्तयं पत्तेयं थिराथिराणि सुभासुभाणि सुभगं सूसरं आदेज्जं जसकित्ती निम्मानमं तित्थगरमिति बत्तीसं पसत्थाणं, वेदणिज्जं मणुस्साऊ उच्चागोयं वा, एतेसिं चोत्तीसाए उदइयभावेहिं उत्तमा, पधाणत्ति भणितं होति, उवसमियभावो अरहंताणं नत्थि, खाइयभावस्स पुण णाणावरणदंसणावरणमोहंतराइयाण णिरवसेसखवणं पडुच्च खाइयभावलोगस्स उत्तमा सरण्णा वा, से पुण अरिहंताणं पुव्ववण्णितस्स ओदइयभावस्स य समायोगे सण्णिवादभावो निप्फज्जति, तेण उत्तमा

मंगल-लोकोत्तम-शरण-सूत्राणि

॥ ६८ ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं

***मूलसूत्र - (१) "नमस्कार सूत्र" हमने पूज्यपाद आचार्य सागरानंदसूरीश्वरजी संपादित "आगममंजुषा" पृष्ठ-१२०५ के आधार से यहां लिखा है |

मू. (११) करेमि भंते सामाइयं ....जाव.........वोसिरामि | [यह पूरा सूत्र अध्ययन-१ 'सामायिकं' पृष्ठ- ९११ अनुसार समझ लेना]

*** यहां मैने उपर हेडिंग मे मूलं के साथ [कौंस मे] 'सूत्र' ऐसा लिखा है, क्यों की मूल संपादकने यहां कोइ क्रम नहि दिया है |

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

लोगुत्तमा । सिद्धा खेत्तलोगस्स निरवसेसाणं च कंमपगडीणं जो खाइयभावलोगो तस्स उत्तमा, खीणं सव्वं कंमन्ति भणितं होति। साधू णाणदंसणचरित्ताणि पडुच्च भावलोगुत्तमा । धम्मो दुविधो-सुतधम्मो चरित्तधम्मो य, एते दोण्णिवि खाइयं खाओवसमियं च भावलोगं पडुच्च उत्तमा । जतो य उत्तमा तत एव सरणं पवज्जितव्वत्ति—चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरहंते सरणं पवज्जामि० ॥ सूत्रं । संसारभयभीतो मोक्खसुहत्थं अरहंतादीणं भत्तिमंतो होमित्ति भणितं होति, एवं तिहिं सुत्तेहिं मंगलं दंसणसुद्धिं च कातुं पडिक्कमणसुत्तं भणति--

सूत्र

इच्छामि पडिक्कमितुं जो मे देवसिओ अतियारो कतो काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो जाव समणाणं जोगाणं जाव तस्स मिच्छामिदुक्कडंति ।

इदाणिं पयाणि पदत्थो य भणितव्वो, इच्छा खमासमणत्थो य पुव्वभणितो, दिवसतो जातो देवसिओ, अतियारो 'अतिरातिक्रमणादिषु' अतिचरणमतिचारः, स्खलितमित्यर्थः, सो पुण अतियारो उपाधिभेदेन अणेगधा भवति, अत आह-- 'काइओ वाइओ' इच्चादि, तत्थ कायातो जातो काइओ, एवं वाइओ माणसिओवि, ऊर्ध्वं सूत्रादुत्सूत्रः सुत्तलंघणेण, मग्गो नाम खओवसमभावो तातो तिव्वउदइयभावसंकमणं एवोम्मग्गो, न कप्पो अकप्पो, न करणीओ अकरणीयः, दुज्झातोत्ति अंतोमुहुत्तं जो छउमत्थाणं अणोच्छिण्णो अणण्णभावेण एगग्गजोगाभिनिवेसो सो झाणं भवति, तत्थ जं दुज्झातं, जो पुण जोगपरिणामो अण्णोण्णेहिं अज्झवसाणेहिं अंतरितो सो चित्तं, तत्थ जं दुव्विचिन्तितं, अणायारो नाम अणाइण्णो, अणिच्छितव्वो जो इच्छितव्वोवि न भवति, किमंग पुण कातव्वो ?, असमणपायोग्गो तवस्सीणं अणुचितो, को सो एवंविहो ?, जो सो पुव्वपत्थुतो देवसितो ॥ ६९ ॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

अतियारो, एताणि पुण विसेसनयाभिप्पायेण भिण्णत्थाणि विभासिज्जंति, अण्णे पुण एगट्ठिताणि भणंति, पडिक्कमणाधिकारे संवेगत्थं, अण्णे पुण हेतुहेतुमद्भावेन वण्णेंति, जथा जतो चेव उस्सुत्तो अतो चेव उम्मग्गो, जतो चेव उम्मग्गो अतो चेव अकप्पो इच्चादि। एसो य कंमि विसए भवतीत्याह-नाणे दंसणे चरित्ते सुए सामाइए सुतसामाइयाणं भेदेण गहणं विसिट्ठविसयदरिसणत्थं, एतेसु विसयभूतेसु जो मए देवसिओ अतियारो कतो उस्सुत्तादिविसेसणविसिट्ठो तस्स पडिक्कमितुमिच्छामीत्यर्थः, अनेन वितिगिंछाऽभावं दंसेति, तत्थ तिण्हं गुत्तीणं चतुण्हं कसायाणं पंचण्हं महव्वताणं छण्हं जीवनिकायाणं सत्तण्हं पिंडेसणाणं अट्ठण्हं पवयणमादीणं नवण्हं बंभचेरगुत्तीणं दसविधे समणधंमे समणाणं जोगाणं जं खंडितं जं विराधितं तस्स मिच्छामिदुक्कडंति, तत्थ गुत्तिमादीण सरूवं उवरिं भंणिहिति, पिंडेसणा पुण भवंति सत्त, ता इमा, तंजथा-संसट्ठ१ असंसट्ठा२ उद्धडा३ अप्पलेवा४ उग्गहिता५ पग्गहिया६ उज्झियधंमियाओ७। तत्थ पढमा दोहिवि असंसट्ठा, असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते, अखरडिएत्ति वुत्तं भवति, एताएवि गिण्हति गच्छवासी जत्थ पच्छेकंमपुरेकंमादी दोसा न भवंति, गिलाणादिकारणे वा इतरंपि गेण्हति१, बितिया दोहिवि संसट्ठा, सुद्धुतरंति पच्छेकंमादिदोसा वज्जिता२ ततिया उद्धडा, संसट्ठाउ कड्ढितं अच्छति थालसरावपडहत्थिगपिडिगाछप्पगपडलगअलिंदिगाकुंडगादिसु विरूवरूवेसु भायणेसु अणेगप्पगारं भोयणजातं३, संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते चत्तारि भंगा, गच्छवासी चउहिंपि गेण्हंति,जिणाणं संसट्ठेहिं दोहिवि गहणं भंगेहिं४ सुत्तादेसेण वा चउत्था अप्पलेवा, अभावे अप्पसद्दो, निर्लेपं मन्थुमादी४ पंचमी उवग्गहिता, उवग्गहितं भुंजणनिमित्तं असढाए उवणीतं थालसरावकोसगादिसु, जस्स तं उवणीतं तस्स पाणीसु जो दगलेपो सोवि परिणतो सो वा देज्जा ५ छट्ठा पग्गहिता, पग्गहितं नाम

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णिः- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ७१ ॥

कायिकादि प्रतिक्रमणं

हत्थगतं दिज्जमाणं जस्सवि अट्ठाए पग्गहितं सोवि तं नेच्छति, पादपरियावण्णं कंसभायणस्स नत्थि दगलेपो पाणीसु नत्थि दगलेवो देंतस्स नियत्तो भावो छट्ठी६ सत्तमी देंतस्स दिज्जस्सवि जस्सवि दिज्जति दोण्हवि नियत्तो भावो अह उज्झियधंमिया, पुव्वदेसे किर पुव्वण्हे रद्धं जं तं अवरण्हे परिट्ठविज्जति, साधुआगमणे वा तंपि भायणगतं वा देज्जा, हत्थगं वा देज्जा, कप्पति जिणकप्पितस्स पंचविहग्गहणं, थेराणं सत्तविहं ७ एतासिं सत्तण्हं पिंडेसणाणं। केई पढंति सत्तण्हं पाणेसणाणं, एवं पाणएवि, चउत्थी अप्पलेवा- तिलोदगादी। अट्ठण्हं पवयणमादीणं पंच समितीओ तिण्णि गुत्तीओ, एताओ अट्ठ पवयणमाताओ, सेसं उवरि भण्णिहिती। तत्थ समणाणं एते सामणा, के ते ?- तिण्णि गुत्तीओ जाव समणधम्मो, अण्णे पुण भणंति- सामणाण जोगाणंति, ये चान्येऽप्यनुक्ताः समणयोगाः, एतेसिं जोगाणं जं खंडितं नाम एगदेसो भग्गो, विराधितं नाम बहुतरं विणासितं, तस्स मिच्छामिदुक्कडं, जथा दसविधसामायारीए. अनेन च प्रतिक्रान्त इति। एत्थ सुत्तफासितनिज्जुत्तिगाथा--पडिसिद्धाणं करणे किच्चाणं अकरणे पडिक्कमणं। अस्सद्दहणे य तथा विवरीतपरूवणाए य ॥१२८५॥एताओ गाथाओ सव्वाणि पडिक्कमणसुत्ताणि अणुगंतव्वाणि, जथा करेमि भंते! सामाइयकंति, एत्थ पडिसिद्धा रागदोसा ते जो करेति, किच्चं रागदोसविणिग्गहो सामायिकमित्यर्थः, तस्याकरणे, तं तहा न य सद्दहितं वावि विपरीतं वा परूवितं तस्स पडिक्कामितं। एवं मंगलसुत्ते भावेतव्वं। एवं जे विसोहिट्ठाणा तेहिं जं न कतं न सद्दहितं विवरीतं वा परूवितं, जे अविसोहिट्ठाणा तेहिं जं कतं न सद्दहितं विवरीतं वा परूवियं तेसिं पडिक्कमति। एवं सव्वसुत्ताणि भाणितव्वाणि। एवं ओहातियारस्स पडिक्कमणं भणितं ॥

इदाणिं विभागेण भण्णति संवेगत्थं, तत्थ पढमं गमणातियारं, उक्तं च- ठितीक्खया गच्छति, जत्थ गच्छती गतिक्खया

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ७२ ॥

ईर्यापथिकी व्याख्या

चिट्ठति,जत्थ चिट्ठति सुहक्खया सोयति,जत्थ सो[illegible] [illegible]क्खया मोयति,जत्थ मोदति(पमायति)जं च हेट्ठा भणिता अप्पमादनिमित्तं, इदमपि अप्रमादार्थमेव, एस संबंधो इरिया

सूत्र

इच्छामि पडिक्कमितुं इरियावहियाए विराहणाए 'ईर गतिप्रेरणयोः' ईरणं ईर्या गमनमित्यर्थः एत्तो जाता पथिका, ईरणे पथिका इरियावधिया, काऽसौ ?, विराधणा, तीए गच्छन्तस्स पथि जा काइ विराधणा सा इरियावहिया। इच्छामि पडिकमितुंति पुव्वभणितं, एस संखेवत्थो इरियावहियाए, विस्तरतस्तु गमणेत्यादि, तत्थ इरियावहियाविराधणं एवं गमणं अण्णत्थ, गंतुं अच्छाति, पाढादि करेति न वा, गत्वा पडुच्च तं तत्थ पडिकमति, आगमणे जं ततो नियत्तति, तत्थवि पडिकमति, तं हि गमणागमणे जं पाणक्कमणं कतं, बीजक्कमणं वा कतं, पाणग्गहणेणं बेंदियादी सूयिता, बीयग्गहणेणं बीजा जीवा, न निज्जीवा, एवं ठावितं भवति, हरितक्कमणेणं वणप्फतिकायो सूइतो, तथा **ओसाउत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कडासंताणासंकमणे**, तत्थ ओसा पसिद्धा, उत्तिंगा नाम गद्दभगाकिती जीवा भूमीए खड्डयं करेंति, कीडियानगरं वा, पणगो पंचवण्णो, पणओ उल्लित्ति वुच्चति, दगमट्टिया चिक्खल्लादि, अहवा दगं- आउक्काओ मट्टिया-पुढविकाओ मक्कडगसंताणओ-कोलियगजालं तेसिं संकमणे एते भेदा दंसिता, केतियं वा भणिहामित्ति समासेण भण्णति, किं बहुणा ?- **जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया जाव पंचिंदिया**, अभिहता नाम आवाडिता आवेडिता वा चलणादिणा खित्ता अहवा अक्कंता, वत्तिया नाम पुंजीकता, अहवा धूलीए चिक्खल्लेण वा ओहाडिता, लिसिता पिट्ठा, अहवा भूमीए कुड्डादिसु वा लाइया, संघातिता-गत्ताणि परोप्परं लाइताणि, संघट्टिता-ईसित्तिच्छित्ता, परियाविता-दुक्खाविता, किलामिता-किंचिज्जीवितसेसा कया अहवा समुग्घातं नीता, उद्दविता उवद्दविता उत्त्रासिता वा, **ठाणाओ ठाणं संकामिया** अण्णाओ ठाणाओ अण्णत्थ ॥ ७२ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

सूत्र

|| ७३ ||

नीता, जीविताओ ववरोविता-मारिता,तस्स मिच्छामिदुक्कडंति पुव्वभणितमिति॥ इदाणिं गति ड्डियाणं भवाति।त्ति तत्थ भणाति-- इच्छामि पडिक्कामिउं पगामसेज्जाए० सूत्रं। पगामसेज्जा सव्वरत्तिं सुवति, पगामत्थरणं जं संथारुत्तरपट्टगातिरित्तं अत्थराति, पगामं पाउणाति, गद्भदिट्टंतमकातूणं परेणं तिण्हं पाउणातित्ति। एताणि चेव पदाणि दिणे दिणे जदि करेति तो निगामसेज्जा, दिवे दिवे सव्वरत्तिं सुवति, दिवे दिवे तथा पत्थरेति पाउणाति। एत्थ सोतव्वयविधाणं जथा ओहसामायारिए अभिगमानिगमट्ठा-णगमणचंकमणाणि जथा तहं विभासितव्वाणि, उव्वत्तणं पढमं वामपासेण निवन्नो संतो जं पल्लत्थति एतं उव्वत्तणं। जं पुणो वाम-पासेणं एवं परियत्तणं, आकुंचणं गातसंखेवो, पसारणं गाताणं, एत्थ उ कुक्कडिवियंमियं दिट्ठंतो, जथा कुक्कुडि पादं पसारेतुं लहुं चेव आउंटेति एवं साधू जाहे परितन्तो ताहे भूमिं अच्छिवंतो पसारेति, लहुं चेव आउंटेतुं संथारपट्टए ठवेति, कुयितं नाम कक्कराइयंति अहो विसमा सीतला घंमिला दुग्गंधादि कक्कराइतं, अहवा कुत्सितं रसितं कूजितं, कक्कसं रसितं कक्करातितं, छीए जंभाइए य अजयणाए पाणवहो भवेज्जा। आमोसो आमूसणं अणुवउत्तेण जं कतं, ससरक्खामोसा पुढवादिरयेण सह जं तं ससरक्खं तस्स आमुसणं ससरक्खामोसो. एते ताव जागरस्स अतियारा। इदाणिं सुत्तस्स भण्णाति-आउलमाउलताए सोवणंतिए निद्दप्पमादाभिभूदस्स मूलगुणाणं उत्तरगुणाणं वा उवरोधकिरिया जा णाणाविधा सोवणंतिया सो आउलमाउला, अहवा आउलं-नाणाविहं रूवं विवाहसंगमादिसु दिट्ठं आयरितं वा, पुणोवि आउलं तारिसा बहवो वारा दिट्ठा एसा आउलंआउला। एते य आमोसादी तिण्णि आलावगा केइ न पढंति, किंतु इत्थीविप्परियासियाए इत्थिए विप्परियासो इत्थीविप्परियासो, स्वप्ने स्त्रिया ब्रह्मचर्यविनाश इत्यर्थः, विपर्यासो नाम अबंभचेरं, दिट्ठिविप्परियासो रूवं द्रष्टुं भ्रमति, एवं पाणभोयणं सुविणे कतं सो

प्रकाम-शय्या

|| ७३ ||

*** एते सूत्रे शयानस्य विधि दर्शयते

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने || ७४ ||

विपर्यासः, मणोविप्परियासिया यदप्रशस्तं मनसा चिंतितं,केई पुण आउलमाउलाए सोयणवत्तियाए एतं आलावगं एत्थ पढंति, तत्थ जातो, सेसाओ आउलम **सूत्र** सोमणंतियाओ इत्थी दिट्ठीओ निद्दापमादाभिभूतेण,तस्स मिच्छामिदुक्कडंति पुव्वभणितं । इदाणिं भिक्खायरियाविराहणं -इच्छामि पडिक्कमितुं गोयरचरियाए इत्यादि, गोचरचर्या इति कोऽर्थः?, गोश्चरणं गोचरः, चरणं चर्या, उक्तंच- जधा कवोता य कविंजला य, गावो चरंती इध पागडाओ । एवं मुणी गोयरियं चरेज्जा, नो हीलए नोदिय संथवेज्जा ॥ १ ॥ लाभालाभे सुहदुक्खे सोभणासोभणे भत्ते वा पाणे वा सुसमणो तुण्हिक्को चरति, जहा वा सो वच्छओ दिवसं तिसाए छुहाए य परितावितओ तीए अविरतियाए पंचविहविसयसंपउत्ताए तणपाणिए दिज्जमाणे तंमि इत्थियंमि ने मुच्छं गच्छति, न वा तेसु चित्तं देति, किं तु चारिं पाणियं च एगग्गमाणसो आलोएति, एवं साधूवि पंचविहेसु विसएसु असज्जंतो भिक्खायरियाए उवउत्तो चरति तेण गोचरचरिया, तीए गोचरचरियाए या भिक्खायरिया भिक्खेसणा तत्थ भिक्खायरियाए जं उग्घाडकवाडं उग्घाडितं उग्घाडं नाम किंचि थगितं, साणो वच्छओ दारओ वा संघट्टितो, मंडीपाहुडिया नाम जाहे साधू आगतो ताए मंडीए अण्णंमि वा भायणे अग्गपिंडं उक्कड्डिताण सेसाओ देति, बलिपाहुडिया नाम अग्गिमि छुभति, चउद्दिसिं वा अच्चणितं करेति, ताहे साहुस्स देति, तं न वट्टति, ठवणापाहुडिया नाम भिक्खायरा आगमिस्संति अहवा साधूण चेव अट्ठाए ठविता, संकिते सहसाकारे अणेसणाए, इदमुक्तं भवति--अणेसणाए अण्णतरेण दोसेण संकिता, अणेसणा पत्तुद्धा, सहसकारेण गहिता, पाणभोयणा दुप्पडिलेहितो, एवं बीयहरियभोयणेवि, अदिट्ठे उक्खेवनिक्खेवे जं अभिहडं, अभिहडं नाम आणीतं, एवं रयसंसट्ठअभिहडंति, दगसंसट्ठं अभिहडंपि, पारिसाडणियाए जं पारिसाडिज्जंतं लद्धं, पारिट्ठाव-

भिक्षाचर्या || ७४ ||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणा० सूत्र ॥ ७८ ॥

स्वाध्याया-
करणादि

॥ ७९ ॥

णियाए, तत्थ भायणे असणं किंचि आसी ताहे तं परिट्ठवेतूण अण्णं देति सा पारिट्ठावणिया, किंत्तियं वा भणीहामि?- जं उग्गमेणं उप्पायणेसणाए अपरिसुद्धं पडिग्गाहितं वा परिभुत्तं वा उग्गमउप्पायणेसणाओ जथा पिंडनिज्जुत्तीए, तस्स मिच्छामिदुक्कडं पुव्वभणितं ॥ पडिक्कमामि चाउक्कालं सज्झायस्स अकरणयाए दिया पढमचरिमासु रत्तिंपि पढमचरिमासु चेव पोरिसीसु सज्झायो अवस्स कातव्वो, उभयो कालं भंडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए दुप्पाडिलेहणाए च अप्पडिलेहणा चक्खुसा ण णिरिक्खिकं दुप्पाडिलेहणा- दुण्णिरिक्खितं अप्पमज्जणा-रयहरणादिणा ण पमज्जति दुप्पमज्जणा-रयहरणादिणा दुप्पमज्जितं, एत्थ सव्वत्थ अतिक्कमे वतिक्कमे अतियारे अणायारे जो मे देवसिओ अतियारो कतो तस्स मिच्छामिदुक्कडं, अतिक्कमादीणं पुण इमं निदरिसणं, जथा- एगो साधू आहाकंमेण निमंतिओ पडिस्सुणेति अतिक्कमो, उग्गाहितेवि जाव उवयोगे ठितेण संदिसावितं सोवि अतिक्कमो, जाहे पदभेदो कतो ताहे वतिक्कमो, जाव उक्खित्ता भिक्खा तहवि वतिक्कमो, जाहे भायणे छूढं ताहे अतियारो, जाव लंबणे उक्खिवइ तहवि अइयारो, जाहे णेण मुहे पक्खित्तो ताहे अणायारो, एवंविहा भावेयव्वा। एत्थ सव्वत्थ जं करणिज्जं न कतं अकरणिज्जं कतं न सद्दहियं वा वितहं वा परूवितं तत्थ जो देवसिओ अतियारो कतो तस्स मिच्छामि दुक्कडं। एवं रातिमातिपडिक्कमणे रातियातिअतियारं भणिज्जा। एत्थ य केइ अतियारा दिवसतो संभवंति केई रातीयो संभवंति केई उभएवि केई अहोरायंमि, तत्थ दिवसा असंभविणोवि देवसिए उच्चरिज्जंति, संवेगत्थं अप्पमादत्थं निंदणगरहणत्थं एवमादि पडुच्च, एवं रातिअसंभविणोवि विभावेज्जा, अण्णे पुण भणंति- सव्वे सव्वत्थऽसंभविणो अपमादादिकारणं पडुच्च सुविणयमादिं च पडुच्च एवं विभासेज्जा। एवं देवसियस्स पडिक्कंता। इदाणिं

***एते सूत्रे अतिक्रम, व्यतिक्रम आदि दर्शयते

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ७६ ॥

एकविधादि प्रतिक्रमणं

सव्वकालियस्स पडिक्कमति, जहा अनिर्दिष्टकाला: प्रत्ययास्त्रिष्वपि कालेषु भवंति एवं अनिर्दिष्टकालं प्रतिक्रमणं त्रिष्वपि कालेषु भवतीति. सो य अतियारो संखेवतो एगविधो संखेववित्थरतो भवति सो च्चेव दुविधो वा जाव दसविधो वा जाव सत्तरसविधो वा संखेज्जअसंखेज्जअणंततिविधो वा। एते संखेववित्थरतो अतियारभेदा कहं ?, उच्यते- एगविधं पडुच्च दुविधं भेदवित्थरतो भवति, सो च्चेव दुविधो तिविधं पडुच्च संखेवो भवति, तम्हा दुविधो संखेववित्थरो अविरुद्धोत्ति, एवं सव्वट्ठाणाणिवि जाव अचरिमं, अणंतइमं चरिमं पुण इमं जाव वित्थरतो भवति, एतेसिं जथापरिवाडीए वक्खाणं भवति। एत्थ संखेववित्थरतो किंचि भणति—

सूत्र

पडिक्कमामि एगविधे असंजमे इत्यादि, तत्थ एगविधे इमं सुत्तं- पडिकमामि एकविधो अस्संजमे, एतन्मात्रमेव सूत्र-पदार्थः। प्रतीपं क्रमामि प्रतिक्रमामि, जथा नगराओ गामं गतो देवदत्तो तत्तो पुणरवि तमेव नगरं पच्चागतो संतो पडियागतोत्ति भण्णति, एवं साधूवि खओवसमियभावातो उदइयभावं संकतो पुणरवि तमेव खओवसमियभावं पडिसंकतो पडिकंतोत्ति भण्णति।

सूत्र

सो अतियारो कहं भवति ?, एकविधे अस्संजमो, न संयमः असंयमः, संजमो संमं उवरमो, तंमि असंजमे जो पडिसिद्धकरणा-दिणा अतियारो कतो तिकालविसओऽवि तस्स मिच्छामिदुक्कडं, एवं तं उवरि सज्झाए ण सज्झातियं तस्स मिच्छामि दुक्कडंति एत्थ भण्णिति एवं सव्वत्थ विभासा, एवं एकविधो अतियारो भणितो। इदाणिं दुविधं भणति- पडिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं रागबंधणेण दोसबंधणेण य पडिकमणोत्थ पुव्ववण्णितो, दोहिंति रागद्वेषापेक्षणीया संख्या, बंधनमिति बध्यतेऽनेनेति बंधनं, दुविधं-रागबंधणं दोसबंधणं च, रंजनं रज्यते वाऽनेन जीव इति रागः राग एव बंधनं, द्वेषणं द्विषत्यनेनेति वा द्वेषः द्वेष एव

॥ ७६ ॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ७७ ॥

दंड-प्रतिक्रमणं

बन्धनं दोसबन्धणं, एतेहिं दोहिं बंधणहेतूहिं अतीचारः कर्मबन्धश्च भवति तम्हा एतेहिं दोहिं जो पाडिसिद्धकरणादिणा अतियारो कतो तस्स मिच्छामिदुक्कडं । एस च दुविधो अतियारो पज्जायनयवसेण जोगवसेण करणवसेण य तिविधो भवति- पडिक्कमामि तीहिं दंडेहिं मणोदंडेण वइदंडेणं कायदंडेणं । जो मे पाडिसिद्धकरणादि अतियारो कतो तस्स मिच्छामि दुक्कडं । एसा सव्वा विराधणा संगादिगा संठिता, अण्णे पुण एवं भणंति जथा- पडिक्कमामि एगविधे असंजमे पाडिसिद्धकरणादिणा जो मे अतियारो कतो तस्स मिच्छामिदुक्कडं । तंमि चेव अस्संजमे पडिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं- रागबंधणेणं दोसबंधणेणं २, तंमि चेव अस्संजमे रागदोसेहिं पडिसिद्धकरणादिणा जो मे अतियारो कतो तस्स मिच्छामिदुक्कडं, एवं तंमि चेव असंजमे तिहिं दंडेहिं मणसादीहिं पाडिसिद्धकरणादिणा जो मे अतियारो कतो तस्स मिच्छामिदुक्कडं । एवं सव्वत्थ विभासा । दंडयत्यात्मानं तेनेति दंडः, जथा लोके दंडिज्जति दव्वं च हीरति बज्झति य एवमिहावि चरित्तं च हारवेति दोग्गइं च लभेति, मन एव दुष्प्रयुक्तो दंडो भवति, तत्थ मणदंडे उदाहरणं—कोकणगखंतो, सो उड्डजाणू अहोसिरो चिंततो अच्छति, साधुणो अहो खंतो सुभज्झाणोवगतोत्ति वंदंति, चिरेणं संलावं देतुमारद्धो, साहूहिं पुच्छिते भणति- खरो वातो वायति, जदि ते हि मम पुत्ता संपतं वल्लराणि पलीवेज्जा ता तेसिं वरिसारत्ते सरसाए भूमीए सुबहु सालिसंपदा भवेज्जत्ति एवं चिंतियं मे, आयरिएण वारितो ठितो ॥ एवमादी जं असुभं मणे चिंतेति सो मणदंडो । वइदंडो सावज्जा भासा, तत्थोदाहरणं—साधू सण्णाभूमीओ आगतो, अविधीए आलोएति, जथा सूयरवंदं दिट्ठंति, पुरिसेहिं सुतं, गंतुं मारितं । अहवा कोट्टिओ सामिं दट्ठुं भणति-जदि दिवसो होंतो सव्वे समणगा हलं वाहावेंतो। कायदंडो कायेण असुभपरिणतो पमत्तो वा जं करेति सो कायदंडो, दिट्ठंतो—चंडरुद्दो आयरिओ उज्जेणिए बाहिं

॥ ७७ ॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ७८ ॥

रगामातो अणुयाणपेक्खओ आगतो, सो य अतीव रोसणो,तत्थ य समोसरणे गणियाघरविहेडितो जातिकुलादिसंपण्णो इब्भदारओ सेहो उवट्ठितो, तत्थण्णेहिं असद्दहंतेहिं चंडरुद्दस्स पासं पेसिओ, कलिणा कली घस्सओत्ति, सो तस्स उवट्ठितो, तेण से ताहे चेव य लोयं काउं पव्वाततितो, पच्चूसे गामं वच्चंताणं चंडरुद्दो पत्थरे आवाडितो रुट्ठो सेहं डंडएण स मत्थए अभिहणति, कहं ते पत्थरो न दिट्ठोत्ति ?, सेहो संमं सहति, कालेणं केवलणाणं, चंडरुद्दस्सवि तं पासितुं वेरग्गेण केवलणाणं, अतो एतेहिं तिहिं डंडेहिं जो मे जाव दुक्कडं।

सूत्र

पडिक्कमामि तिहि गुत्तीहिं-मणोगुत्तीए वय० कायगुत्तीए, एसा संहिता सव्वविसोहिट्ठाणाण संगाहिगा, असुभजोगो परमोऽगुत्ती, तत्थ मणगुत्तीए उदाहरणं- सेट्ठिसुतो सुण्णघरे पडिमं पडिवण्णो, पुराणभज्जा से संनिरोधं असहमाणी उब्भामइल्लेण समं तं चेव घरमतिगता, पल्लंकंकटएण सावगस्स पम्दो विद्धो, तत्थ अणायारं आयरति,न तस्स भगवतो मणो निग्गत्तो सट्ठाणातो। वइगुत्तीए सण्णायगसगासं साधू पत्थितो, चोरेहिं गहितो मुक्को य,अंमापितरो विवाहनिमित्तं एंताणि दिट्ठाणि,तेहिं नियत्तिओ,तेण तेसिं वतिगुत्तेण ण कहितं, ताणि तेहिं चोरेहिं गहिताणि, साहू य पुणो णेहिं दिट्ठो, स एवायं साधुत्ति भणितो, मुक्को, माताये पुच्छिता-तुब्भेहिं किं एसो गहितूण मुक्को ?, आमं, ता आणेहि छुरियं जा थणेऽहं छिंदामि, तेहिं भण्णति- किमिति ?, सा भणति- दुज्जातो एसो, तुब्भे दिट्ठा तहावि ण कहेति, किं तुज्झ पुत्तो ?, आमं, तो किं न सिट्ठं ?, ताहे तेण धम्मो कहितो, आउट्ठाणि, विमुक्काणि तस्संतियाणित्ति काउं॥ काइयगुत्ताहरणं,अद्धाणपवण्णगो जथा साधू। आवासितंमि सत्थे ण लभति तहि थंडिलं किंचि ॥१॥ लद्धं चणेण कहवी एगो पादो जहिं पतिट्ठाति। तहियं ठितेगपादो सव्वरातिं तहिं थद्धो ॥२॥ न य ठवितं किंचि अत्थंडिलंमि

गुप्ति-प्रतिक्रमणं

॥ ७८ ॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ७९ ॥

शल्य-प्रतिक्रमणं ॥ ७९ ॥

होतव्वमेव गुत्तेण । सुमहब्भएवि अहवा साहु न भिंदेइ गतिभेगो ॥ ३ ॥ सक्कपसंसा असद्दहण देवागमो विउव्वति या । मंडुकलिया साधू जयणाए संकमे साणियं ॥ ४ ॥ हत्थी विकुव्वितो जो आगच्छाति मग्गतो गुलगुलेंतो। ण य गतिभेदं कुणती, गएण हत्थेण उच्छूढो ॥ ५ ॥ बेति पडंतो मिच्छामिदुक्कडं जित विराधिता मेत्ति। णवि अप्पाणं चिंता देवो तुट्ठो नमंसति य ॥ ६ ॥ एताहिं तिहिं गुत्तीहिं जो मे अतियारो कतो, कहं ?, पडिसिद्धाणं करणं किच्चाणं अकरणं असद्दहणं विवरीयपरूवणं, एतासु गुत्तीसु अतियारा तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥

सूत्र

पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं मायासल्लेण निदाणसल्लेण मिच्छादंसणसल्लेण, तत्थ दव्वसल्लो कंटगादी, भावसल्लो जं अवराहट्ठाणं समायरित्ता नालोएति, **मायासल्लोत्ति** अप्पणा अवराधं कातूण भणति- न करेमि, अण्णस्स वा पाडेति, असंपुण्णं वा आलोएति, पडिकुंचति, जथा परोवधातियाए मायाए अंगरिसी उदाहरणं, इतराए पंडरज्जा १ ॥ **निदानशल्यं** निश्चितमादानं निदानं, अप्रतिक्रांतस्य अवस्यमुदयापेक्षः तीव्रः कर्मबंध इत्यर्थः, निदानमेव सल्लो निदानसल्लो, दिव्वं वा माणुसं वा विभवं पासितूण सोऊण वा निदाणस्स उववत्ती भवेज्जा, तेण किं भवति ?, उच्यते, सणिआणस्स चरित्तं न वट्टति, कस्मात् अधिकरणानुमोदनात् , तत्थोदाहरणं बंभदत्तो। **मिच्छादंसणसल्ल** इति मिथ्यादर्शनं मोहकर्मोदय इत्यर्थः,सो तिविधो- अभिनिवेसेण मतिमोहेण (भेएणं) संपवेण वा, तत्थ उदाहरणानि जथासंख्यं **गोट्ठामाहिलो जमाली सावगोत्ति ।**

सूत्र

पडिक्कमामि तिहिं गारवेहिं इड्ढीगारवेणं रसगारवेणं सातागारवेणं । गुरुभावो गारवो, प्रतिबंधो अतिलोभ इत्यर्थः, इड्ढीगारवो लोगसंणतीए नरिंददेविंदपूयाए वा भवति, रसगारवे जिब्भादंडो, सातागारवो सुहसातगत्तणं सयणासणवसहिवत्थादीहिं

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ८० ॥

सूत्र

सुहकारणेहिं पडिबंधो, तिसुवि उदाहरणं महुराए अज्जमंगू आयरिओ तिव्वगारवाभिभूतो अपडिकंतो कालं कातुं महुराए निद्धवणजक्खो उववण्णो, ताहे जक्खायतणस्स अदूरेण साहुणो वोलेंताणं जक्खपडिमं अणुपविसितुं जीहं निल्लालेति, एवं अण्णदावि कते साधूहिं पुच्छितो भणति-अहं सो पावकम्मो अज्जमंगू जीहादोसेण एत्थ उववण्णो, तं मा तुब्भे गारवपडिबद्धा निद्धंधसा होहिह, एतेहिं गारवेहिं जो मे जाव दुक्कडंति ॥ पडिक्कमामि तिहिं विराहणाहिं विगता आराहणा विराहणा, विराहणाए अकालसज्झायकारओ उदाहरणं, दंसणविराहणाए सावगधीता जल्लगंधेण, चरित्तविराहणाए खुड्डओ सुतओ जातो, महिसो वा, एताहिं तिहिं विराहणाहिं जो मे जाव दुक्कडंति। तिविहातियारातो चतुकातियारो भवति, पडिक्कमामि चउहिं कसाएहिं- कोहकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोभकसाएणं, कसाया नमोक्कारे पुव्ववण्णिका, एतेहिं जो मे जाव दुक्कडंति। पडिक्कमामि चउहिं संणाहिं आहारसंणाए०। संणा दुविहा खओवसमिया कम्मोदइया य, तत्थ खओवसमिया णाणावरणखओवसमेण आभिणिबोहियनाणसंणा भवति, ताए एत्थ नाधिगारो, कंमोदइया चतुव्विहा आहारसंना ४, आहारसंणा नाम आहाराभिलाससंज्ञानं, आहाररागसंवेदनमित्यर्थः, तीए चत्तारि उदयहेतुणो 'चउहिं ठाणेहिं आहारसंणा समुप्पज्जति -ओमकोट्ठताए १ छुहावेदणिज्जस्स कंमस्स उदएणं २ मतीए ३ तदट्ठोवयोगेणं ४, तत्थ मती सोतुं दट्ठुं आघातुं रसेणं फासेण वा भवति, तदट्ठोवयोगेणं आहारं चिंतेति, सुत्तत्थतदुभएहिं वा अप्पाणं वावडं न करेतित्ति, भयसंणा नाम भयाभिनिवेसो भयमोहोदयसंवेदनमित्यर्थः, तीए चत्तारि हेतुणो- चउहिं ठाणेहिं भयसंणा उप्पज्जति हीणसत्तयाए भयमोहणिज्जउदएणं मतीए तदट्ठोवयोगताए तहेव मेहुणसंणाणाम स्त्र्याद्यभिलाषसंज्ञानं, वेदमोहोदयसंवेदनमित्यर्थः, तीए चत्तारि हेतू 'चउहिं ठाणेहिं मेहुणसंणा समुप्पज्जति-तं०

गौरव-
विराधना-
कषाय-
संज्ञा:

॥ ८० ॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ८१ ॥

सूत्र

चितमंससोणितयाए वेदमोहणिज्जोदएणं मतीए तदट्ठोवयोगेणं' तहेव, परिग्गहसंणा णाम परिग्गहाभिलाससंणाणं, परिग्गहरागसंवेदणमित्यर्थः, तीसे हेतूणो--अविवित्तताए लोभोदएणं मतीए तदट्ठोवयोगेणं' तहेव, एएहिं चउहिं संणाहिं जो मे जाव दुकडंति। **पडिक्कमामि चउहिं विकहाहिं-इत्थिकहाए भत्तकहाए देसकहाए रायकहाए**। तत्थ इत्थिकथा चतुव्विधा जातिकथा कुलकथा रूवकथा नेवत्थकथा, जातीए ताव बंभणखत्तियवेस्सासु एत्थ एगतरं पसंसति निंदति वा, कुलकथा उग्गादिरूवं दमिलिणं मरहट्ठियाणं एवमादि पसंसति निंदति वा, नेवत्थे जो जंमि देसे इत्थीणं। भत्तकथा चतुविंधा-अतिवावे निवावे आरंभे निट्ठाणे, अतिवावे एत्तिया दव्वा सागघतादीए उवउत्ता,निव्वाए एत्तिया वंजणभेदादी एत्थ,आरंभे एत्तिलगा तित्तिरहिंगुकडुमेंढद्रेथितदुद्धदहियतंदुला एवमादी, णिट्ठाणे एत्तिएहिं रूवेहिं वेलाए संभत्तं निट्ठितं। रायकथा चतुव्विधा--निज्जाणकथा अतिजाणकथा बलकथा कोसकथा, निज्जाणकथा एरिसीरिद्धीए नीति, अतिजाणकथा-एरिसियाए अतीति, बलकथा-एत्तियं बलं, कोसकथाएत्तिओ कोसो। देसकथा चतुव्विधा--छंदो विधी विकप्पो नेवत्थो, देसच्छंदो माउलधीता गंमा लाडाणं गोल्लविसए भगिणी, मातिसवित्तिओ विच्चाण गंमा अण्णेसिं अगम्मा एमादि, विधी नाम भोयणविधी विवाहविधी एवमादि, विकप्पो परिसा घरा देवकुलाणि नगरनिवेसा गामादीण एवमादि, नेवत्थो इत्थीणं पुरिसाणं साभाविओ विउव्विओ वा। **पडिक्कमामि चउहिं झाणेहिं** सूत्रं। जीवस्स एगग्गे जोगाभिनिवेसो झाणं, अंतोमुहुत्तं तीव्रजोगपरिणामस्यावस्थानमित्यर्थः, तस्स सत्त भंगा- मानसं १ अहवा वाइयं२ अहवा कायियगं३ अहवा माणसं वाइयं च४ अहवा वाइगं काइगं च५ अहवा माणसं काइगं ६अहवा मणवयणकायिगंति७, एत्थ पढमो भंगो छउमत्थाणं सम्मदिट्ठिमिच्छादिट्ठीणं सरागवीतरागाणं भवति, बितितो तेसिं चेव छदुमत्थाणं सजोगिकेवलीणं

विकथा: ॥ ८१ ॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ८२ ॥

आर्त्तध्यानं ॥ ८२ ॥

च धम्मं कथेन्ताणं, काइगं तेसिं चेव छदुमत्थाणं सजोगिकेवलीणं च चरमसमयसजोगिात्ति ताव भवति, चउत्थो पंचमो य जधा पढमो, छट्ठो जधा सजोगिकेवलीणं, सत्तमो जधा पढमो।

तं झाणं चतुर्विधं- अट्टं रुद्दं धम्मं सुक्कं च। आर्तभावं गतो आर्त्तः आर्तस्य ध्यानं आर्तध्यानं रौद्रभावं गतो रौद्रः, धर्मभावं गतो धर्मः, शुक्लभावं गतः शुक्लः। उक्तं च- हिंसाणुरंजितं रौद्रं, अट्टं कामाणुरंजितं। धम्माणुरंजियं धम्मं, शुक्लं झाणं निरंगणं ॥ १ ॥ एगेगस्स असंखेज्जाइं ठाणाइं, एतेसु ठाणेसु जीवो अरहट्टघटीविय आएति य जाति य, तत्थ संखेवतो अट्टं चउव्विहं- अमणुण्णाणं संजोगाणं वियोगं चिंतेति- काए वेलाए विमुच्चेज्जामि ?, अणागतेऽवि असंप्रयोगाणुसरणं, अतीतेऽवि वियोगं बहु मण्णति, एवं बीयं मणुण्णाणं वियोगं नेच्छति, एवं ततियं आयंकस्स केण उवाएण सचित्तादिणा दव्वजातेण तिगिच्छं करेमित्ति चिंतेति, चउत्थं परिहीणो वित्तेण तं पत्थेंतो वित्तं झायति, दुब्बलो थेरो असमत्थो वा भोत्तुं आहारं इत्थिं वा कदा भुंजेज्जामित्ति य चिंतेति। गाहाओ—

अमणुण्णसंपयोगे मणुण्णवग्गस्स विप्पओगे वा। वियणाए अभिभूतो परइड्ढीओ य दट्ठूणं ॥ १ ॥ सद्दा रूवा गंधा रसा य फासा य जे तु अमणुण्णा। बंधवावियोगकाले अट्टज्झाणं झियायंति ॥ २ ॥ एवं मणुण्णविसए इड्ढीओ चक्कवट्टिमादीणं। गहिते विम्हितमनसे पत्थेमाणे झियाएज्जा ॥ ३ ॥ मित्तधनातिवियोगे वित्तविण्णासे तह य गोमहिसे। अट्टं झाणं झायति परिसप्पंते सिंदेते या ॥ ४ ॥ किण्हा नीला काऊ अट्टज्झाणस्स तिण्णि लेसाओ। उववज्जति तिरिएसुं भावेण य तारिसेणं तु ॥ ५ ॥ अट्टं झाणं झियायंतो, किण्हलेसाए वट्टती। उक्किट्ठगंमि ठाणंमी, अचरित्ती असंजतो ॥ ६ ॥ अट्टं झाणं झियायंतो, नीललेसाए वट्टती।

***अत्र ध्यानस्य चतुर्विधत्वं दर्शयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ८३ ॥

आर्त्तध्यानं

मज्झिल्लगंमि ठाणंमि, अचरित्ती असंजतो ॥ ७ ॥ अट्टं झाणं झियायंतो, काऊलेसाए वट्टती । काणिट्ठगंमि ठाणंमी, अचरित्ती असंजतो ॥ ८ ॥ तिव्वकोधोदयाविट्ठो, किण्हलेसाणुरंजितो । अट्टं झाणं झियायंतो तिरिक्खत्तं निगच्छती ॥ ९ ॥ एवं चत्तारि कसाया भाणितव्वा । मज्झिमकोधोदयाविट्ठो, नीललेसाणुरंजितो । अट्टं झाणं झियायंतो, तिरिक्खत्ते निगच्छति ॥ १० ॥ एवं चत्तारिवि कसाया । मंदकोधोदयाविट्ठो, काऊलेसाणुरंजितो । अट्टज्झाणं झियायंतो, तिरिक्खत्तं निगच्छति ॥ ११ ॥ एवं चत्तारिवि कसाया। अट्टस्स लक्खणाणि-कंदणता सोयणता तिप्पणता परिदेवणता, तत्थ कंदणता हा मात ! हा पितेत्यादि, सोयाति करतलपल्हत्थमुहो दीणदिट्ठी झायति, तिप्पणता तिहिं जोगेहिं तप्पति, परिदेवणता एरिसा मम माता वा २ लोगस्स साहति, अहवा वेमाए वायं जोएति वा, अहवा परि २ तप्पति, सरित्ता मातुगुणे सयणवत्थाणि वा घरं वा दट्ठुं २ तप्पति- इंदियगारवसंण्णा उस्सेव रती भयं च सोगं च । एते तु समाहारा भवंति अट्टस्स झाणस्स ॥ १ ॥ रोद्दं चतुव्विधं- हिंसाणुबंधी मोसाणुबंधी तेणाणुबंधी सारक्खणाणुबंधी, तत्थ हिंसाणुबंधी हिंसं अणुबंधति, पुणो पुणो तिव्वेण परिणामेणं तसपाणे हिंसति, अहवा पुणो पुणो भणति चिंतेति वा सुट्ठु कतं, अहवा छिद्दाणि वयराणि वा मग्गति, हिंसं अणुबंधति, ण विरमति । एवं मोसेवि, तिण्णेवि, संरक्खणे- पराणादीणि कारेति, जो वा जोइल्लओ खाति तं मारेति, मा अण्णोवि खाहिति, दुट्ठे सासति, सव्वतो य बीभेति, पलित्तमिव मण्णति, उक्खणति निक्खणति, सव्वं तेलोकं चोरमइयं मंणति, परनिंदासु य हिस्सति, रुस्सति, वसणमभिनंदति परस्स, रोद्दज्झाणमतिगतो भवति येव दुक्कडमयीयो, एवं सारक्खणाणुबंधे, सेसं तहेव, तस्स चत्तारि लक्खणाणि- उस्सण्णदोसो बहुदोसो अणाणदोसे आमरणंतदोसे, ओसण्णं हिंसादीणं एगतरं अभिक्खणं २ करेति उस्सण्णदोसो, हिंसादिसु सव्वेसु पवत्तमाणो बहुदोसो,

॥ ८३ ॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ८४ ॥

रौद्रध्यानं

अण्णाणदोसो संसारमोदगादीणं, आमरणंतदोसो जथा पव्वतराई, परिगिलायमाणस्सावि आगतपच्चादेसस्स थोवोऽवि पच्छाणुतावो न भवति, अवि मरणकालेवि जस्स कालसोयरियस्सेव ण ताओ उवरती भवति, एस आमरणंतदोसो । तत्थ गाहाओ—

अट्ठाए अणट्ठाए निरवेक्खो निद्दयो हणति जीवे । चिंततो वावि विहरे रोद्दज्झाणे मुणेतव्वो ॥ १ ॥ अलियपिसुणे पसत्तो णाहियवादी तहेवमादी य । अभिसंधाणभिसंदण रोद्दज्झाणं झियायेति ॥ २ ॥ परदव्वहरणलुद्धो निच्चंपिय चोरियं तु पत्थेंतो । लुद्धो य रक्खणपरो रुद्दज्झाणे हवति जीवो ॥ ३ ॥ किण्हा नीला काऊ रोद्दज्झाणस्स तिण्णि लेसाओ । नरगंमि य उववत्ती रोद्दज्झाणा उ जीवस्स ॥ ४ ॥ रोद्दज्झाणं झियायंतो, किण्हलेसाए वट्टती । उक्कस्सगंमि ठाणंमि,अचरित्ती असंजतो ॥ १ ॥ सेसं जथा अट्टे, नवरं गतिं गच्छति दुद्धरं । पाणवहमुसावाए अदत्तमेहुणपरिग्गहे चेव । एते तु समाहारा हवंति रोद्दस्स झाणस्स ॥ ६ ॥

धम्मे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तंजथा-झाणे अणुप्पेहाउ लक्खणे आलंबणे, एतं चतुव्विधं, चउप्पडोयारं नाम एक्केक्कं तत्थ चतुव्विधं झाणं, चतुव्विधं तंजथा--आणाविजये अवायविजए विवागविजए संठाणविजये, तत्थ आणाविजए आणं विवेएति, जथा पंचत्थिकाए छज्जीवनिकाए अट्ठ पवयणमाता, अण्णे य सुत्तनिबद्धे भावे अबद्धे य पेच्छ कहं आणाए परियाणिज्जंति ?, एवं चिंतेति भासति य, तथा पुरिसादिकारणं पडुच्च किच्छासज्झेसु हेतुविसयातीतेसुवि वत्थुसु सव्वण्णुणा दिट्ठेसु एवमेव सेतंति चिंतंतो भासंतो य आणा विवेयेति १ एवं अवायविजयेति, पाणातिवातेणं निरयं गच्छति अप्पाउओ काणकुंटादी भवति एवमादि त्वाञ्ञा, अहवा मिच्छत्तअविरतिपमायकसायजोगाणं अवायमणुचिंतेति, णाणदंसणचरित्ताणं वा विराधणात्रायमणुचिंतेति २ विवागविजयो विविधो पागो विवागो, विविधो कंमाणुभावोत्ति भणितं होति, सुभासुभा य जे कंमोदयभावा ते चिंतेति ३ संठाणवि- ॥ ८४ ॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ८५ ॥ | धर्मध्यानं

जयो, संठाणाणि विवेचयति, सव्वदव्वाणं संठाणं चिंतेति, जथा लोए सुपतिट्ठासंठिते अलोए सुसिरगोलकसंठिते नरगा हुंडसंठिता एवं सव्वदव्वाणं। एत्थ इमाओ चउण्हंपि कारगगाथाओ-पंचत्थिकाए आणाए, जीवा आणाए छव्विहे। विजए जिणपण्णत्ते, धम्मज्झाणं झियायइ ॥ १ ॥ इहलोइए अवाए, तधा य पारलोइए। चिंतयंतो जिणक्खाए, धम्मज्झाणं झियायती ॥ २ ॥ इहलोइयं अवायं, बितियं पारलोइयं। अप्पमत्तो पमत्तो वा, धम्मज्झाणं झियायती ॥ ३ ॥ सुभमसुभं अणुभावं कंमविवागं विवागविजयंमि। संठाण सव्वदव्वे णरगविमाणाणि जीवाणं ॥४॥ देहादीयं परीणामं, नारगादीसु णेकधा। लेस्सातिगं च चिंतेति, विवागं तु झियायती ॥ ५ ॥ सुभाणं असुभाणं च, कंमाणं जो विजाणती। समुतिण्णाणप्पामंणं, विवागं तु झियायती ॥ ६ ॥ पंचासवपाडिविरओ चरित्तजोगंमि वट्टमाणो उ। सुत्तत्थमणुसरंतो धम्मज्झायी मुणेयव्वो ॥ ७ ॥ तेजोपम्हासुक्कालेसाओ तिण्णि अण्णतरिगाओ। उववातो कप्पतीते कप्पंमि व अण्णतरगंमि ॥ ८ ॥ धम्मज्झाणं झियायंतो, सुक्कलेसाए वट्टती। विक्किट्ठगंमि ठाणंमि, सचरित्ती सुसंजतो ॥ ९ ॥ एवं पम्हालेसाए मज्झियगंमि ठाणंमि, तेऊलेसाए कणिट्ठगंमि ठाणंमि। कोवनिग्गहसंजुत्तो, सुक्कलेसाणुरंजितो। धम्मज्झाणं झियायंतो, देवयत्तं निगच्छती ॥१०॥ ति, एवं माणमायालोभनिग्गहेऽवि, एवं पम्हाएवि, तेऊएवि लेसाए। इमाओ पुण से चत्तारि अणुप्पेहाओ, तं०-अणिच्चताणुप्पेहा एवं असरणता० एगत्ता० संसाराणुप्पेहा, संसारसंगविजयनिमित्तमणिच्चताणुप्पेहमारभते, एवं धंमे थिरतानिमित्तं असरणगत्तं, संबंधिसंगविजयाय एगत्तं, संसारुद्वेगकारणा संसाराणुप्पेहं। लक्खणाणि इमाणि चत्तारि-आणारुई निसग्गरुई सुत्तरुई ओगाहरुई, आणारुई तित्थगराणं आणं पसंसति, निसग्गरुई सभावतो जिणप्पणीए भावे रोयति, सुत्तरुई- सुत्तं पढंतो संवेगमावज्जति, ओगाहणारुई णयवादभंगगुविलं सुत्तमत्थतो सोतूण संवेगमावन्नसद्धो झायति। आलंबणाणि ॥ ८५ ॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ८६ ॥

शुक्लध्यानं

च से चत्तारि जथा विसमसमुत्तरणे वल्लिमादीणि, तंजथा-वायणा पुच्छणा परियट्टणा अणुप्पेहा, धम्मकहा परियट्टणे पडति । एवं विभासेज्जा ॥ इदाणिं सुक्कं, सुक्के चतुव्विधे चउप्पडोयारे पण्णत्ते-पुहत्तवितक्के सविचारे १ एगत्तवितक्के अविचारे २ सुहुमकिरिए अणियट्टी ३ समुच्छिण्णकिरिए अप्पडिवाई ४—

सुतणाणे उवउवत्तो अत्थंमि य वंजणंमि सवियारं । झायति चोद्दसपुव्वी पढमं सुक्कं सरागो तु ॥ १ ॥ सुतणाणे उवउत्तो अत्थंमि य वंजणंमि अवियारं । झायति चोद्दसपुव्वी बीयं सुक्कं विगतरागो ॥ २ ॥ अत्थसंकमणं चेव, तहा वंजणसंकमं । जोगसंकमणं चेव, पढमे झाणे निगच्छती ॥ ३ ॥ अत्थसंकमणं चेव, तथा वंजणसंकमं । जोगसंकमणं चेव, बितिए ज्झाणे वितक्कती ॥ ४ ॥ जोगे जोगेसु वा पढमं, बीयं योगंमि कण्हुयी । ततियं च काइके जोगे, चउत्थं च अजोगिणो ॥५॥ पढमं बीयं च सुक्कं, झायंती पुव्वजाणगा । उवसंतेहिं कसाएहिं, खीणेहि व महामुणी ॥६॥ बीयस्स य ततियस्स य अंतरियाए केवलनाणं उप्पज्जति । दोण्णी सुतणाणीगा झाणा, दुवे केवलणाणिगा । खीणमोहा ज्झियायंती, केवली दोण्णि उत्तमे ॥ ७ ॥ सिज्झितुकामो जाहे कायजोगे निरुभती ताहे, तस्स सुहुमा उस्सासनिस्सासा, तत्थ य दुसमयट्ठितियं परम ातं इरियावाधियं कम्मं बज्झति, तत्थ ततियं सुहुमकिरियं अणियट्टीझाणं भवति जोगनिराधें कते पुव्वपयोगेणं, चउत्थं समुच्छिन्नकिरियमप्पाडिवादि झाणं णाणाठाणोदणं (यं) जथा तथा झायति, अहवा कुलालचक्केण दिट्ठंतो, जथा दंडपुरिसपयत्तविरामावियोगेण कुलालचक्कं भमति तथा सयोगिकेवलिणा पुव्वारद्धे सुक्कज्झाणे अजोगिकेवलीभावेण सुक्कज्झायी भवति । पढमबितियाओ सुक्काए, ततियं परमसुक्कियं । लेस्यातीतं उवरिल्लं, होति ज्झाणं वियाहितं ॥ ८ ॥ अणुत्तरेहिं देवेहिं, पढमबीएहिं गच्छती । उवरिल्लेहिं झाणेहिं, सिज्झती निरयो धुवं

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययनें
॥ ८७ ॥

क्रिया-विचारः

॥ ९ ॥ इमाओ पुण से चत्तारि अणुप्पेहाओ- अवायाणुप्पेहा असुभाणुप्पेहा अणंतवत्तियाणुप्पेहा विप्परिणामाणुप्पेहा, जधत्थं आसवादिअवायं पेक्खति संसारस्स असुभत्तं अणंतत्तं सव्वभावविपरिणामित्तं । लक्खणाणिवि चत्तारि- विवेगे वियोसग्गे अव्वहे असंमोहे, विवेगे सव्वसंजोगाविवेगं पेक्खति, वियोसग्गे सव्वोवहिमादिविउस्सग्गं करेति, अव्वधे विण्णाणसंपण्णो ण बिहेति ण चलति, असंमोहे सुसण्हेवि अत्थे न संमुज्झतित्ति । आलंबणाणि चत्तारि- खंती मुत्ती अज्जवं मद्दवंति ॥ एतेहिं चउहिं झाणेहिं जो मे अतियारो पडिसिद्धकरणे कतो तस्स मिच्छामिदुक्कडंति ॥

सूत्र

पडिक्कमामि पंचहिं किरियाहिं काइयाए ५ सूत्रं । काइका तिविधा-अविरतकाइया दुप्पणिधिकाइया उवरतकाइया, तत्थ अविरतकाइया असंजतस्स वा सावगस्स वा, दुप्पणिधितकाइया पमत्तसंजतस्स, सा दुविहा-इंदियदुप्पणिहाणजाइया णोइंदियदुप्प०, इंदिएहिं पंचहिं णोइंदिएहिं मणेणं वायाए काएणं, उवरयकाइया अप्पमत्तस्स सकसायाकसायस्स १। अधिगरणिया दुविधा अधिगरणपवत्तणी जथा चक्कमहादिपसुबंधादी पवत्तिज्जंति । निव्वत्तिणी दुविधा-मूलगुणनिव्वत्तणी उत्तरगुण०,मूलगुणे ओरालिगादि, उत्तरगुणे णेगविभसगडरथजाणजुग्गमादि । एत्थ पाहुडिया गाथा—

निव्वत्तण संजोजण थिरकरणे चेव तहय निक्खेवे । सातिज्जण समणुण्णे परिग्गहे संपदाणे य ॥ १ ॥ निव्वत्तणं जथा रथंगाणं, संजोजणं संघातणं, थिरिकरणं लोहादिणा बंधणं, निक्खेवणं जत्थ ठवेति रथमादि, सातिज्जणा समणुण्णा परिग्गहो तत्थ पुच्छणं, पदाणं पयच्छणं, एतं रथंगाणं दरिसितं, एवं अण्णत्थवि भावेतव्वं २ । पादोसियं तिविधं मण० वयण० काय०, मणपादोसिया दुविधा-अनिदाए निदाए य, एवं वायाए काएणवि, णिदाए अट्ठाए, अणिदाए अणट्ठाए ३। पारितावणिगा दुविधा—

॥ ८७ ॥

***अत्र क्रियाया: भेदा: दर्शयन्ते

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ८८ ॥

क्रिया-विचारः

सहत्थपरितावणिगा णोसहत्थपरितावणिगा य, सहत्थपरितावणिगा २ अड्डाए अणट्ठाए य । एवं णोसहत्थपरितावणिगावि ४ । एवं पाणातिपातकिरिया जथा परितावणिगा ५ । एताहिं पंचहिं पंचवीस किरियाओ सूचिताओ, तंजथा-मिथ्याक्रिया १ प्रयोगक्रिया २ समुदाणक्रिया ३ ईर्यापथिका ४ कायिकी ५ अधिकरणक्रिया ६ पाउसिया ७ परितावणिया ८ प्राणातिपातक्रिया ९ दर्शनक्रिया १० स्पर्शनक्रिया ११ सामन्तक्रिया १२ अनुपातक्रिया १३ अनाभोगक्रिया १४ स्वहस्तक्रिया १५ निसर्गक्रिया १६ विदारणक्रिया १७ आज्ञापनक्रिया १८ अनवकांक्षक्रिया १९ आरंभक्रिया २० परिग्रहक्रिया २१ मायाक्रिया २२ रागक्रिया २३ द्वेषक्रिया २४ अप्रत्याख्यानक्रिया २५ इति ॥ तत्र मिथ्याक्रिया त्रिविधा-हीनामिथ्याक्रिया अधिकमिथ्याक्रिया तद्व्यतिरिक्ता मिथ्याक्रिया, तत्र हीनमिथ्याक्रिया तंजथा—अंगुष्ठपर्वमात्रो ह्यात्मा यवमात्रस्यामाकतंदुलमात्रो वालाग्रमात्रः परमाणुमात्रः हृदये जाज्वल्यमानस्तिष्ठति भ्रूललाटमध्ये वा इत्यादि, अतिरिक्तमिथ्याक्रिया-पंचधनुःशतानि सर्वगतः, अकर्ता अचेतन एवमादि, तद्व्यतिरिक्तक्रिया नास्त्यात्मा आत्मीयो वा भावः नास्त्ययं लोको न परः भावा निःस्वभावाः इत्येवमादि १। प्रयोगक्रिया त्रिविधा-कायप्रयोगक्रिया वाक्प्रयोगक्रिया मणप्रयोगक्रिया, तत्र कायप्रयोगक्रिया प्रमत्तस्य गमनागमनाकुंचनप्रसारणक्रियाचेष्टा कायस्य, वाक्प्रयोगक्रिया भगवद्भिर्या गर्हिता भाषा तां भाषां स्वेच्छया भाषते, मनःप्रयोगक्रिया आर्तरौद्राभिमुखो इंद्रियप्रसृतो अनियमितं मन इति २ । समुदानक्रिया द्विविधा--देशोपघातसमु० सर्वोपघातसमु०, तत्र देशोपघातसमु० इंद्रियदेशोपघातं कुरुते, सर्वोपघातसमु०सर्वप्रकारेण इंद्रियं विनाशयति ३ । ईर्यापथक्रिया द्विविधा--बध्यमाना वेद्यमाना ४ । काइया द्विविधा-अनुपरतकायक्रिया दुष्प्रयोगिका, मिथ्यादृष्ट्यादीनां अनुपरतका क्रिया, दुष्प्रयोगिकाक्रिया प्रमत्तसंयतानां ५। अधिकरणक्रिया द्विविधा—निर्वर्तनेनाधिकरणक्रिया संयोज-

॥ ८८ ॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ८९ ॥

नेनाधिकरणक्रिया, तत्र निर्वर्तननाधिकरणक्रिया द्विविधा–मूलगुणनिर्वर्तनाधिकरणक्रिया उत्तरगुणनिर्वर्तनाधिकरणक्रिया, तत्र मूलगुणनिर्वर्तनाधिकरणक्रिया पंचानां शरीरकानां निर्वर्तनं, उत्तरगुणनिर्वर्तनाधिकरणक्रिया हस्तपादांगोपांगानां निर्वर्तनं, अहवा मूलगुणनिर्वर्त्तनाधिकरणीक्रया असिशक्तिभिडमालादीनां निर्वर्तनं, संयोजनाधिकरणक्रिया तेषां वियुक्तानां संयोजनमिति, अहवा संयोगः विषगरहलकूडधनुयंत्रादीनां, निर्वर्तनाधिकर० द्रव्येण कालकूटमुद्गरादीनां ६। प्रादोषिका द्विविधा- जीवप्रादोषिका अजीव-प्रादोषिका च, जीवप्रादोषिका पुत्रशिष्यादौ कलत्रे वा प्रदोषं गच्छति, अजीवप्रादोषिका अस्मना कंटकेन वाऽभ्याहतः अस्मानि कंटके वा प्रदोषं गच्छति ७। परितापनक्रिया द्विविधा- स्वदेहपरितापनक्रिया परदेहपरितापनाक्रिया, परस्य देहं दृष्ट्वा स्वदेहं ताडयति, परदेहपरितापनक्रिया पुत्रं शिष्यं कलत्रं ताडयति ८। प्राणातिपातक्रिया द्विविधा- स्वदेहव्यपरोपणप्राणातिपातक्रिया परदेह०, तत्र स्वदेहव्यपरोपणक्रिया यत् स्वर्गहेतोः देहं परित्यजति गिरिशिखरे,प्रज्वलितं वा हुतवहं प्रविशति,अंभसि वाऽऽत्मानं परित्यजति, आयुधेन वा स्वदेहं विनाशयति, परदेहव्यपरोपणक्रिया अनेकविधा, तद्यथा-क्रोधाविष्टः एवं मानमायालोभमोहा०, क्रोधेन रुष्टो मारयति, एवं मानेन मत्तो मायया विस्वासेन लोभेन लुब्धः शौकरिकवत् मोहेन मूढः संसारमोचकवत्, ये चान्ये धर्मनिमित्तं प्राणिनो व्यापादयंति ९। दर्शनक्रिया द्विविधा-जीवदर्शनक्रिया अजीवदर्शनक्रिया, नरेन्द्राणां निर्गमप्रवेशनस्कन्धावारप्रदर्शनं तथा तालाचराणां विभूषितानां च प्रमदानां संदर्शनं, अजीवदर्शनक्रिया चित्रकर्मपुस्तककर्मग्रंथिमवेढिमदेवकुलारामोद्यानसभाप्रवासु दर्शनोद्यम इति १०। स्पर्शनक्रिया द्विविधा- जीवस्पर्शनाक्रिया अजीवस्पर्शनाक्रिया, तत्र जीवस्पर्शनाक्रिया स्त्रीपुंनपुंसकं वा स्पृशति, संघट्टयतीत्यर्थः,अजीवस्पर्शनक्रिया सुखस्पर्शार्थं मृगलोमादिवस्त्रजातं मुक्तकादि वा रत्नजातं स्पृशतीति ११। सामंतक्रिया

क्रिया-विचारः

॥ ८९ ॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ९० ॥

क्रिया-विचारः

द्विधा- देशसामंतक्रिया सर्वसामंतक्रिया, प्रेक्षकान् प्रति यत्रैकदेशेनागमो भवत्यसंयतानां सा देशसामंतक्रिया,सर्वसामन्तक्रिया यत्र सर्वतः समंतात्प्रेक्षकाणामागमो भवति सा सर्वसामन्तक्रिया १२। अनुपातक्रिया प्रमत्तसंयतानामप्यन्नपानं अत्यनवगुण्डने संपातिमसत्त्वानां विनाश इति १३। अनाभोगक्रिया द्विविधा- आदाननिक्षेपणानाभोगक्रिया उत्क्रमणानाभोगक्रिया,तत्रादान० रजोहरणपात्रचीवरादिकानामप्रत्युपेक्षितानामप्रमार्जितानामनाभोगेनादाननिक्षेपौ, उत्क्रमणानाभोगक्रिया लंघनप्लवनधावनसमीक्षागमनागमनादि १४ । स्वहस्तक्रिया दुविधा- जीवस्व० अजीवस्व०,जीवं स्वहस्तेन ताडयति,वस्त्रं पात्रं वा०१५ । निसर्गक्रिया द्विविधा-जीवनिसर्गक्रिया अजीवनिसर्गक्रिया, तत्र जीनिसर्गक्रिया जीवं निसृजति, अजीवनि० पात्रं वा चीवरं०वा१६ । वियारणक्रिया द्विविधा-जीववियारणकिया अजीववियारणक्रिया, जीवमजीवं वा अभासिएसु विक्केमाणो दोभासिओ वियारेति, अहवा जीवमजीवं वा विदारयतीति१७। आज्ञापनक्रिया नाम स्वपुत्रं शिष्यं वा आज्ञापयति१८।अनवकांक्षक्रिया द्विविधा-स्वात्मानवकांक्षक्रिया परात्मानवकांक्षक्रिया,तत्र स्वात्मना न्यक्करोति येनात्मानं नावकांक्षति अथवा तदाचरति येन परं नावकांक्षति १९ । आरंभक्रिया द्विविधा-जीवारंभक्रिया अजीवारंभक्रिया,तत्र जीवारंभक्रिया जीवानारभते,अजीवारंभक्रिया अजीवानारभते२० । परिग्रहक्रिया द्विविधा-जीवपरिग्रहक्रिया अजीवपरिग्रहक्रिया२१। मायाक्रिया द्विविधा-आत्मवक्रीकरणमायाक्रिया परवक्रीकरणमायाक्रिया २२ । रागक्रिया द्विविधा-मायाश्रिता लोभाश्रिता वा, अहवा तद्वचनमुदाहरति येन परस्य राग उत्पद्यते २३। द्वेषक्रिया द्विविधा- क्रोधाश्रिता मानाश्रिता च,क्रोधक्रिया आत्मना क्रुध्यति, परस्य वा क्रोधमुत्पादयति, मानक्रिया स्वयं माद्यति परस्य वा मानमुत्पादयति२४। अप्रत्याख्यानाक्रिया अविरतानामेव, न क्वचिद्विरतिरस्तीति २५ । एताः पंचविंशतिः क्रिया आश्रवभूता भवंतीत्येवं वाच्यं ।

॥ ९० ॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ९१ ॥

क्रिया-विचारः

अहवा इमाओ अण्णाओ पणवीसं किरियाओ, तंजथा- आरंभिया १ परिग्गहिता २ मायावत्तिया ३ मिच्छादंसणक्रिया ४ अपच्चक्खाणकिरिया ५ दिट्ठिवाइया ६ पुट्ठिवाइया ७ पाडुच्चिया ८ सामंतोवणिवातिया ९ णेसत्थिया १० साहत्थिया ११ आणमणिया १२ वेयाराणिया १३ अणाभोगवत्तिया १४ अणवकंखवत्तिया १५ पायोगकिरिया १६ समुदाणकिरिया १७ पेज्जवत्तिया १८ दोसवत्तिया १९ इरियावहिया चेति २० । एताओ वीसं पुव्वभणिताओ, पंच काइगा अधिकरणाक्रिया एवमादिगा, एता पणवीसं ॥ तत्थ **आरंभिया** द्विविधा- जीवारंभिया अजीवारंभिया, जीवे आरंभति अजीवे आरंभेति१एवं परिग्गहियावि २ **मायावत्तिया** द्विविधा- आयवंचणक्रिया परवंचणकिरिया य ३ **मिच्छादंसणवत्तिया** द्विविधा- आभिग्गहिया य अणाभिग्गहिया य ४ **अपच्चक्खाणकिरिया** द्विविधा- जीवअपच्चक्खाणकिरिया अजीवअपच्चक्खाणकिरिया ५ **दिट्ठिवाइया** दुविधा- जीवदिट्ठिया अजीवदिट्ठिया य, जीवदिट्ठिया आसादीण चक्खुदंसणपडियाए, अजीवदिट्ठिया चित्तकंमादीणं ६ **पुट्ठिया** दुविधा- जीव० अजीव०, जीवपुट्ठिया जीवाधिगारं पुच्छति रागदोसेणं, अजीवाधिगारं वा०, अहवा पुट्ठियत्ति फरिसणाकिया, सापि जीव० अजीव० तहेव७**पाडुच्चिया** दुविधा- जीवपा० अजीव०, जीववत्थुं पडुच्च जो वधो सा जीवपाडुच्चिया, एवं अजीवपाडुच्चिया ८ **सामंतोवणिवाइया** समन्तादणुपततीति सामन्तोवणिवाइया, सा दुविधा- जीव० अजीव०, जीवसामंतोवणिवाइया जथा एगस्स संडो तं जणो पलोएति जथा जथा पलोएति तथा तथा सो हरिसं गच्छति । एवं अजीवंपि रहकंमादिसु ९ **नेसत्थिया** दुविधा- जीव० अजीव०, जीवणेसत्थिया रायादिसंदेसो जथा दगजंताइं, अजीवणेसत्थिया जथा पाहाणकंडादीणि गोफणधणुगमादीहिं निसरति१० **साहत्थिया** दुविधा- जीव०अजीव०, जीवसाहत्थिया जं जीवेण चेव जीवं आहणति, अजीवसाहत्थिया जथा

॥ ९१ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ९२ ॥

क्रिया-विचारः

॥ ९२ ॥

असिमादि ११ आणमणिया दुविधा- जीव० अजीव०, जीवआणमणिया जीवं आज्ञापयति परेण, एवं अजीवंपि १२ वेयारणी जीव० अजीव०, जीववेयारणिया जीवं विदारयति अजीवं विदारेति, फेडतीत्यर्थः १३ अणाभोगवत्तिया अणाभोगआतियणया य अणाभोगनिक्खेवणया य, अणाभोगो अण्णाणं, आदियणं वा गहणं निक्खेवणं ठवणं १४ अणवकंखवत्तिया दुविधा-इहलोगे परलोगे य, इहलोगे अणवकंखवत्तिया लोगविरुद्धाणि चोरिक्कादीणि करेति, जेण वहबंधादीणि इहेव पावति, परलोगअणवकंखवत्तिया हिंसादिकंमाणि करेमाणो परलोगं नावकंखति १५ पयोगकिरिया- मण० वय० काय०,तत्थ मणे पयोगकिरिया अट्टरोद्दज्झाणादी इंदियप्रसृतो अणियमितमण इति, वइपयोग० सावज्जभासणं, कायपयोग० पमत्तस्स गमणागमणादि १६ समुदाणकिरिया देसोवघात० सव्वोवघात,०, तत्थ देसोवघातसमुदाणकिरिया कोइ कस्सइ इंदियदेसोवघातं करेति, सव्वोवघातसमुदाणकिरिया सव्वपगारेण इंदियं विणासेति १७ पेज्जवत्तिया दुविधा- मायनिस्सिता लोभनिस्सिता, पेज्जं नाम राग इत्यर्थः, अहवा तं वयणं उदाहरति करेति वा जेण परस्स रागो भवति १८ दोसवत्तिया दुविधा- कोहणिस्सिया माणणिस्सिया य, तं वा वयणं भणति करेति वा जेण परस्स दोसो उप्पज्जति १९ इरियावहिया सा अप्पमत्तसंजतस्स वीतरागछउमत्थकेवलिस्स वा, आउत्तं गच्छमाणस्स वा आउत्तं चिट्ठमाणस्स वा आउत्तं निसीदमाणस्स वा आउत्तं तुयट्टमाणस्स वा आउत्तं भुंजमाणस्स वा आ०भासमाणस्स वा आउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पादपुंछणं गेण्हमाणस्स निक्खेवमाणस्स वा जाव चक्खुपम्हनिवातमवि अत्थि वेमाता सुहुमा किरिया इरियावहिया कज्जति, सा पढमसमये बद्धपुट्ठया बितियसमये वेदिता ततियसमये निज्जिण्णा, सा बद्धा पुट्ठा उदिता वेदिता निज्जिण्णा, सेअकाले अकंमं चावि भवति २० । एताओ पणवीस किरियाओ ॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ॥१,२॥ दीप अनुक्रम [११-३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ९२ ॥

सूत्र

पडिक्कमामि पचंहिं कामगुणेहिं सद्देणं । मू । सूत्रं ॥ एत्थ रत्तो दुट्ठो वा मूढो वा जाव दुक्कडंति ।

पडिक्कमामि पंचहिं महव्वतेहिं पाणातिपाताओ वेरमणं ॥ मू । सूत्रं ॥ तत्थ पाणातिपातो नाम पाणाणं साधुमेरातिक्कमेण पातो । मुसावातो नाम असच्चवयणं, साधूणमधितं तमसच्चं, सत्तऽहियं असच्चंति वयणाओ, किंच अहितं?, जं साधुमेरातिक्कमणंति । अदिन्नादाणं नाम जं साधूण अणणुणातं। मेथुणं नाम अबंभचेरं, बंभं तच्चं जेसिं अत्थि ते बंभा, तेहिं इत्थिमादिविसयं अणायरितं अबंभचरितं । परिग्गहो नाम साधुमेरातिक्कमेण गहो । एसिं विरमणं विवेगो, साधुमेरातिक्कमणे य पडिसेवणाए विराधणा, सो य देसे सव्वे य, तत्थ पुण पच्छित्तविधाणं, साधुमेराए पडिसेवंतो आराहगो जतो एवं विभासा। एत्थ पंचसुवि उदइयभावेसु वट्टमाणेण पडिसिद्धकरणादिणा जाव मिच्छामिदुक्कडंति। एत्थ केइ अण्णंपि पढंति- पडिक्कमामि पंचहिं आसवदारेहिं- मिच्छत्तअविरतिपमादकसायजोगेहिं, पंचहिं-अणासवदारेहिं संमत्तविरतिअपमादअकसाधित्तअजोगित्तेहिं,पंचहिं निज्जरट्ठाणेहिं नाणदंसणचरित्ततवसंजमेहिंति। पडिक्कमामि पंचहिं समीतीहिं इरियासमितीए । मू । सूत्रं । पयत्तवओ पवित्ती समिती, ईरियासमिती गच्छंतस्स । तत्थोदाहरणं—

सूत्र

एगो साहू ईरियासमिईए जुत्तो,सक्कस्स आसणं चलितं,वंदति, मिच्छद्दिट्ठी देवो आगतो, मच्छियप्पमाणाओ मंडुक्कियाओ विउव्वति पिट्ठओ हत्थिभयं,गतिं न भिंदति,हत्थिणा उक्खिवितुं पाडितो,न सरीरं पेहति, सत्ता मारिज्जिहिंत्ति जीवदयापरिणतो, अहवा अरहण्णो समितो,असमिओ देवताए पादो छिण्णो,अण्णाए संधितो । भासासमितीए-एगो साहू णगररोहगे भिक्खस्स निग्गतो, कडगे हिंडंतो पुच्छितो- केवइया आसा हत्थी एवमादि, भणति- न सुट्ठु जाणामो सज्झायजोगवक्खित्ता, किह हिंडंता

कामगुणा महाव्रतानि च

॥ ९२ ॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ९४ ॥

समितयः

तो णवि पेच्छइ नवि सुणेह ?, साधू भणति- बहुं सुणेति कण्णेहिं० सिलोगो, एवमादि। एसणासमितीए- नंदिसेणो अणगारो, मगहाजणवए सालिग्गामो, तत्थेगो गाहावती, तस्स पुत्तो नंदिसेणो, तस्स गब्भत्थस्स पिता मतो, माता छम्मासियस्स, मातुसिताए संवड्डितो, अंणदा णंदिवद्धणो अणगारो साधुसंपरिवुडो विहरमाणो तं गाममागओ, उज्जाणे ठितो, साधू भिक्खस्स गता, नंदिसेणो भणति- के तुब्भे ? केरिसो वा तुब्भं धम्मो ?, साधूहिं भणितो-आयरिया जाणंति, उज्जाणे, तत्थ गंतुं पुच्छाहि, गतो, पुच्छितो, पव्वइतो, छट्ठक्खमओ जातो, अभिग्गहं गेण्हति-वेयावच्चं मए कायव्वंति, सक्को गुणग्गहणं करेति- अदीणमणसो वेयावच्चे अब्भुट्ठितो, जो जं दव्वं इच्छति साहू तं तस्स सो देति, एगो देवो मिच्छदिट्ठी असद्दहंतो आगतो, साधुरूवं विउव्वित्ता उब्भडओ पडिस्सयं आगतो, नंदिसेणस्स छट्ठस्स पारणगे पढमे कवले उक्खित्ते देवसमणो भुत्तं पत्तो भणति- चितिओ तिसाए पडितो अतरंतो ठितो बाहिं, जइ कोइ सद्दहति वेयावच्चं तुरितं घेत्तूणं पाणगं जातु, नंदिसेणो अपारितो चेव पाणगस्स गामं अतिगतो, भिक्खन्तो हिंडंतो देवाणुभावेणं न लभति, चिरस्स लद्धं, गहाय गतो, साहुं न पेच्छति, वाहरति, चिरेण वाया दिण्णा, देवेण अतिसारजुत्तो साहू विउव्वितो, भणति य णं-धि मुंड एच्चिरस्स आगतो, वेयावच्चेवि कवडबुद्धी, भणति- मिच्छादुक्कडंति, पाणगं चिरेण लद्धंति, भणति- किह ते गामं नेमि ?, किं अंसेण पिट्ठीएत्ति?, भणति-अंसेणं, अंसे कातुं पविट्ठो, असुभकलमलं मुयति, गुरुगं च अप्पगं करेति, भणति य-मा तूर खलखलाविज्जामि, पुणो तुराहित्ति, एवं बहुसो विक्खोभेउं जा णेह तरति खोभेतुं ताहे सो तुट्ठो, संमत्तं पडिवण्णो, वंदित्ता पडिगतो। एस एसणासमितो। अहवा इमं बिइज्जवातियं, पंच संजता महल्लाओ अद्धाणाओ तण्हाछुहाकिलंता निग्गता, वेयालि गामं अतिगता पाणगं मग्गंति, अणेसणं लोगो करेति, न लद्धं, काल- ॥ ९४ ॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ९५ ॥

समितयः

गता पंचवि, एते एसणाए ॥ आदाणभंडमत्तनिक्खेवणासमितीए- आदाणं- गहणं निक्खेवो- ठवणा, न पडिलेहेति न पमज्जति चतुभंगो, तत्थ चउत्थे चत्तारि गमगा,दुप्पडिलेहितं दुप्पमज्जितं च चतुभंगो, आदिल्ला अप्पसत्था, अंतिल्लो अ पसत्थो, तत्थोदाहरणं-आयरिएहिं साधू भणिता- गामं पवच्चामो, उग्गाहितं, केणति कारणेण ठिता, एगो एत्ताहे पडिलेहितामित्ति ठवेतुमारद्धो, साधूहिं चोदितो भणति- किं त्थ सप्पो होज्जा जो एति, देवताए तहेव कतं, आउट्टो मिच्छादुक्कडंति, एस जहण्णओ समितो । अण्णो तेणेव विधिणा पडिलेहित्ता ठवेति, सो उक्कोससमितो । अहवा दिट्ठिवाईगं, सेट्ठिसुतो पव्वइतो, सेहो, पंचण्हं संजतसताणं जो जो एति तस्स तस्स दंडगं गहाय ठवेति, एवं तस्स ठितगस्स अच्छंतस्स अण्णो एति अण्णो जाति, सो भगवं अतुरियमचवलं उवरि हेट्ठा य पमज्जित्ता ठवेति, एवं बहुएणवि कालेण न परितंमति । उच्चारपासवणखेलसिंघाणगपारिट्ठावणियासमितीए- एत्थवि सत्त भंगा, तत्थ उदाहरणं--- धम्मरुई पारिट्ठावणियासमितो समाहिपरिट्ठावणे अभिग्गहणं, सकासणचलणं, मिच्छदिट्ठिआगमणं,किंचिल्लियाविउव्वणं, काइया संजता, वाहाडिओ य, मत्तओ निग्गतो पेच्छाति, ताहे सरंतो साहू य किलामिज्जतित्ति पपीतो, देवेण वारितो, वंदित्ता गतो । बितियं दिट्ठिवाएगं-- एगो चेल्लओ, तेण थंडिलं न पाडिलेहितं, वेयाले सो रत्तिं काइयाडो जातो, न पेहितंति न वोसिरति, देवताए उज्जोतो कतो, अणुकंपाए, दिट्ठा भूमित्ति वोसिरियं । एस समितो,बितिओ असमितो, चउव्वीसं उच्चारपासवणभूमीसु तिण्णि कालभूमीओ न पाडिलेहेति, भणति- किमेत्थ उट्टो उववसेज्ज?, देवता उट्टरूवेण तत्थ ठिता, काइयट्टं पढमाए गतो, दिट्ठो उट्टो बितियाए गतो, तत्थवि एवं, ततियाए, ताहे तेण उट्ठवितो, तत्थ देवताए पडिचोदितो-कीस सत्तावीसं न पडिलेहिसि ?, संमं पडिवण्णो, एस पारिट्ठावणियासमितित्ति । किं एत्तियं चेव ॥ ९५ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णिः- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ९६ ॥

संजताणं परिट्ठावणियाविहाणं उदाहु अण्णंपि अत्थि ?, उच्यते- अस्ति, किं तं परिट्ठविज्जति? कहं वा परिट्ठविज्जति ? इतेणाभिसंबंधेण पारिट्ठावणियनिज्जुत्ती आगता, तत्थ मूलगाथाउवग्घातो–
पारिट्ठावणियविधिं वोच्छामि धीरपुरिसपण्णत्तं । जं णाऊण सुविहिता पवयणसारं अणुचरंति ॥१५॥१॥१२८६॥
एताए विभासाए कातव्वा, सा पारिट्ठावणिया समासओ दुविधा- एगिंदियपरिट्ठावणिया णोएगिंदियपरिट्ठावणिया य, दोण्हवि विधी भण्णति- तत्थ एगिंदियपारिट्ठावणिया पंचविधा- पुढवी०आऊ०ते॰०वाऊ०वणस्सइ०, तत्थ पुढविकायस्स दुविधं गहणं— आयसमुत्थं च परसमुत्थं च, आयसमुत्थं जं सयं गेण्हति, परसमुत्थं जं परो देति, सयं आभोगेण वा गेण्हेज्जा अणाभोगेण वा, परोवि आभोएण वा देज्जा अणाभोएण वा, तत्थ आयसमुत्थं आभोएण कह होज्ज ?, साहू अधिणा खातितो विसं व खाइतं विसफोडिगा वा उट्ठिता, तत्थ जो अचित्तो पुढविकायो केणइ आणितो सो मग्गिज्जति, नत्थि ताहे अडवीओ आणिज्जति, तत्थ नवि होज्ज अचित्तो ताहे मीसो अन्नो हलक्खणणकुड्डमादिसु आणिज्जति, न होज्ज ताहे अडवीए पंथो वंमिए दुद्दुए वा, न होज्जा पच्छा सचित्तो घेप्पति, आसुकारितं वा कज्जं होज्जा जो लद्धो सो आणिज्जति, एवं लोणंपि जाणंतो०,अणाभोगेण तेण लोणं मग्गितं अचित्तंतिकाउं, मीसगं सचित्तं वा घेत्तुं पच्छा णातं, तत्थेव छड्डेतव्वं, खंडे वा मग्गिते एतं खंडित्ति लोणं दिण्णं, तंपि तहिं चेव विगिंचितव्वं, ण देज्जा ताहे अप्पणा विगिंचितव्वं, एतं आयसमुत्थं दुविहंपि,परसमुत्थं आभोगेण वा ताव सचित्तमट्टिया लोणं वा दिण्णं,अणाभोगेण वा खंडं मग्गितं, लोणं देज्जा,तस्स चेव दायव्वं,णेच्छेज्जा ताहे पुच्छिज्जति-कतो आणीतं?, जत्थ साहति तत्थ णेतुं विगिंचिज्जति, ण साहेज्ज ण वा जाणामोत्ति भणेज्जा ताहे तं उवलक्खेतव्वं वण्णरसगंधफासेहिं, तत्थ

पृथ्वीपरिष्ठापना

॥ ९६ ॥

***अत्र पारिष्ठापनिकी स्वरुपम् दर्शयते

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

अप्काय-परिष्ठापना

आगरे परिट्ठाविज्जति, णत्थि आगरो पंथे वा वट्टंति विगालो व जातो ताहे सुक्खगं महुरगं कप्परं मग्गिज्जति,ताहे महुररुक्खहेट्ठा ठविज्जति, जथा उण्हेण य ओसाए ण य छिप्पति, न होज्ज कप्परं ताहे वडपत्तए पिप्पलपत्तए वा कातूण परिट्ठाविज्जति, एवं जथाविधं विभासेज्जा इति ।

॥ ९७ ॥ आउक्काएवि दुविहं गहणं,आयाए णातं अणातं च एवं परेणवि णातं अणातं च,आताए जाणंतस्स विसकुंभे हणितव्वओ विसफोडिगा वा सिंचियव्वा विसं वा खाइतं,मुच्छाए पडितो,गिलाणो वा,एवमादिसु पुव्वमचित्तं,पच्छा मीसं अहुणुव्वत्तं तंदुलोदगादि, अवरकज्जे सचित्तंपि, सयमेव, पच्छा अण्णेणवि, सव्वत्थ विधीए कते कज्जे सेसं तत्थेव परिट्ठविज्जति,न देज्ज ताहे पुच्छिज्जतिकतो आणीतं ?, जदि साहति तत्थ परिट्ठवेतव्वं आगरे, ण साहेज्ज ण वा जाणेज्जा पच्छा वण्णादीहिं उवलक्खेतुं तत्थ परिट्ठवेति, अणाभोगा कोंकणेसु पाणियं अंबिलं च एगत्थ वेइयाए अच्छति, अविरतिया मग्गिता भणति- एत्तो गेण्हाहि, तेण अंबिलंति पाणितं गाहितं, णाते तत्थेव छुभेज्जा, अह न देति ताहे आगरे, एवं अणाभोगा, परसमुत्थे जाणंती अणुकंपाए चेव देज्जा-ण एते भगवंतो पाणियस्स रसं जाणंति हरतोदगं देज्जा, पडिणियत्ताए वा देज्जा-वताणि से भज्जंतुत्ति, णाते तत्थेव साहरितव्वं, न देज्ज जतो आणीतं तं ठाणं पुच्छिज्जति,तत्थ नेतुं परिट्ठविज्जति, न जाणेज्ज० वण्णादीहिं लक्खिज्जति,ताहे नदीपाणीतं तं नदीए विगिंचेज्जा,एवं तलागपाणीतं तलाए,अगडवाविसरमादिसु ठाणेसु विगिंचिज्जति,जदि सुक्कं पाणितं वडपत्तं पिप्पलपत्तं वा अड्डेतूण सणितं विगिंचिज्जति, जथा ऊसूरो न जायति पत्ताणं, असतीए भाणस्स तु साणियं उदयं अल्लियाविज्जति ताहे विगिंचिज्जति, अह कूवोदगं ताहे जे कूवतडा उल्ला तत्थ साणियं णिसरति,अणुल्हसंते सुक्का तडा होज्जा उल्लगं च ठाणं नत्थि ताहे भाणं सिक- ॥ ९७ ॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥ ९८ ॥

अग्निवायु-परिष्ठापना

एणं अंतिज्जति, मूले से दोरो बज्झति, ओसकावेतुं पाणितं ईसिं असंपत्तं मूलदोरो उक्खिप्पति, ताहे पलोट्टति, नत्थि कूवो दूरे वा तेणसावयभयं वा होज्जा ताधे सीतलपभुहरुक्खस्स हेट्ठा सपडिग्गहं वोसिरीति, न होज्ज पातं ताहे तुल्लगं पुढविकायं मग्गिउं तेण परिट्ठवेति, असति सुक्कंपि उण्होदगेण उल्लेता पच्छा परिट्ठविज्जति, निव्वाघाते चिक्खल्ले वा खड्डं खणितूण पत्तनालेण विगिंचिज्जति छादितं च करेति, एसा विधी, जं पडिणियताए आउक्काए मीसेतूण दिण्णं तं विगिंचिज्जति, जो संजतस्स पुव्वगहिते पाणीए आउक्काओ अणाभोगेण दिण्णो, जदि परिणतो परिभुज्जति, नवि परिणमति जेण कालेण थंडिल्लं पावति विगिंचितव्वं, जत्थ हरतणुगं पडेज्ज तं कालं पडिच्छित्ता विगिंचिज्जति । तेउक्काओ आयसमुत्थो आभोगेण संजतस्स अगणिक्काएण कज्जं जातं अहिडको वा डंभिज्जति फोडगा वा वातगंथी वा अंतवृद्धी वा वसहीए वा दीहजातिओ पविट्ठो पोट्टलं वा तावेयव्वं, एवमादीहिं आणीते कते कज्जे तत्थेव पडिच्छुब्भति, न देति तो तेहिं कट्ठेहिं जो अगणी तज्जातीओ तत्थ विगिंचिज्जति, न होज्ज सोवि न देज्ज वा ताहे तज्जाइएण छारेण उच्छादिज्जति, पच्छा अण्णजातीएणवि, दीवएसु तेल्लं गालिज्जति वट्टी य निप्पीलिज्जति, मल्लगसंपुडं कीरति पच्छा अहातुं पालेति, भत्तपच्चक्खातगादिसु मल्लयसंपुडए कातूण अच्छति, सारक्खिज्जति, कते कज्जे तहेव विवेगो, अणाभोगेणं खेल्लगलोयछारादिसु, तहेव परो आभोगेणं मग्गितो देज्जा, छारेण वाऽक्कमितो, वसहीए वा अगणिं जोतिं वा करेज्जा तहेव विवेगो, अणाभोगेणवि एते च्चेव पूवालियं वा सइंगालं देज्जा तहेव विवेगो ॥ ॥ ९८ ॥

वाउक्काए आयसमुत्थं आभोगेणं, फहं?, वत्थिणा दतिएण वा कज्जं, सो कदाइ सचित्तो अचित्तो मीसो वा, दुविधो कालो-सीतो उण्हो वा, सीतो तिविधो, उण्होवि तिविहो, उक्कोसए जहिं धंतो भवति ताए पढमाए पोरिसीए अचित्तो बितियाए मीसो

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥ ९९ ॥

तसियाए सचित्तो, मज्झिमे बितियाए आरद्धो चउत्थीए सचित्तो, मंदसीए ततियाए आरंभो, पंचमाए पोरुसीते सचित्तो, उण्ह-काले मंदे उण्हे मज्झे उक्कोसे दिवसा, नवरि तिन्नि चत्तारि पंच य, एवं वत्थिस्स, दतियस्स पुव्वधंतस्स एसेव कालविभागो, जो पुण ताहे चेव धमित्ता पाणियं उत्तारिज्जति तस्स पढमे हत्थसते अचित्तो, बितीए मीसो ततिए सचित्तो, कालविभागो नत्थि, जेण पाणितं पयईए सीयलं, पुव्वं अचित्तो मग्गिज्जति, पच्छा मीसो, पच्छा सचित्तोवि, अणाभोगेण०एस अचित्तो०मीसगसचित्ता गहिता, परोवि एवं चेव जाणंतो वा अजाणंतो वा देज्जा, नाते तस्सेव०, अणिच्छंते उव्वरगं संकवाडं पविसित्ता साणियं मुंचति। पच्छा सालाएवि, पच्छा निगुंजे महुरे, पच्छा संघाडियाओवि जतणाए, एवं दतितस्सवि, सचित्तो वा अचित्तो वा मीसे वा होतु सव्वस्सवि एस विधी मा अण्णं विराहेहितित्ति।

वणस्सइकाइयस्सवि आतसमुत्थं आभोगेणं गिलाणादिकज्जेसु मूलादीणं गहणं होज्जा, अणाभोगेण वा गहितं, भत्ते वा लोट्टो पडितो तलपिडिगं वा, कुक्कुसस्स य सो चेव पोरिसिविभागो, दुक्खोहितओ चिरंपि होज्जा, इंधणं वा पप्प परो अछुएण मीसितगं चवलगमीसितगाणि वा पीलूणि कूरउंडियाए वा अंतो छोढूणं करमंदिएहिं वा समं कंजियो अणतरो वा बीजकायो पडितो होज्जा, तिलाण वा एवं गहणं होज्जा, निंबतिलमातीएसु होज्जा, जदि आभोगगाहितं आभोगेण वा दिण्णं विवेगो, अणाभोगगाहिते दिण्णे वा जदि तरति विगिंचिउं पढमं परपादे, सपादे संथारए लट्ठीए वा पणओ हवेज्जा ताहे उण्हं सीतं च णाऊणं विगिंचणा। एस वणस्सतिकायो। पच्छा अंतो काते। एसिं विगिंचणाविधी, अछुगं अछुगखेत्ते, सेसाणि आगरे, असती आगरस्स निव्वाघाते महुराए भूमीए अन्नो वा कप्परे वा पत्ते वा, एस विधी। एगिंदिया गता॥

वनस्पति-परिष्ठापना

॥ ९९ ॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१००||

विकलेन्द्रिय-परिष्ठापना ||१००||

णोएगिंदिया दुविहा—तसा णोतसा य, णोतसा ठप्पा, तसा विगलिंदिया पंचेंदिया, विगलिंदिया तिविहा–बि०ति० चतु०, बेइंदियाणं आयसमुत्थं जलोगा गंडादीसु कज्जेसु गहिता तत्थेव विकिंचति, सत्तुगा वा आलेविनिमित्तं ऊरणिगासंसत्ता गहिता, विसोहिता आगरे विगिंचिति, सति आगरे सत्तुएहिं समं, निव्वाघाते संसत्तदेसे कत्थइ होज्जा। अणाभोगे गहणं तं देसं चेव न गंतव्वं, असिवादीहिं गंमेज्जा जत्थ सत्तुगा तत्थ कूरं मग्गति, न लब्भति तद्देवसिए सत्थुए मग्गंतु, असतीए बितियततिय०, असति पडिलेहिय गेण्हंतु, वेला अतिकमति अद्धाणं वा, संकिता विभत्तुं घेप्पंति, बाहिं उज्जाणे देवकुले पडिसयस्स बाहिं रयत्ताणं पत्थरेतूण उवरिं एक्कं पडलं मसिणं तत्थ पल्लत्थिज्जंति, तिण्णि ऊरणिगपडिलेहणाओ, नत्थि जदि ताहे पुणो पडिलेहणाओ, तिण्णि मुट्ठी पगहाय जदि सुद्धा परिभुज्जंति,एगंमि दिट्ठे पुणोवि मूलाओ पडिलेहिज्जंति, जे तत्थ पाणा ते मल्लए सत्तुएहिं समं ठविज्जंति, आगराइसु विगिंचिज्जंति, एवं भत्ते, जदि पाणगं संसज्जेज्जा आयामं घेप्पति,पाणग्गहणं बीयपत्ते पडिलेहत्ता उग्गाहितए छुभति, संसत्तं जातं रसएहिं ताहे सपडिग्गहं वोसिरति, नत्थि पादं अंबिलीए उल्लित्ता सुण्णघराईसु, णत्थि उल्लिया सुक्खियाए, मिम्मओ नत्थि तो अण्णं कप्परं मग्गिज्जति, तत्थ छुभित्ता अंबिलिबीयाणि छोढूण वाडिकोणे अंणंमि वा गुम्मादिंमि छुभति जथा न कोइ पयति, नत्थि अपारिहारिगं पडिहारिगे छुभति, अंबिलीए अणंबिलीए वा तिकालं पडिलेहेति दिणे दिणे, सुद्धं छड्डिज्जति, न सुज्झति सुक्खति तु अण्णंपि थोवं छुब्भति,ताहे सुद्धं पडितविज्जति, भायणं च पडितप्पिज्जति,नत्थि भायणं ताहे अडवीए अणागमणपथे छाधीए जो चिक्खल्लो तत्थ खणित्ता णिच्छिद्दं लिंपित्ता पत्तणालेणं जयणाए छुब्भति, एकसिं पाणएणं भमाडेति, तंपि तत्थेव छुब्भति, एवं तिण्णि वारे, पच्छा कप्पेति, कट्ठएहिं मालकं करेति, चिक्खल्लेणं लिंपति, कंटगसाहाए

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१०१||

य उच्छाएति, तेण भायणेणं सीतलपाणयं न लएति अवस्साणेण य कूरेण उवाहिज्जति एगं दोन्नि वा दिणे, संसत्तगं च पाणं असंसत्तगं च एगो ण धरेति, गंधेणवि संसज्जति, संसत्तगं च गहाय न हिंडिज्जति, विराहणा होज्ज, संसत्तगं च गहाय न समुद्दिसिज्जति, जदि परिस्संता जे ण हिंडंति ते णेंति, जे य पाणा दिट्ठा ते मया होज्ज, एगेणं पडिलहितं बितिएणं सुद्धं परिभुज्जति, एवं चेव महितस्स विग्गलियस्स दहियस्स, णवणीयस्स का विधी ?, महिए एगा ओंडी छुब्भति तत्थ दीसंति, असति महितस्स गोरसधोवणे, पच्छा उण्होदगं सीतलाविज्जति, पच्छा मधुरे चाउलोदगे, तेसु सुद्धं परिभुज्जति, असुद्धे तहेव विवेगो। दधिस्स पच्छदो उयत्तेत्ता णियत्ते पडिलेहिज्जति। तीराए मुत्तेवि एस विधी, परोवि आभोगअणाभोगाए ताणि चेव देज्जा ॥ तेइंदियाणं गहणं, सत्तुयचुण्णाणं पुव्वभणितो विधी, तिलकीडगावि तहेव, दहिए वरल्लो तहेव, छगणकिमिओवि तहेव, संथारओ गहिओ, णाते तहेव तारिसए कट्ठे संकामिज्जति, उद्देहिगाहिं गहिए पोत्ते णत्थि तस्स विगिंचणा, ताहे तेसिंपि लाढाइज्जंति, तत्थ अतिंति, लोए छप्पदियाओ वीसमिज्जंति सत्तदिवसे, कारणगमणं ताहे सीतलए निव्वाघाते, एवमादीणं तहेव आगरे निव्वाघाते य विवेगो, कीडियाहिं संसत्ते पाणए जदि जीवंति खिप्पं गलिज्जंति, अहवा पडितो लेवाडेणवि हत्थेणं उद्धरितव्वा, अलेवाडं चेव पाणगं होति। असिवुमोयरिए तुरितं कज्जं, सहमाणेसु य कमेण कातव्वं, न य नाम न कायव्वं कातव्वं वा उवादेयं। एवं मक्खिगावि, संघाडएणं एगो भत्तं गेण्हति, सो चेव फुसति, बितिओ पाणयहत्थो अलेवाडो चेव, जदि कीडियाओ मतियाओ तहवि गालिज्जंति, मेहं उवहणंति, मच्छिगाहिं वमेति, जदि तंदुलोदगमादिसु पूयरओ ताहे पगासमुहे भायणे छुभित्ता पत्तेयं दद्दरओ कीरति, ताहे कोसएण खोरएणं वा उक्कढिज्जति, थोवएणं पाणएणं समं विगिंचिज्जति, आउक्कायं

विकलेन्द्रियपरिष्ठापना

||१०१||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१०२|| संयत-परिष्ठापना

गमित्ता कट्ठेणं गहाय उदगस्स ढोइज्जति, ताहे अप्पणा चेव तत्थ वच्चति, एवमादी तेइंदियाणं, पूवलिया वा कीडएहिं संसज्जतिया होज्जा, सुक्खओ वा कूरो ताहे झुसिरि विक्खरिज्जति, तत्थ पाणा पविसंति। मुहुत्तं च रक्खिज्जति जाव विप्पसरिया।

चउरिंदियाणं आसमक्खिया अक्खिभि अक्खरा ओकड्डिहितित्ति घेप्पेज्जा,परहत्थे भत्ते पाणए वा जयि मच्छिगा तं अणेसणिज्जं संजतहत्थे उद्धरिज्जति, णेहे पडिता छारेणं तु गुंडिज्जति, कोत्थलकारिया वा वत्थे पादे वा घरं करेज्जा सव्वविवेगो, असति छिंदति, अहवा अण्णहिं घरए संकामिज्जाति, संथारए मंकुणाणं पुव्वगहिते ताहे वा घेप्पमाणे पादपुंछणेण, जदि तिन्नि वेलाओ पडिलेहिज्जंतेवि दिवे दिवे संसज्जइ ताहे तारिसए चेव कट्ठे संकामिज्जंति,डंडए वंसे वा, भमरस्सवि तहेव विवेगो, सअंडए सगट्ठो विवेगो, पूतरगस्स पुव्वभणितो विवेगो। एवमादि जथासंभवं विभासा कातव्वा॥

पंचेंदिया दुविहा-मणूसा णोमणूसा य,मणूसा दुविहा-संजता असंजता य,संजता दुविहा-सचित्ता अचित्ता य,सचित्तसंजताणं कहं गहणंति विवेगो,सचित्तसंजताणं जथा निसीहे जात्र इह जड्डा अधिकृता। इदाणिं अचित्तसंजताणं पारिट्ठावणिया। तस्स य मरणकालो,सो दुविधो-सणिमित्तो अणिमित्तो य,सनिमित्तो भत्तपरिण्णा गिलाणो वा, अणिमित्तो आसुकारेणं,तम्हा ओधाणेतव्वं,जदि न ओधाणेंति जा य ताहिं विणा विराहणा,किं?,णाणीणं तु। तम्हा पुव्वं पडिलेहेतव्वा। वहणी थंडिल्लं च उप्पएतव्वं। तत्थ इमाणि दाराणि–

पडिलेहणा दिसा णंतए य काले दिया य राओ य। जग्गण बंधण छेदण एतं तु विधिं तहिं कुज्जा॥ कुसपडिमा पाणग य नियत्तणगत्तगसीसतणाइं उवगरणे। काउस्सग्गपदाहिण उट्ठाणे चेव वाहरणे॥ उस्सग्गे सज्झाए खमणे खमणस्स मग्गणा होती। वोसिरणे ओलोयण सुभासुभगती निमित्तट्ठा॥ (हा० १३१८-९) पढमदारं पडि- ||१०२||

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥१०३॥

वस्त्रविधिः

लेहणेति, वहणीणं, अहवा दिसाणं, जादि दिसाओ न पाडिलेहेति जा थंडिल्लेण विणा विराहणा तं पावंति, पढमं अवरदक्खिणाए तिण्णि थंडिला पाडिलेहेतव्वा आसण्णे मज्झे दूरे, पढमस्स वाघातेण बितिए ततिए वा, पढमथंडिल्ले भत्तपाणसमाही, तंमि विज्जमाणे जदि दक्खिणं पाडिलेहेति तत्थ भत्तपाणं न लभंति, आहारपाणे अलब्भंते जं विराहणं पावन्ति जाव चरिमं, अहवा जं एसणं पेल्लेंति जं वा भिन्नं मासकप्पं कातुं वच्चंति जा य पंथे विराहणा दुविधा, जदा पुण पढमाए असति वाघाओ वा इमेहिं उदग तेण वाला वा तदा बितिया पाडिलेहिज्जति, बितियाए विज्जमाणीए जइ ततियं पाडिलेहिज्जति ततो उवगरणं न लब्भति, तेण विणा जं पावति ते चेव य दोसा, एवं चउत्थी दक्षिणपुव्वा तत्थ पुण सज्झायं न करेंति, पंचमी अवरुत्तरा, तत्थ कलहो भवति संजतगिहत्थअंणउत्थिएहिं सद्धिं जं पुणो उड्डाहो विराहणा य, छट्ठी पुव्वा ताए गणभेदो चारित्तभेदो वा, सत्तमी उत्तरा, तत्थ गेलण्णं जं च परितावणादि, जाव चरिमा पुव्वुत्तरा अंणं मारेति, एते दोसा परिहरंता संवसंति । पढमाए असति बितिया, ततिया वा न लभेज्जा, ताहे जतणाए सेसाओ कप्पंति,णतु संते। णंतएत्ति दारं, वित्थारायामेणं जं पमाणं भणितं ततो वित्थारेणवि आतामेणवि जं अतिरेगं लब्भति चोक्खं सुइगं,सेतं चेव चोक्खं, जत्थ मलो नात्थि चित्तलं व न भवति,सुइगं सुगंधि,न य विवण्णं, सेतं पंडुरं, ताणि गच्छे जीवितोक्कमणनिमित्तं धारेतव्वाणि, जहण्णेणं तिण्णि, एगं पत्थरिज्जति एगं पाउणित्ता वज्झति ततियं उवरिं पाउणिज्जति, एताणि तिण्णि जहण्णेणं, उक्कोसेणं गच्छं णाऊण बहुगाणिवि घिप्पंति, जदि ण गेण्हति पायच्छित्तं पावति, ॥१०३॥ आणादि,विराहणा दुविहा, मइलकुचोलि निज्जंते दट्टुं लोओ भणति-इहलोगे चेव एसा अवत्था, परलोगे पावतरिया, चोक्खसुईहिं लोगो पसंसति, 'अहो लट्ठो धम्मोत्ति,पवज्जाभिमुहा य होंति,अह णत्थि णन्तगंति रतणीए निएहामो तो अच्छावेंति तत्थ उड्डाणादी दोसा,

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने
||१०४||

कालविलंबे जागरण विधिः

जत्थ णामग्गहणादी, णामग्गाहणं वा, पज्जत्तियाणि तम्हा घेतव्वाणि, ताणि वसभा सारवंति, पक्खियचाउम्मासिएहिं पडिलेहिज्जंति, इहरथा मइलिज्जंति दिवसे दिवसे पडिलेहिज्जंताणि ।

कालेत्ति दारं, सो य दिवसतो कालं करेज्जा रातो वा, एवं कालगमणं हि पुव्वभणितं भत्तपरिण्णा गिलाणे वा, तंमि कालगते जतिणा सुत्तत्थगहितसारेण (आयरितो अधिकृतो तेण) विसाओ न कातव्वो, (जंवेलं कालगतो) निक्कारणे,कारणे अच्छाविज्जति, किं कारणं ?, रत्तिं ता आरक्खिततेणगसावगभयादिणा दारं न ताव उग्घाडिज्जति, तेणं कालिया संनिक्खाविज्जति, महजणणातो वा सो तंमि नगरे डंडिगादीहिं आयरिओ वा सो तंमि नगरे सड्ढेसु वा विक्खातो भत्तपच्चक्खातओ वा, संनायगा वा से भणंति, जथा- अम्हं अणापुच्छाए ण णीहित्ति, तेण रत्तिं ण नीणिज्जति, दिवसतो णंतगाणं असति चोक्खाणं, डंडिगो वा अतीनि नीति वा, तेणं दिवसतो संविक्खाविज्जति, एवं कारणे निरुद्धस्स इमो विधी- जे सेहा अपरिणता य ते ओसारेत्ता जे गीतत्था अभीरू जितनिद्दा उवायकुसला आसुकारिणो महाबलपरक्कमा महासत्ता दुद्धरिसा कतकरणा अप्पमादिणो एरिसा जे ते जागरंति, नतु वट्टंति (अपरिणते धारेउं) जदि पुण जागरंता अच्छिदिय अबंधिय तं सरीरगं जागरंति सुवंति वा आणादी,तत्थ पंता देवता छलेज्जा कलेवरं णयणे उट्ठेज्ज वा पणच्चेज्ज वा आधावेज्ज वा रसेज्ज वा वित्तासेज्ज वा भीसणेण वा लोमहरिसजणणेणं सद्देणं भेरवेणं अट्टट्टहासं मुंचेज्जा । जम्हा एते दोसा तम्हा छिंदितुं बिंधितुं व जागरितव्वं । जाहे चेव कालगतो ताहे चेव हत्थपादा उक्कयारिज्जंति, पच्छा थद्धा ण सक्कंति, अच्छीणि संमिलिज्जंति, तोंडं च से संबद्धं कीरति, मुहपोत्तियाए बज्झति, जाणि संधाणाणि अंगुलिअंतराणि तत्थ ईसि निच्छिज्जति, पादअंगुट्ठेसु हत्थंगुट्ठेसु य बज्झति । आहरणमादीणि य कहिज्जंति । जथा

||१०४||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१०५||

तह जागरंति । एसा विधी कातव्वा ।

इदाणिं कुसपडिमत्तिदारं,कालगते समाणे किं नक्खत्तंति पलोइज्जति,न पलोएंति असमायारी वट्टति,जतो तत्थ पणयालीसमुहुत्ता जे दिवड्ढक्खेत्ता ते अण्णे दो कड्ढंति, तत्थ अण्णे दो पुत्तलगा कीरंति, तीसतिमुहुत्ता जे समक्खेत्ता तेसु एक्को पुत्तलओ कीरति , एस ते चितिज्जतोत्ति, न करेति एक्कं कड्ढति , पण्णरसमुहुत्तिएसु पुण सतभिसयादिसु अवड्ढखेत्तेसु छसु अभीइंमि य, एत्थ एक्कोवि न कीरति । नियत्तणेत्ति दारं, एवं तंमि निज्जमाणे थंडिल्लस्स वाघाते खेत्तं उदगं हरितं अणाभोगेण वा अतिच्छिता थंडिल्लं ताहे जदि तेणेव मग्गेण णियत्तंति तो असमायारी, पच्छा सो कड्ढितो कदाइ गामहुत्तो उट्ठेज्जा, जतो चेव सो उट्ठेति ततो चेव पधावति,तम्हा ठवेऊणं जतोमुहाणि तूहाणि तं थंडिल्लं ताहे भमितूणं पदाहिणं करेंतेहिं उवागंमति। मत्तएत्ति दारं। सुत्तत्थतदुभयविदू मत्तएण समं संसट्ठपाणगं कुसा य ते समच्छेदा अवरोप्परसंबद्धा हत्थचतुरंगुलप्पमाणा, ते घेत्तूणं पुरतो अणवयक्खंतो वच्चति थंडिलाभिमुहो जेणं पुव्वं दिट्ठं, अहवा केसराणि चुण्णाणि वा, जदि सागारियं मिच्छादिट्ठी गता तो परिट्ठवेत्ता हत्थं पादं सोयंति आयमंति य तेहिं पुढो। इदाणिं सीसत्ति दारं, जत्तो दिसाए गामो तत्तो सीसं कातव्वं, पडिस्सताओ णीणंतेहिं पुव्वं पादा णीणेतव्वा, पच्छा सीसं, किं निमित्तं ?, उट्ठेंतरक्खणट्ठा, जतो उट्ठेति ततो चेव गच्छति, सपडिहुत्ते अमंगलं चेव । तणाणित्ति दारं, जाहे थंडिलं पमज्जितं भवति ताहे कुसमुट्ठीए एक्काए अवोच्छिण्णाए धाराए सरत्तिकातुं संथारो कातव्वो, सव्वत्थ समो, जदि पुण विसमा हवंति तणा उवरिं मज्झे हेट्ठा वा तत्थ मरणं गेलण्णं वा, उवरिं आयरियाणं मज्झ वसभाणं हेट्ठा भिक्खूणं, तम्हा समो कातव्वो, जदि य नत्थि तणाइं केसरेहिं वा चुण्णेहिं वा अव्वोच्छिण्णाए धाराए कारं कातूण हेट्ठा तकारो

कुशप्रतिमा निवर्त्तनमात्रक-शीर्षतृणानि

||१०५||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१०६||

उपकरणोत्सर्गप्रदक्षिणोत्थानानि

बज्झति, असति चुण्णाणं केसराणं वा ताहे पलेवगादीहिं । उवगरणेत्ति दारं, परिट्ठविज्जंते उवगरणं अहाजातं ठवेतव्वं, रयहरणचोलपट्टमुहपोत्ति, जदि न ठवेंति असमाधारीय वट्टति, विराहणा य, आणादी, तत्थ दिट्ठो जणेण, दंडितो य सो वा कोविओ दवियगोत्ति मा गामज्झामणं करेज्जा, अहवा मिच्छतादयो दोसा, जथा उज्जेणगस्स सावगस्स तव्वंनियलिंगेणं कालगतस्स तच्चंनियपरिएसणा, पच्छा आयरिएहिंतो बोहिलाभो । काउस्सग्गेत्ति दारं, तत्थ परिट्ठवेज्ज, जो जतो ठितो सो ततो चेव नियत्तति, काउस्सग्गं न करेंति जदि तत्थेव करेंति आणादिविराधणा, उट्ठाणादी दोसा, तम्हा काउस्सग्गो न कातव्वो । पयाहिणेत्ति दारं, परिट्ठवेत्ता जो जतो सो तओ चेव नियत्तति पदाहिणं न कातव्वो, जदि करेंति उट्ठितो विराहणा बालवुड्ढादीणं, तम्हा न कातव्वो। उट्ठाणेत्ति दारं, कलेवरं नीणिज्जमाणं वसहीए चेव जदि उट्ठेति गाममज्झं मोत्तव्वं, निवेसणे उट्ठेति निवेसणं मोत्तव्वं-उज्जाणे कंडं मोत्तव्वं, मंडलाओ महल्लतरगंति, उज्जाणस्स य णिस्सीहिताए य अंतरे उट्ठेति देसो मोत्तव्वो, निसीहियाए उज्जाणस्स य अंतरे आगंतुं पडितो निवेसणं मोत्तव्वं, उज्जाणे साही, उज्जाण० गामस्स य अंतरा गामद्धं, गामद्दारे गामो, गाममज्झे मंडलं, साहीए कंडं, निवेसणे देसो, बे सहायरज्जं मोत्तव्वं जदि निच्छूढो बितियं पविसति तो दो रज्जा मोत्तव्वा, ततियं पविसति तिण्णि रज्जा मोत्तव्वा, तेण परं तिण्णि चेव बहुसोवि पविसंतस्स, पुणोऽवि परिट्ठवितव्वो, एवं चेव आगतस्स इहेव उट्ठि-

१ वसही मोत्तव्वा, णिवेसणे उट्ठेइ णिवेसणं मोत्तव्वं, साहीए उट्ठेइ साही मोत्तव्वा, गाममज्झे उट्ठेति गाममज्झं मोत्तव्वं, गामद्दारे उट्ठेति गामो मोत्तव्वो, गामस्स य उज्जाणस्स य अंतरा उट्ठेति मंडलं मोत्तव्वं, उज्जाणे कंडं मोत्तव्वं, निसीहियाए उट्ठेति रज्जं मोत्तव्वं, इत्येवं प्रत्यंतरे । एवं ता निज्जूढंमि परिट्ठवंति गीयत्था, पगयस्स मुहुत्तं संचिक्खंति, जदि निसीहियाए उट्ठितो तत्थेव पडितो उवस्सगे मोत्तव्वो

||१०६||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१०७|| यस्स अण्णाइट्ठसरीरस्स पन्ताए देवताए तत्थ अमूढहत्थेणं काइयं वामहत्थेणं गहाय अच्छोडेतुं भणेज्जा-मा उट्ठे उज्झ गुज्झगा!, व्याहरणोत्सर्ग
जहिं व उट्ठितो तं जदि न मुयति विराहणा जा होति तंनिप्फण्णं०, तम्हा मोत्तव्वं । जदि पुण बहिया असिवादिकारणं तो न
निग्गच्छंति, तहेव वसंता जोगपरिवड्ढिं करेति, नमोकारइत्ता पोरिसिं करेंति, पोरिसित्ता परिमड्ढं, सति सामत्थे आयंबिलं पारेंति,
असति निव्विइयं सबितियंपि, एवं पुरिमड्ढइत्ता चउत्थं चउत्थइत्ता छट्ठं । एवं विभासा । वाहरणेत्ति दारं, सो उट्ठितो समाणो
णामं एगस्स दोण्हं तिण्हं सव्वेसिं वा गेण्हेज्जा, तत्थ जावतियाण गेण्हति तेसिं खिप्पं लोचो कीरति, परिण्णा-पच्चक्खाणं दुवा-
लसमं से दिज्जति, जो नाम न तरेज्जा तस्स दसमं अट्ठमं छट्ठं चउत्थं आयंबिलेण वा, बारसमं गणभेदो य कीरति, ते गणाओ
णिंति, जदि एवं न करेंति असमायारीए वट्टेंति, जं ते पाविहिन्ति, तम्हा एसा विधी कातव्वा । काउस्सग्गोति दारं, ततो
आगता चेतियघरं गच्छंति,चेइताइं वंदित्ता संतिनिमित्तं अजितसंतित्थओ परियट्ढिज्जति, पच्छाऽऽयरियसगासमागंतु अविधिपरि-
ट्ठावणियकाउस्सग्गो कीरति, जो पडिस्सए अच्छति तेण उच्चारपासवणखेलमत्तगा विगिंचितव्वा, वसही य पमज्जितव्वा
सज्झाइएत्ति दारं, तद्दिवसं सज्झाओ कीरति न कीरतित्ति, जदि य आयरिओ महाजणणाओ वा संणायगा व से अत्थि
तेसिं अद्धिती तेणं ण कीरति, इहरहा कीरति । एवं खमणंवि । एवं ताव सिवे, असिवे खमणं णत्थि, जोगवड्ढी कीरइ, काउसग्गो
य वड्ढिज्जइ, परिस्सये य मुहुत्तागं संविक्खाविज्जति जावं च उवउत्तो तत्थ, तत्थ जेणं संथारएणं णीतो सो विकरणो कीरति, ||१०७||
न करेंति असमायारीए वट्टंति, अधिकरणं, आणेज्जा वा देवता पंता, तम्हा विकरणं कातव्वं ।। इदाणिं लोयणेत्ति दारं—
अवरज्जतस्स० ।। १५- ।। १३४८ ।। अवरज्जतस्सत्ति बियदिणंमि, तं पुण कस्स घेप्पति?, आयरियस्स महड्ढियस्स भत्त-

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ॥१,२॥

दीप अनुक्रम [११-३६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णिः- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥१०८॥ | काष्ठाविधिः

पच्चक्खायस्स अन्नो वा जो महातवस्सी, जं दिसं तं सरीरगं कड्डियं तं दिसि सुभिक्खं सुविहारं च वयंति, अह तत्थेव संचिक्खइ अक्खयं ताहे तंमि देसे सिवं सुभिक्खं सुहविहारं च भवइ, जइ दिवसे अच्छइ तत्तियाणिवि वरिसाणि सुभिक्खं, सुभासुभं। इयाणिं ववहारओ इमं भणामि- थलकरणे वेमाणितो जोतिसिवाणमंतरो, समंमि गड्डाए भवणवासी एस गती से समासेणं। एत्थं एक्कमेक्के थाणे आणादीविराधणा, एक्कमेक्कातो पदातो तंनिप्फण्णं। एत्थ पुण कट्ठस्स गहणमोक्खणे एस विधी-पुव्वट्ठातंतगा चेव तणडगलछारादिदव्वमालोएंति अणुन्नवेन्ति य, किमिति ?, कोइ आणिमित्तं कालं करेज्ज रातो ताहे जदि सागारियं वहणकट्ठादीणट्ठा उट्ठवेंति तो आणादी, आउज्जोवणवणिए, अगणि कुडंबी कुकंम कुम्मरिए। तेणे मालागारे उब्भामग पंथिय पयंते ॥ १ ॥ तम्हा न उट्ठवेतव्वो, तं दव्वं घेत्तुं ण परिट्ठवेंति, जदि एगो समत्थो णेतुं ताहे न चेव घेप्पति, जदि न तरति ताहे दो जणा वहणीए णेंति, तं च कट्ठं जदि तत्थेव परिट्ठवेति तो अण्णेण गहिते अधिगरणं, सागारिओ वा तं अपेच्छतो दिया वा रातो वा आसियाडेज्ज, विणासं गरहं च पावेंति, तम्हा आणेतव्वं। जदि पुण आणेत्ता तहेव पवेसिति तो सागारिओ मिच्छत्तं गच्छेज्जा, एते भणंति- आदिण्णं न कप्पइ, इमं च णेहिं गहितंति, अहवा भणेज्ज- समला, पुणोऽवि तं चेव आणेंति, अवण्णं वा करेज्जा, इतरज्जाति य दुगुंछंति य-मतगं वहितुं मम घरं आणेन्ति, उड्डाहं वा करेज्जा, जम्हा एते दोसा तम्हा आणेत्ता एक्को तं घेत्तूण गच्छति,पट्ठि वा सेसा अतिन्ति,जदि ताव सागारिओ न उट्ठेति ताहे अतिणेत्ता तहेव ठवेति जथा आसी,अह उट्ठितओ ताहे साहंति- तुब्भे पासुतेल्लया अम्हेहिं न उट्ठविता, साधू कालगतो, तुब्भच्चियताए वहणीए णीतो सा किं परिट्ठविज्जतु आणिज्जतु?, ॥१०८॥
जं सो भणति तं कीरति, अह तेहिं आणीतं ठवितं, तेण य आगमियं- महं वहणीए परिट्ठवेत्ता पुणोवि अतिणेतुं तत्थेव ठविताणि,

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

||१०९||

रुट्ठो,ताहे अणुलोमिज्जति, आयरिया भणंति- केणतं कतं ?, अणुगेणंति, कीस मम अणापुच्छाए करेसि?, अलाहि एतेण ममं, नीतु, एवं समक्खं तु भणंति, भणिते जदि सागारिओ भणिति- मा छुब्भह, अच्छतु, मा णवरं वितियं करेज्जा, अह भणति- मा अच्छतु, पच्छा अण्णाए वसहीए ठाति, बितिज्जओ से दिज्जति, मातिट्ठाणेण कोइ साधू भणति- मम स णीयल्लगो यदि निच्छुब्भति अहंपि जामि, अहवा सागारिएण समं कोइ कलहेति, ताहे सोवि निच्छुब्भति, सो से बितिज्जगो होति, जदि बहिया से पच्च-वाओ वसही वा नत्थि ताहे सव्वेवि णिंति,बितियपदं तत्थेव परिट्ठवेज्जा उट्ठितो सो संनिवेसो असिवगहितओ वा । संजतपरि-ट्ठावणिया गता ॥ इदाणिं असंजतमणुयाणं, सा दुविधा भवति- सचित्तेहिं अचित्तेहि य, सचित्तेहिं ताव कहं पुण तीए संभवोत्ति–

सचित्त-मनुष्यपरि

कप्पट्ठग ० ॥ १५-१३५।१२४।४॥ काइ य अविरइया संजताणं वसहीते कप्पट्ठगरूवं साहरेज्जा अणुकंपाए भएणं पडणी-यत्ताए वा, अणुकंपाए चिंतेति-एते भट्टारगा सत्तहितायोत्थिता, एत्थ साहरामित्ति साहरेज्जा, दुक्काले वा पत्ते भत्तं वा पाणं वा से दाहिंतित्ति छड्डेज्जा, दासी वा चिंतेति- एतस्सतएण न कोति दुक्खिहितित्ति एतेसिं अणुकंपिताणं वसहीए साहरेज्जा१ भएणं रंडा पतुत्थवतिया वा साहरेज्जा, एतेसिं अणुकंपिहितित्ति परिट्ठवेज्जा २ पडिणीया तच्चण्णिगिणी चरिगा वा एतेसि उड्डाहो होउत्ति साहरेज्जा३, एत्थं का विधी ?, दिवे दिवे य वसही वसभेहिं परितंचितव्वा, पच्चूसे पदोसे मज्झण्हे अड्डरत्ते य, एयमादी दोसा होहितित्ति, जदि विगिंचंती दिट्ठा बोलो कीरति, एसा इत्थिया दारगरूवं छड्डेतूणं पलायति, ताहे लोगो एति, पेच्छति तं, ताहे जं जाणति तं कीरति, न दिट्ठा होज्जा ताहे विगिंचिज्जति उदगपहे, जणो वा जत्थ पादे निग्गतो अच्छति ||१०९||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||११०||

अचित्त-मनुष्यपरि

तत्थ ठवेत्ता अच्छितिज्ज वा अण्णं पडिच्छंतओ अण्णदोमुहो, जथा तं न सुणकाएणं मज्जारेण वा मारिज्जति, जाहे केणति दिट्ठं ताहे ओसरति ॥ अचित्तं कहं ?, पडिणीओ वणीमगसरीरं छुभेज्जा जथा से उड्डाहो होतुत्ति, वणीमको वा कोणे कहंचि मतो, अण्णेण वा केणति मारेऊण एत्थं निद्दोसांत्ति छड्डितो, अविरतिगाए मणूसेण वा उक्कलंबितं वा होज्जा, तत्थ तहेव बोलो कीरति, लोगो कहिज्जति एगो नट्ठोत्ति, उक्कलंबिते णिव्विण्णएणं वारेंताणं रडंताणं मारिओ अप्पओ, न होज्ज एवं कातव्वं, दिट्ठेणं कालक्खेवो कातव्वो, पडिच्छितूणं जदि कोइ नत्थि ताहे जत्थ कस्सति निवेसणं न होति तत्थ विगिंचिज्जति, अप्पेक्खेज्ज वा, पदोसे वट्टति संचरति लोगो ताहे निस्संचारि विवेगो, अतिप्पभाते संविक्खावेत्ता अप्पसागारिए रत्तिं विगिंचिज्जति, जदि नत्थि कोइ पडियरति, अह कोइ पडियरइ तस्सेव मुखे छुब्भति, एवं विप्पजहणाए, विगिंचणं नाम जं तस्स तत्थ भंडोवगरणं तस्स विवेगो, जदि रुधिरं ताहे न छड्डति, एक्कधा वा विधावि मग्गो नज्जति, ताहे बोलकरणं, एवमादि विभासा। णोमाणुस्सा दुविहा- सचित्ता अचित्ता य, सचित्ता चाउलोदगादिसु, तस्स गहणं जथा ओहनिज्जुत्तीए, तत्थ निसंनओ आसि मच्छओ मंडुक्कलिया वा, तं घेत्तूणं थोवएणं पाणिएणं सह णिज्जंति, पाणियं ढोइज्जति, मंडुक्को उड्डेति, मच्छओ बला छुब्भति, आदिग्गहणेणं संसट्ठं पाणए गोरसकुंडए तेल्लभायणे वा, एवं सचित्ते, अच्चित्ते मच्छओ मयओ आणीतो केणइ पक्खिणा पडिणीएण वा, थलचरो उंदुरो घरकोइलगो एवमादि, खयहरो हंसवायसमयूरादी, जत्थ सदोसं तत्थ विवेगो, अप्पसारिते पोग्गलबोलकरणं वा, निद्दोसे जाहे रुच्चति ताहे विगिंचिज्जति ॥ नोतसेहिं दुविहा- आहारे णोआहारे य, आहारे जाता य अजाता य, दोवि जथा ओघनिज्जुत्तीए । णोआहारो दुविहो- उपकरणे णोउपकरणे य २, जाता य २, जा सा जाता सा वत्थे य पाए य, अजातावि वत्थे य ||११०||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१११||

पादे य । जाया नाम जं वत्थं नाम पायं वा मूलगुणअसुद्धं वा उत्तरगुणअसुद्धं वा आसि, योगेण वा विसेण वा, जं विसेण आभियोगितं वा वत्थपातं खंडाखंडं कातूणं विगिंचितव्वं, सावणा य तहेव, जाणि अतिरित्ताणि वत्थपादाणि कालगते वा पडिभग्गे वा साहारणे वा गहिते जाएज्जा । एत्थ का विगिंचणविधी ?, चोयओ भणति- अभिओगविसाणं तहेव खंडाणि कातूण विगिंचणा, मूलगुणअसुद्धस्स वत्थस्स एक्कं वंकं कीरति, उत्तरगुणअसुद्धस्स दोण्णि वंकाणि, सुद्धं उज्जुगं ठविज्जति, पाते मूलगुणअसुद्धे एगा चीरिगा दिज्जति, उत्तरगुणअसुद्धे दोण्णि दोण्णि चीरखंडा पाते छुब्भंति, सुद्धं तुच्छं कीरति, रित्तगंति भणितं होति, आयरिया भणंति- एवं तुज्झं सुद्धंपि असुद्धं होहिति, कह ?, उज्जुगं ठवितं एगेणं वंकेणं मूलगुणअसुद्धं जातं, दोहिं उत्तरगुणअसुद्धं जातं, दुवंकं वा एगवंकं वा होज्जा, एकवंकं वा दुवंकं वा होज्जा, एवं मूलगुणेसु उत्तरगुणा होज्जा, उत्तरगुणेसु मूलगुणा होज्जा, पाएवि एगं चीरं निग्गतं मूलगुणअसुद्धं जातं, दोहिवि निग्गतेहिं सुद्धं जातं, जे य तेहिं वत्थपातेहिं परिभुंजंतेहिं दोसा तेसिं आवत्ति होति, तम्हा जं भणसि तं अजुत्तं, एवं परिट्ठवेतव्वं वत्थे मूलअसुद्धे एगो गंठी कीरति, उत्तरे दोण्णि, सुद्धे तिण्णि, एवं ता वत्थे, पाते मूलगुणासुद्धए अंतो एगा सण्हिया रेहा, उत्तरगुणअसुद्धे दोण्णि, सुद्धे तिण्णि रेहा, एवं णातं होति, जाणएण कातव्वाणि । कहिं परिट्ठवेयव्वाणि ?, एगंते अणावाए सह पत्तंबधएहिं रयत्ताणेहि य, असति पडिलेहणियाए दोरेण मुहे बज्झति, उद्धमुहाणि ठविज्जंति, असति ठाणस्स तस्स पासल्लियं ठवेंति, जओ वा आगमो जातो ततो पुप्फकं करेंति । जदि एताए विधीए विगिंचिते कोइ गिण्हेज्जा आगारी तथावि वोसट्ठअधिकरणा सुद्धा साधुणो, जेहिं अण्णेहिं साधूहिं गहिताणि जदि कारणे गहिताणि सुद्धाणि जावज्जीवाए परिभुज्जंति, असुद्धाणि उप्पण्णे उप्पण्णे विगिंचिज्जंति ॥ नोउवकरणे चतुव्विधा- उच्चारे पासवणे

नोत्रसपरि ||१११||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णिः- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||११२|| | परिष्ठापनिका

खेलि सिंघाणे, तत्थ उच्चारे कहं विवेगो ?, जथा ओघनिज्जुत्तीए, अहवा इमा इह निज्जुत्तीए गाथा—

उच्चारं कुव्वंतो० ॥ १५-१४९ । १३६८ ॥ छायाए वोसिरितव्वं जस्स गहणी संसज्जति, केरिसियाए छायाए ?, जो लोगस्स उवतोगरुक्खो तत्थ न वोसिरिज्जति,णिरुवभोगे वोसिरिज्जति,तस्सवि जा सयाओ पमाणाओ निग्गता तत्थ वोसिरिज्ज, असति रुक्खाण काएण छाया कीरति, तेसु परिणतेसु वच्चति । काया दोण्णि-तसकायो थावरकायो य, जदि पडिलेहेतिवि पमज्जतिवि तो एगिंदियावि रक्खिता तसावि, पडिलेहेति न पमज्जति तो थावरा रक्खिता तसा परिचत्ता, अह न पडिलेहेति पमज्जति थावरा परिचत्ता तसा सारक्खिता, इतरत्थ दोवि परिचत्ता, अपि पदार्थसंभावने, सुपडिलेहिएसु सुपमज्जिएसुवि ४, पढमं पदं पसत्थं, बितिए ततिए पक्खेण, चउत्थे दोहिवि अपसत्थं, पढमं आयरितव्वं, सेसा परिहरितव्वा । दिसाभिग्गहे- उभे मूत्रपुरीषे तु, दिवा कुर्यादुदङ्मुखः । रात्रौ दाक्षिणतश्चैव, तस्य त्वायुर्न हीयते । ॥ १ ॥ दो च्चेव एताओ अभिगिण्हंति । डगलगहणे तहेव चतुभंगो । खरिय गामे एवमादि विभासा कातव्वा जथासंभवं ॥ इमा सीसथिरीकरणगाथा—

गुरुमूलेवि० ॥ १५-१६३ ॥ एसा परिट्ठावणिया समिती सम्मत्ता । एत्थं पंचसुवि समितीसु पडिसिद्धकरणादिणा

सूत्र

जो मे जाव मिच्छामिदुक्कडंति ॥ पडिक्कमामि छहिं जीवनिकाएहिं पुढविकाएणं०, छ इति संखा, जीवाणं निकाया नाम समूहो, अतो तेहिं छहिं जीवनिकाएहिं जोऽतिचार इति, तंजथा- पुढविकाएणं योऽतिचारः, एवं आउतेउवाउवणतसाणं विभासा । ||११२||

एतेहिं छहिं जीवनिकाएहिं जाव मिच्छामिदुक्कडं ॥ पडिक्कमामि छहिं लेसाहिं-किण्हलेसाए० ॥ सूत्रं ॥ 'लिश संश्लेषणे' संश्लिष्यते आत्मा तैस्तैः परिणामान्तरैः यथा श्लेषेण वर्णसंबन्धो भवति एवं लेश्याभिरात्मानि कर्माणि संश्लिष्यंते, योमपरिणामी लेस्या,

***अत्र लेश्याया: भेदा: वर्णयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥११३॥

जीव-नीकायाः लेश्याश्च

जम्हा अयोगिकेवली अलेस्सो । तत्थ कण्हलेस्सा इति द्विपदमिदं वचनं, कृष्णो द्रव्यपर्यायो वर्णः लेश्या योगपरिणामः, कृष्णद्रव्यसाचिव्याद्यः योगपरिणामः स कृष्णलेश्या, एवं नीललेश्यादीयाओवि विभासितव्वाओ, अण्णे भणंति- कृष्णवर्ण इव लेश्या कृष्णलेश्या एवं जाव सुक्कलेस्सा,नवरं पसत्थतरो परिणामो । एत्थ लेस्सापरिणामे उदाहरणं-एगत्थ छहिं मणूसेहिं जंबू दिट्ठा फलभरिता, तत्थेगो पुरिसो भणति- मूला छिज्जतु तो पडिताए खाइस्सामो, सो कण्हाए, बितिओ भणति-मा विणासिज्जतु, साला छिज्जंतु, सो नीलाए वट्टति, ततिओ मा साला छिज्जंतु, साहाओ विच्छिज्जंतु, एवं काउलेसा, चउत्थो भणति- गोच्छा छिज्जंतु, एसो तेऊए, पंचमो भणति- आरोभिउं खामो धुणमो वा जेण पक्काणि पडंति ताणि खामो, एसो पीताए, छट्ठो भणति- सयं पडिताणि पभूताणि ताणि खामो, सो सुकाए । एवं लेस्साहिवि जीवस्स विसुद्धपरिणामो अविसुद्धपरिणामो य, सजोगिकेवलीणं सुकलेस्साए वट्टमाणाणं नवरं जोगपच्चइयं इरियावहियं दुसमयट्ठितियं एवंति । अहवा गामघातएहि दिट्ठंतो, पढमओ भणति-सजणवयं गोमाहिसं मारेमो, बितिओ माणुसाणि, ततिओ पुरिसे,चउत्थो आउधहत्थे,पंचमो जे जुज्झंति, छट्ठो किं एतोहिं मारिएहिं?, धणं हीरंतु, एवं छल्लेसाओ समोतारेतव्वाओ । एताहिं छहिं लेस्साहिं जो मे जाव दुक्कडंति । **पडिक्कमामि सत्तहिं भयट्ठाणेहिं ॥ सूत्रं ॥** भयट्ठाणाणि जधा सामाइए ॥ **पडिक्कमामि अट्ठहिं मदट्ठाणेहिं** । मदस्थानानीति द्विपदं वचनं, मदो नाम मानोदयादात्मोत्कर्षपरिणामः, स्थानानि- तस्यैव पर्याया भेदाः, मदस्य स्थानानि मदस्थानानि, तानि चाष्टौ- जातिमद कुलमद बलमद रूपमद तपोमद इस्सरियमद श्रुतमद लाभमद । कोइ नरिंदादि पव्वाजितओ जातिमदं करेज्जा, एवं कुलमदादीणि विभासिज्जा ॥ **नवहिं बंभचेरगुत्तीहिं ॥** वसहि कह० ॥ १६-१५ । २ । गाथा । नव बंभचेरसमाधिट्ठाणाइं पण्णत्ताई

॥११३॥

सूत्र

***अत्र नव ब्रह्मचर्य-गुप्तय: वर्णयते

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||११४||

जाइं भिक्खू सोच्चा निसंम संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी सदा अप्पमत्ते विहरेज्जा, तंजथा- णो इत्थिपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवेत्ता भवति से निग्गंथे, कहमिति ?, इत्थिपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जेज्जा, भेयं वा लभेज्जा,उम्मायं वा पाउणेज्जा दीहकालियं वा रोगायंकं पाउणेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा, तम्हा नो इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवेत्ता भवति से निग्गंथे १। णो इत्थीणं कहं कहित्ता भवति से निग्गंथे , कहमिति ?, इत्थीणं कहं कहेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा जाव धम्माओ भंसेज्जा, तम्हा णो इत्थीणं कहं कहेत्ता भवति से निग्गंथे २। णो इत्थीणं सद्धिं सण्णिसेज्जागते विहरित्ता भवति से निग्गंथे, तं कहमिति ?, इत्थीहिं सद्धिं सण्णिसेज्जागतस्स जाव धम्माओ भंसेज्जा, तम्हा णो इत्थीहिं सद्धिं सण्णिसेज्जागते विहरित्ता भवति से निग्गंथे ३। नो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोएत्ता निज्झाएत्ता भवति से निग्गंथे, तं कहमिति ?, इत्थीणं इंदियाइं जाव से निग्गंथे ४। नो इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा कूइतसद्दं वा रुइतसद्दं वा गीतसद्दं वा हसितसद्दं वा थणितसद्दं वा कंदितसद्दं वा विलवियसद्दं वा सुणित्ता भवति से निग्गंथे, तं कहमिति ?, इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा जाव विलवितसद्दं सुणेमाणस्स जाव धंमाओ भंसेज्जा, तम्हा इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा जाव से निग्गंथे ५। नो इत्थीणं पुव्वरतपुव्वकीलियाइं अणुसरित्ता भवति से निग्गंथे, तं कहमिति?, इत्थीणं पुव्वरतपुव्वकीलिताइं अणुसरमाणस्स जाव भंसेज्जा,तम्हा नो इत्थीणं पुव्वरतपुव्वकीलित जाव से निग्गंथे ६। नो पणीतं पाणभोयणं आहारेत्ता भवति से निग्गंथे, तं कहमिति ?, पणीतं पाणं वा भोयणं वा आहारेमाणस्स जाव धंमाओ भंसेज्जा, तम्हा नो पणीतं पाणभोयणं जाव निग्गंथे ७। नो अतिमाताए पाणभोयणं आहारेत्ता भवति से निग्गंथे, तं

भवस्थानानि मद स्थानानि

||११४||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||११५||

कहामिति ?, अतिमाताए पाणभोयणं आहारेमाणस्स जाव धम्माओ भंसेज्जा तम्हा णो अतिमायाए जाव से निग्गंथे ८। णो निग्गंथे विभूसाणुवादी सिता, तं कहामिति ?, निग्गंथे य णं विभूसावत्तिए विभूसितसरीरे इत्थीजणस्स अभिलसणिज्जे सिया, तते णं तस्स इत्थीजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स बंभचारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिंछा वा समुप्पज्जेज्जा भेयं वा लभेज्जा उम्मादं वा पाउणेज्जा जाव केवलिपण्णत्ताओ धम्माओ वा भंसेज्जा, तम्हा णो निग्गंथे विभूसाणुवादी सिया ९। इति नवमे बंभचेरसमाहिठाणे भवति। भवंति य एत्थ सिलोगा-जं विवित्तमणाइन्नं, रहितं थीजणेण य। बंभचेरस्स रक्खट्ठा, आलयं तं निसेवए ॥ १ ॥ मणपल्हायजणणिं, कामरागविवड्ढणिं। बंभचेररतो भिक्खू, थीकहं परिवज्जए ॥ २ ॥ समं च संथवं थीहिं, संकहं च अभिक्खणं। बंभचेररतो भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥ ३ ॥ अंगपच्चंगसंठाणं, इंदियाइं च भूसणं। बंभचेररतो त्थीणं, चक्खुगेज्जं च वज्जए ॥ ४ ॥ कूइतं रुइतं गीतं हसितं थणितकंदितं। बंभचेररतो० सोयगेज्झं विवज्जए ॥ ५ ॥ हासं किड्डं रतिं दप्पं, सहभुत्तासिताणि या। बंभचेररतो थीणं, णाणुचिंते कदाचिइ ॥ ६ ॥ पणीतं भत्तपाणं तु, खिप्पं मदविवड्ढणं। बंभचेररतो भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥ ७ ॥ धम्मलद्धं मितं काले, जत्तत्थं पणिहाणवं। णातिमत्तं तु भुंजेज्जा, बंभचेररतो सदा ॥ ८ ॥ विभूसं परिवज्जेज्जा, सरीरपरिमंडणं। बंभचेररतो भिक्खू, सिंगारत्थं न धारए ॥ ९ ॥ आलओ थीजणाइण्णो, थीकहा य मणोरमा। संथवो चेव नारीहिं, तासिं इंदियदरिसणा ॥ १० ॥ कूइतं रुइतं गीतं, सहभुत्तासिताणि य। पणीतं भत्तपाणं च, अतिमातं पाणभोयणं ॥ ११ ॥ गत्तभूसणमिट्ठं च, कामभोगा

ब्रह्मचर्यगुप्तयः

||११५||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||११६||

य दुज्जया। नरस्सत्तगवेसस्स, विसं तालउडं जथा ॥ १२ ॥ दुज्जए कामभोगे तु, निच्चसो परिवज्जए। संकट्ठाणाणि सव्वाणि, वज्जए पणिधाणवं ॥ १३ ॥ धम्मारामे चरे भिक्खू, धंमधी धम्मसारथी। धम्मारामरते दंते, बंभचेरसमाहितो ॥ १४ ॥ देवदाणवगंधव्वा, जक्खरक्खसकिन्नरा। बंभयारीं नमंसंति, दुक्करं जे करंति तु ॥ १५ ॥ एस धम्मे धुए नीए, सासए जिणदेसिए। सिद्धा सिज्झंति चाणेणं, सिज्झिस्संति तथाऽवरे ॥ १६ ॥ त्ति, एतासिं नवहिं बंभचेरगुत्तीहिं पडिसिद्धकरणादिणा जाव मिच्छामिदुकडंति।

सूत्र

दसविहे समणधम्मे। दसविधो साधुधम्मो, तंजथा-उत्तमा खमा मद्दवं अज्जवं मुत्ती सोयं सच्चो संजमो तवो [चाओ] अकिंचणत्तणं बंभचेरमिति, तत्थ खमा अक्कोसतालणादी अहियासेंतस्स कम्मक्खओ भवति तम्हा कोहोदयनिरोहो कातव्वो, उदयप्पत्तस्स वा विफलीकरणं, एसा खमत्ति वा तितिक्खत्ति वा कोहनिरोहित्ति वा १ मद्दवता न जातिकुलादाहिं अत्तुक्करिसो परपरिभवो वा, एत्थवि माणोदयनिरोहो उदयप्पत्तस्स विफलीकरणं २ अज्जवं रिजुभावो तस्स अ करणे णिज्जरा, मायाएवि उदयनिरोहो उदिण्णविफलीकरणं वा ३ मुत्ती निल्लोभता प्राप्तहर्षाप्राप्तशोकाकरणेन ४ सोयं अलुद्धा धम्मोवगरणेसुवि, तस्स करणे अकरणे य कम्मस्स निज्जरा उवचयो य, अतो लोभोदयनिरोहो उदयप्पत्तस्स विफलीकरणं कातव्वं ५, सच्चमणुवघातगं परस्स तत्थं वयणं, तथा भणंतस्स निज्जरा, अण्णथा कम्मबंधो ६ संजमो सत्तरसविधो, तंजथा-पुढविकायसंजमो आउ० तेउ० वाउ० वणस्सति० बेतेंदिय० तेंदिय० चतुरिंदिय० पंचिंदिय० पेहासंजमो उवेहासंजमो (अवहट्टुसंजमो) पमज्जितसंजमो मणसंजमो वइसंजमो काय० उवकरणसंजमोत्ति, पुढविकायसंजमो पुढविकायं त्रियोगेण न हिंसति न हिंसावेति हिंसंतं ।।११६।।

श्रमणधर्मः

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥११७॥ — उपासकप्रतिमाः

नाणुजाणाति, एवं आउक्कायसंजमो जाव पंचिंदियसंजमो, पेहासंजमो जत्थ ठाणणिसीदणतुयट्टणं कातुकामो तं पडिलेहिय पमज्जिय करेमाणस्स संजमो भवति, अण्णहा असंजमो, उपेहासंजमो संजमे तवे य संभोइयं पमादंतं चोतेंतस्स संजमो, असंभोइयं चोएंतस्स असंजमो, पावयणीए कज्जे चियत्ता वा से पडिचोयणात्ति अण्णसंभोइयंपि चोयंति, गिहत्थे कम्मादाणेसु सीतमाणे उवेहंतस्स संजमो, वावारेंतस्स असंजमो, अवहट्टुसंजमो, अतिरेगोवगरणं विगिंचितस्स संजमो, पाणजातीए य आहारादिसु असुद्धोवाहिमादीणि य परिट्ठवेंतस्स, पमज्जणासंजमो सागारिए पादे अप्पमज्जंतस्स संजमो, अप्पसागारिए पमज्जंतस्स संजमो, मणसंजमो अकुशलमणनिरोधो वा कुसलमणउदीरणं वा, वइसंजमो अकुसलवइनिरोधो कुसलवइउदीरणं वा, कायसंजमो अवस्सकरणिज्जवज्जं सुसमाहितपाणिपादस्स कुम्म इव गुत्तिंदियस्स चिट्ठमाणस्स संजमो, पोत्थएसु घेप्पंतेसु य असंजमो, महाधणमुल्लेसु वा इमेसु, वज्जणं तु संजमो, कालादि पडुच्च चरणकरणट्ठं अव्वोच्छित्तिनिमित्तं गेण्हंतस्स संजमो भवति७। तवो दुविधो-बज्झो अब्भंतरो य, जथा दसवेतालिचुण्णीए चाउलोदणंतं अलुद्धेण णिज्जरट्ठं साधुसु प्पाडिवायणीयं ८। आकिंचणीयं नत्थि जस्स किंचणं सो अकिंचणो तस्स भावो आकिंचणियं, कम्मनिज्जरट्ठं सदेहादिसुवि णिस्संगेण भवितव्वं ९। बंभमट्ठारसप्पगारं ओरालिया कामभोगा मणसा ण सेवेति न सेवावेति सेवंतं ण समणुजाणति एवं वायाए कायेणवि, नवविधं गतं, दिव्वेसुवि एते विगप्पा, एतं अट्ठारसविहं बंभचेरं आयरंतस्स कम्मनिज्जरा, अणायरंतस्स बंधो, तम्हा सेवितव्वं १०, एस दसविधो समणधम्मो मूलुत्तरगुणेसु समोयरति, संजमो पाणातिपातविरती सच्चं मुसावायवेरमणं आकिंचणयं- निम्ममत्तं अदत्तपरिग्गहवज्जणं, बंभचेरं मेहुणविरती, खंती मद्दवं अज्जवं सोतं तवो [चागो] उत्तरगुणेसु जथासंभवं, एत्थ दसविहे समणधंमे पडिसिद्धकरणादिणा जाव दुक्कडंति ॥ एक्कारसहिं उवासगपडिमाहिं । तत्थ ॥११७॥

सूत्र

***अत्र श्रावकस्य एकादश-प्रतिमा: वर्णयते

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

गाथा—दंसणवतसामाइय० ॥ ४ ॥ तत्थ किरियावादी यावि भवति, तंजथा आहियवादी आहितपण्णे आहितदिट्ठी संमावादी अणियतवादी, संति परलोगवादी जाव अत्थि संसाराओ सिद्धी, से एवंवादी एवंपण्णे एवंदिट्ठी छंदरागमतिनिविट्ठ यावि भवति, से भवति महिच्छे जाव सुक्कपक्खिए, आगमेस्सीणं सुलभबोहिए यावि भवति, सव्वधम्मरयी यावि भवति, तस्स णं बहूइं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसथोववासाइं नो सम्मं पट्ठवियाइं भवंति. **पढमा उवासगपडिमा** १ ॥ अहावरा दोच्चा उवासगपडिमा सव्वधम्मरुई यावि भवति, तस्स णं बहूइं सीलव्वयगुणवेरमणपोसहोववासाइं नो सम्मं पट्ठवियाइं भवंति, से णं सामाइयदेसावगासियं नो संमं अणुपालेत्ता भवति, **दोच्चा उवासगपडिमा** २ ॥ अहावरा तच्चा उवासगपडिमा सव्वधम्मरुई यावि भवति, तस्स णं बहूइं सीलव्वतगुणवेरमणपोसहोववासाइं नो संमं पट्ठविताइं भवंति, से णं सामाइयं देसावगासियं संमं अणुपालेत्ता भवति,से णं चाउद्दसिअट्ठमिपुण्णिमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं नो संमं अणुपालेत्ता भवति,**तच्चा उवासगपडिमा** ३॥ अहावरा चउत्था उवासगपडिमा सव्वधम्म०,तस्स णं बहूइं सीलव्वतजाव संमं पट्ठविताइं भवंति, से णं सामाइयं देसावगासियं संमं अणुपालेत्ता भवति, से णं चाउद्दसि जाव संमं अणुपालेत्ता भवति, से णं एगरातियं उवासगपडिमं णो संमं अणुपालेत्ता भवति, **चउत्था उवासगपडिमा** ४ ॥ अहावरा पंचमा उवासगपडिमा सव्वधम्म०, तस्स णं बहूइं सील जाव संपट्ठिताइं भवंति, से णं सामाइयं तहेव, से णं चाउद्दसि तहेव, से णं एगराइयं उवासगपडिमं अणुपालेत्ता भवति, से णं असिणाणए वियडभोई मउलियडे दिया बंभचारी रत्तिं परिमाणकडे, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं पंच मासे विहरेज्जा, **पंचमा उवासगपडिमा** ५ ॥ अहावरा छट्ठा उवासगपडिमा सव्वधम्म० जाव से णं एगराइयं उवा० संमं अणु-

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ‖१,२‖ दीप अनुक्रम [११-३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥११९॥

उपासकप्रतिमाः

पालेत्ता भवति, से णं असिणाणए वियडभोई मउलियडे रातोवरायं बंभचारी, सचित्ताहारे से अपरिण्णाते भवति, से णं एतारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं छम्मासे विहरेज्जा ६ ॥ अहावरा सत्तमा उवासगपडिमा, सव्वधम्मं० जाव रातोवरायं बंभचारी, सचित्ताहारे से परिण्णाए भवति, आरंभा से अपरिण्णाया भवंति, से णं एतारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं सत्त मासे विहरेज्जा, सत्तमा उवासगपडिमा ७ ॥ अहावरा अट्ठमा उवासगपडिमा सव्वधम्म० जाव रातोवरायं बंभचारी सचित्ताहारे से परिण्णाए भवति आरंभा से परिण्णाता, पेसा से अपरिण्णाता भवति, से णं एतारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं अट्ठ मासे विहरेज्जा, अट्ठमा उवासगपडिमा ८ ॥ अथावरा नवमा उवासगपडिमा, सव्वधम्म० जाव आरंभा से परिण्णाता पेस्सा से परिण्णाया, उद्दिट्ठभत्ते से अपरिण्णाए भवति, से णं एतारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं नव मासे विहरेज्जा, नवमा उवासगपडिमा ९ ॥ अहावरा दसमा उवासगपडिमा सव्वधम्म० जाव पेसा से परिण्णाता उद्दिट्ठभत्ते से परिण्णाए भवति, से णं खुरमंडाए वा छिहालिधारए वा, तस्स णं आलत्तसमाभट्ठस्स कप्पंति दुवे भासाओ भासित्तए, तंजथा- जाणं वा जाणं अजाणं वा णो जाणं, से णं एतारूवेणं विहारेणं जहण्णेणं एगा० दुया० तिया० उक्कोसेणं दस मासे विहरेज्जा, दसमा उवासगपडिमा १० ॥ अहावरा एकारसमा उवासगपडिमा सव्वधम्म० जाव उद्दिट्ठभत्ते से परिण्णाते भवति, से णं ॥११९॥
खुरमुंडए वा लुक्कसिरए वा गहियायारभंडणेवत्थे जे इमे समणाणं निग्गंथाणं धम्मे तं सम्मं काएणं संफासेमाणे पालेमाणे पुरतो जुगमातं पेहमाणे दट्ठूण तसे पाणे ओधट्टु पादं रीएज्जा साहट्टु पायं रीएज्जा वितिरिच्छं वा पादं कट्टु रीएज्जा, सति पर-

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१२०||

उपासक प्रतिमाः

कमे संजतामेव परिक्कमेज्जा, णो उज्जुतं गच्छेज्जा, केवलं से णातए पेज्जबंधणे अव्वोच्छिन्ने भवति, एवं से कप्पति णातविधिं एत्तए, तत्थ से पुव्वागमणेणं पुव्वाउत्ते चाउलोदणे पच्छाउत्ते भिलिंगसूवे, कप्पति से चाउलोदणे पडिग्गाहेत्तए, णो से कप्पति भिलिंगसूवे पडिग्गाहेत्तए, तत्थ से पुव्वागमणेणं पुव्वाउत्ते भिलिंगसूवे पच्छाउत्ते चाउलोदणे कप्पइ से भिलिंगसूवे परिग्गाहित्तए, नो से कप्पइ चाउलोदणे पडि०, तत्थ से पुव्वागमणेणं दोवि पुव्वाउ० कप्पति से दोवि पडिग्गाहेत्तए, तत्थ से पुव्वागमणेणं दोवि पच्छाउत्ताइं णो से कप्पंति दोवि पडिग्गाहेत्तए, जे से पुव्वागमणेणं णो पुव्वाउत्ते णो से कप्पति पडिग्गाहित्तए, तस्स णं गाहावतिकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठस्स कप्पति एवं वदित्तए-समणोवासगस्स पडिमं पडिवण्णस्स भिक्खं दलयह, तं चेतारूवेणं विहारेणं विहरमाणं केई पासेत्ता वदेज्जा- के आउसो ! तुमं वत्तव्वे सिया ?, समणोवासए पडिमापडिवण्णए अहमंसीति वत्तव्वं, से णं एतारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं एक्कारस मासे विहरेज्जा एक्कारसमा उवासगपडिमा ॥ ११ ॥ इति ।

एत्थ कहवि अण्णोवि पाढो दीसति, तंजथा- इमाओ खलु एक्कारसाओ उवासगपडिमाओ पण्णत्ताओ, तंजथा- दंसणसावगो १ कतवयकंमे२ कतसामाइए ३ पोसहोववासणिरए ४ राइभत्तविरते ५ सचित्ताहारपरिण्णातो ६ दिया बंभचारी रातो परिमाणकडे ७ दियावि रातोवि बंभयारी असिणाणए यावि भवति वोसट्ठकेसकक्खमंसुरोमणहो ८ आरंभपरिण्णातो ९ पेस्सआरंभपरिण्णाते १० उद्दिट्ठभत्तविवज्जए समणब्भूते यावि भवति ११ ॥ तत्थ खलु इमा पढमा उवासगपडिमा-दंसणसावए यावि भवति, तस्स णं एवं भवति- अत्थि लोए अत्थि अलोए अत्थि जीवा एवं अजीवा बंधे मोक्खे पुण्णे पावे आसवे संवरे वेदणा ||१२०||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१२१||

उपासक-प्रतिमाः

निज्जरा अत्थि अरंहता एवं चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा णरगा णेरइया तिरिक्खजोणी तिरिक्खजोणिया माता पिता रिसयो आरिसयो देवा जाव अत्थि देवलोगा अत्थि सिद्धी अत्थि असिद्धी अत्थि परिनिव्वाणे अत्थि परिनिव्वुता अत्थि पाणातिवाते जाव अत्थि मिच्छादंसणसल्ले अत्थि पाणातिपातवेरमणे जाव अत्थि राइभोयणवेरमणे अत्थि कोहविवेगे जाव अत्थि लोभविवेगे अत्थि पेज्जविवेगे जाव अत्थि मिच्छादंसणसल्लविवेगेत्ति, जिणपन्नत्ता भावा अवितहं सद्दहति. तस्स णं एगं वा अणेगाइं वा अणुव्वताइं णो कताइं भवंतीति पढमा उवासगपडिमा १ || अथावरा दोच्चा उ० दंसणसावए यावि भवति, तस्स णं एवं भवति-अत्थि लोगे जाव जिणपण्णत्ता भावा अवितहं सद्दहति, तस्स णं एगं वा अणेगाइं च अणुव्वताइं भवंतीति दोच्चा उ०२ अहावरा तच्चा उ०दंसणसावए यावि भवति, तस्स णं जाव सद्दहति, तस्स णं एगं अणेगाइं वा अणुव्वताइं कताइं भवंति सामाइयं संमं अणुपालेति जाव तिन्नि मासा एतगुणा धारेतित्ति तच्चा उ०३ || अहावरा चउत्था उ०दंसणसा० जथा तच्चा जाव सामाइयं संमं अणुपालेति, चाउद्दसिअट्ठमुद्दिट्ठपुण्णिमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेति जाव चत्तारि मासा एते गुणा धारेतित्ति चउत्था उ० ४ || अथावरा पंचमा उ० दंसणसावए जथा चउत्था जाव पोसहं संमं अणु० रातिभत्ते से परिण्णाते भवति सचित्ताहारे से णो परिण्णाते भवति जाव पंच मासा एते गुणा धारेतित्ति पंचमा उ० ५ || अहावरा छट्ठा उ० दंसण जथा पंचमाए तहेव जाव रातिभत्ते से परिण्णाते भवति सचित्ताहारेवि से परिण्णाए भवति जाव छम्मासा एते गुणा धारेतित्ति छट्ठा उ० ६ || अहावरा सत्तमा उ० दंसण जथा छट्ठाए तहेव रातीभत्तपरिण्णाते सचित्ताहार परिण्णाए दिया बंभचारी रातो परिमाणकडे जाव सत्त मासा एते गुणा धारेतित्ति सत्तमा उ० ७ || अथावरा अट्ठमा उ० दंसणसावए यावि भवति जाव पडिपुण्णं ||१२१||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१२२||

उपासकप्रतिमाः

पोसहं संमं अणुपालेति रातिभत्तपरिण्णाते सचित्ताहारपरिण्णाते दिवावि राओवि बंभयारी असिणाणए यावि भवति वोसट्ठकेसकक्खमंसुरोमणहे जाव अट्ठ मासा एते गुणा धारेतित्ति अट्ठमा उ० ८ ॥ अथावरा नवमा उ० दंसण० जथा अट्ठमाए तहेव जाव दिवावि राओवि बंभयारी असिणाणए यावि भवति वोसट्ठकेसकक्खमंसुरोमणहे आरंभ परिण्णाते भवति,पेस्सारंभे से णो परिण्णाते भवति जाव नव मासा एते गुणा धारेतित्ति नवमा उ० ९ ॥ अहवरा० दंसण तहेव जाव आरंभे परिण्णाते भवति पेसारंभेवि से परिण्णाते भवति जाव दस मासा एते गुणा धारेतित्ति दसमा उ १० ॥ अहावरा एक्कारसमा उवासगपडिमा दंसणसावए जाव दसमाए तहेव रोमनहे सारंभपरिण्णाते उद्दिट्ठभत्तविवज्जगे समणभूते यावि भवति, समणाउसो ! तस्स णं एवं भवति सव्वतो पाणातिपातातो वेरमणं जाव सव्वातो राइभोयणातो वेरमणं खुरमुंडए वा लुत्तकेसए वा अचेलए वा एगसाडिए वा संतरुत्तरे वा रयहरणपडिग्गहकक्खमायाए जे इमे समणाणं णिग्गंथाणं आयारगोयरिए धम्मे पण्णत्ते तं संमं फासमाणे अण्णतरं दिसिं वा रीएज्जा अवसेसं तं चेव जाव समणोवासए पडिमावण्णए अहमंसीति वत्तव्वेति जाव एक्कारसमाए गुणा धारेतित्ति एक्कारसमा उवासगपडिमा ॥ एताओ एक्कारस उवासगपडिमाओ जाव पण्णत्ताओत्ति । एवं जथा दसासु । एत्थ पडिसिद्धकरणादिणा जाव दुक्कडंति ।

सूत्र

बारसहिं भिक्खुपडिमाहिं, तत्थ मासादी गाथा, ताओ पुण इमाओ, तंजथा— मासिया भिक्खुपडिमा दोमासिया तिमासिया चउमासिया पंचमासिया छम्मासिया भिक्खु० सत्तमासिया भिक्खु० पढमसत्तराइंदिया० दोच्चा सत्तराइंदिया तच्चा सत्तराइंदिया अहोराइया एगराइया भिक्खुपडिमा । मासियण्णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स मासं निच्चंवोसट्ठकाए ||१२२||

***अत्र साधूनां एकादश-प्रतिमा: वर्णयते

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥१२३॥

भिक्षु-प्रातिमाः

चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा समुप्पज्जेज्जा, तंजधा- दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा अणुलोमा वा पडिलोमा वा, तत्थ पडिलोमताए अण्णतरेणं दंडेण अट्ठी मुट्ठी लेट्ठु कपाले जातवेत्ते जाव कसेण वा कायं आउडेज्जा, अणुलोमा वंदिज्ज वा सम्मं कल्लाणं मंगलं देवतं चेइतंति पज्जुवासेज्जा, ते सव्वे संमं सहेज्जा खमेज्जा तितिक्खेज्जा अहियासेज्जा। मासियं णं भिक्खु-पडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स मासं कप्पति एगा दत्ती भोयणस्स पडिग्गाहेत्तए एगा पाणस्स, अण्णातं उंछं सुद्धोवहडं निज्जूहित्ता बहवे दुपदचतुष्पदसमणमाहणअतिहिकिविणवणीमए, कप्पति से एगस्स भुंजमाणस्स पडिग्गाहेत्तए, णो दोण्हं णो तिण्हं णो चउण्हं, णो गुव्विणीए, णो बालवच्छाए णो दारगं पेज्जमाणीए णो अन्तो एलुगस्स दोवि पाए साहट्टु दलमाणीए णो बाहिं एलुयस्स दोवि पाए साहट्टु दलमाणीए, एगं पादं अंतो किच्चा एगं पादं बाहिं किच्चा एलुयं विक्खंभएत्ता एवं से दलयति एवं से कप्पति पडिग्गाहित्तए, एवं से णो दलयति एवं णो कप्पति पडिग्गाहित्तए, पाठंतरं णो से कप्पति अंतो एलुयस्स दोवि पाए साहट्टु पडिग्गाहित्तए, एवं बाहिंपि, एगं पादं अंतो किच्चा एगं पादं बाहिं किच्चा एलुयं विक्खंभइत्ता चेट्ठेज्जा, एताए एसणाए एसमाणे लभेज्जा आहारेज्जा, एताए णो० णो आहारेज्जा, तस्स णं तओ गोयरकाला पण्णत्ता, तंजथा- आदी मज्झे चरिमे, आदिं चरेज्जा णो मज्झे चरिज्जा णो चरमे चरिज्जा, मज्झे चरेज्जा णो आदिं चरेज्जा णो चरिमे चरेज्जा, चरिमं चरेज्जा णो आदिं चरिज्जा णो मज्झे चरेज्जा। तस्स णं कप्पति अट्ठण्हं गोयरभूमीणं अण्णतरं अभिगेज्झ भत्तपाणं गवेसित्तए, तं०- उज्जुगं वा गंतु पच्चागतं वा गोमुत्तिगं वा पतंगाविहितं वा पेलं वा अद्धपेलं वा अब्भंतरसंबुक्कावट्टं वा बाहिरसंबुक्कावट्टं वा, जत्थ णं केइ जाणति गामंसि वा जाव मंडपंसि वा कप्पति तत्थेगरायं वत्थए, जत्थ णं केइ ण जाणति कप्पति से तत्थेगरायं वा

॥१२३॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

||१२४||

भिक्षु-प्रतिमाः

दुरायं वा वत्थए, णो से कप्पति एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जइ तत्थ एगरायातो वा परं वसति से संतरा छेदे वा परिहारे वा, तस्स णं कप्पंति चत्तारि भासाओ भासित्तए, तंजथा- जातणी पुच्छणी पण्णवणी सुद्धस्स वागरणी, तस्स णं कप्पंति तओ उवस्सगा अणुण्णवेत्तए, तंजथा- अधे आगमणगिहंसि वा अहे वियडगिहंसि वा रुक्खमूलगिहंसि वा, तस्स णं कप्पति तओ उवस्सगा ओवाणियत्तए, तं चेव, तस्स णं कप्पति तओ संथारगा पाडिलेहित्तए, तं०- पुढविसिलं वा कट्ठसिलं वा अथासंथडमेव, तस्स णं कप्पति से पुव्विं पडिलेहित्तए, तओ संथारगा अणुण्णवेत्तए तं चेव, तस्स णं कप्पति तओ संथारगा उवायाणित्तए, तं चेव; मासियं० इत्थी उवस्सयं उवागच्छिज्जा सइत्थीए वा पुरिसे णो से कप्पति तं पडुच्च निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, से उच्चारपासवणेणं ओबाहिज्जमाणे कप्पति उग्गेण्हितए वा पगिण्हत्तए वा, कप्पति से पुव्वपडिलेहिते थंडिल्ले उच्चारपासवणं परिट्ठवेत्तए, तमेव उवस्सयं आगंम आहाविहमेव ठाणं ठाइत्तए, मासियं० केइ उवस्सयं अगणिकाएणं झामेज्जा नो से कप्पति तं पडुच्च निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, तत्थ णं केइ बाहाए गहाय आगसेज्जा णो से कप्पति अवलंबित्तए वा पच्चवलंबित्तए वा, कप्पइ से आहारियं रिइत्तए, मासियं० पायंसि खाणु वा कंटए वा हीरे वा सकरा वा अणुपविसेज्जा णो से कप्पति निहरित्तए वा विसोहित्तए वा, कप्पति से आधारियं रीइत्तए, मासियं० अच्छिंसि पाणाणि वा बीयाणि वा रए वा परियावज्जेज्ज नो से कप्पति नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा कप्पति से आहारीयं रियित्तए, मासियं० जत्थ सूरिए अत्थमेज्जा तं०-जलांसि वा थलंसि वा दुग्गंसि वा निन्नंसि वा पव्वयंसि वा विसमंसि वा तत्थेव सा रयणी उवादिणावेत्ता सिया, नो से कप्पति पदमावि गमित्तए, कप्पति से कल्लं पादुप्पभाते जाव जलंते पाइणाभिमुहस्स वा पदीणाभिमुहस्स वा दाहिणाभिमुहस्स वा उत्तराभिमुहस्स वा

||१२४||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१२५||

आहारियं रिइत्तए, मासियं णं भि०णो से कप्पति अणंतरहिताए पुढवीए निद्दाइत्तए वा पयलाइत्तए वा, केवली बूया आयाणमेतं, से तत्थ निद्दायमाणो वा पयलायमाणो वा हत्थेहिं भूमिं परामुसिज्जा आहा०विवित्तमद्धाणं जदि पव्वइत्तए, मासियं णं भिक्खू नो कप्पति ससरक्खेणं काएणं गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसेत्तए वा,अह पुणो एवं जाणेज्जा से सरक्खे सेअत्ताए वा मलत्ताए वा पंकत्ताए वा विद्धत्थे एवं से कप्पति गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा०, मासियं० नो कप्पति सीतोदविगडेण वा० हत्थाणि वा पादाणि वा दंताणि वा अच्छीणि वा मुहं वा उच्छोलेत्तए वा पधोएत्तए वा, णण्णत्थ लेवालेवेण वा भत्तमासेण वा, मासियं० नो कप्पति आसस्स वा हत्थिस्स वा गोणस्स वा महिसस्स वा सीहस्स वा वग्घस्स वा वगस्स वा दीवियस्स वा अच्छस्स वा तरच्छस्स वा सुणगस्स वा कोलसुणगस्स वा दुट्ठस्स आवयमाणस्स पदमवि गच्छित्तए, अदुट्ठस्स आवायमाणस्स कप्पति जुगमेत्तं पच्चोसक्कित्तए, मासियं० णो कप्पति छातातो सीतंति उण्हं एत्तए, उण्हातो वा उण्हंति छायं एत्तए, जं जत्थ जदा सिता तं तत्थ तदाधियासए, एवं खलु एसा मासिया भिक्खुपडिमा अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अथातच्चं संमं काएणं फासिया पालिया सोभिया तीरिया आराहिता आणाए अणुपालिया यावि भवति १ ॥ दोमासियं णं भिक्खुपडिमं निच्चं वोसट्ठकाए तं चेव जाव दो दत्तीओ २ ॥ तेमासियं० तिण्णि दत्तिओ ३ ॥ चातुम्मासियं० चत्तारि दत्तीओ ४ ॥ पंचमासियं० पंच दत्तीओ ५ ॥ छम्मासियं० छ दत्तीओ ६ ॥ सत्तमासियं० सत्त दत्तीओ ७ ॥ जति मासा तति दत्तीओ ॥ पढमसत्तरातिंदियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स निच्चं वोसट्ठ काए जाव अहियासेज्ज, कप्पति से चउत्थंचउत्थेणं अणिक्खित्तेणं तवोकंमेणं पारणए आयंबिलपरिग्गहिते चरिमे दिवसे चउत्थेणं भत्तेणं अपाणएणं बहिया गामस्स वा जाव राय-

भिक्षुप्रतिमाः ||१२५||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

||१२६||

हाणीए वा अण्णतराइं चेइयाइं पुरतो काउं अण्णतरे अचित्ते पोग्गले निज्झायमाणस्स उत्ताणगस्स वा पासियल्लिस्स वा णिसज्जितस्स वा ठाणं ठातित्तए, तत्थ दिव्वा मणूसा तेरिक्खा वा उवसग्गा पयालेज्ज वा पाडेज्ज वा णो से कप्पति पयलित्तए वा पवडित्तए वा,तत्थ उच्चारपासवणं उब्बाहिज्ज णो से कप्पति उच्चारं पासवणं च गिण्हित्तए वा पगिण्हित्तए वा,कप्पति से पुव्वपडिलेहितंसि थंडिल्लंसि उच्चारपासवणं परिट्ठवेत्तए, आहाविहमेव ठाणं ठाइत्तए, एवं खलु एसा पढमा सत्तराइंदिया। एवं बीया ततियावि, णवरं गोदोहियाए वा वीरासणियस्स अंबखुज्जगस्स वा ठाणं ठाइत्तए, सेसं तं चेव जाव अणुपालिया यावि भवति। एवं अहोरातिंदिया, णवरं छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं बहिया गामस्स वा जाव रायहाणीए वा ईसिं दोवि पादे साहट्टु वग्घारितपाणिस्स ठाणं ठाइत्तए, सेसं तं चेव जाव अणुपालिता यावि भवति, एगरातियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स निच्चं वोसकट्ठाएणं जाव अहियासेति,कप्पति से अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं बहिया गामस्स वा जाव रायहाणीए वा ईसी पब्भारगतेण एवं खलु मूलगताए दिट्ठीए अणिमिसनयणे अहापणिहितेहिं गत्तेहिं सव्विंदिएहिं गुत्तेहिं दोवि पाए साहट्टु वग्घारितपाणिस्स ठाणं ठाइत्तए, नवरं उड्डयस्स वा लगंडसाइयस्स वा डंडातियस्स वा ठाणं ठाइत्तए, तत्थ से दिव्वमाणुसतिरिक्खजोणिया जाव आधाविधिमेव ठाणं ठाइत्तए, एगराइयंणं भिक्खुपडिमं संमं अणणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तओ ठाणा अहिताए असुभाय अखमाए अणिस्सेसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति, तंजहा-उम्मायं वा लभेज्जा दीहकालियं वा रोगायंकं पाउणेज्जा केवलिपण्णत्ताओ धम्माओ वा भंसिज्जा, एगराइयं णं भिक्खुपडिमं सम्मं अणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तओ ठाणाओ हिताए जाव आणुगामित्ताए भवंति, तंजथा-ओधिण्णाणे वा से समुप्पज्जेज्जा, मणपज्जवणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा, केवलणाणे वा से

भिक्षुप्रतिमाः

||१२६||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा। एवं खलु एसा एगराइंदिया भिक्खुपडिमा अहासुत्तं अथाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं संमं काएणं फासिया पालिता सोहिता तीरिता किट्टिता आराहिता आणाए अणुपालिया यावि भवति। एताओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं बारस भिक्खुपडिमाओ पण्णत्ताओत्ति। एवं जहा दसासु। एतासु पडिसिद्धकरणादिणा जाव जो मे दुक्कडंति। क्रिया-स्थानानि

||१२ **सूत्र**

तेरसहिं किरियाठाणेहिं। तत्थ गाथा। इमाइं तेरसकिरियाठाणाइं भवंतीतिमक्खातं, तंजहा-अट्ठाडंडे १ अणट्ठाडंडे २ हिंसाडंडे ३ अकम्हाडंडे ४ दिट्ठीविप्परियासियाडंडे ५ मोसवत्तिए ६ अदिण्णादाणवत्तिए ७ अज्झत्थिए ८ माणवत्तिए ९ मित्त-दोसवत्तिए १० मायावत्तिए ११ लोभवत्तिए १२ ईरियावहिए १३। पढमे डंडसमायाणे अट्ठाडंडवत्तिएत्ति आहिज्जति, से तथा नामए केइ पुरिसे आयहेतुं वा भूतहेतुं वा जाव जक्खहेतुं वा तं डंडं तसथावरेहिं पाणेहिं सयमेव णिसिरति अण्णेणं वा णिसिरावे-ति णिसिरंतं वा अन्नं समणुजाणाति, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जेति आहिज्जति। पढमे डंडसमायाणे अट्ठाडंडवत्तिएत्ति आहिते १। अहावरे दोच्चे डंडसमायाणे अणट्ठाडंडवत्तिएत्ति आहिज्जति, से जथानामए केई पुरिसे जे इमे तसा पाणा भवंति ते णो अच्चाए णो अजिणाए णो मंसाए णो सोणियाए णो हिययाए णो पित्ताए णो वसाए णो पिच्छाए णो पुच्छाए णो वालाए णो सिंगाए णो विसाणाए णो दन्ताए णो दाढाए णो णहाए णो ण्हारुणियाए णो अट्ठीए णो अट्ठिमिंजाते नो हिंसिंसु मेत्ति णो हिंसंति मेत्ति नो हिंसिस्सुत्ति मेति ते णो पुत्तपोसणयाए णो पसुपोसणताए णो अगारपरिबूहणताए णो समणमाहण-वत्तियहेतुं नो तस्स सरीरस्स किंचि परितातित्ता भवति, से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपतित्ता विलुंपतित्ता उद्दवइत्ता उज्झिउं कलेवरस्सा-भागीभवति, अणट्ठाडंडे०से जथा नामए केइ पुरिसे जे इमे थावरा पाणा भवंति, तंजथा-इक्कडाइ वा कढिणाति वा जंतुयाति वा ||१२७||

*** अत्र क्रियास्थानानि वर्णयते

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१२८||

परगाति वा मोरगाति वा तणाति वा कुसाति वा कुज्जगाति वा दब्भगाति वा पलालमादि वा, ते णो पुत्तपोसणताए णो पसुपोसणयाए णो अगारपोसणताए णो समणमाहणपोसणताए णो तस्स सरीरस्स पोसणताए, से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपतित्ता उद्दवतित्ता उज्झितुं कलेवरस्साभागी भवति, अणट्ठाडंडे० से जथा नामए केइ पुरिसे कच्छंसि वा दहंसि वा दगंसि वा दवियंसि वा वलयंसि वा गहणंसि वा णूमंसि वा वणंसि वा वणविदुग्गंसि वा पव्वयंसि वा पव्वतयदुग्गंसि वा तणाइं ऊसविया २ अगणिकायं णिसिरति अण्णेण वावि अगणिकायं णिसिरावेति अगणिकायं णिसिरंतंपि अण्णं समणुजाणति, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जेत्ति आहिज्जति, दोच्चे दंडसमादाणे अण्णत्थादंडवत्तिएत्ति आहिए २। अहावरे तच्चे दंडसमादाणे हिंसाडंडवत्तिए आहिज्जति, से जथा नामए केइ पुरिसे ममं वा ममिं वा अण्णं वा अण्णिं वा हिंसिसु वा हिंसंति वा हिंसिस्संति वा तं डंडं तसथावरेहिं पाणेहिं सयमेव णिसरति अण्णेण वा णिसिरावेति णिसिरंतं तु अण्णं समणुजाणति, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जेत्ति आहिज्जति, तच्चे दंडसमादाणे हिंसादंडवत्तिएत्ति आहिते ३ ॥ अहावरे चउत्थे दंडसमादाणे अकम्हादंडवत्तिएत्ति आहिज्जति, से जथा नामए केइ पुरिसे कच्छंसि वा दहंसि वा दगंसि वा दवियंसि वा जाव वण० पव्वतदुग्गंसि वा मियावित्तिए मियसंकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गंता एते मियत्ति काउं अण्णतरस्स मियस्स वहाए उसुं आयामेऊणं णिसिरेज्जा मियं विंधिस्सामित्तिकट्टु तित्तिरं वा वट्टगं वा लावगं वा कवोतं वा कविंजलं वा विंधित्ता भवति इति खलु से अण्णस्स अट्ठाए अण्णं फुसति अकम्हाडंडे, से जथानामए केइ पुरिसे सालीणि वा वीहीणि वा कोद्दवाणि वा कंगूणि वा वरट्टगाणि वा रालगाणि वा निलिज्जमाणे अण्णतरस्स तणस्स वधाए सत्थं निसिरेज्जा से सामगं वा मतणगं वा मुसुदुगं वा वीहिफुसियं वा कलेसुयं वा तणं छिंदिस्सामित्तिकट्टु

क्रिया-स्थानानि ||१२८||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१२९||

क्रियास्थानानि

सालिगं वा वीहिं वा कोद्दगं वा कंगु वा वरट्टगं वा रालगं वा छिंदित्ता भवति इति खलु से अण्णस्स अट्ठाए अण्णं फुसति, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जेत्ति आहिज्जति। चउत्थे दंडसमादाणे अकम्हादंडवत्तिएत्ति आहिते ४ ॥ अहावरे पंचमे दंडसमादाणे दिट्ठीविप्परियासियादंडवत्तिएत्ति आहिज्जति,से जथा नामए केइ पुरिसे मातीहिं वा०भगिणीहिं वा भज्जाहिं वा पुत्तेहिं वा धुताहिं था सुण्हाहिं वा सद्धिं संवसमाणे मित्तं अमित्तमिति संकप्पमाणे मित्ते हतपुव्वे भवति दिट्ठीविप्परियासियाडंडे, जथा नामए केई पुरिसे गामघातंसि वा णगरघातंसि वा खेडघातंसि वा कब्बडघातंसि वा मंडप्प (मडंब)घातंसि वा दोणमुहघातंमि वा पट्टणघातंसि वा आगर० आसम० वाह० संनिवेस० नियम० रायहाणिघातंसि वा अतेणं तेणामिति मण्णमाणे अतेणे हतपुव्वे भवति दिट्ठीविप्परियासियाडंडे,एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जेति आहिज्जति,पंचमे दंडसमादाणे दिट्ठीविप्परियासियाडंडवत्तिएत्ति आहितेति ५॥ अहावरे छट्ठे किरियट्ठाणे मोसवत्तिएत्ति आहिज्जति,से जथानामए केइ पुरिसे आतहेतुं वा णातहेतुं वा आगारहेतुं वा परिवारहेतुं वा सयमेव मुसं वयति अण्णेणवि मुसं वयावेइ मुसं वदंतंपि अण्णं समणुजाणति, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जेति आहिज्जति,छट्ठे किरियट्ठाणे मोसवत्तियएत्ति आहिते६॥अहावरे सत्तमे किरियाठाणे अदिण्णादाणवत्तिएत्ति आहिज्जति, से जथानामए केइ पुरिसे आतहेतुं वा णातहेतुं वा अगारहेतुं वा परिवारहेतुं वा सयमेवादिण्णं आदियति अण्णेणावि अदिण्णं आदियावेति अदिण्णं आदियंतंपि अण्णं समणुजाणति, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जेति आहिज्जइ। सत्तमे किरियाठाणे अदिण्णादाणवत्तिएत्ति आहिते ७॥ अहावरे अट्ठमे किरियाठाणे अज्झत्थिएत्ति आहिज्जति, से जथानामए केइ पुरिसे नात्थि णं तस्स कोइ किंचि विसंवादेति सयमेव दुट्ठे दुम्मणे ओहतमणसंकप्पे चिंतासोगसागरसंपविट्ठे करतलपल्हत्थियमुहे अट्टज्झाणे ||१२९||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥१३०॥

विमते भूमिगतदिट्ठीए झियाति, तस्स णं अज्झत्थिया संसइया चत्तारि ठाणा एवमाहिज्जंति,तंजथा-कोधे माणे माया लोभे,अज्झत्थमेए कोधमाणमायालोभा, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जेत्ति आहिज्जति । अट्ठमे किरियट्ठाणे अज्झत्थिएत्ति आहिते८॥ अहावरे नवमे किरियट्ठाणे माणवत्तिएत्ति आहिज्जति,से जथानामए केइ पुरिसे जातीमएण वा कुलमदेण वा बलमदेण वा रूवमदेण वा तवमदेण वा सुतमदेण वा लाभमदेण वा ईसरियमदेण वा पन्नामदेण वा अंनतरेण वा मदट्ठाणेण मत्ते समाणे परं हीलति णिंदति खिंसति गरहति परिभवति, इत्तरिए अभयमन्नि अत्ताणं समुकसे, देहते कंमपिपिति (बितिए) अवसे पयादी, तंजथा-गब्भाओ गब्भं जम्माओ जम्मं माराओ मारं नरगाओ नरगं चंडे थद्धे चवले माणि यावि भवति, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जेत्ति आहिज्जति। णवमे किरियट्ठाणे माणवत्तिए आहिते ९॥ अहावरे दसमे किरियट्ठाणे मित्तिदोसवत्तिएत्ति आहिज्जति, से जथानामए केइ पुरिसे मातीहिं वा पितीहिं वा भातीहिं वा भगिणीहिं वा भज्जाहिं वा पुत्तेहिं वा सुताहिं वा सुण्हाहिं वा(समं संवसमाणे) तेसिं अंणतरंसि अहालहुसगंसि अवराहंसि सयमेव गुरुयं दंडं निवत्तेति, तंजथा- सीतोदगवियडंसि कायं ओबोलेत्ता भवति, उसिणोदयवियडेणं कायं ओसिंचित्ता भवति, अगणिकाएणं कायं ओडहित्ता भवति, जोत्तेण वा णेत्तेण वा कसेण वा छियाए वा लताए वा पासाइं अवदालेत्ता भवति, दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलूण वा कवालेण वा कायं आउडेत्ता भवति, तहप्पगारे पुरिसज्जाते संवसमाणे दुमणा भवति, पवसमाणे सुमणा भवति, तहप्पगारे पुरिसज्जाते दंडपासी डंडगुरुए डंडपुरेक्खडे अहिते अस्सिं लोगंसि अहिते परंसि लोगंसि संजलणे कोधणे कोवणे पट्ठीमंसि यावि भवति, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जेत्ति आहिज्जति, दसमे किरियट्ठाणे मित्तिदोसवत्तिएत्ति आहिते१०॥अहावरे एक्कारसमे किरियट्ठाणे मायवत्तिएत्ति आहिज्जति,जे इमे भवंति गूढा-

क्रियास्थानानि ॥१३०॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥१३१॥

क्रियास्थानानि

थारा तमोकाइया उलुयपत्तलहुया पव्वयगुरुया ते आयरियावि संता अणायरियाओ भासाओ विजुज्जंति, अण्णहा संतं अप्पाणं अण्णथा भण्णंति, अण्णं पुट्ठा अण्णं वागरेंति, अण्णं आइक्खितव्वं अण्णं आइक्खंति, से जथानामए केइ पुरिसे अंतोसल्ले तं सल्लं णो सयं णीहरति णो अण्णेहिं णीहरावेति णो पडिविद्धंसति, एवामेव निण्हती, अविउट्टेमाणे अंतो अंतो झियाति, एवामेव माती मायं कट्टु नो आलोएति णो पडिक्कमति णो निंदति नो गरिहति नो विउट्टति नो विसोहेति नो अकरणताए अब्भुट्ठेति नो आहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जति, मायी अस्सिं लोए पच्चायाती मायी परंसि लोए य पच्चायाती निंदं गहाय अपसंसति णायरति ण नियट्टती ।निसिरियडंडं छाएति, मायी असमाहडलेस्से यावि भवति, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जेत्ति आहिज्जति,एक्कारसमे किरियट्ठाणे मायावत्तिएत्ति आहिते११॥बारसमे किरियट्ठाणे लोभवत्तिएत्ति आहिज्जति,जे इमे भवंति आरण्णिया आवसहिया गामणियंतिया कण्हुयीराहस्सिया नो बहुसंजता णो बहुपडिविरता सव्वपाणभूतजीवसत्तेहिं ते अप्पणा सच्चामोसाओ भासाओ एवं विजुंजंति-अहं न हंतव्वे अण्णे हंतव्वा, अहं न अज्जावेतव्वो अण्णे अज्जावेतव्वा, अहं न परिघेत्तव्वो अण्णे परिघेत्तव्वा, अहं न परितावेतव्वो अण्णे परितावेतव्वा, अहं न उवद्वेतव्वो अण्णे उवद्वेतव्वा, एवामेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिता गिद्धा गढिता अज्झोववण्णा भुंजित्ता भोगाइं कालमासे कालं किच्चा अंणतरेसु आसुरिएसु किब्बिसिएसु ठाणेसु उववत्तारो भवंति, ततो विप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमूयत्ताए पच्चायांति, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जेत्ति आहिज्जति, बारसमे किरियट्ठाणे लोभवत्तिएत्ति आहिते१२। इच्चेताइं बारस किरियट्ठाणाइं दविएणं समणेण वा माहणेण वा संमं सुपरिजाणितव्वाइं भवंति॥ अथावरे तेरसमे किरियट्ठाणे ईरियावहिएत्ति आहिज्जति, इह खलु अत्तत्ता संवुडस्स अणगारस्स इरयसिामयस्स भासासमि-

॥१३१॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥१३२॥

यस्स एसणासमियस्स आयाणभंडमत्तणिक्खेवणासमितस्स उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमियस्स मणसमियस्स वइसमियस्स कायसमियस्स मणगुत्तस्स वइगुत्तस्स कायगुत्तस्स गुत्तस्स गुत्तिंदियस्स गुत्तबंभचारिस्स आउत्तं गच्छमाणस्स वा चिट्ठमाणस्स वा निसीयमाणस्स वा तुयट्टमाणस्स वा आउत्तं भुंजमाणस्स वा आउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पादपुंछणं गेण्हमाणस्स वा निक्खिवमाणस्स वा जाव चक्खुपम्हनिवायमवि अत्थि वेमाता सुहुमा किरिया ईरियावहिया कज्जति, सा पढमसमये बद्ध-पुट्ठा बितियसमये वेदिता ततियसमये निज्जिण्णा, सा बद्धपुट्ठा उदिता वेदिता निज्जिण्णा, सेअकाले अकंमि वावि भवति। एवं खलु तस्स तप्पत्तियं असावज्जेत्ति आहिज्जति,तेरसमे किरियट्ठाणे इरियावहियवत्तिएत्ति आहिते१३॥से बेमि जे अतीता जे पडुप्पण्णा जे आगमेस्सा अरिहंता भगवंतो सव्वे ते एताइं तेरस किरियाठाणाइं भासिंसु वा भासंति वा भासिस्संति वा, एवं पण्णविंसु ३, एवं चेव तेरसमं किरियाठाणं सेविंसु ३, एत्थ पडिसिद्धकरणादिना जो मे जाव दुक्कडंति ॥

सूत्र

चोद्दसहिं भूतगामेहिं॥सूत्रं॥जम्हा भुवि भविस्संति भवंति य तम्हा भूतत्ति वत्तव्वा,भूता-जीवा,गामोत्ति समूहो,भूताणं गामा भूतग्गामा तत्थ,तहिं गाथा-एगिंदिय सुहुमितरा०॥७॥एगिंदिया सुहुमा इतरा-बादरा,सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता य,एवं बादरावि दुविहा, बेंदियावि दुविहा-पज्जत्ता अपज्जत्ता य,तेंदियावि दुविहा,चउरिंदिया दुविहा,पंचिंदिया दुविधा-सण्णिणो असण्णिणो य, तत्थ असण्णिपंचिंदियावि दुविधा- पज्जत्ता अपज्जत्ता, सण्णिपंचिदियावि दुविधा- पज्जत्ता अपज्जत्ता य, एते चोद्दस भूतग्गामा, ॥१३२॥
एत्थ पडिसिद्धकरणादिणा जो मे जाव दुक्कडंति ।

भूतग्रामाः

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥१२३॥

गुणस्थानानि

अण्णे पुण एत्थ चउद्दस गुणट्ठाणाणिवि पण्णवेंति, जतो एतेसुवि भूतग्गामा वट्टंतित्ति तत्थ इमाओ दो गाहाओ—

मिच्छद्दिट्ठी० ॥ ८ ॥ **तत्तो य०** ॥९॥ तत्थ इमातिं चोद्दस गुणट्ठाणाणि, तंजहा-मिच्छद्दिट्ठी सासायणं संमामिच्छादिट्ठी अविरतसम्मदिट्ठी विरताविरता पमत्तसंजता अपमत्तसं० नियट्टि अणियट्टि सुहुमसंपराग उवसंतमोह खीणमोह सजोगिकेवली अजोगिकेवलित्ति। तत्थ मिच्छादिट्ठी दुविहो, तं०-अभिग्गहीतमिच्छद्दिट्ठी अणभिग्गहीतमिच्छद्दिट्ठी, तत्थ अभिग्गहीतमिच्छद्दिट्ठी संखआजीवयबुड्ढवसणतावसपाणामनिण्हगबोडियादी, अणभिग्गहीत० एगिंदियबेइंदियतेइंदियचउरिंदिय, जेसिं च पंचिंदियाणं जीवाणं न कत्थइ दंसणे अभिप्पायो, एस मिच्छद्दिट्ठी १ ॥ **सासायणो** जस्स ईसिं जिणवयणरुई, अहव जो जीवो उवसमसंमत्ताओ मिच्छत्तं संकामितुकामो, जथा वा कोइ पुरिसो पुप्फफलसमिद्धाओ महद्दुमाओ पमाददोसेण पवडमाणो जाव धरणितलं न पावति ताव अंतराले वट्टति एवं जीवोवि संमत्तमूलाओ जिणवयणकप्परुक्खाओ परिवयमाणो मिच्छत्तं संकामितुकामो एत्थ छावलियमेत्ते काले वट्टमाणो सासायणो भवति, अहवा संमत्ते सस्सादो सायणो, तत्थिमा निज्जुत्तिगाथा—**उवसमसम्मा पडमाणओ तु मिच्छत्तसंकमणकाले। सासाणो छावलिओ भूमिमपत्तोव्व पडमाणो** ॥१॥२॥

तथा **सम्मामिच्छादिट्ठी** नियमा भवत्थपंचिंदियसन्निपज्जत्तगसरीरो भवति, पढमं चेव मिच्छद्दिट्ठी होंतो पसत्थेसु अज्झवसाणेसु वट्टमाणो मिच्छत्तपोग्गले तिहा करेति, तंजथा-मिच्छत्तं संमामिच्छत्तं संमत्तंति, एत्थ दिट्ठंतो मदणकोद्दवेहिं, जथा मदणकोद्दवाणामणिव्वलिताण मदणभावो भवति, तेसिं चेव धोयणादीहिं मंदनिव्वलियाणं मदणमाहिज्जं भवति, तेसिं चेव तिमणीधोव्वणादीहिं सुपरिक्कमिताणं पागभावमुवगताणं मधुरसुविसदो ओदणो भवतित्ति, एवं जीवोवि मिच्छत्तादिभावो- ॥१२३॥

*** अत्र गुणस्थानानि वर्णयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने वचिते मिच्छत्तपोग्गले सुभज्झवसाणपयोगेण तिहा करेति, तंजहा--मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तं सम्मत्तंति, एत्थ जाहे जीवो मिच्छ- गुण-
त्तोदयातो विसुज्झिऊणं सम्मामिच्छत्तोदयं परिणमति ताहे से जिणवयणे सद्धासद्धदंसणी सम्मामिच्छद्दिट्ठी अंतोमुहुत्तकालो भव- स्थानानि
तित्ति, ततो परं सम्मत्तं वा मिच्छत्तं परिणमति ३ ॥ अविरतसम्मद्दिट्ठी निरयतिरियमणुयदेवगतीसु महव्वताणुव्वत-
विरती न भवति खओवसमखाइयरोइतदंसणी भवति, तं च सम्मत्तं दुविहं--अभिगमसंमत्तं निसग्गसम्मत्तं च, तत्थ जीवाजीव-
पुण्णपावासवसंवरनिज्जरबंधमोक्खेसु परिच्छितनवपदत्थाभिगमपच्चइयं अभिगमसंमत्तं, निसग्गो नाम सभावो, जथा सावगपुत्तनत्तु-
याणं कुलपरंपरागतं निसग्गसम्मत्तं भवति, जहा वा सयंभुरमणमच्छाण पडिमासंठिताणि साहुसंठिताणि य पउमाणि मच्छए
वा दट्ठूणं कंमाणं खओवसमेणं निसग्गसंमत्तं भवति, तंमूलं च देवलोगगमणं तेसिं भवतित्ति ४ ॥ विरताविरतो मणुयपंचें-
दियतिरिएसु देसमूलुत्तरगुणपच्चक्खाणी नियमा संनिपंचेंदियपज्जत्तसरीरो भवति ५ ॥ इदाणिं पमत्तो, सो दुविहो
भवति-कसायपमत्तो जोगपमत्तो य, तत्थ कसायपमत्तो कोहकसायवसट्टो जाव लोभ० त्ति, एस कसायपमत्तो, जोगप्पमत्तो
मणदुप्पणिहाणेणं वइदुप्पणिहाणेणं कायदुप्पणिहाणेणं , तथा इंदियेसु सद्दाणुवाती रूवाणुवाती ५ तथा इरियास-
॥१३४॥ मितादीसु पंचसुवि असमितो भवति, तहा आहारउवहिवसहिमादीणि उग्गमउप्पादणेसणाहिं अणुवउत्तो गेण्हति ६॥ ॥१३४॥
अप्पमत्तो दुविहो—कसायअप्पमत्तो जोगअप्पमत्तो य, तत्थ कसायअप्पमत्तो खीणकसाओ, निग्गहपरेण अहिगारो, कहं तस्स
अप्पमत्तत्तं भवति?, कोहोदयनिरोहो वा उदयपत्तस्स वा विफलीकरणं, एवं जाव लोभोत्ति, जोगअप्पमत्तो मणवयणकायजोगेहिं
तिहिं व गुत्तो, अहवा अकुसलमणनिरोहो कुसलमणउदीरणं वा, मणसो वा एगत्तीभावकरणं, एवं वइएवि, एवं काएवि, तहा

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ॥१,२॥ दीप अनुक्रम [११-३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने — गुणस्थानानि

इंदिएसु सोइंदियविसयपयारनिरोहो वा सोइंदियविसयपत्तेसु वा अत्थेसु रागदोसविणिग्गहो ५, एस अप्पमत्तो ७॥ इदाणिं नियट्टी, जदा जीवो मोहणिज्जं कंमं खवेति वा उवसमेति वा तदा अप्पमत्तसंजतस्स अंणतरपसत्थतरेसु अज्झवसाणट्ठाणेसु वट्टमाणो मोहणिज्जे कंमे खवेति उवसमेति वा जाव हासरतिअरतिसोगभयदुगुंछाणं उदयतो छेदो न भवति ताव सो भगवं अणगारो अंतोमुहुत्तकालं नियट्टि भवति ८॥ अनियट्टी नाम जदा जीवो नियट्टिस्स उवरि पसत्थतरेसु अज्झवसाणट्ठाणसु वट्टमाणो हासच्छक्कोदये वोच्छिण्णे जाव मायाउदयवोच्छेदो न भवति एत्थ वट्टमाणो अणगारो अंतोमुहुत्तकालो अणियट्टियत्ति भवति ९॥ सुहुमसंपराइयं कम्मं जो बज्झति सो सुहुमसंपरागो, सुहुमं नाम थोवं,, कहं थोवं ?, आउयमोहणिज्जवज्जाओ छ कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ अप्पकालट्ठितिकाओ मंदाणुभावाओ अप्पप्पदेसग्गाओ सुहुमसंपरायस्स बज्झंति, एवं थोवं संपराइयकंमं तस्स बज्झति, सुहुमो रागो वा जस्स सो सुहुमसंपरागो, सो य असंखेज्जसमइओ अंतोमुहुत्तिओ विसुज्झमाणपरिणामो वा पडियतमाणपरिणामो वा भवतित्ति १०॥ उवसंतमोहो नाम जस्स अट्ठावीसातिविहंपि मोहणिज्जकम्ममुवसंतं अणुमेत्तंपि ण वेदेति, सो य देसपडिवातेन सव्वपडिवातेण वा नियमा पडिवतिस्सति ११॥ खीणमोहो नाम जेण निरवसेसमिह कंमणायकं मोहणिज्जं खवितं, सो य नियमा विसुज्झमाणपरिणामो अंतोमुहुत्तंतरेण केवलनाणी भवतित्ति १२॥ जोगा जस्स अत्थि केव-
॥१३५॥ लिस्स सो सजोगिकेवली, तस्स धम्मकथासीसाणुसासणवागरणनिमित्तं वयजोगो, ठाणणिसीदणतुयट्टणउव्वत्तणपरियत्तणवि- ॥१३५॥
हारादिनिमित्तं कायजोगो, मणजोगो य से परकारणं पडुच्च भज्जो, कहं ?, अणुत्तरोववातिदेवेहिं अण्णेहिं वा देवमणुएहिं मणसा पुच्छितो संतो ताहे तेसिं संसयवोच्छेदनिमित्तं मणपायोग्गाइं दव्वाइं गेण्हिऊण मणत्ताए परिणामेतूणं ताहे तेसिं मणसा चेव वाग-

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१३६||

परमाधार्मिकाः

रणं वागरेति, ततो तेसिं अणुत्तरादीणं ते भगवतो मणपोग्गले वियाणितूण संसयवोच्छेदो भवातित्ति, अण्णहा तस्स नत्थि मणेणं पयोयणं, तेणं तस्स सकारणं पडुच्च मणजोगो पडिसेहिज्जतित्ति १३॥ अजोगिकेवली नाम सेलेसीपडिवन्नओ, सो य तीहिं जोगेहिं विरहितो जाव कखगघङ इच्चेताइं पंचहस्सक्खराइं उच्चारिज्जंति एवतियं कालमजोगिकेवली भवितूण ताहे सव्वकम्मविणिमुक्को सिद्धो भवति १४॥ एत्थ पडिसिद्धकरणादिणा जो मे जाव दुक्कडंति ॥

सूत्र

पण्णरसहिं परमाधम्मिएहिं ॥सू.॥ एत्थ दो गाथाओ-अंबे० ॥१०॥ असिपत्ते धणु० ॥११॥ एतेसिं एस वावाराति-रेगो-धाडेंति पहावंती य, हणंति विंधंति तह निसुंभंति। मुंचंति अंबरतले अंबा खलु तत्थ णेरइए ॥ १ ॥ ओहतहते य तहियं निसण्णे कप्पणीहिं कप्पंति। पिडलगचदुलगछिण्णे अंबरिसा तत्थ नेरइते ॥ २ ॥ साडणपाडणतुत्तणविंधण रज्जुत्तलप्पहारेहिं। सामा णेरइयाणं पवत्तयंती अपुण्णाणं ३॥ अंतजरफिप्फिसाणि य हियय कालेज्जफुप्फुसे चुण्णे। सबला णेरइयाणं पवत्तयंती अपुण्णाणं ॥४॥ असिसत्तिकुंततोमरसूलतिसूलेसु सूइचितगासु। पोयंति रुद्दकम्मा उ नरयपाला तहिं रोद्दा ॥५॥ भंजंति अंगमंगाणि ऊरू बाहू सिराणि करचरणे। कप्पंति कप्पणीहिं उवरुद्दा पावकम्मरते॥६॥मीरासु सुंढएसु य कंदएसु पयणगेसु य पयंति। कुंभीसुं लोहीसु य पयंति काला उ णेरइए ॥ ७ ॥ कप्पंति कागणीमंसगाणि छिंदंति सीहपुच्छाणि। खाएंति य णेरइए महकाला पावकम्मरते ॥८॥ हत्थे पादे ऊरू बाहु सिरा तह य अंगमंगाइं। छिंदंति पगामं तू णेरइयाणं तु असिपत्ता ॥९॥ कण्णोट्ठणासकरचरणदसण तह थणपुलुरुबाहूणं। छेदणभेदणसाडणअसिपत्तधणू तु कारेंति ॥१०॥ कुंभीसु य पयणेसु य, लोहीसु

||१३६||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने
॥१२७॥

असंय-
माद्याः

सूत्र

य कडहिलेहिं कुंभीसु। कुंभीतु नरगपाला हणंति पावेंति णरएसु ॥ ११ ॥ तडतडतडस्स भज्जेंति भज्जणे कलंबुवालुगापट्ठे। वालुगा णेरइए लोलेंती अंबरतलंमि ॥ १२ ॥ वसपूतिरुधिरकेसट्ठिवाहिणिं कलकलेंतजतुसोतं। वेतराणि णिरयपाला णेरइए ऊ पवाहेंति ॥१३ ॥ कप्पेंति करकएहिं छिंदंति परुप्परं परसुएहिं। तरुमारुहंति संबलि खरस्सरा तत्थ नेरइए ॥ १४॥ भीते य पलायन्ते समंततो तत्थ ते निरुंभंति। पसुणो जथा पसुवए महघोसा ते तु नेरइए ॥ १५ ॥ एत्थ जेहिं परमाधंमियत्तणं भवति तेसु ठाणेसु जं वट्टितं, एवं पडिसिद्धकरणादिणा जाव दुक्कडंति ॥ सोलससु०। सूत्रं। गाहाए सह सोलस अज्झयणा तेसु, सुतगडपढमसुतक्खंधअज्झयणेसु इत्यर्थः, ताणि पुण सोलस एवं-समयो १ वेतालीयं २ उवसग्गपरिण्ण ३ थीपरिण्णा य४। निरयविभत्ती५ वीरत्थओ६ कुसीलाण परिभ.सा७ ॥१॥ विरियं८ धम्म ९ समाही १० मग्ग ११ समोसरण १२ महलधं १३ गंथो १४। जमतीतं १५ तह गाथा १६ सोलसमं होति अज्झयणं ॥२॥ एत्थ पडिसिद्धकरणादिणा जाव दुक्कडंति ॥

सत्तरसविधे असंजमे ॥ सूत्रं ॥ संजमो-समणधंमो पुव्वं भणितो, अहवा जथा ओहनिज्जुत्तीए, तव्विवरिते असंजमे, तत्थ पडिसिद्धकरणादिणा जाव दुक्कडंति ॥

अट्ठारसविहे अब्बंभे ॥ सूत्रं ॥ बंभं जथा दसविधे समणधम्मे भणितं, तव्विपक्खो अब्बंभं, अथवा बंभे-समणधम्मो पवयणमायाओ अब्बंभं तव्विपक्खो तत्थ जो पडिसिद्धकरणादिणा जाव दुक्कडन्ति ॥

एगूणवीसाए णाअज्झयणेहिं ॥सू०॥ इमाहिं दोहिं गाहाहिं अणुगंतव्वाणि-उक्खित्तणाए१ संघाडे२, अंडे३ कुंमे य४

॥१२७॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णिः- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

असंयमाद्याः

सेलए ५। तुंबे य ६ रोहिणी ७ मल्ली ८, मायंदी ९ चंदिमा इय १० ॥ १६ ॥ दावद्दवे ११ उदगणाते १२ मंडुक्के १३ तेतली इय १४। नंदीफले१५ अवरकंका १६ आइण्णे १७ सुंसुमा१८ पुंडरीए १९ ॥ १७ ॥ एत्थ जो मे पडिसिद्धकरणादिणा जाव दुक्कडंति ॥

||१३८||

सूत्र

वीसाए असमाहिट्ठाणेहिं ॥ सूत्रं ॥ तत्थ इमाओ तिन्नि गाथाओ—दवदवचारि० ॥ १८ ॥ संजलण० ॥ १९ ॥ ससरक्ख० ॥ २० ॥ इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं वीसं असमाहिट्ठाणा पण्णत्ता, तंजथा-दवदवचारी यावि भवति १ अप्पमज्जितचारि यावि भवति २ दुप्पमज्जितचारी यावि भवति ३ अतिरित्तसेज्जासणिए ४ रातिणियपरिभासी ५ थेरोवघातीए ६ भूतोवघाती ७ कोधणे ८ पिट्ठीमंसिए यावि भवति ९ अभिक्खणं ओहारियावि भवति १० नवाइं अधिकरणाइं अणुप्पण्णाइं उप्पादइत्ता भवति ११ पोराणाइं अधिकरणाइं खामियविओसवियाइं उदीरेत्ता भवति १२ अकाले सज्झायकारि यावि भवति १३ ससरक्खपाणिपादे १४ सद्दकरे १५ झंझकरे १६ कलहकरे १७ असमाधिकरे १८ सूरप्पमाणभोई १९ एसणाए असमिते यावी भवति २०। एते थेरेहिं भगवंतेहिं वीसं असमाहिट्ठाणा पण्णत्ता । तत्थ पडिसिद्धकरणादिणा जो मे जाव दुक्कडंति ॥

सूत्र

एक्कवीसाए सबलेहिं ॥ सूत्रं ॥ २१ ॥ सबले नाम अविसुद्धचरित्ते, सबलोत्ति वा चित्तलोत्ति वा एगट्ठं । एत्थ गाथाओ, तंजह उ हत्थकंमं० ॥ २१ ॥ तत्तो य रायपिंडं० ॥ २२ ॥ छम्मासब्भंतरओ० ॥ २३ ॥ मासब्भंतरओ वा० ॥२४॥ गेण्हंते य अदिण्णं० ॥२५॥ एवं ससिणिद्धाए० ॥२६॥ संडसपाणसबीए०॥२७॥ आउट्टिमूलकंदे०॥२८॥ ||१३८||
दस दगलेवे० ॥ २९ ॥ दव्वीय भायणेण व० ॥ ३० ॥ इमे खलु थेरेहिं भगवंतेहिं एक्कवीसं सबला पण्णत्ता, तंजथा-

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१२९||

हत्थकंमं करेमाणे सबले १ मेहुणं पडिसेवंते सबले २ रातिभोयणं भुंजमाणे सबले ३ आहाकंमं भुंजमाणे सबले ४ रायपिंडं कातं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसिट्ठं अभिहडं आहट्टु दिज्जमाणं भुंजमाणे सबले ५ अभिक्खणं अभिक्खणं पच्चाक्खिय भुंजमाणे सबले ६ अंतो छण्हं मासाणं गणातो गणं संकममाणे सबले, अंतो मासस्स तयो दगलेवे करेमाणे सबले ८ अंता मासस्स तयो माइट्ठाणाइं करेमाणे सबले ९ आउट्टियाए पाणातिवातं करेमाणे सबले १० आउट्टियाए मुसावादं वदेमाणे सबले ११ आउट्टियाए अदिण्णादाणं गेण्हमाणे सबले १२ आउट्टियाए अणंतरहियाए पुढवीए ठाणं वा सेज्जं वा निसीहितं वा चेदेमाणे सबले १३ एवं ससिणिद्धाए पुढवीए १४ ससरक्खाए पुढवीए १५ एवं आउट्टियाए चित्तमन्ताए सिलाए चित्तमंताए लेलूए १६ कोलावासंसि वा दारुरूवे जीवपतिट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिते सओसे सउत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कडासंताणए तहप्पगारं ठाणं वा सेज्जं वा णिसीयणं वा चेतेमाणे सबले १७ आउट्टियाए मूलभोयणं वा कंदभोयणं वा पवालभोयणं वा तयाभोयणं वा पत्तभोयणं वा पुप्फभोयणं फलभोयणं वा बीयभोयणं भुंजमाणे सबले १८ अंतो संवच्छरस्स दस दगलेवे करेमाणे सबले १९ अंतो संवच्छरस्स दस माइट्ठाणाइं करेमाणे सबले २० आउट्टियाए सीतोदवग्घारितेण हत्थेण वा मत्तेण वा दव्वीए भायणेण वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहेत्ता भुंजमाणे सबले २१। एते खलु थेरेहिं भगवंतेहिं एक्कवीसं सबला पण्णत्ताति, एत्थ पडिसिद्धकरणादिणा जो मे जाव दुक्कडंति ॥ शबलाः

सूत्र

बावीसाए परीसहेहिं ॥ सूत्रं ॥ परीसहिज्जंते इति परीसहा, अहियासिज्जंतित्ति वुत्तं भवति । तत्थ दो सिलोगा- खुधा पिवासा० ॥ ३४ ॥ अलाभरोग० ॥ ३५ ॥ इह खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवता महावीरेण कासवेण पवेदिता जे ||१२९||

*** अत्र परिषहानाम् वर्णनं क्रियते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥१४०॥

परीषहाः

भिक्खू सोच्चा णच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिवयंतो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा,तंजहा-दिगिंछापरीसहे १ पिवासापरीसहे२ सीतपरीसहे ३ उसिणपरीसहे ४ एवं दंसमसग०५अचेल०६अरति०७इत्थि०८चरिया०९निसीहिया०१० सेज्जा०११ अक्कोस० १२ वह०१३ जायणा०१४ अलाभ०१५ रोग०१६ तणफास०१७ जल्ल०१८ सक्कारपुरक्कार०१९पण्णा०२० अण्णाण०२१ दंसणपरीसहेत्ति २२। परीसहाणं पविभत्ती, कासवेण पवेइता। तं भे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ॥ दिंगिंछापरिगते देहे, तवस्सी भिक्खु थामवं। न च्छिंदे नेव छिंदावे, न पए नो पयावए ॥ २ ॥ कालीपव्वंगसंकासे, किसे धमणिसंतए। मातण्णे असणपाणस्स, अदीणमणसो चरे ॥ ३ ॥ ततो पुट्ठो पिवासाए, दोगुञ्छी लज्जसंजते। सीतोदगं न सेवेज्जा, विगडस्सेसणं चरे ॥ ४ ॥ छिण्णावातेसु पंथेसु, आतुरेसु पिवासिते। परिसुक्कमुहे दीणे, तं तितिक्खे परीसहं ॥ ५ ॥ संजतं विरतं लूहं, सीतं फुसति एगदा। णातिवेलं मुणी गच्छे, सोच्चाणं जिणसासणं ॥ ६ ॥ न मे निवारणं अत्थि, छवित्ताणं न विज्जती। अहं तु अग्गिं सेवामि, इति भिक्खू ण चिंतए ॥ ७ ॥ उसिणपरितावेण, परिदाहेण तज्जिते। धिंसु वा परितावेण, सातं नो परिदेवते ॥ ८ ॥ उण्हाभितत्ते मेधावी, सिणाणं नाभिपत्थए। गातं न परिसिंचेज्जा, न वेयावेज्ज अप्पयं ॥ ९ ॥ पुट्ठो य दंसमसएहिं, समरे व महामुणी। णागो संगामसीसे वा, सूरो अभिहणे परं ॥ १० ॥ न संतसे ण वारेज्जा, मणंपि ण पदोसए। ण उवहणे पाणिणो पाणे, भुंजंते मंससोणियं ॥ ११ ॥ परिजुन्नेहिं वत्थेहिं, भोक्खामित्ति अचेलए। अदुवा सचेलए होक्खं, इति भिक्खू न चिंतए ॥ १२ ॥ एगदा अचेलए होति, सचेले यावि एगदा। एतं धम्मं

॥१४०॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने | परीषहाः

हितं नच्चा, णाणी णो परिदेवते ॥ १३ ॥ गामाणुगामं रीयंतं, अणगारं अकिंचणं। अरती अणुप्पविस्से, तं तिति-
क्खे परीसहं ॥ १४ ॥ अरतिं पिट्ठतो किच्चा, विरते आतरक्खए। धम्मारामे निरारंभे, उवसंते मुणी चरे ॥१५॥
संगो एस मणूसाणं, जाओ लोगंसि इत्थिओ। जस्स एता परिण्णाता, सुकडं तस्स सामण्णं ॥ १६ ॥ एवमा-
दाय मेधावी, पंकभूताओ इत्थीओ। वज्जएज्ज सदा कालं, चरेज्जत्तगवेसए ॥१७॥ एग एव चरे लाढो, अभिभूत
परीसहं। गामे वा नगरे वावि, नियमे वा रायहाणिए ॥ १८ ॥ असमाणे चरे भिक्खू, न य कुज्जा परिग्गहं।
असंसत्तो गिहत्थेहिं, अणिएतो परिव्वए ॥ १९ ॥ सुसाणे सुण्णगारे वा, रुक्खमूले व एक्कओ। अकुक्कुओ
निसीएज्जा, न य वित्तासए परं ॥ २० ॥ तत्थ से अच्छमाणस्स, उवसग्गाहिधारए। संकाभीतो न गच्छेज्जा,
उट्ठेत्ता अण्णमासणं ॥ २१ ॥ उच्चावयाहिं सेज्जाहिं, तवस्सी भिक्खु थामवं। नातिवेलं विहंणेज्जा, पावदिट्ठी
विहण्णती ॥ २२ ॥पइरिक्कुवस्सयं लद्धुं, कल्लाणं अदु पावयं। किमेगरातिं करिस्सामि, एवं तत्थहियासए ॥२३॥
अक्कोसेज्जा परो भिक्खुं, न तस्स पडिसंजले। सरिसो होति बालस्स, तम्हा भिक्खू न संजले ॥ २४ ॥
सोच्चाणं फरुसा भासा, दारुणा गामकंटका। तुसिणीओ तु वेदेज्जा (उवेहिज्जा उ०) न ताओ मणसीकरे ॥२५॥
॥१४१॥ हतो न संजले भिक्खू, मणंपि न पदोसए। तितिक्खं परमं नच्चा, भिक्खू धम्मं विचिंतए ॥ २६ ॥ समणं ॥१४१॥
संजतं दंतं, हणेज्जा कोइ कत्थई। नत्थि जीवस्स णासोत्ति, एवं पेहेज्ज संजए ॥ २७ ॥ दुक्करं खलु भो निच्चं,
अणगारस्स भिक्खुणो। सव्वं से जाइयं होइ, णत्थि किंचि अजाइतं ॥ २८ ॥ गोयरग्गपविट्ठस्स, पाणी णो

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥१४२॥

सुप्पसारए। सेओ अगारवासोत्ति, इति भिक्खू न चिंतए ॥ २९ परेसु घासमेसेज्जा, भोयणे परिनिट्ठिते।
लद्धे पिंडे अलद्धे वा, णाणुतप्पति पंडिते ॥ ३० ॥ अज्जेवाहं न लब्भामि, अवि लाभो सुए सिया। जो एव
पडिसंविक्खे, अलाभो तं न तज्जए ॥ ३१ ॥ नच्चा उप्पात्तियं दुक्खं, वेदणाए दुहट्टिए। अदीणो थावए पण्णं,
पुट्ठो तत्थहियासए॥३२॥ तेइच्छं नाभिणंदेज्जा, संचिन्तत्तगवेसए। एवं खु तस्स सामण्णं, जं कुज्जा ण कारए॥३३॥
अचेलगस्स लूहस्स, संजतस्स तवस्सिणो। तणेसु सयमाणस्स, होज्जा गातविराहणा ॥ ३४ ॥ आतवस्स णिवा-
तेण, अतुला होंति वेदणा। एवं नच्चा न सेवेंति, तंतुजं तणतज्जिता ॥३५॥ किलिण्णगत्ते मेधावी, पंकेण य रए-
ण य। गिम्हासु परितावेणं, सातं नो परिदेवति ॥ ३६ ॥ वेदेज्ज निज्जरापेही, आरियं धम्मणुत्तरं। जाव सरीर-
भेदोत्ति, जल्लं काएण धारए ॥ ३७ ॥ अभिवादणमब्भुट्ठाणं, सामी कुज्जा निमंतणं। जे ताइं पलिसेवंति, न
तेसिं पीहए मुणी ॥ ३८ ॥ अणुक्कसायी अप्पिच्छे, अण्णातेसी अलोलुए। रसेसु णाभिगेज्झेज्जा, णाणुतप्पेज्ज
पंडिते ॥ ३९ ॥ से णूणं मए पुव्वं, कम्मा णाणफला कडा। जेणाहं णाभिजाणामि, पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥ ४० ॥
अह पुट्ठा (पच्छा) उदिज्जंति, कंमा नाणफला कडा। एवमासासे अप्पाणं, नच्चा कम्मविवागतं ॥ ४१ ॥
निरत्थगंमि विरतो, मेहुणाओ सुसंवुडो। जं सक्खं नाभिजाणामि, धम्मं कल्लाणपावगं ॥ ४२ ॥ तवोवहाण-
मादाय, पडिमं पडिवज्जओ। एवंपि मे विहरओ, छउमत्तं न नियट्टती ॥ ४३ ॥ नत्थि नूणं परे लोए, इड्ढी वावि
तवस्सिणो। अदुवा वंचितो मेत्ति, इति भिक्खू न चिंतए ॥४४॥ अभू जिणा अत्थि जिणा, अदुवावि भविस्सति।

परीषहाः

॥१४२॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने

सूत्र

॥१४३॥

महाव्रत-भावताः

सुसं ते एवमाहंसु, इति भिक्खू न चिंतए ॥ ४५ ॥ एते परीसहा सव्वे, कासवेण पवेदिता । जे भिक्खू न विहंणेज्जा, पुट्ठो केणइ कण्हुइ ॥ ४६ ॥ त्ति । एत्थ पडिसिद्धकरणादिणा जाव दुक्कडंति ॥

तेवीसाए सुतगडज्झयणेहिं ॥ सूत्रं ॥ तत्थ इमा गाथा– पुंडरीय १ किरियठाणं २ आहारपरिण्ण ३ पच्चक्खाणे ४ य अणगारे ५ अद्दय ६ णाल ७ सोलसाइं च१६ तेवीसं॥२३-३६॥ एत्थ जो मे पडिसिद्धकरणादिणा जाव दुक्कडंति॥ चउवीसाए देवेहिं। पंचवीसाए भावणाहिं ॥सूत्रं॥ ताओ महव्वयाणं थिरीकरणनिमित्तं भवंति, तत्थ खलु पढमस्स महव्वयस्स इमाओ पंच भावणाओ भवंति- ईरियासमिए से निग्गंथे पुरओ जुगमायाए पेहमाणे २ दट्ठूणं तसे पाणे उद्धट्टु पायं रीएज्जा साहट्टु पायं रीएज्जा संविितिरिच्छं पायं कट्टु रीएज्जा, सति परक्कमे संजतामेव परिक्कमेज्जा, णो उज्जुतं गच्छेज्जा, ईरियासमिए से निग्गंथेत्ति पढमा भावणा १-१ । अहावरा दोच्चा भावणा आलोइयपाणभोयणभोयी से निग्गंथे, नो अणालोइयपाणभोयणभोई सिया, आयाणमेयं अणालोइयपाणभोयणभोयी, से निग्गंथे आवज्जेज्जा पाणाणि वा बीयाणि वा हरिताणि वा भोत्तए, आलोइयपाणभोयणभोयी से निग्गंथेत्ति दोच्चा भावणा १-२। अहावरा तच्चा भावणा- आदाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए सिया, आदाणमेयं आदाणभंडमत्तनिक्खेवणाअसमिए, से निग्गंथे आवज्जेज्जा पाणाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा ववरोवित्तए, आदाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिते से निग्गंथेत्ति तच्चा भावणा १-३ । अहावरा चउत्था भावणा मणसमिए से निग्गंथे, णो य मणअसमिते सिया, जे य मणो पावए सावज्जे पावे भूतोवघादिए, तहप्पगारं मणं णो पुरतो कट्टु विहरेज्जा, जे णं मणो अपावए असावज्जे जाव अभूतोवघातिए तहप्पगारं मणं पुरतो कट्टु विहरेज्जा मणसमिए से निग्गंथेत्ति चउत्था

॥१४३॥

*** अत्र महाव्रतानां भावना: वर्णयते

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ॥१,२॥ दीप अनुक्रम [११-३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने

महाव्रतभावताः

भावणा १-४ । अहावरा पंचमा भावणा- वइसमिए से निग्गंथे, जह मणे तह वईवि जाव वइसमिते से निग्गंथेत्ति पंचमा भावणा १-५ । इच्चेताहिं पंचहिं भावणाहिं पढमं महव्वतं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं संमं काएणं फासितं पालितं सोभितं तीरितं किट्टितं आराहितं आणाए अणुपालितं भवति १ ॥ अहावरे दोच्चे महव्वते मुसावायाओ वेरमणं, तस्स खलु इमाओ पंच भावणाओ, तत्थ खलु इमा पढमा भावणा- हासं परियाणाति से निग्गंथे, णो य हाससंपउत्ते सिया, आदाणमेयं हाससंपउत्ते से निग्गंथे आवज्जेज्जा मुसं वदित्तए, हासं परियाणाति से निग्गंथेत्ति पढमा भवणा २-१ । अहावरा दोच्चा भावणा अणुवीइभासए से निग्गंथेत्ति दोच्चा भावणा २-२ । अहावरा तच्चा भावणा- कोधं परियाणाति से निग्गंथे, नो य कोवणसीलए सिया आदाणमेतं कोधणसीलए से निग्गंथे आवज्जेज्जा मोसवयणाइं, कोधं परियाणाति से निग्गंथेत्ति तच्चा भावणा २-३ । अहावरा चउत्था भावणा- लोभं परियाणाति से निग्गंथेत्ति चउत्था भावणा २-४ । भयं परियाणाति से निग्गंथे, नो य भेउरजाइए सिया, आदाणमेयं भेउरजाइए से निग्गंथे आवज्जेज्जा मोसवयणाइं, भयं परियाणते से निग्गंथेत्ति पंचमा भावणा २-५ । इच्चेताहिं पंचहिं भावणाहिं दोच्चं महव्वतं अहासुत्तं तहेव जाव अणुपालियं भवति २॥ अहावरे तच्चे महव्वए अदिण्णादाणाओ वेरमणं,

॥१४४॥ तस्स खलु इमाओ पंच भावणाओ भवंति, तत्थ खलु इमा पढमा भावणा- से आगंतारेसु वा ६ अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, ॥१४४॥

तत्थ इस्सरे जाव तेण परं विहरिस्सामो, से आगंतारेसु वा (६) अणुवीयिओग्गहं जाएज्जा से निग्गंथेत्ति पढमा भावणा ३-१ । अहावरे दोच्चे भावणा उग्गहणसीलए से निग्गंथे, णो य अणोग्गहणसीलए सिया, जत्थेव ओग्गहणसीलए ओग्गहं तु गेण्हेज्जा तत्थेव ओगाहणसीलए उग्गहं अणुण्णवेज्जा, उग्गहणसीलए से निग्गंथेत्ति दोच्चा भावणा ३-२ । अहावरा तच्चा भावणा णो

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

||१४५||

महाव्रत-भावनाः

निग्गंथे एतावताव उवग्गहे एताव ताव अत्तमणसंकप्पो जाव तस्स य उग्गहे जाव तस्स परिक्खेवे इत्तावता से कप्पति, णो से कप्पति एत्तो बहिया, णो निग्गंथे० इत्ताव ताव अत्तमणसंकप्पेत्ति तच्चा भावणा ३-३। अहावरा चउत्था भावणा- अणुण्णावियपाणभोयणभोई से निग्गंथे, णो अणणुण्णवियपाणभोयणभोई सिया, आदाणमेतं अणणुण्णवियपाणभोयणभोयी, से निग्गंथे आवज्जेज्जा अचियत्तं भोत्तए, अणुण्णवियपाणभोयणभोयी से निग्गंथेत्ति चउत्था भावणा ३-४। अहावरा पंचमा भावणा- से आगन्तारेसु वा (६) अणुण्णावियओग्गहजाती से निग्गंथे साधंमिएसु, तेसिं पुव्वामेव उग्गहणं अणणुण्णाविय अपडिलेहिय अप्पमज्जिय णो चिट्ठेज्जा वा णिसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पादपुंछणं वा आतावेज्ज वा पदावेज्ज वा, तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुण्णविय पडिलेहिय पमज्जिय ततो संजतामेव चिट्ठेज्ज वा जाव पयावेज्ज वा, से आगंतारेसु वा(६)अणुवीयिमितोग्गहजाती निग्गंथे साधंमिए, पंचमा भावणा ३-५ ॥ इच्चेताहिं पंचहिं भावणाहिं तच्चं महव्वतं जाव अणुपालियं भवति ३ ॥ अथावरे चउत्थे भंते! महव्वते मेहुणाओ वेरमणं, तस्स णं इमाओ पंच भावणाओ भवंति, तत्थ खलु इमा पढमा भावणा-णो पाणभोयणं अतिमायाए आहारेत्ता भवति से निग्गंथे, आदाणमेतं पणीयपाणभोयणं, अतिमत्ताए आहारेमाणस्स णिग्गंथस्स संति भेदे संति विब्भंगे संति केवलिपण्णत्ताओ धंमाओ भंसणता, णो पणीयं पाणभोयणं अतिमायाए आहारेत्ता भवति से निग्गंथे, पढमा भावणा ४-१। अहावरा दोच्चा भावणा-अविभूसाणुवाई समणे निग्गंथे, णो विभूसाणुवाती सिया, आदाणमेयं विभूसाणुवादिस्स निग्गंथस्स संति भेदे जाव भंसणता, अविभूसाणुवाइ से निग्गंथे, दोच्चा भावणा ४-२। अहावरा तच्चा भावणा-णो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं निज्झाइत्ता भवति से निग्गंथे, आदाणमेतं, इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं निज्झायमाणस्स निग्गंथस्स संति

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

||१४६||

भेदे जाव भंसणता, णो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं निज्झाइत्ता भवति से निग्गंथेत्ति तच्चा भावणा ४-३। अहावरा चउत्था भावणा-णो इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवेत्ता भवति से निग्गंथेत्ति चउत्था भा०, इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाणस्स निग्गंथस्स संति भेदे जाव भंसणता, णो इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवति से निग्गंथेत्ति चउत्था भावणा ४-४। अहावरा पंचमा भावणा-णो इत्थीणं कहं कहेत्ता भवति से निग्गंथे, आदाणमेतं, इत्थीणं कहं कहेमाणस्स निग्गंथस्स संति भेदे जाव भंसणता, णो इत्थीणं कहं कहेत्ता भवति से णिग्गंथेत्ति, पंचमा भावणा ४-५। इच्चेयाहिं पंचहिं भावणाहिं चउत्थं महव्वतं अहासुत्तं जाव अणुपालितं भवति ४॥ अहावरे पंचमे महव्वते य परिग्गहाओ वेरमणं, तस्स इमाओ पंच भावणाओ भवंति, तत्थ खलु इमा पढमा भावणा-सोइंदिएण मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं सुणेत्ता भवति से निग्गंथे, तेसु मणुण्णामणुण्णेसु सद्देसु णो सज्जेज्ज वा गिज्झेज्ज वा मुच्छेज्ज वा अज्झोववज्जेज्ज वा विणिघातमावज्जेज्ज वा हीलेज्ज वा निंदेज्ज वा खिंसेज्ज वा गरहेज्ज वा तज्जेज्ज वा तालेज्ज वा परिभवेज्ज वा पव्वहेज्ज वा, सोइंदिएण मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं सुणेत्ता भवति से णिग्गंथेत्ति पढमा भावणा ५-१। अहावरा दोच्चा भावणा-चक्खिंदिएण मणुण्णामणुण्णाइं रूवाइं पासित्ता भवति जधा सद्दाइ एमेव ५-२। एवं घाणिंदिएणं अग्घाइत्ता ५-३। जिब्भिंदिएणं आसाएत्ता ५-४। फासिंदिएणं पडिसंवेदेत्ता जाव पंचमा भावणा ५-५ इच्चेताइं पंचहिं भावणाहिं पंचमं महव्वतं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं संमं काएण फासियं पालियं सोभियं तीरियं किट्टियं आराहितं आणाए अणुपालियं भवति ॥ ||१४६||

इरियासमिए सया जने, उवेह भुंजेज्ज य पाणभोयणं। आदाणनिक्खेवदुगुंछसंजते, समाधिते संजमती

महाव्रतभावनाः

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१४७||

महाव्रत-भावनाः

मणोधर्यी ॥ १६ ॥५१। अहस्ससच्चं अणुवीयभासए, जे कोहलोभभयमोहवज्जए। से दीहरायं समुप्पेहि पासिया, मुणी हि मोसं परिवज्जए सया ॥ १६ । ५२ ॥ सयमेव उ पग्गहजायणे घडे, मतिमं अणिसं असति भिक्खु ओग्गहं। अणुण्णविय भुंजिय पाणभोयणं, जाइत्ता साहम्मियाण उग्गहं ॥ १६ ॥ ५३ ॥ आहारगुत्ते अविभूसितप्पा, इत्थिं न णिज्झाए ण संथवेज्जा। वुद्धे मुणी खुद्दकहं न कुज्जा, धम्माणुपेही संधए बंभचेरं ॥ १६ ॥५४॥ जे सद्दरूवरसगंधमागते, फासे य पप्प मणुण्णपावए। गेधिं पदोसं न करेंति पंडिते, से होति दन्ते विरते अकिंचणे ॥ १६ ॥ ५५ ॥ अण्णे पुण एताहिं गाथाहिं पणुवीसं भावणा अणुभासन्ति, तंजथा-पणुवीसभावणाओ पंचण्ह महव्वताणमेताओ। भणियाओ जिणगणहरपुज्जेहिं णवर सुत्तंमि ॥ १ ॥ इरियासमिती पढमं आलोइयअण्णपाणभोई या। आदाणभंडनिक्खेवणाय समिती भवे ततिया ॥ २ ॥ मणसमिती वयसमिती पाणातिवायंमि होंति पंचेया। हासपरिहार अणुवीतिभासणा कोधलोभपरिण्णा ॥ ३ ॥ एस मुसावायस्सा अदिण्णदाणस्स होंतिमा पंच। पहुसंदिट्ठ पहुं वा पढमोग्गहजाए अणुवीई ॥४ ॥ ओग्गहणसील बितिया तत्तो गेण्हेज्ज उग्गहं जहियं। तणडगलमल्लगादी अणुण्णवेज्जा तहिं ताहियं ॥ ५ ॥ तच्चंमि उग्गहंनू अणुण्णवे सारिउग्गहे जाव। तावतिए मेर कातुं न कप्पती बाहिए तस्स ॥ ६ ॥ भावण चउत्थ साहम्मियाण सामण्णमंणपाणं तु। संघाडगमादीणं भुंजेज्ज अणुण्णविय ते उ ॥ ७ ॥ पंचामियं गंतूण साहंमिय उग्गहे अणुण्णविय। ठाणादी चेतेज्जा पंचेताऽदिण्णदाणस्स ॥ ८ ॥ बंभवय भावणाओ णो अतिमातापणीतमाहारो। दोच्च अविभूसणा उ विभूसवत्ती ण तु हवेज्जा ||१४७||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

||१४८||

सूत्र

|| ९ || तच्चा भावण इत्थीण इंदिया मणहरा ण णिज्झाए। सयणासणविवित्ताइं इत्थिपसुविवज्जिया सव्वे ||१०|| एस चउत्था ण कहे इत्थीण कहं तु पंचमा एसा । सद्दा रूवा गंधा रस फासा पंचवी एते || ११ || रागद्दोसविवज्जण अपरिग्गहभावणाओं पंचेना । सव्वाओ पणुवीसं एतासु न वट्टितं जं तु || १२ || एत्थ पडिसिद्धकरणादिणा जाव दुक्कडंति ||

छव्वीसाए दसकप्पववहाराणं उद्देसणकालेहिं || सूत्रं । ते य एवं छव्वीसं भवंति-दस उद्देसणकाला दसाण कप्पस्स होंति छच्चेव । दस चेव य ववहारस्स होंति सव्वेवि छव्वीसं||१|| ४३ || तत्थ पडिसिद्धकरणादिणा जाव दुक्कडंति ।

सत्तावीसाए अणगारगुणेहिं । सूत्रं । ते य इमे-वयछक्क० || ४४ || कोधादिरोहणा जाविय, सत्तावीसं अणगारगुणा पण्णत्ता समणाउसो ! तंजथा-सव्वातो पाणातिवायाओ वेरमणं एवं जाव च राईभोयणाओ०, सोइंदियसंवरे जाव फासिंदिय ११, खमा विरागता भावसच्चं १४, खमा-दोसनिग्गहो विरागता-रागनिग्गहो भावसच्चं- सव्वत्थ सुपणिहियभावप्पणं,करणसच्चं- जं सव्वमणुट्ठाणं विस्पष्टं करेति, अहवा भावसच्चं अब्भितरलिंगसुद्धी,बाहिरलिंगसुद्धी करणसच्चं१५,मणसमंणाहारो-णिरुंभति मणन्ति भणियं होति,एवं वइकायसमण्णाहारावि१८,कोहविवेगो एवं जाव लोभ०२२,णाणसंपण्णता एवं जाव चरित्त०२५,वेदणाहियासणया मारणंतियाहियासणया२७, वेदणाओ सीओसिणभीमाओ ३ अहवा माणसियसारीरियाधीसियाओ ३, मारणंतियाहियासणया जं मारणंतियं दुक्खं तस्स अहियासणया । एत्थ पडिसिद्धकरणादिणा जाव दुक्कडंति ||

दशायुदेशाः साधुगुणाः आचारयुकल्पाः

||१४८||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

सूत्र

अट्ठावीसतिविहे आयारकप्पे ॥ सूत्रं ॥ २८ ॥ तत्र आयारस्स पंचवीसं अज्झयणाओ, घातियं अणुग्घातियं आरोवणा त्ति तिविहं निसीहं, ते अट्ठावीसं । एत्थ पडिसिद्धकरणादि जाव दुक्कडन्ति ॥

एगुणतीसाए पावसुतपसंगेहिं॥सूत्रं॥तं पुण पावसुतं एवं एगुणतीसतिविहं भवति, तंजथा-अट्ठ निमित्तंगाणि दिव्वं१उप्पाय २ अंतलिक्खं च ३। भोमं ४ अंगं ५(च) सरं ६,लक्खणं ७ वंजणं ८। तत्थ एक्केक्कं तिविधं, तंजथा-सुत्तं वित्ती वत्तियं, तत्थ अंगवज्जाणं सत्तण्हं सहस्सं सुत्तं सतसहस्सा वित्ती कोडी वत्तियं, अंगस्स सतसहस्सं सुत्तं कोडी वित्ती अप्परिमितं वत्तियं, एते चउव्वीसं, तथा गणितं १ जोतिसं २ वागरणं ३ सद्दसत्थं ४ धणुव्वेदो ५, एसा गुणतीसा, जाणि वा सूयगडे भणिताणि । एत्थ पसंगा- मज्जादातिक्कमेण पवत्तणाणि । एत्थ पडिसिद्धकरणादिणा जाव दुक्कडंति ॥ ||१४९||

सूत्र

तीसाए मोहणीयट्ठाणेहिं ॥ सूत्रं ॥ ताणि पुण इमाणि तीसं, अह खलु अज्जो ! मोहणिज्जट्ठाणाइं जाइं इमाइं-इत्थी वा पुरिसो वा अभिक्खणं २ आयरमाणे वा समायरमाणे वा मोहणिअत्ताए कंमं पकरेति, तंजथा-जे केइ तसे पाणे, वारिमज्झे विगाहिया । उदएणोक्कस्स मारेति, महामोहं पकुव्वती॥१॥१।पाणिणा संपिहित्ताणं,सोयमावरिय पाणिणं। अंतोणदंतं मारेती, महामोहं पकुव्वती ॥२॥ २ । जाततेयं समारब्भ, बहुं ओरुंभिया जणं । अंतो धूमेण मारेती, महामोहं० ॥ ३ ॥ ३ । सीसंमि जो पहणती, उत्तमंगंमि चेतसा । विभज्ज मत्थगं, फाले, महामोहं० ॥ ४ ॥ ४ । सीसावेढेण जे केइ, आवेढति अभिक्खणं । तिव्वं असुहमायारे, महा० ॥ ५ ॥ ५ । पुणो पुणो विहिणिए, जो णं उवहणे जणं । फालेण अदु डंडेण, महा० ॥ ६ ॥ ६ । गूढायारी निगूहेज्जा, मायं मायाए छायए । असच्च-

पापश्रुतानि मोहनीयस्थानानि

||१४९||

*** अत्र मोहनीयस्थानानि वर्णयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने — मोहनीयस्थानानि

वाओ णिण्हाती, महा० ॥ ७ ॥ ७ । जे णं सिया अभूएणं, अकंमं अत्तकंमुणा । तुमं एतं अकासिण्णु, महा०
॥ ८ ॥ ८ । जाणमाणो परिसाते, सच्चामोसाणि भासती । अज्झीणझंझे अरये, महा० ॥ ९ ॥ ९ । अणासायस्स
णायवं, दारं तस्सेव धंसिया । विपुलं विक्खोभतित्ताणं, किच्चाणं पडिबाहिरं ॥ १० ॥ उवकसंतंपि जंपेत्ता, पडि-
लोमाहिं वग्गुहिं । भोगभोगे वियारेति, महामोहं० ॥ ११ ॥ १० । अकुमारभूते जे केती, कुमारभूतेत्तऽहं वदे ।
इत्थीविसयगेहीए, महामोहं० ॥१२॥ ११ । अबंभचारी जे केई, बंभचारित्तहं वदे । गद्दभेव गवां मज्झे, विस्सरं
नदती नदं ॥ १३ ॥ अप्पणो अहिते बाले, मायामोसं बहुं सयं । इत्थीविसयगेहीए, महामोहं० ॥ १४ ॥ १२ ।
जं निस्सिओ उ वहती,जससाऽहिगमेण य । तस्स लुब्भइ वित्तांसि,महामोहं० ॥ १४ ॥ १३ । इस्सरेणऽदु गामेण,
अणिस्सरे इस्सरे कते । तस्स संपग्गहीयस्स,सिरी अतुलमागता ॥१६॥ इस्सादोसेण आइट्ठे, कलुसाऽऽतुलचेतसा ।
जे अंतरागं चेतेती, महामोहं० ॥ १७ ॥ १४ । सप्पी जथा अंडपुडं, भत्तारं जो विहिंसती । सेणावतिं पसत्थारं,
महामोहं० ॥ १८ ॥ १५ । जे णायगं च रट्ठस्स, णेतारं णियगस्स वा । सेट्ठिं बहुरथं हंता, महामोहं० ॥१९॥१६॥
॥१५०॥ बहुजणस्स णेतारं, दीवं ताणं च पाणिणं । एतारिसं नरं हंता, महामोहं० ॥ २० ॥ १७ । उवट्ठितं पडिविरतं, ॥१५०॥
संजतं तु समाहितं । विउक्कंम धंमा भंसेज्जा, महा० ॥ २१ ॥ १८ । तहेव णंतणाणिणं, जिणाण वरदंसिणं ।
तेसिं अवण्णिमं बाले, महा० ॥ २२ ॥ १९ । नेयाउयस्स मग्गस्स, दुट्ठे अवहरती बहुं । तं तप्पियं नो भासेति,
महा० ॥ २३ ॥ २० ॥ आयरियउवज्झाएहिं, सुते विणयं च गाहिते । ते चेव खिंसती बालो, महा० ॥२४॥२१॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथाः
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

मोहनीयस्थानानि

आयरियउवज्झायाणं, संमं न पडितप्पति । अपडिपूयए थद्धे, महा० ॥ २५ ॥ २२ । अबहुस्सुतेवि जे केई, सुतेणं पविकत्थति । सज्झायवायं वयति, महा० ॥ २६ ॥ २३ ॥ अतवस्सिए य जे केई, तवेणं पविकत्थति । सव्वलोभपरे तेणे, महा० ॥ २७ ॥ २४ । साहारणंमि जे केई, गिलाणंमि उवट्ठिते । पभू ण कुव्वती किंचि, मज्झंपेस ण कुव्वती ॥ २८ ॥ सढे णियडिपंणो णु, कलुसाउलचेतसे । अप्पणो य अणाधीए महा०॥ २९ ॥ २५ । जो कहाधिकरणाइं, संपउंजे पुणो पुणो । सव्वतित्थाय भेयाए, महा०॥३०॥२६ । जे य आहंम्मिए जोए, संपउंजे पुणो पुणो । सहाहेतुं सहीहेतुं, महामो०३१ ॥ २७ ॥ जो य माणुस्सए भोए, अदुवा परलोइए । तिप्पयंतो आसयति, महा० ॥ ३२ ॥ २८ ॥ इड्ढी जुत्ती जसो वण्णो, देवाणं बलवीरियं । तेसिं अवंनिमं बाले, महा० ॥ ३३ ॥ २९ ॥ अपस्समाणो पस्सामि, देवा जक्खा य गुज्झगा । अण्णाणी जणपूयट्ठी, महा०॥ ३३ ॥३०॥ एते मोहगुणे वुत्ता, कम्मंता चित्तवद्धणा । जे तु भिक्खू विवज्जेत्ता, चरेज्जत्तगवेसए ॥३४॥ पुव्विं ताव विजाणेज्जा, किच्चाकिच्चाइं पंडितो । तो अकिच्चं विवज्जेज्जा, किच्चाइं सेवए विदू ॥ ३५ ॥ पत्ते अणुत्तरे धंमे, तवेण विविहेण तु । ततो वमे सए दोसे, विसं आसीविसो जहा ॥ ३६ ॥ सवत्तदोसे सुद्धप्पा, कालं किच्चा समाहिणा । तिसरीराविणिमुक्को,
||१५१|| असरीरं गच्छती गतिं ॥ ३७ ॥ एत्थ पडिसिद्धकरणादिणा जाव दुक्कडंति ॥ ||१५१||

सूत्र

एक्कतीसाए सिद्धादिगुणेहिं ॥सूत्रं॥ सिद्धाणं आदीए गुणा सिद्धादिगुणा, सिद्धेहिं सहभाविन इत्यर्थः, ते य अपज्जवसिया, ते य इमे, तंजथा-से ण परिमंडले १ न वट्टे २ न तंसे ३ ण चतुरंसे ४ ण आयते ५ ण किण्हे ६ ण णीले ७ न लोहिए ८ न हालिद्दे ९

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२|| दीप अनुक्रम [११-३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥१५२॥

न सुक्किल्ले १० न सुब्भिगंधे ११ न दुब्भिगंधे १२ न तित्ते १३ न कडुए १४ न कसाए १५ न अंबिले १६ न मधुरे १७ न कक्खडे १८ न मउए १९ न गरुए २० न लहुए २१ न सीतो २२ न उण्हो २३ न निद्धे २४ न लुक्खे २५ न संगे २६ न रुहे २७ न काओ २८ न इत्थी २९ न पुरिसे ३० न नपुंसके ३१॥ अहवा खीणाभिनिबोहियनाणावरणिज्जं०पंच, खीणाचक्खुदंसणावरणिज्जे एवं णव,खीणसातवेदणिज्जे खीणअसातवेदणिज्जे एवं दुविहे,मोहणिज्जे खीणदंसणमोहणिज्जे खीणचरित्तमोहणिज्जे, खीणनिरयाउए ४, खीणसुभणामे खीणअसुभणामे. खीणउच्चगोए खीणनीयागोए २ खीणदाणंतराइए०५, एते एक्कतीसं सिद्धादिगुणा । एत्थ पडिसिद्धकरणादिणा जाव दुक्कडंति ॥ (सिद्धादिगुणाः योगसंग्रहाश्च)

सूत्र

बत्तीसाए जोगसंगहेहिं॥ ते य इमे बत्तीसं जोगसंगहा-धंमो सोलसविधं एवं सुक्कंपि,एते बत्तीसं जोगाणं संगहहेतू, अहवा आलोयणादि इमे बत्तीसं संगहजोगा,तत्थ आलोयणेणं अतिसम्यग्मनोवाक्काययोगाः संगृह्यंते, अहवा णाणादिवावाराः संगृह्यंते, तत्थ उदाहरणं-उज्जेणी नगरी,जितसत्तू राया,तस्स अट्टणो मल्लो सव्वरज्जेसु अजयो,इतो य समुद्दतडे सोप्पारगं नगरं, तत्थ सीहगिरी राया, सो य मल्लाणं जो जिणति तस्स बहुं दव्वं देति, सो अट्टणो तत्थ गंतूण वरिसे वरिसे पडागं हरति, राया चिंतेति- एस अण्णाओ रज्जाओ आगंतूणं पडागं हरति, एस ममं ओभावणत्ति पडिमल्लं मग्गति, तेण मच्छिको एको दिट्ठो वसं पिबंतो, बलं च से विण्णासितं, णातूण पोसितो, पुणरवि अट्टणो आगतो, सो य किर मल्लजुद्धा होहिंतित्ति अणागतं चेव सकाओ नगराओ अप्पणो पत्थयणस्स अवल्लं भरेतूणं अव्वाबाहं एति, संपत्तो सोपारकं, जुद्धं पराजितो मच्छियमल्लेणं, गतो सयं आवासं, चिंतेति-एयस्स वड्ढी तरुणगस्स, मम हाणी, अण्णं मग्गति मल्लं, सुणति य सुरट्ठाए अत्थित्ति इंतेण भरुकच्छाहरणीए गामे दूरुल्लकूविगाए ॥१५२॥

*** अत्र योग-संग्रहानां वर्णनं क्रियते

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१५३||

करिसओ दिट्ठो. एक्केण हत्थेणं हलं वाहेति एक्केणं फलीहे उप्पाडेति, तं दट्ठूणं ठितो. पेच्छामि से आहारंति अवल्ला मुक्का. भज्जा य से भत्तं गहाय आगता, पत्थिकाकूरस्स उत्तजिझयघडओ पच्छति, जिमितो सण्णाभूमीं गतो, तत्थवि पक्खिवति, सव्वं संवाचितं, वेकालिकं वसहितं तस्स घरे मग्गति, दिण्णा, ठिता, संकहाए पुच्छति-का जीविका ?, तेण कहिते भणति-अहं अट्टणो, तुमं इस्सरं करेमित्ति, तीसे महिलाए कप्पासमुल्लं दिण्णं, सो य अवल्ला सवलेद्दा उज्जेणिं गता, तेणेव वमणविरेयणाणि कताणि, पोसितो, निजुद्धं च सिक्खावितो, पुणरवि महिमाकाले तेणेव विहिणा आगतो, पढमदिवसे फलहीमल्लो मच्छियमल्लो य जुद्धे एक्को अजितो एक्को अपराजितो, राया बितियदिवसे होहितित्ति अतिगतो, इमेवि सए सए आलए गतो, अट्टणेण फलहीमल्लो भणितो-कहेहि पुत्त ! जं ते दुक्खावितं, तेण कहितं, मक्खेत्ता से दिण्णेण संमद्दणेणं पुणण्णवीकतं, मच्छियस्सवि रण्णा संमद्दका विसज्जिता, भणति- अहं तस्स पितुंपि न बीहेमि. सो को वराओ ?, बितियदिवसे समजुद्धा, ततियदिवसे अप्पप्पहारो णीसहो वइसाहं ठितो मच्छिओ, अट्टणेण भणितो-फलहित्ति, तेण फलहिग्गहेण कड्ढितो सीसेण कुंडिकग्गाहेण. सक्कारितो, गतो उज्जेणिं, पंचलक्खणाणं भोगाणं आभागी जातो, इतरो मतो । एवं जथा पडागा तथा आराहणपडागा, जथा अट्टणो तथा आयरिया, जथा मल्ला तथा साधू . पहारा अवराहा, जो सो गुरुणो आलोएति सो णीसल्लो णेव्वाणपडागं तेल्लोक्करंगमज्झे हरति, एवं आलोयणं प्रति योगसंग्रहणं भवति, एते सीसगुणा १ ॥ इदाणिं केरिसस्स मूले आलोइतव्वं ?, जो अण्णस्स मूले ण लवति- एरिसं एतेण पडिसेवितंति. तत्थ उदाहरणं- दंतपुरनगरे दंतवक्को राया, सच्चवती देवी, तीसे दोहलओ, कहं दंतमए पासाए अभिरमिज्जति?, दन्तनिमित्तं घोसावियं रण्णा-जहोचितं मुल्लं देमि, जो न देइ तस्स राया विणयं करेति, तत्थेव णगरे धणमित्तो

आलोचनाऽप्रतिश्राविता ||१५३||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१५४||

आलोचना अप्रतिश्राविता

वाणियओ, तस्स दोण्णि भारियाओ,धणसिरी महंती,पउमसिरी डहरिया पियतरियत्ति, अण्णदा सवत्तीणं भंडणं,धणसिरी भणति-किं तुं एवं गव्विता ?, किं तुज्झ ममातो अधियं ? जहा सच्चवतीए तहा ते किं पासादो कीरेज्जा ?, सा भणति-जदि न कीरति तो ण अहंति उव्वरए बारं बंधेत्ता ठिता, वाणियओ आगतो, पुच्छति-कहिं पउमसिरी ?, दासीहिं कहितं, तत्थ अतिगतो, पसादेति, न पसीयति, जदि नत्थि न जीवामि, तस्स मित्तो दढमित्तो, सो आगतो, तेण पुच्छितं, सव्वं परिकहेति, भणति- कीरतु, मा एताए मरंतीए तुमं मरेज्जासि, तुमे मरंतेण अहंपि, रायाए घोसावितं तो पच्छण्णं कातव्वं, ताहे सो दढमित्तो पुलिंदगपायोग्गाणि पोत्ताणि भणियाणि अलत्तगकंकणे य गहाय अडविं अतिगतो, दंता लद्धा, पुंजो कतो, तणपिंडिताण मज्झे बंधित्ता सगडं भरेत्ता आणीता, णगरं पवेसिज्जंतेसु वसभेणं कड्ढितं, खडत्ति पडितो दंतो, णगरगुत्तिएहिं दिट्ठो, गहितो य, रायाए उवणीतो, वज्झो णीणिज्जति, तं धणमित्तो सोऊण आगतो, तो रायाए पादवडितो विण्णवेति, जथा-एते मए आणाविता, सो पुच्छितो लवति-एतं न चेव जाणामि कोत्ति ?, एवं ते अवरोप्परं भणंति, रायाए सवहसाविता पुच्छिता, अभयो दिण्णो, परिकहितं, पूयेत्ता विसज्जिता । एवं निरवलावेण होतव्वं आयरिएणं ॥ बितिओऽवि-एक्केणं एक्कस्स हत्थे पणामितं किंचि भाणं वा० अंतरा पडितं, तत्थ भाणितव्वं- मम दोसो, इतरेणवि ममंत्ति २ ॥

आवतीसु दढधम्मत्तणं कातव्वं । एवं जोगा संगहिता भवंति· तत्थ उदाहरणं-उज्जेणी नगरी, तत्थ धणवसू वाणियओ, सो चंपं जातुकामो उग्घोसणं करेति जथा णाते, तं अणुण्णवेति धम्मघोसो, तेसु अडविं दूरं अतिगतेसु पुलिंदेहिं विलूओलितो सत्थो इतो ततो य नट्ठो, सो अणगारो अण्णेण लोगेण समं अडविं पविट्ठो,ते मूलाणि खायंति,पाणियं च पिबंति,सो णिभं- ||१५४||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥१५५॥

आपत्सु दृढधर्मत्वं

तिज्जइ, णेच्छति, अवसरे जाते एकत्थ सिलातले भत्तं पच्चक्खाति, अदीणं अहियासेमाणस्स केवलणाणं उप्पण्णं, सिद्धो। एवं दढधम्मताए जोगा संगहिता, एसा दव्वावती, खेत्तावती खेत्ताणं असतीए, कालावती ओमोदरियादिसु, भावावतीए इमं उदाहरणं- मधुरा नगरी, जवुणो राया, जवुणावंकं उज्जाणं, अन्नेण तत्थ जउणाए कोप्परो दिण्णो, तत्थ दंडो अणगारो आतावेति, सो रायाए णितेण दिट्ठो, तेण रोसेण असिणा सीसं छिण्णं, अण्णे भणंति-आहतो, पच्छा सव्वेहिवि मणूसेहिं, कोधोदयं पति तस्स आवति, कालगतो सिद्धो, देवाण महिमकरणं, सक्कागमणं पालएणं, तस्सविय रण्णो आउट्टी जाता, वज्जेण भासितो सक्केण, जदि पव्वयसि तो मुच्चसि, पव्वइतो थेराणं अंतियं, अभिग्गहं गेण्हति-जदि भिक्खागतो वा संभरामि ण जेमेमि, जदि य जिमितो तो सेसगंपि विगिंचामि, एवं किर तेण भगवता एगमवि दिवसं णाहारितं, तस्सवि दव्वावती, दंडस्स भावावती, एवं दढधम्मता कातव्वा ॥

अणिस्सितोवधाणेत्ति, 'श्रिञ् सेवायां' न निश्रितमनिश्रितं, द्रव्यप्रधानं उपधानकमेव, भावुवधाणं तवो, सो किर अणिस्सितो कातव्वो इह य परत्थ य, जथा केण कतो?, उदाहरणं-अज्ज थूलभद्दस्स दो सीसा-अज्जमहागिरी अज्जसुहत्थी य, ते महागिरी सुहत्थिस्स उवज्झाया, महागिरी अज्जसुहत्थिस्स गणं दातूण वोच्छिण्णो जिणकप्पो तहवि अप्पडिबद्धता होतुत्ति गच्छपडिबद्धा जिणकप्पपरिकंमं करेंति, तेवि विहरंता पाडलिपुत्तं गता, तत्थ सेट्ठी वसुभूती तेसिं अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म सावओ जातो, सो अण्णदा भणति सुहत्थि-भगवं! मज्झ दिण्णो संसारनित्थरणोवाओ, मए य सयणस्स परिकहितं, तं न तथा लग्गति, तुब्भवि ताव अणाभिओगेणं गंतूणं कहेधात्ति, ते गता, धम्मं कथेंति, तत्थ य महागिरी पविट्ठो, ते दट्ठूण सहसा उ- ॥१५५॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१५६||

ट्ठिता, वसुभूती भणति-तुब्भवि अण्णे आयरिया ?, ताहे सुहत्थी तेसिं गुणसंथवं करेंति, जहा जिणकप्पो अतितो तथावि एते एवंविहं परिकंमं करेंति. एवं तेसिं चिरं कहित्ता अणुव्वताणि य दातुण गता सुहत्थी, तेण वसुभूतिणा जेमित्ता ते भणिता-जदि एरिसओ साधू एज्जा तो से अग्गतो जथा उज्झितगाणि एवं करेज्जाह, एवं दिण्णे महफलं भविस्सति, बितीयदिवसे महागिरी भिक्खस्स पविट्ठो, तं अपुव्वकरणं दट्ठूणं चिंतेति- दव्वओ ४, णातं जथा णातो अहंति तहियागहिते भत्ते नियत्तो, भणंति-अज्जो ! अणेसणा कता, केणं ?, तुमं जं कल्लं अब्भुट्ठितो ॥ दोवि जणा वइदिसिं गता, तत्थ जितपडिमं वंदित्ता अज्जमहागिरी एलकच्छं गता गयग्गपदकं वंदका ॥ तस्स कहं एलकच्छनामं?, तं पुव्वं दसण्णपुरं नगरं, तत्थ सात्रिका एक्कस्स मिच्छादिट्ठीतस्स दिण्णा, वेकालियं आवस्सयं करेति पच्चक्खाति य, सो भणति-किं रत्तिं उट्ठेत्ता कोई जिमति ?, एवं उद्धासेति, अण्णदा सो भणति-अहंपि पच्चक्खामि, सा भणति-भंजिहिसि, सो भणति-किं अण्णदावि अहं रत्तिं उट्ठेत्ता जेमेमि ?, दिण्णं, देवता चिंतेति-साविकं उप्पासेति, अज्ज णं उवालभामि, तस्स भगिणी तत्थेव वसति, तीसे रूवेणं रत्तिं पहेणगं गहाय आगता, पक्खइतो, साविगाए वारितो. भणति- तुब्भच्चएहिं आलमालेहिं किं ममंति ?, देवताए पहारो दिण्णो, दोवि अच्छिगोलया भूमीए पडिता, साविया मा मम अयसो होहित्ति काउस्सग्गं ठिता, अद्धरत्ते देवता आगता भणति किं साविए !, सा भणति- मम एस अयसोत्ति, ताहे अण्णस्स एलगस्स अच्छीणि सपदेसाणि तक्खणमारितस्स आणेत्ता लाइताणि, गोसे जणो भणति- तुह अच्छीणि जथा एलगस्सत्ति, तेण सव्वं कहितं, सड्ढो जातो, जणो कोतुहल्लेण एति पुच्छति, सव्वत्थ रज्जे फुड्डं,

अतिश्रितोपधानता ||१५६||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

||१५७||

भणंति- कतो एसि ?, जत्थ सो एलकच्छो, अण्णे भणंति-सोच्चेव राया, ताहे दसण्णपुरस्स एलगच्छत्ति नामं जातं, तत्थ य मयग्गस्स पदओ, तस्स उप्पत्ती जथा इड्ढीए ॥

अतिश्रितोपधानता

तत्थ महागिरीहिं अज्जेहिं भत्तं पच्चक्खातं, देवत्ते गता, सुहत्थीवि उज्जेणीए पडिमं वंदगा गता, उज्जाणे ठिता, भणितो य- वसहिं मग्गाहित्ति, तत्थ एगो संघाडगो भद्दाए सेट्ठिभज्जाए घरं भिक्खंतो अतिगतो, पुच्छियतो- कुतो भगवंतो ?, तेहिं भणितं-सुहत्थिस्स, वसहिं मग्गामो, जाणसालाओ दरिसिताओ, तत्थ ठिता, अण्णया पदोसकाले आयरिया णलिणिगुंमं अज्झयणं परियट्टेंति, तीसे पुत्तो अवंतिसुकुमालो सत्ततले पासाए बत्तीसभज्जाहिं समं उवललति, तेण सुत्तविउद्धेण सुतं. न एतं नाडगंति भूमितो भूमिं सुणेंतो २ ओतिण्णो, बाहिं निग्गतो, कत्थ एरिसंति ?, जाति सरिता, तेसिं मूलं गतो,साहति-अहं अवंतिसुकुमालोत्ति,नलिणिगुम्मे देवो आसि, तस्स उस्सुको मि, पव्वयामि, असमत्थो दीहं सामण्णपरियागं अणुपालेत्ता, इंगिणिं साहेमि अहं, तेवि माया से णापुच्छितात्ति णेच्छंति. सयमेव लोयं करेति, मा सयंगहीतुत्ति दिण्णं लिंगं, मसाणे कंथारकुंडगं, तत्थ भत्तं पच्चक्खाति, सुकुमालएहि य बाहिं लोहितगंधेण सिवाए सपेल्लिकाए आगमणं, सिवा एक्कं खाति एक्कं पेल्लिगाणि,पढमे जंणुगाणि बितिए ऊरू ततिए पोट्टं, कालगतो, गंधोदगं पुष्फवासं, आयरियाण आलोयणा, भज्जाण परंपरं पुच्छा, आयरिएहिं कहितं, सड्ढी सुण्हाहि समं तं गता मसाणं, पव्वइताओ य, एगा गुव्विणी णियत्ता. तीसे पुत्तो तत्थ देवकुलं कारेति, तं इयाणिं महाकालं जातं, ||१५७||
लोकेण परिग्गहितं, एतं उत्तरचूलियाए भणितं पाडलिपुत्ते। सम्मत्तं अणिस्सिततवो महागिरीणं ४ ॥

इदाणिं सिक्खत्ति, सा दुविधा-गहणसिक्खा आसेवणसिक्खा य, आसेवणसिक्खा जथा ओहसामायारीए पयविभा-

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने

शिक्षायां अभयवृत्तं

गसामायारीए य वण्णितं, गहणासिक्खाइ सुयं जथा भगवता थूलभद्दसामिणा गहितं अणिव्विण्णेणं होतूण, गहणसिक्खणं प्रति संमं जोगा संगृहिता तहा इहं भण्णति, तत्थ खितिचण०॥१७-११।१२८१॥ तेणं कालेणं० अतीतअद्धाए खितिपतिट्ठितं नगरं, जितसत्तू राया, तस्स नगरस्स वत्थूणि ऊसण्णाणि, अंणं णगरट्ठाणं वत्थुपाढएहिं मग्गावेति, तेहिं एगं चणगखेत्तं अतीव पुप्फेहि य फलेहि य उववेतं दिट्ठं तत्थ चणगपुरं निवेसितं, कालेण तत्थवि वत्थूणि खीणाणि, पुणोवि मग्गिज्जति, तत्थ एगो वसभो अण्णेहिं पारद्धो एक्कंमि रण्णे अच्छाति, न तीरति अण्णेहिं वसभेहिं पराइणितुं, तत्थ उसभपुरं, पुणरवि कालेण उसण्णं, पुणोवि मग्गंतेहिं कुसथंबो दिट्ठो अतीव पमाणाकितिविसिट्ठो, तत्थ कुसग्गपुरं जातं, तंमि य काले पसेणइ राया, तं च नगरं अभिक्खं अग्गिणा दज्झति, ताहे लोगस्स भयजणणनिमित्तं घोसावेति-जस्स घरे अग्गी उट्ठेति सो नगराओ निच्छुब्भति, तत्थ महाणसियाण पमादेणं रण्णो चेव घराओ अग्गी उट्ठितो, ते सच्चपतिण्णा रायाणो जदि उरप्पकं(सपक्खं)न सासामि तो कहं अण्णंति निग्गतो नगरातो, तस्स गाउयमेत्ते ठाति, ताहे दंडभडभोइयगमादी तत्थ वच्चंति, भणति-कहिं वच्चह ?, आह-रायगिहं, कतो एह ?, रायगिहातो, एवं नगरं रायगिहं जातं। जदा य राइणो गिहे अग्गी उट्ठितो तदा कुमाराणं जं जस्स पियं आसो हत्थी वा तेण तं नीणितं, सेणितेणं भिंभा णितं, रायाए पुच्छिता-केणं किं णीणितं?, अण्णो भणति-मए हत्थी, एवमादि, सेणिओ पुच्छितो भणति- ॥१५८॥ भिंभा, ताहे राया भणति सेणियं-एस तव सारो भिंभित्ति ?, भणति-आमं, सो य रण्णो सव्वपिओ, ताहे से बीयं नामकं कतं भिंभिसारोत्ति, सो रण्णो पिता लक्खणजुत्तो य, मा अण्णेहिं कुमारेहिं मारिज्जिहितित्ति न किंचिवि देइ, सेसका कुमारा भडचडकरेण णिन्ति, सेणिको ते दट्ठूण अद्धितिं करेति, सो ततो निप्फिडितो विण्णातडं गतो, जथा नमोक्कारे-अचियत्त भोगऽवाणं ॥१५८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

शिक्षायां अभयवृत्तं

निग्गम बेण्णातडे य कासवए । लाभ घर नयण नेच्छग धूता सुरस्सिगा दिण्णा ॥ १ ॥ पेसण आपुच्छणता पंडुरकुड्डत्ति गमण अभिसेओ। दोहल नाम निरुत्ती कहिं पिता मेत्ति?रायगिहे॥२॥आगम अमच्च मग्गण खड्डुग छगणे य कास तं तुब्भं । कहणं मातुअतिणणा विभूसणा वारणं मातुं॥३॥ तं च सेणियं उज्जेणीतो पज्जोतो रोहको जाति,सो उदिण्णो, सेणिको बीभेति, अभयो भणति-मा संकह, नासेमि, तेण खंधावारनिवसजाणगेण धूमिता दीणारा लोहसंघाडेसु णिक्खत्ता डंडावासट्ठाणेसु, सो आगतो, रोधितं, जुज्झिता कति दिवसे, पच्छा अभयो लेहं देति, जथा-तव डंडा सव्वे सेणिएणं भिण्णा, णास मा घेप्पिहिति, अहवि अपच्चयो तो अमुकस्स २ डंडस्स अमुगपदेसं खण, तेण खतं, दिट्ठो, नट्ठो, पच्छा तो सेणिएणं बलं विलओलितं, तेवि रायाणो सव्वे कथेंति-ण एतस्स अम्हे कारित्ति, अभएण एसा माया कता, तेण पत्तीयं। अण्णदा सो अत्थाणीए भणति- सो मम नत्थि जो तं आणेज्ज?, अण्णदा एगा गणिया भणति-अहं आणेमि मम सहायिकाओ दिज्जंतु, दिण्णाओ से सत्त वितिज्जकाओ जाओ से रुच्चंति मज्झिमवयाओ, मणुस्सा थेरा, तेहिं समं पवहणेहिं सुबहुएहिं भत्तपाणपत्थयणेण पुव्विं च संजतीणं मूले विडसड्ढित्तणं गहाय गताओ, अण्णेसु य गामणगरेसु जत्थ संजता वा सड्ढा वा तहिं तहिं अतींतीओ सुट्ठुतरं बहुस्सुताओ जाताओ, रायगिहं गताओ, बाहिं उज्जाणे ठिताओ, चेतियाणि वंदंतीओ घरचेतियपरिवाडीए अभयस्स घरं
||१५९|| अतिगताओ निसीहियात्ति, अभयो दट्ठूण उम्मुक्कभूसणाओ सुरूवाओ उट्ठितो, सागतं निसीधियाएत्ति, चेतियाणि दरिसि- ||१५९||
ताणि, वंदिताणि य, अभयं वंदित्ता णिविट्ठाओ, जंमभूमीओ निक्खमणणाणपरिणेव्वाणभूमीओ य वंदावेति, पुच्छति-कतो?, ताहे कहंति- उज्जेणीए उम्मुक्को (अमुको)वाणियपुत्तो, तस्स भज्जाउ, सो कालगतो, अम्हे पव्वइतुकामाओ, न तीरति पव्वइताहिं

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१६०||

शिक्षायां अभयवृत्तं

वंदितुं पढितव्वएणंति, भणिताओ-पाहुणिकाओ होह, ताओ भणंति-अभत्तट्ठिकाओ अम्हे, सुचिरं अच्छित्ता गताओ, बियदिवसे अभओ एक्कओ आसेण पए गतो,एह मम घरे पारेहत्ति, भणंति-कतं इमं पारणगं,तुब्भेवि पारेह,चिंतेति-मा मम घरं न जाहिंतित्ति, भणति-एवं होतु,पजिमितो,संजोतिमं मज्जं पज्जितो, सुत्तो, ताहे आसरहेण पलाइतो,अंतरा य अण्णेवि रथा पुव्वं ठविता, एवं परंपरएण उज्जेणिं पावितो,उवणीतो पज्जोयस्स,भणितो य-कहिं ते पंडिच्चं?,सो भणति-धम्मच्छलेण वंचितो,निबद्धो,पुव्वाणीता य से तत्थ भज्जा, सा उवणीता, ताए का उप्पत्ती ?—

सेणिकस्स विज्जाहरो मित्तो, तस्स चिरं पीति होतुत्ति सेणिकेण सेणा भगिणी दिण्णा, निब्बंधे कते, सा य विज्जाहरस्स इट्ठा, एसा धरणिगोयरी अम्हं वहाएत्ति विज्जाहरीहिं मारिता, तीसे धूता, सा तेण मा एसा मारिज्जेज्जा सेणियस्स उवणीता, खिज्जितो य, सा जोव्वणत्था अभयस्स दिण्णा, सा विज्जाहरी अभयस्स इट्ठा, सेसिकाहिं महिलाहिं मातंगीओ ओलग्गिता, ताहिं विज्जाहिं जथा नमोक्कारे चविंखदियउदाहरणे जाव पच्चंते उज्झिता, तावसेहिं दिट्ठा, पुच्छिता-कतोसित्ति ?, कहितं, तत्थ सेणिकस्स पुव्वगा तावसा, तेहिं नत्तुका अम्हन्ति सारविता,सिवाए उज्जेणिं णेतुं दिण्णा। एवं तीए समं अभयो वसति, तस्स पज्जोयस्स चत्तारि रतणाणि- लोहजंघो लेहहारिओ १ अग्गिभीरू रथो २ णलगिरी हत्थी ३ सिवा देविति४, अण्णदा सो लोहजंघो भरुकच्छं विसज्जितो, ते य चिंतति-एसो एगेण दिवसेणं एति पंचवीसजोयणाणि, पुणो पुणो अम्हेहिं सद्दाविज्जामो, एतं मारेमो, जो अण्णो होहिति सो गणिएहिं दिवसेहिं एहिति, एच्चिरंपि ताव कालं सुहिता होमोत्ति तस्स संबलं पदिण्णा रायाणो, सो नेच्छति, ताधे वीधीए से दवावितं, तत्थवि पुव्वसंजोगिता विसमो- ||१६०||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१६१||

वर चतुष्कं

दगा दिण्णा, सेसकं संबलं हरितं, सो कतिवि जोयणाणि गंता नदीतीरे खामित्ति जाव सकुणो वारेति, उट्ठेत्ता पधाइतो, पुणो दूरं गंतुं पक्खइतो, तत्थवि वारितो, ततियंपि-णिवारितो, तेणं चिंतितं- भवितव्वं कारणेणंति, पज्जोतस्स मूलं गतो, निवेदितं रायकज्जं, तं च से परिकहितं, अभयो वियक्खणोत्ति सद्दावितो, तं च परिकहितं, अभयो भणति-एत्थ अमुकं२ च दव्वं, एस सप्पो संमुच्छिमो जातो, जदि उग्घाडितं होन्तं तो दिट्ठीविसेण सप्पेण दड्डो होंतो, तो किं कज्जतु ?, वणनिगुंजे मुयह, परंमुहं मुक्को, वणाणि दड्ढाणि, सो मुहुत्तेण मतो, तुट्ठो राया, भणितो-बंधणमोक्खवज्जं वरं वरेहित्ति, भणति-तुब्भं चेव हत्थे अच्छतु१। अण्णदा णलगिरी वियट्टो, ण तीरति गेण्हितुं, अभयो पुच्छितो, सो भणति-उदायणो गातउत्ति, सो उदायणो किहं बद्धोत्ति?। तस्स पज्जोतस्स धूता अंगारवती, अत्तिया वासवदत्ता, बहुयाओ कलाओ सिक्खिता, गंधव्वे उदायणो पधाणो, सो य कोसंबीए सयाणियमिगावईए य पुत्तो, सो घेप्पतुत्ति, केण उवाएण ?, सो किर जं हत्थीं पेच्छाति तत्थ गायति जाव बद्धंपि न याणति, एवं कालो वच्चति, पज्जोतेण जंतमओ हत्थी कतो, तस्स विसयंते चारिज्जति, तस्स वणचरेहिं कहितं, गतो, तत्थ खंधारो पेरंते अच्छति, सो य गायति, हत्थी ठितो, ढुक्को गहितो य, आणिओ य, भणितो-मम धुता काणा तं पेच्छसु मा, मा सा तुमं दट्ठूणं लज्जिहितित्ति, तीसेवि कहितं-उवज्झाओ कोढिओ मा दच्छिसित्ति, सो य जवणियंतरितो तं सिक्खावेति, सा तस्स सरेण हीरति, कोढिओत्ति ण जोएति, अण्णदा चिंतेति-जदि पेच्छामित्ति चिन्तंती अण्णहा पढति, तेण रुट्ठेण भणितं-किं काणे विणाससे ?, सा भणति- कोढिका! ण याणसि अप्पाणं ?, तेणं चिंतितं-जारिसो अहं कोढिओ तारिसा एसा काणत्ति, जइणिया फालिता, दिट्ठं, अवरोप्परं संजोगो जातो, नवरं कंचणमाला जाणति दासी, अम्मधाती य सच्चेव, अन्नया आलाणखंभाओ णलगिरी फि- ||१६१||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

वर चतुष्कं

डिओ, रायाए अभओ पुच्छिओ, उदायणो गायउत्ति, ताहे उदायणो भणति-भद्दवतीए हत्थिणिकाए अहं च दारिका य गायामो, जइणियंतरिता गीतं गायति, गहितो, इमाणिवि पलाताणि, एस बितीओ उ वरो२। अण्णे भणंति-उज्जिणिगाए गतो पज्जोतो, इमा दारिका णिंमाता, तत्थ गाविज्जिहितित्ति णिज्जति, तस्स उदायणस्स जोगंधरायणो अमच्चो, सो उम्मत्तकवेसेण पढति-जदि तां चैव तां चैव, तां चैवायतलोचनाम्। न हरामि नृपस्यार्थे, नाहं जोगंधरायणः ॥ १ ॥ सो य पज्जोतेण दिट्ठो, ठितओ चेव काइयं पवोसिरितो, णादरो कतो पिसाओत्ति, सा कंचणमालावि भिण्णरहस्सा, वसंतओ मेंठो. चत्तारि मुत्तघडियाओ विलइआओ, घोसवंती वीणा, कच्छाए बज्झंतीए सकुंतो नाम मंती अंधलओ भणति-कक्षायां बध्यमानायां, यथा रसति हस्तिनी। योजनानां शतं गत्वा, प्राणत्यागं करिष्यति ॥ १ ॥ ताहे सव्वजणसमुदयमज्झे उदायणो भणति-एष प्रयाति सार्थः, कांचनमाला वसंतकश्चैव। भद्रवती घोषवती, वासवदत्ता उदयनश्च ॥ १ ॥ पधाविता हत्थिणी, नलगिरी संनज्झति ताव पणुवीसं जोयणाणि गता, संनद्धो, पच्छतो लग्गो, अद्दऽदूरागते घडिका भिण्णा, जाव तं उवसिंघति ताव अण्णाणि पंचवीसं, एवं तिण्णिवि, णगरं च अतिगतो। अण्णदा उज्जेणीए अग्गी उट्ठितो,सो धूलीएवि जलति पाहाणेविहि इट्टिकाहिवि, णगरं डज्झति,अभओ पुच्छितो,

||१६२|| सो भणति-विषस्य विषमौषधं अग्नेः अग्निरेव, ताहे अग्गीतो अण्णो अग्गी कतो, ताहे ठितो, ततिओ वरो, सोवि तहेव अच्छउत्ति३। ||१६२||

अण्णदा उज्जेणीए असिवं उट्ठितं, अभयो पुच्छितो भणति-अब्भितरियाए अत्थाणीए देवीओ विभूसिताओ एज्जंतु, जा तुब्भे रायालंकारविभूसिते दिट्ठीए जिणति तं मम कहेज्जाह, तहेव कतं, राया पलोएति, सव्वाओ हेट्ठाहोंतिओ, सिवाए राया जिणितो, कहितं-तव चुल्लमातुगाए, भणति-रत्तिं अवसणा कुंभबलीए अच्चणियं करेतु, जं भूतं उट्ठेति तस्स मुहे कूरं छुब्भतु, तहेव कतं,

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने एवं चउक्के अट्टालएसु य, जाहे सा देवता सिवारूवेण वासति ताहे से मुखे कूरं छुभति, भणति-अहं सिवा गोवालगमातात्ति, एवं वर चतुष्कं
सव्वाणि णिज्जिताणि, तत्थ चउत्थो वरो४। अभयो चिंतेति-केच्चिरं अच्छामो?,जामोत्ति भणति-भट्टारगा! वरा दिज्जंतु, वरेहि पुत्ता!,
नलगिरिंमि हत्थिमि तुब्भे मिंठा सिवाए उच्छंगे निवण्णो अग्गिभीरुस्स रहस्स दारुएहिं चितका कीरतु, तत्थ पविसामि, राया
विसण्णो, तुट्ठो, विसज्जितो सक्कारितो य, ताहे अभओ भणाति-अहं तुब्भेहिं धम्मच्छलेण आणीतो, अहं पुण तुमं दिवसतो आदिच्चं
दीवकं कातूण रडंतं णगरस्स मज्झेण जदि न हरामि ता अग्गिंमि अतीमित्ति, तं भज्जं गहाय गतो। किंचि कालं
रायगिहे अच्छित्ता दो गणियदारिकाओ अपडिरूवाओ गहाय वाणियगवेसेण उज्जेणीए रायमग्गोगाढं आवासिं गेण्हति,
अण्णदा दिट्ठाओ पज्जोतेणं, ताहिवि सविलासाहिं दिट्ठीहिं निज्झाइतो, अंजली य से कतो, अतिगतो नियकभवणं, दूतिं पेसेति,
ताहिं परिकुवितािहं धाडिता, भणति-राया न होहित्ति, बितिए दिवसे सणियकं आरोसिता, ततिए दिवसे भणिता-सत्तमे
दिवसे देउले अम्हं देवजण्णओ तत्थ विरहो, इहरा भाता रक्खति, तेण य तारिसओ मणूसो पज्जोतोत्ति णामं कातूणं उम्मत्तओ
कओ, भणइ-एस मम भाता, सारवेमि णं, किं करेमि एरिसो भातिणेहो ?, सो भट्टो नट्ठो रडंतो पुणो पुणो आणिज्जति, उट्ठेह रे
अमुका दारुका! अहं पज्जोतो हीरामित्ति, सत्तमे दिवसे दूती पेसिता, एउ एगउत्ति भणियो,आगतो, गवक्खेणं तंतिताए विलग्गो,
॥१६३॥ मणूसेहिं पडिवक्खो बद्धो पल्लंकेणं समं, हीरति दिवसतो नगरमज्झेण, चींचीकरणमूलेणं पुच्छिज्जति, भणति-वेज्जघरं निज्जति, ॥१६३॥
अग्गतो आसरहेहिं उक्खित्तो, पावितो रायगिहं, सेणियस्स कहितं, असिं अंछित्ता आगतो, अभएण वारितो, किं कज्जतु ?,
सक्कारेत्ता विसज्जितो, पीती जाता ततो परं, एवं ता अभयस्स उट्ठाणपरियाणियं॥ तस्स सेणियस्स चेल्लणा देवी, तीसे उट्ठाणपरि-

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥१६४॥

देवदत्ताख्याः सुलसासुताः

गाणियं कहिज्जति, तत्थ रायगिहे पसेणतिसंतिओ नागो नामं रधिओ, तस्स सुलसा भज्जा, स पुत्तकामो इंदखंदादी नमंसाति, साविया णेच्छति, अण्णं परिणेहित्ति, सो भणति-जदि तव पुत्तो तेणं कज्जंति, तेणं विज्जोवदेसेणं तिहिं सतसहस्सेहिं तिण्णि तेल्लकुलवा पक्का, सकालए संलावो-एरिसा सुलसा साविकत्ति, देवो आगतो साधू, तज्जातियरूवेणं निसीहिका कता, उट्ठेत्ता वंदति, भणति-किमागमणं ?, तुम्ह सतसहस्सपाकं तेल्लं, तं देहि, वेज्जेण उवादिट्ठं, देमित्ति अतिगता, ओतारेंतीए भिण्णं पत्तगं, बितियं गहाय निग्गता, तंपि भिण्णं, तइयंपि भिण्णं, तुट्ठो देवो साहति जथाविधिं, बत्तीसं गुलियाओ देति, कमेण खाएज्जासि, बत्तीसं पुत्ता होहिंति, जदा य ते किंचि पयोअणं ताहे संभरेज्जासि तो एहामित्ति, ताए चिंतितं-को एच्चिरं मीढमुत्ताइं खाहिति ?, एताहिं सव्वाहिवि एको पुत्तो होज्जा, पुत्ताओ आधूता बत्तीसं, पोट्टं वड्डति, अद्धितीए काउस्सग्गो, देवो आगतो, पुच्छति, साहति-सव्वाओ खइताओ, सो भणइ-दुट्ठु ते कतं, एकाउया होहिन्ति, देवेण उवसामितं अस्सातं, कालेणं बत्तीसं पुत्ता जाता, सेणिकस्स सरिव्वया वड्डिता, तेऽविरहिगा जाता, देवदिण्णत्ति विक्खाता। एत्तो य वेसालीए नगरीए चेडओ राया हेहयकुलसंभूतो, तस्स देवीणं अण्णमण्णाणं सत्त धूताओ-पभावती पउमावती मिगावती सिवा जेट्ठा सुजेट्ठा चेल्लणत्ति, सो चेडओ सावओ, परविवाहकरणस्स पच्चक्खातं, धूताओ ण देति कस्सति, ताओ मातिमिस्सगाओ रायं आपुच्छित्ता अण्णेसिं इच्छितकाणं सरिसगाणं देति, पभावती वीतिभए उदायणस्स दिण्णा १ पउमावती चंपाए दहिवाहणस्स २ मिगावती कोसंबीए सताणियस्स ३ सिवा उज्जेणीए पज्जोतस्स ४ जेट्ठा कुंडग्गामे वद्धमाणसामिणो जेट्ठस्स नंदिवद्धणस्स दिण्णा ५, सुजेट्ठा चेल्लणा य दो कण्णगाओ अच्छंति, तं अंतपुरं परिव्वाइका अतिगता, ससमयं तासिं कहेति, सुजेट्ठाए निप्पट्ठपसिणवाकरणा कता, मुहमकडि- ॥१६४॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१६५||

याहिं निच्छूढा. पदोसमावण्णा निग्गता, अमरिसेणं सुजेट्ठाए फलए रूवं कातूणं सेणियस्स घरमतिगता, दिट्ठं सेणिएणं, पुच्छिता, कहितं, अद्धितिं करेति, वरओ दूतो विसज्जितो, तं भणति चेडओ-कहऽहं पाधियकुलए देमित्ति, पडिसिद्धो, घोरतरी अद्धिती जाता, अभयागमो, जधा णाते, पुच्छिते कहितं, अच्छह वीसत्था, आणेमित्ति, अतिगतो नियगभवणं,उवायं चिंतेत्ता वाणियग-रूवं करेति, सरभेदवण्णभेदे कातूणं वेसालिं गतो, कण्णंतेपुरसमीवे आवणं गेण्हति, चित्तपट्टए य सेणियस्स रूवं लिहति, ताहे ताओ कण्णंतेपुरदासीओ कज्जगस्स एन्ति. ताहे सुबहुं देति, ताओविय दाणमाणसंगहिताओ करेति, पुच्छंति-किं एतं चित्तपट्टए? भणइ--सेणिओ अम्ह सामिओ, किं एरिसं तस्स रूवं ?, को समत्थो तस्स रूवं कातुं?, जं वा तं वा लिहितं, दासचेडीहिं कण्णंतेपुरे कहितं, ताओ भणिताओ-आणेह ताव तं पट्टकं, दासीहिं मग्गितो, ण.देति, मा मज्झ सामिए अवन्नं काहिथ, बहुयाहि य जायणिकाहिं दिण्णो, पच्छण्णं पेसवितो, दिट्ठो सुजेट्ठाए, दासीओवि भिन्नरहस्साओ कयाओ,सो वाणियओ भणिओ, सो भणति-जदि एवं तो इहं चेव आणेमि सेणियं, आणितो, पच्छण्णं सुरंगा खता जाव कण्णंतेपुरं, सुजेट्ठा चेल्लणं आपुच्छति-जामि सेणिएण समं, दोवि पधाविताओ, जाव सुजेट्ठा आभरणाणं गता ताव मणुस्सा सुरंगाए उबेड्डा, चेल्लणं गहाय गता,सुजेट्ठाए आराडी कता, चेडओ संणद्धो, वीरंगिओ रहिओ भणति- भट्टारगा ! मा तुब्भे वच्चह, अहं आणामित्ति, निग्गतो, पच्छितओ लग्गति, तत्थ दरीए एक्को रहमग्गो, तत्थ ते वत्तीसं सुलसापुत्ता ठिता, ते वीरंगतेणं एगेण सरेण मारिता, जाव सो ते रहे ओसारेति ताव सेणिओ पलाओ. सोवि नियत्तो, सेणिओ संलवति सुजेट्ठत्ति. सा भणति- अहं चेल्लणा, सेणिओ भणति- सुजेट्ठतरिया तुमं चेव, सेणिकस्स हरिसोवि विसादोवि, हरिसो चेल्लणालंभेणं, विसादो रथिकमारणेण, चेल्लणाएवि हरिसो तस्स रूवेणं, विसादो भगि

चेल्लणानयनं ||१६५||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१६६||

णी वंचियात्ति । सुजेट्ठा य धिरत्थु कामभोगाणत्ति पव्वइता, चेल्लणाए पुत्तो जातो कोणिउत्ति, तस्स का उप्पत्ती ? । (कोणिकस्योत्पत्तिः)

एगं पच्चंतं नगरं, तत्थ जितसत्तुस्स पुत्तो सुमंगलो, अमच्चपुत्तो सेणिओत्ति पोट्टिओ, सो ओहसिज्जति, पाणिए उच्चालगं पज्जिज्जति, सो दुक्खाविज्जति सुमंगलेण, सो तेण निव्वेएणं बालतवस्सी पव्वइतो, सुमंगलोवि पितिरि मते राया जातो, अण्णदा सो तेण ओगासेणं वोलेंतो दिट्ठो, पुच्छति, लोगो भणति- एस एरिसं तवं करेति, रण्णो अणुकंपा जाता पुव्वं दुक्खाविओत्ति,निमंतिओ, मम घरे पारेहित्ति, मासखमणे पुण्णे गतो, राया पडिभग्गो, न दिण्णं, पुणोवि उट्ठितं पविट्ठो, संभारितो, पुणो गतो, निमंतेति, आगतो, पुणोवि पडिभग्गोत्ति, पुणोऽवि उट्ठियं पविट्ठो, पुणोवि निमंतेति तइयं, तइयाएवि अणातो बारवालेहिं पिट्टितो, जदिहेल्लाओ एति ततिहेल्लाओ राया पडिभग्गति,सो निग्गतो, अद्धितीए अहं पव्वइतो मि तहावि धरसितो एतेणंति निदाणं करेति,एतस्स वधाए उववज्जामित्ति, कालगतो अप्पिड्डितो वाणमंतरो जातो, सोवि राया तावसो पव्वइतो, वाणमंतरो जातो, पुव्वं राया सेणिओ, कोणिओ कुंडसमणो जं चेव चेल्लणाए पोट्टे उववण्णो तं चेव चिंतेति- किह रायाणं अच्छीहिवि ण पेच्छेज्जत्ति, तीए चिंतितं-एयस्स गब्भस्स दोसोत्ति, गब्भपातणेहिवि न पडति, दोहलकाले दोहलो, कह ?- सेणियस्स उदरवलिमंसाणि खाएज्ज, अब्भंतरे परिहाति, न य अक्खाति, निब्बंधे सावितए कहितं, अभयस्स कहितं, ससगचंमेणं मंसं कप्पेत्ता वलीए उवरि दिण्णं, तीसे ओलोगणगताए पेच्छमाणीए दिज्जति, राया अलिगमुच्छिताइं करेति, जाहे सेणियं ||१६६|| चिंतेति ताहे अद्धिती उप्पज्जति, जाहे गब्भं चिंतेति किह सव्वंपि खाएज्जामि?, एवं माणितो णवहिं मासेहिं दारओ जातो, रण्णो निवेदितो, तुट्ठो, दासीए छड्डावितो असोगवणियाए,सेणियस्स कहितं,आगतो,अंबाडिया-कीस पढमपुत्तो उज्झितोत्ति?, गतो

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥१६७॥

हारादी-नामुत्पत्तिः

असोगवणितं,तेण सा उज्जोविता,सो भणति-असोगवणचंदउत्ति,असोगचंदुत्ति नामं च से कतं,तत्थ य कुक्कुडपिच्छेणं कार्णगुली से विद्धा सुकुमालिया, सा ण पाउणति,सा कुणिगा जाता, ताहे से दारगरूवेहिं कतं नामं कुणिओत्ति, जाहे य किर तं अंगुलिं पूतं गलिति सेणिओ मुखे करेति ताहे ठाति, इतरहा रोवति, सो य संवड्ढति। इतो य अण्णे दो पुत्ता जमला चेल्लणाए जाता- हल्लो विहल्लो य, अण्णे सेणियस्स बहवे पुत्ता अण्णासिं देवीणं, जाहे य किर उज्जाणिकाए खंधावारं वा जाति ताहे चेल्लणा कूणियस्स गुलमोदए पेसेति, हल्लविहल्लाणं खंडकते,तेणं वेरेणं कूणिओ चिंतेति-एते सणिओ ममं देतित्ति पदोसं वहति, अण्णदा कूणियस्स अट्ठहिं रायवरकण्णाहिं समं विवाहो कतो,अट्ठओ दाओ जाव उप्पिं पासादगतो विहरति। एसा चेल्लणाए उप्पत्ती कहिता ॥ सेणियस्स रण्णो किर जावतियं रज्जस्स मोल्लं तावतियं देवदिण्णस्स हारस्स सेतणगस्स य गंधहत्थिरयणस्स मोल्लं,तेसिं उप्पाण-परियाणियं कहेतव्वं, हारस्स का उप्पत्ती?, कोसंबी नगरी,धिज्जातिगिणि गुव्विणी पतिं भणति-घतमोल्लं विढवेहि, कं मग्गामि?, भणति- रायाणं पुप्फेहिं ओलग्गाहि, ण य वारिज्जिहिसि, सो य ओलग्गितो पुप्फफलादिएहिं, एवं कालो वच्चति। अण्णदा पज्जोतो कोसंबीं वच्चति, सो य सताणिओ तस्स भयेणं जउणदक्खिणकूलं उड्डवेत्ता उत्तरं कूलं एति, सो य पज्जोतो न तरति जउणं उत्तरिउं, कोसंबीए दक्खिणपासे खंधावारं निवेसइत्ता तावेति, जे य तस्स तणहारिगादी तेसिं वातघोडएहिं गंतुं कण्ण-णासा छेदिज्जंति, सताणिकमणूसा एवं परिक्खीणा, एगाए रत्तीए पलातो, तं च तेण पुप्फपुडिकागतेणं दिट्ठं, रण्णो य निवेदितं, ॥१६७॥
राया तुट्ठो भणति- भण किं पदेमि?, भणति- जा बंभणीं पुच्छामि, पुच्छिता भणति- अग्गासणे कूरं मग्गाहित्ति, एवं सो जेमेति दिवसे दिवसे दीणारं लभति दक्खिणं, एवं ते कुमारामच्चादि चिंतिंति-एस रण्णो अब्भासिओ दाणगहितो कीरहत्ति तेवि देंति,

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ॥१,२॥ दीप अनुक्रम [११-३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥१६८॥

खद्धादाणिओ जातो, पुत्तावि से जाता, सो तं बहुकं जेमेतव्वं, ण जीरति ताहे वमेति, जिमितो जिमितो दीणारं लभति, पच्छा से कोढं जातं, अभिग्रस्तो तेण, ताहे कुमारामच्चा भणंति पुत्ते विसज्जेह, तुब्भे अच्छह, ताहे से पुत्ता जेमेंति, ताणवि तहेव भणंति, पितुणा लज्जितुमारद्धा, पत्थतो से घरं कतं, ताहे ते सुण्हाओ न तहा वट्टितुमारद्धाओ, पुत्तावि णाढायंति, तेणं चिंतितं- एताणि ममं दव्वेण वड्डिताणि ममं चेव विहसंति, तह करेमि जह एताणिवि वसणं पावंति। अण्णदा पुत्ता सद्दाविता, भणति- पुत्ता! मम किं जीवितेणं?, अम्ह कुलपरंपरागतो पसुपधो तं करेमि, तो अणासयं काहामि, तेहिं से कालओ थंभो दिण्णो, सो तेण अप्पगं उल्लिहावेति उव्वलणियाओ पक्खावेति, जाहे णायं सुगहितो एसो कोढेणंति ताहे लोमाइं ओक्खणति, फुसति एति, ताहे मारेत्ता भणति-तुब्भेहिं चेव खाइतव्वो, तेहिं रूइतो, कोढेणं गहिताणि, सोवि उट्ठेत्ता णट्ठो, एगत्थ अडवीए पव्वतदरीए णाणाविहाणं रुक्खाणं तयपत्तफलाणि य पडियाणि तिफला य पडिता, सो सारदेण उण्हेण कक्को जातो, तं निव्विण्णो पियति, तेण पोट्टं भिण्णं, सोहिते सज्जो जातो, आगतो सगिहं, जणो भणति-किह णट्ठं?, भणति-देवेहिं नासितं, ताणि पेच्छति सडसडेन्ताणि, भणति-किह तात! तुब्भे?, खिंसणा, ताहे ताणि भणंति-तुमे पाविताणि अम्हे एयमवत्थं?, भणति-बाढंति, सो जणेण खिंसितुमारद्धा, ताहे नट्ठो गतो रायगिहं, दारपालिएण समं दारे वसति, तत्थ बारजक्खीए जो चरुओ तं भुंजति, अण्णदा तुंडरगा बहु खाइता, सामिस्स समोसरणं, सो बारपालिओ तं ठवेत्ता भगवतो वंदओ गतो, सो दारं न छड्डीति, तिसाइतो मतो, वावीए मंडुक्को जातो, पुव्वभवं सरति, उत्तिण्णो, पधाइतो सामिं वंदओ, सेणिको णीति, तत्थ एक्केण अस्सकिसोरिण अक्कंतो मतो देवो जातो॥ सक्को सेणियं पसंसति, सो समोसरणे सेणिकस्स मूले कोढिकरूवेण निविट्ठो, सामिं चच्चरिक्काहिं

द्वारादीनामुत्पत्ति: ॥१६८॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१६९||

हारादी-नामुत्पत्तिः

कोढोपत्तणिगाहिं सिंचाति, तत्थ सामिणा छीतं, सो देवो भणति-मर, अभएण छीतं, भणति-जीव वा मर वा, सेणिएण छीतं, भणति- चिरं जीवाहि, कालसोवरिएण छीतं, भणति-मा जीव मा मर, सेणिओ रुट्ठो भट्टारए मर इति भणिते, मणुस्सा सण्णिता- उट्ठिते समोसरणे ममं उवणेज्जाह, सोवि पलाओ, न तीरति गेण्हितूणं, नातो देवोत्ति, गतो घरं, बितियये दिवसे पए गतो पुच्छति-को सोत्ति ?, ततो से पुव्ववुत्तंतं भट्टारगो परिकहेति जाव देवो जातोत्ति, तो तुब्भेहिं छीतेहिं किं एवं भणति ?, भगवं आह-ममं भणति-कीस संसारे अच्छसि, णेव्वाणं गच्छत्ति, तुमं जाव जीवसि ताव सुहं, मतो नरगं जाहिसि, अभयो इहवि चेइयसा- धुपूयाए पुण्णं समज्जिणाति, मतो य देवलोगं जाहिति, कालो जादि जीवति ता दिवसे २ पंच महिसकसताणि मारेति, मतो य नरगं जाति, सेणिओ सामिं भणति- भगवं ! आणाहि, अहं कीस नरकं जामि ?, केण वा उवाएणं नरकं न गच्छेज्जा ?, सामी भणति-जदि कालसोयरियं सूणं मोएहि जदि य कविलं माहणिं भिक्खं दवावेहि तो तुमंपि न गच्छेज्जासि नरकं, सो तेसिं मूलं गतो, वीमंसिता य णं सव्वपगारेहिं, णेच्छंति, से किर अभव्वसिद्धीओ, धिज्जातिकीणी य कविला, न पडिवज्जति जिणवयणं, सेणि- एण गंतूण धिज्जातिणिणी भणिता सामेण-साधू वंदाहि, णेच्छति, भणिता-मारेमि, तहवि णेच्छति, कालोवि णेच्छति, भणति- मम गुणेण एत्तिओ जणो सुहितो नगरं च, को व एत्थ दोसोत्ति, तस्स पुत्तो सुलसो नाम, सो अभएण उवसामितो, सो किर कालो मरितुमारद्धो, तस्स पंचहिं महिससतेहिं ऊणं अहे सत्तमाए पायोग्गं, अण्णदा तेणं पुत्तेण पंच महिससता से पला- विया, तेण विभंगेण दिट्ठा माराविता, तस्स य मरणकाले सोलस रोगातंका पादुब्भूता, अस्सायबहुलताते य नरकपडिरूवपोग्ग- लपरिणामो संवुत्तो, विवरीता इंदियत्था जाता, गीतं सुतिमधुरं अक्कोसंति मण्णति, मणोहराणि रूवाणि विकताणि, खीरं खंड- ||१६९||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

सेचनकस्योत्पत्तिः

सक्करोवणीतं पूइयंति मण्णति, चंदणाणुलेवणं मुंमुरं वेदेति, हंसतूलमउइं सेज्जं कंटकिसाहासंचयं पडिसंवेदेति, तस्स य तहाविहं भावं जाणितूण पुत्तेण से अभयस्स कहितं, ताहे चंदणिकापाणिकं दिज्जति, भणति-अहो मिट्ठं, मीढेण य विलिप्पति, पूतिमंसाणि से आहारो, एवं किलिस्सितूण मतो अहे सत्तमं गतो । ताहे सयणेण पुत्तो ठविज्जति, सो नेच्छति, मा नरकं जाइस्सामि, ताणि भणंति— अम्हे तं पावं विरिंचिस्सामो, तुमं नवरं एक्कं मारेहि सेसगं सव्वं परिजणो काहिति, तत्थ महिसगो दिक्खिओ कुहाडो य, रत्तचंदणेणं रत्तकणवीरियाहि य दोवि मंडिता, तेण कुहाडेण अप्पओ आहओ मणागं, मुच्छितो पडितो विलवति य, सयणे भणति- एयं दुक्खं अवणेह, न तीरतित्ति भणितो, तो कहं भणह-अम्हे तं विरिंचिहामोत्ति ?, एतं अधिकारेण भणितं । तेण देवेण सेणिकस्स तुट्ठेणं अट्ठारसवंको हारो दिण्णो दोण्णि य अक्खाडिमतया दिण्णा, सो हारो चेल्लणाए दिण्णो, वट्टा नंदाए, ताए रुट्ठाए किं अहं चेडरूवत्ति कातूणं खंभे आवाडिता, तत्थ एक्कंमि कुंडलजुयलं एक्कंमि देवदूसजुयलं, तुट्ठाए गहिताइं, एवं हारो उप्पण्णो । सेयणगस्स उप्पत्ती—

एकत्थ वणे हत्थिजूहं, तंमि जूहे एगो हत्थी जाते जाते हत्थिबालये मारेति, एगा हत्थिणिगा गुव्विणी, सा सणिकं २ ओसरित्ता एकल्लिका चरति, अण्णदा कदाइ तणपिंडगं सीसे कातूणं तावसाणं आवासं गता, तेसिं तावसाणं पाएसु पडिता, तेणं

||१७०|| नाणं, सरणागतिका वराईका । अण्णदा तत्थ चरंती वियाता पुत्तं, हत्थिजूहे चरित्ता छिद्देण गंतूणं थणकं दातूणं जाति, एवं ||१७०||

संवड्ढति, तत्थ तावसपुत्तगा पुप्फजातीओ सिंचंति, सोवि सोंडाए पाणितं णेतूण सिंचति, ताहे से नामं कतं सेयणउत्ति, संवड्ढितो, मयकालो जातो, ताहे तेणं सो जूहपती गंतूणं मारितो, अप्पणा जूहं पडिवण्णो । अण्णदा तेहिं तावसेहिं राजा गामं दाहितित्ति

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

मोदएहिं लोभवेत्ता राजगिहं णीतो, पवेसावेत्ता बद्धो सालाए, अण्णदा कुलवती तेण चेव पुव्वब्भासेणं ढुको भणति-किं पुत्ता ! सेचणका !, हत्थं से पणामेति, तेण हत्थिणा सो लएतूण मारितो । अण्णे भणंति-जूहपतिणा ठितेण मा अण्णावि एत्थ वियाहितित्ति ते तावसकुडगा भग्गा, तेहिं तावसेहिं रुट्ठेहिं रण्णो कहितं सेणिकस्स, पच्छा सेणिकेण गहितो, एसा सेयणकस्स उप्पत्ती । पुव्वभवो तस्स-एको धिज्जातिको जण्णं जयति, तस्स दुयक्खरओ तेण जण्णपाडे ठवितो, सो भणति- जदि सेसं ममं देहि,इहरहा णवि, एतेण भणितं-होउत्ति, सो ठितो, जं सेसं तं साहूणं देति, तेण देवाउकं निबद्धं, देवलोकं गतो, चुतो सेणिकस्स सुतो जातो णंदिसेणकुमारो, धिज्जातिओऽवि संसारं हिंडितूण सेचणओ जातो, जाधे किर णंदिसेणो विलग्गति ताहे ओहयमणसंकप्पो अच्छति णिम्मदो य, जाती ओधिणा जाणति, सामी पुच्छितो, एयं सव्वं परिकहेति । एसा सेयणकस्स उप्पत्ती ॥

अभओ किर सामीं पुच्छति--को अपच्छिमो रायरिसित्ति?, सामिणा भणितं-उद्दायणो, अतो परं बद्धमउडो न पव्वयति, ताहे अभयस्स किर सेणिएण रज्जं दिण्णं णेच्छति, पच्छा सेणिको चिंतेति-मा कोणिकस्स दिज्जंतित्ति हल्लस्स हत्थी दिण्णो विहल्लस्स देवदिण्णो हारो, अभयंमि पव्वयंतंमि नंदाए देवदूसजूयलं कुंडलाणि य हल्लविहल्लाणं दिण्णाणि, महता इड्ढीए अभओ समातिओ पव्वतिओ । अण्णदा कोणिओ कालादीहिं कुमारेहिं समं मंतेति-सेणियं बंधित्ता एकारसभागे रज्जं करेमुत्ति, तेहिं पडिस्सुतं,
॥१७१॥ सेणिओ बद्धो,पुव्वण्हे अवरण्हे य कससतं दवावेति,चेल्लणाए कतोवि ढोकं न देति,भत्तं वारितं पाणियं चेति,ताहे चेलणाए कुंमासे वाले ॥१७१॥
बंधित्ता सताओयाए सुराए केसे आउट्टिता पविसति,सा किर धुव्वति सतं वारे पाणियं सव्वं सुरा भवति, तीए पभावेणं वेयणं न चेतेति। अण्णदा कदाइ पउमावतीए पुत्तो उदाती कुमारो,सो जेमंतस्स हत्थे थाले य मुत्तति,ण य चालेति मा रुमिज्जिहितित्ति,जत्तितं

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१७२||

चेटकेनसह युद्धं

भुत्तितं तत्तिलकं कूरं अवणेत्ता सेसं जिमितो,मातं भणति–अम्मो! अण्णस्सवि कस्सवि एयप्पिओ पुत्तो होज्जा?,सा भणति-दुरात्मा! तव अंगुली किमिए वमंती पिता मुहे काउं अच्छियाइतो, इहरहा तुमं रोवासि, ताहे से चित्तं मउकं जातं, भणति-किं खाइ मे गुलमोदए पेसेति?, देवी भणति-मए ते कता, जेण तुमं सदा पितिवेरिओ उदरा आरद्धत्ति सव्वं कहेति, तथावि तुज्झ पिता न विरज्जति, तहवि तुमए पिता एरिसं वसणं पावितो, तस्स अद्धिती जाता, सुणेंतओ चेव उट्ठाय बाया (हा) मितं लोहडंडं गहाय निगलाणि भंजिस्सामीति पधावितो,रक्खवालेहिं रण्णो हितेण णिवेदितं-एस भा (पा) वो लोहडंडं गहाय एतित्ति,सेणिओ चिंतेति-को जाणति केणवि कुमारेण मारिहितित्ति तालपुडं विसं खइतं जाव एति ताव मतो, दट्ठूण सुट्ठुतरं अद्धिती जाता, ताहे दहितूण घरं आगतो, रज्जधुरमुक्कतत्ती तं चेव चिंतेंतो अच्छति, कुमारामच्चेहिं चिंतितं- नट्ठो राया होतित्ति तंबिए सासणे लिहित्ता जुण्णं कातूण उवणीतं, एवं पितुणो कीरति पिंडदाणं नित्थारिज्जतित्ति, तप्पभितिं पितिपिंडनिवेदणा पवत्ता, एवं कालेणं विसोगो जातो। पुणरवि तं पितुसंतिकं अत्थाणियं आसणसयणपरिभोगेण दट्ठूण अद्धितित्ति ततो निग्गतो चंपं रायहाणिं करेति ॥

ते य हल्लविहल्ला तेण सेयणयहत्थिणा समं भवणेसु उज्जाणेसु पुक्खरिणीसु य अभिरमंति,सोवि हत्थी अंतेपुरियाओ अभिरमावेति, तं पउमावती पेच्छति, णगरमज्झेण गते हल्लविहल्ला,हारेण य कुंडलेहि य देवदूसजूयलेण विभूसिता हत्थिवरखंधग तापासितूण अद्धितिं गता कूणियं विण्णवेति, सो नेच्छइ पितुणा दिण्णंति, एवं बहुसो बहुसो भण्णंतस्स चित्तमुव्वत्तं ॥ अण्णदा हल्लविहल्ले ||१७२||
भणति-रज्जं अद्धद्धेण विरिंचामो सेयणकं मम देह, तेहिं माऽऽसुरुक्खं, चिंतितं देमोत्ति भणति, गता य सभवणं, एक्काए रत्तीए संतेपुरपरिवारा वेसालिं गता अज्जकमूले, कोणिकस्स कहितं जथा नट्ठा कुमारा, तेण य चिंतितं-तेवि न जाता हत्थीवि, अमरि-

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ॥१,२॥ दीप अनुक्रम [११-३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥१७३॥

सेण चेडगस्स दूतं पेसेति- जदि गता कुमारा गता, मम हत्थी पेसह, चेडओ भणति-जहा तुमं दोहित्तो तधा एतेऽवि, किह एताणं हरामि ?, न देमित्ति, दूतो अतिगतो कहितं च, पुणोऽवि दूतो पट्ठवितो-देह न देति, ताहे भणति-जुद्धसज्जा होह एमित्ति, भण्णाति-जथा रुच्चति, ताहे कूणिएण कालादिया दस कुमारा आवाहिता, तत्थ एक्केक्कस्स तिण्णि तिण्णि हत्थीसहस्साणि तिण्णि तिण्णि रहसहस्साणि तिण्णि तिण्णि अस्ससतसहस्साणि तिण्णि तिण्णि मणूस्सा कोडिओ, कूणिकस्सवि एत्तिकं, सव्वसंक्खेवो-तेत्तीसं सहस्सा हत्थीणं रहाणं च,हयाणं च सतसहस्सा,कोडीओ मणूसाणं,तं सोतूण चेडएणवि गणरायाणो मेलित्ता देसप्पंते ठिता,तेसिंपि अट्ठारसण्हं रायीणं समं चेडएणं तओ हत्थिसहस्सा रहसहस्सा मणुस्स कोडीओ तहा चेव, नवरि संखेवो-सत्तावण्णा सत्तावण्णो। ताहे जुद्धं संपलग्गं, कूणिकस्स कालो डंडणादओ, दो वूहा कता कोणिकस्स गरुलवूहो चेडगस्स सागरवूहो, कालो जुज्झंतो ताव गतो जाव चेडओ, चेडएण एकस्स सरस्स आगारो कतो, सो य अमोहो, तेण सो कालो मारितो, भग्गं कूणिकस्स बलं, पडिनियत्ता सए आवासे, एवं दसहिं दिवसेहिं दसवि जणा हता चेडएण कालादीया,एक्कारसमे दिवसे कोणिओ अट्ठमभत्तं गेण्हति, सक्कचमरा आगता, सक्को भणति- चेडओ सावओ अहं न पहरामि, नवरं तुमं सारक्खामि, एत्थ महासिलाकंटको रथमुसले य वण्णेतव्वा जधा पण्णत्तीए, ते किर चमरेण विकुव्विता, ताहे चेडगसरो किर वइरपडिरूवगे अप्फिडति, गणरायाणो णट्ठा सनगरे गता. चेडओ विसालिं गतो, रोधकसज्जो ठितो। एवं बारस वासा जाता रोहिज्जंतस्स, तत्थ य रोधए हल्लविहल्ला सेयणएण निग्गता बलं मारेति दिणे दिणे, कुणिओवि परिक्खिहिअति हत्थिणा, अण्णदा चिंतेति-को उवाओ जेण मारेज्जेज्जा?, कुमारामच्चा भणंति-जदि नवरि हत्थी मारिज्जति, अमरिसिओ भणति-मारेज्जउ, ताहे इंगालखड्डा कता, ताहे सेयणओ

चेटकेनसह युद्धं

॥१७३॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ॥१,२॥ दीप अनुक्रम [११-३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥१७४॥ — महेश्वरोत्पत्तिः

ओधिणा पेच्छति, न वोलेति खड्डं, ताहे कुमारा भणंति-तुब्भ निमित्तं इमं आवदिं पत्ता, तोवि णेच्छाति,ताहे ते सेयणएण उत्तारिया,सो य ताए खड्डाए पडितो रतणप्पभाए उववण्णो । तेवि कुमारा सामिस्स सीसात्ति वोसिरन्ति,देवताए हरिता । तहवि नगरी न पडति,कोणिकस्स चिंता । ताहे कुलवारकस्स रुट्ठा देवता आगासे भणति-समणे जदि कूलवालए, मागहियं गणियं लभेहिति । तद लाय असोगचंदए,वेसालिं नगरिं गहेस्सती॥१॥ तं सुणंतओ चेव चंपं गतो,कूलवारगं पुच्छति, कहितं, मागहिया सद्दाविता, विडसाविगा जाता, पधाविता । तस्स उप्पत्ती—जथा नमोक्कारे । सिद्धसिलगमण खुड्डुग पडिणिय सिललोट्टणा य विक्खंभो । सावो मिच्छावादित्ति निग्गतो कूलवालवतो ॥ १ ॥ तावस पल्ली नदिवारणं च कोधो य कोणिए कहणं । मागहियगमण वंदण मोदग अतिसार आणणता ॥ २ ॥ पडिचरणोभासणता कोणिय गणिकत्ति गमण निग्गमणं । वेसाली जह घेप्पति उदिक्ख जा ता गवेसामि ॥ ३ ॥ वेसालि गमण मग्गण सातिकारवण कहण मा तुट्ठा । थूभ णरिंदणिवारण इट्ठग निक्खालण पलातो ॥ ४ ॥ पडिआगमणं रोहण गद्दभहलवाहणापतिण्णा य । चेडगनिग्गम बहुपरिणतो य माता उवालद्धो ॥ ५ ॥ कोणिको भणइ- चेडक ! किं करोमि ?, भणति-जाव पुक्खरिणीतो उट्ठेमि ताव नगरीं मा अतीहित्ति, तेण पडिवण्णं, चेडओ सव्वलोहमियं पडिमं गले बंधिउं ओतिण्णो, धरणेणं सभवणं णीतो , कालगतो देवत्ते गतो । विसालीजणो सव्वो महिस्सरेण णेमालवत्तिणं साहारितो । को माहिस्सरोत्ति?, ॥१७४॥

तस्सेव चेडगस्स धूता सुजेट्ठा वेरग्गेणं पव्वइता , सा उवस्सयस्स अंतो आतावेति , इतो य पेढालो परिव्वायओ, सो विज्जासिद्धो विज्जाओ दातुकामो पुरिसं मग्गति , जदि बंभचारिणीए पुत्तो होज्जा तो सो सुंदरे होज्जा , तं

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥१७५॥

महेश्वरोत्पत्तिः

आतावेंतिगं दट्ठूणं धूमिकवामोहं कानूणं विज्जाए विवज्जासो, तत्थ उउकाले जाते गब्भो, अतिसतणाणीहिं कहितं-ण एताए कामकारो जातो, सङ्कुधरे वङ्काबितो, समोसरणं गतो साहुणीहिं समं, तत्थ य कालसंदीवो वंदित्ता सामिं पुच्छति-कतो मे भयं ?, सामी भणति-सच्चइतो तातेति, ताहे तस्स मूलं गतो, अवण्णाए भणति-अरे तुमं मं मारेहिसित्ति पादेसु बला पाडितो, संवड्ढियो, अण्णदा तेण परिव्वायकेण हितो, विज्जाओ सिक्खावितो, महारोहिणिं साहेति, इमं सत्तमं भवं, पंचसु भवग्गहणेसु मारितो, छट्ठे छम्मासावसेसाउगेण णेच्छिता, इहमारद्धो साहितुं, अणाहमतिए चितिकां कातूणं उज्जालेत्ता अल्लचम्मं वितङ्केत्ता वामेणं अंगुट्ठएणं चंक्कंमति जाव कट्ठाणि जलंति, एत्थंतरे कालसंदीवो आगतो कट्ठाणि छुभति, सत्तरत्तो गतो, देवता से सरूवेण उवट्ठिता भणति-मा विग्घं करेहि, अहं एतस्स सिज्झितुकामा, सिद्धा, केई भणंति-पिट्ठमओ विसो कतो, भणति-एगं उत्तमं अंगं परिच्चय जा ते पविसामि सरीरं, तेण निडालं दिण्णं, सा निडालेण अतिगता, तत्थ बिलं जातं, देवताए ततियं अच्छिं कयं से, तेणं पेढालो मारितो मम माता रायभूता एतेण धरिसितात्ति, पच्छा कालसंदीवं आभोएति, दिट्ठो, पलातो, पच्छतो ओलग्गति, एवं हेट्ठा य उवरिं य, णातुं कालसंदीवेण तिण्णि पुराणि विकुव्विताणि, सोवि ताणि विकुव्वित्ता सामिपादमूले अच्छति, ताणि देवताणि पहतो, ताहे ताणि भणंति-अम्हे विज्जाओ सो भट्टारगमूले गतोत्ति, तत्थ गतो, एक्कमेक्कं खामितो, अण्णे भणंति-लवणे महापाताले मारितोत्ति, पच्छा सो विज्जाचक्कवट्टी तिसंझं सव्वतित्थगरे वंदित्ता नट्टं च दाएत्ता पच्छा सो अभिरमति, तेण इंदेण से महिस्सरो नामं कतं। सो य किर धिज्जातियाणं पदोसमावण्णो, कण्णाणं सतं सतं विणासेति, अण्णेसु य अंतेउरेसु अभिरमति, तस्स दो मित्ता-नंदी य नंदीसरो य, एवं पुप्फएण विमाणेण अभिरमति, एवं कालो वच्चति, अण्णया उज्जे- ॥१७५॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१७६||

णीए पज्जोतस्स अंतेपुरे सिवं मोत्तूणं सेसिकाओ धरिसेति, पज्जोतो चिंतेति-को उवाओ होज्जा जेण एसो विणासेज्जा?, तत्थ एका उमा नाम गणिका अतीव रूवस्सिणी, सा किर धूवपग्गहं गेण्हति जाहे अंतेण एति, वच्चंते काले ओतिण्णो, ताए दोण्णि पुप्फाणि विकसितं च मउलितं च पणामितं, महेस्सरेण फुल्लितस्स हत्थो पणामितो, सा मउलं पणामेइ, एतस्स तुब्भे अरिहात्ति, कहं?, ताहे भणति-एरिसकाओ कण्णाओ, ममं ताव पेक्खहत्ति, तीए सह संवसति, तीए हतहियओ कतो, एवं कालो वच्चाति। सा पुच्छति-काए वेलाए विज्जाओ ओसरति ?, तेण सिट्ठं-जाहे मेहुणं सेवामित्ति, तीए रण्णो कहितं, मा ममंपि मारेहिहत्ति, पुरिसेहिं अंगस्स उवरिं जोगा दरिसिया, एवं रक्खामो, ते य पज्जोतेण भणिता-सह एताएवि मारेज्जाह, मा य दुराहयं करेहि, ताहे मणुस्सा पच्छण्णा कता, ताहिं संसट्ठो मारितो सह ताए, ताहे नंदिस्सरो ताहिं विज्जाहिं अधिट्ठितो आगासे सिलं वेउव्वित्ता भणति-हा दासा! मतत्ति, ताहे सनगरो राया उल्लपडसाडओ पाएसु पडितो. खमाहि एक्कवराहन्ति, सो भणति-जदि एतस्स सव्वणगं अच्चेह तो मुयामित्ति, एवं च नगरे नगरे ठवेहात्ति, तेसिं पडिवण्णो, आयतणाणि कारिताणि, एसा माहिस्सरउप्पत्ती ॥

ताहे सुणगं नगरं कूणिको अतिगतो, गदभणंगलेहिं वाहेति, एत्थंतरे सेणिकभज्जाओ कालिमातिकाउ पुच्छंति-अम्हं पुत्ता संगामातो एहिन्ति णवित्ति, जधा निरयावलियाए पव्वइताओ। ताहे कूणिको चंपमागतो, तत्थ सामी समोसढो, ताहे कूणिको चिंतेति-बहुगा मम हत्थी अस्सावि, तो जामि सामिं पुच्छामि- अहं चक्कवट्टी होमि न होमित्ति ?, निग्गतो सव्वबलसमुदएणं, वंदित्ता भणति-केवइया चक्कवट्टी एस्सा?, सामी साहति-सव्वे अतीता, पुणो भणति-कहिं ओवज्जिस्सामि?, छट्ठीए पुढवीए, तहवि असद्दहंतो सव्वाणि एगिंदियाणि लोहमयाणि रयणाणि करेत्ता ताहे सव्वबलेन तिमिसगुहं गतो, अट्ठमे भत्ते कते भणति कतमालओ-

महेश्वरोत्पत्तिः ||१७६||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१७७||

अतीता चक्कवट्टिणो, जाहित्ति, पेच्छति, हत्थिं विलग्गो, मणिं हत्थिमत्थए कातूण पत्थितो, कतमालएण आहतो मतो, छट्ठीए पुढवीए गतो । ताहे ते रायाणो उदायिं ठवेति, उदायिस्सवि चिंता जाता, एत्थ नगरे मम पिता आसित्ति अद्धितीए अण्णं नगरं कारेति,मग्गह वत्थुंति वत्थुपाढगा पेसिता,तेवि एगत्थ पाडली उवरिं चासो अववासितेणं तुंडेणं पासंति, कीडगा से अप्पणो च्चेव मुहं अतिन्ति । किह सा पाडलित्ति ?,—

दो महुराओ-दक्षिणा उत्तरा य, उत्तरमहुराओ वाणियदारओ दक्षिणमहुरं वहणजत्ताए गतो, तत्थ तस्स एक्केण वाणियएण सह मित्तता, तस्स भगिणी अण्णिका, तेण भत्तं कतं, सा से जेमेन्तस्स वीयणकं धरेति, सो तं पाएसु आरद्धो णिवण्णोति, अज्झोववण्णो, मग्गाविया, ताणि तं भणंति-जदि इहं चेव अच्छासि जाव एक्कं दारगरूवं जाति तो देमो, पडिवण्णो, दिण्णा, एवं कालो वच्चति, अण्णया तस्स दारगस्स अंमापितीहिं लेहो पेसितो-'अम्हे अंधलीभूताणि, जदि जीवंताण पेच्छतो तो एहि,' से लेहो उवणीतो, सो तं वायति, अंसूणि मुयमाणो तीए दिट्ठो, पुच्छति, न किंचि साहति , तीए लेहो गहितो, वायितो, तं भणति-मा अद्धितिं करेहि,आपुच्छामि, तीए सव्वं अंमापितूणं कहितं,विसज्जिताणि,णिग्गताणि दक्षिणतो महुराओ,सा य अण्णिका गुव्विणी, सा अंतरापहे वियाता , चिंतेति- अंमापितरो नामं काहिंतित्ति न कतं , ताहे रमावेंतो जणो भणति- अण्णिआपुत्तोत्ति, कालेण पत्ताणि, तेहिवि से तं चेव नामं कतं, अण्णं न पतिट्ठाहितित्ति, ताहे सो अण्णिकापुत्तो अमुक्कबालभावो भोगे अवहाय पव्वइतो, थेरत्तणे विहरमाणो गंगाए तडे पुप्फभद्दं नाम नगरं गतो ससीसपरिवारो, तत्थ पुप्फकेतू राया, पुप्फवती देवी, से जुगलाणि दारको दारिका य जाता, पुप्फचूलो पुप्फचूला य, ताणि अण्णमण्णमणुरत्ताणि, तेण रायाए चिंतितं-जदि विओइज्जंति तो मरि-

पाटलिपुत्रीया पाटली

||१७७||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

||१७८||

हिंति, एताणि चेव मिहुणकं करेमि, तेण णागरा पुच्छिता-एत्थ जं रयणं तत्थ को वसायति ?, राया, नगरे अंतेपुरे वा, एवं ते पत्तियावेत्ता माताए वारेंतीए संजोगो घडावितो, अभिरमंति, सा देवी साविकात्तेण निव्वेगेण पव्वइता, देवो जातो, ओहिणा पेच्छति धूतं, ततो अब्भहिको णेहो, मा नरकं गच्छिहितित्ति तीसे सा सुविणकेन नरका दरिसेति, सा भीता राणं अवतासेति, एवं सा रत्तिं रत्तिं, ताहे पासंडिणो सद्दाविता, कहेह-केरिसा नरका ?, ते कधेंति, ते अण्णारिसका, पच्छा अण्णिकापुत्ता पुच्छिता-केरिसका नरकात्ति?, ते कहेतुमारद्धा-निच्चंधकारतमसा०, सा भणति-किं तुब्भेहिवि सुविणाकि दिट्ठा ?, आयरिका भणंति-तित्थकराणं आदेसोत्ति, एवं गते काले देवलोका दरिसेति, एत्थवि तहेव पासंडिका, अण्णिकपुत्तेहिं कहितं, ताहे देवी भणति-किह णरका गंमंति ?, किह वा देवलोका गंमंति ?, ताहे साधुधम्मो कहितो, सा राजाणं पुच्छति, तेण भणितं-तो देमि जदि इहं चेव मम घरे भिक्खं गेण्हसि,तीए पडिसुतं, पव्वइता ॥ तत्थ य ते आयरिया पव्वइए विसज्जित्ता जंघाबले क्षीणे तत्थेव विहरंति, ताहे सा देवी भिक्खं अंतेपुराओ आणेति, एवं कालो वच्चति, अण्णदा कदायि तीसे भगवतीए सोभणेहिं अज्झवसाणेहिं केवलनाणं उप्पण्णं, केवली किर पुव्वपवत्तं विणयं न भंजति, अण्णदा सा अज्जा आयरियाणं हिदयइच्छितं आणेति, सेम्हकाले जेण सिम्हो जिव्वति, एवं सेसेसुवि, ताहे ते भणंति-जं मए चिंतितं तं चेव ते आणीतं, सा भणति-जाणामि, किह ?, अतिसएणं केवलेणं, खामिता केवली आसादितोत्ति, अण्णे भणंति-वासे पडंते आणीतं, ताहे ते भणंति- किं अज्जे ! वासे पडंते आणेसि ?, सा भणति-जेणंतेणं अचित्तो तिणंतेण आगता, कहं जाणासि ?, अतिसएण, खामेति, ते अद्धितिं पकता, ताहे सो ||१७८||
केवली भणति-तुब्भेवि चरिमसरीरा सिज्झिहिह, मा अद्धितिं करेह, किह वा कहिं वत्ति ?, गंगं उत्तरंता, ताहे चेव पडस्सिण्णा,

पाटलिपुत्रीया पाटली

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१७९||

गावाए जेर्णं जेणं पासेणं विलग्गंति तं तं निवुड्डति, मज्झे ठिता सव्वा पाणिए बुड्डेति,तेहिं णाविएहिं पाणिए छूढा, णाणं उप्पण्णं, देवेहिं कता महिमा, पयागं तत्थ जातं तित्थं॥ सा सीसकरोडी मच्छकच्छमेहिं खज्जंती एकत्थ उच्छलिता पुलिणे, सा इतो य ततो य वुज्झमाणी एगत्थ लग्गा, तत्थ पाडलिबीयं किहवि पडितं, दाहिणाओ हणुकातो करोडीं भिंदतो पोतओ उट्ठितो, तत्थ तं चासं पेक्खति, चितेति-एत्थ राजाणकस्स एवं सयं चेव रतणाणि एहिंति, नगरं निवेसेंति, तत्थ सुत्ताणि पसारिज्जंति, नेमित्ती भणति-ताव जाहि जाव सिवाए वासितंति तो नियत्तीज्जासित्ति , ताहे पुव्वातो अंतातो अवरामुहो गतो, तत्थ सिवा रडिता, ततो उत्तरहुत्तो गतो,तत्थवि, पुणो पुव्वाहुतो गतो, पुणो दक्षिणमुहो,तं किर वीयणकसंठितं, नगरनाभीए उदाइणा जिण-घरं कारितं, एवं पाडलिपुत्तस्स उप्पत्ती ॥

उदायिमरणं नन्दवंशे राज्यं

सो उदायी तत्थ ठितो रज्जं भुंजति, सो य राया ते दंडे अभिक्खणं २ ओलग्गावेति, ते चितेंति- किह न होज्जा तो एताए धाडीए मुच्चिज्जामोत्ति, इतो य-एगस्स रायाणगस्स कहंचि अवराहे रज्जं हितं, सो राया नट्ठो, तस्स पुत्तो भमंतो उज्जेणीए आगतो, एकं रायाणकं ओलग्गति, सो य बहुसो परिभवति उदाइस्स, ताहे सो रायसुतो पादे पडिओ विण्णवेति-अहं तस्स पीतिं पियामि नवरि मम बितिज्जओ होज्जासि, तेण पडिस्सुतं, गतो पाडलिपुत्तं, बाहिरिकामज्झिमिकाअब्भंतरिकासु परिसासु ओलग्गितूण छिद्दं अलभमाणो साहुणो अतींति, ते अतीयमाणे णिज्जायमाणे पेच्छति,ताहे एकस्स आयरियस्स मूले पव्वइतो, तेण सव्वा परिसा आराहिता तंमया जाता,राया अट्ठमिचाउद्दसीसु पोसहं करेति, तत्थ आयरिकावि अतिंति धम्मकहानिमित्तं, अण्णदा वेकालिकं आयरिया भणंति- गेण्हह उवकरणं, राउलं अतीमो, ताहे सो सरात्ति उट्ठितो, गहितं उवगरणं, पुव्वसंगोविता य ||१७९||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१८०||

कंकलोहकत्तिका सावि गहिता, पच्छण्णं कता, अतिगता रायकुलं, चिरं धम्मो कहितो, आयरिया पासुत्ता, रायावि, तेण उट्ठेत्ता रण्णो सीसे निवेसिया, तत्थेव अट्ठिके लग्गा, निग्गतो, ठाणइत्तावि न वारेंति पव्वइतओत्ति, रुधिरेण आयरिका छिक्का, पेच्छंति राया विवावाडितो, मा पवयणस्स उड्डाहो होहितित्ति आलोइतपडिक्कंता अप्पणा सीसं छिंदंति, तेवि कालगता, सोवि एवं ॥ इतो य ण्हावियदासो सालिकाए उवज्झायस्स कहेति-सुविणए ममं अंतेण नगरं वेढितं,एवं पभाए दिट्ठो, सो सुविणसत्थं जाणति, ताहे से घरं णेतूणं मत्थओ धोतो, धूता दिण्णा, दिप्पितुं च आरद्धो, सीयाए णगरं हिंडाविज्जति, सो य राया अंतेपुरपालेहिं सेज्जावतीए दिट्ठो, सहसा उ कूवितं, णातं, अपुत्तोत्ति अण्णेण दारेण णीतो, सक्कारितो, अस्सो य अधिवासितो, अब्भितरे हिंडावितो मज्झे, बाहिं निग्गतो राउलातो,तस्स ण्हावियदासस्स पट्ठिं अड्डेति,पासंति य णं तेयसा जलंतं,सो रायाभिसेगेण अभिसित्तो, राया जातो, ते दंडभडभोयगा दासोत्ति न तहा विणयं करेंति, सो चिंतेति-जदि विणयं न करेंति तो कस्स अहं रायत्ति? अत्थाणीतो उट्ठेत्ता अंतो पविट्ठो, पुणो निग्गतो, न उट्ठेंति, गेण्हधत्ति भणिता ते अवरोप्परं हसंति, तेण अमरिसेण अत्थाणीमंडविकाए पडिहारा विलोकिता, ते असिवग्गहत्था उट्ठिता, केवि मारिया, केवि बद्धात्ति, पच्छा विणयं उवट्ठिता, खामितो य राया। तस्स कुमारामच्चो नत्थि, सो मग्गति।

इतो य कविलो नाम बंभणो नगरस्स बाहिरिगाए वसति,विकालिकं च साहुणो आगता,दुक्खं विकाले णगरं अतिगंमतित्ति तस्स अग्गिहोत्तघरे ठिता, सो बंभणो चिंतेति- पुच्छामि ता णे किंचि जाणति ण वेति?, पुच्छिता, पकहिता आयरिया, सो सड्ढो जातो तं चेव रयणिं, एवं काले वच्चति अण्णदा अण्णे साधुणो तस्स घरे वासारत्तं ठिता, तस्सेत्र य पुत्तो जायमेत्तओ रेवयीहिं ||१८०||

कल्पाकस्य कुमारामात्यता

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१८१||

गहितो, साधूणं भायणाणि कप्पेंताणं भायणाणं हेट्ठा ठवितो ताहे नट्ठा वाणमंतरी, तीसे पया थिरा जाया, कप्पकोत्ति य तस्स णामं कतं, ताणि दोवि कालगताणि, इमो य चोद्दससु विज्जाट्ठाणेसु परिनिट्ठितो नामं लभति पाडलिपुत्ते, सो य संतोसेण दाणं णेच्छति, दारिकाओवि लब्भमाणीओ णेच्छति पव्वइस्सामित्ति, अणेगखंडिकसतेहिं परिवरिओ हिंडति । इतो तस्स निग्गमण-अतिगमणपहे एक्को मरुको, तस्स धूता जलूसकवाहिणा गहिता, लाघवं सरीरस्स नत्थि, अतीव रूविणीवि ण कोइ वरेति, महंती जाता, रुधिरं च से आगतं,माताए से पितुं कहितं, सो चिंतेति-बंभवज्झा एसा, कप्पयो सच्चसंधाओ, तस्स उवाएण देमि, तेण घरे कूवो खतो,तत्थ ठविता,तेण अंतेणं कप्पओ नीति,इमो य महता सद्देण कूवितो-भो भो कविला ! कूवे पडिता धूता, जो णं नित्थारेति तस्सेसा, तं कप्पओ सोतूणं पधातो, किवाए उत्तारिता य, अणेणं भणितो य--सच्चसंधो होज्जासि पुत्तकात्ति !, ताहे तेण जणवादभीतेण पडिवण्णा, अच्छति तीए सह परिभुंजंतो, ओसहेहि य विसदा जाता । रायाए य सुतं-कप्पओ पंडित-ओत्ति, सद्दावितो विण्णवितो, रायाणं पभणइ- अहं ग्रासाच्छादनं विनिर्मुच्य प्रतिग्रहं न करोमि । कहं किंचि संपडिवज्जामि ?, चिंतेति-न तीरति निरवराही कारेउं, ताहे से राया छिद्दाणि मग्गति, अण्णदा राजाए जो एताए साहीए निल्लेवतो सो सद्दावितो, तुमं कप्पकस्स पोत्ताणि धोवसि नवत्ति ?, भणति- धोवामि, ताहे राजा पभणितो- जदि एयत्ताहे आणेज्जा तो से मा देज्जासि, अण्णदा इंदमहे भज्जा से भणति-मज्झवि ता पोत्ताणि रयावेहित्ति, सो णेच्छति,सा अभिक्खणं २ वड्डेति, तेण पडिवण्णं, णीताणि रजकघरं, सो भणति- अहंपि विणा मुल्लेण रजामि, सो छणादिवसेहि मग्गितो, अज्जह होत्ति कालहरणं, सो छणो वोलीणो, तहवि न देति, एवं बितिए वरिसे ण दिण्णाणि, ततिए वरिसे, दिवसे दिवसे मग्गति ण देति, तस्स रोसो जातो, भणति कप्पओ-

कल्पाकस्य कुमारामात्यता

||१८१||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१८२||

कल्पाकस्य कुमारामात्यता

जदि ते रुधिरे ण रयामि तो अग्गीं अतीमि, तेहिं दिवसेहिं गतो छुरियं गहाय, सो रजको भज्जं भणइ- आणेहित्ति, दिण्णाणि, तस्स पोट्टं फालेत्ता रुधिरेण रयावेति, भज्जा य भणति-रायाए वारिता मोत्ति, किं ते एतेण अवरद्धं ?, कप्पकस्स चिंता जाता- एसा रण्णो माता, कुमारामच्चत्तणं णेच्छितंति, जदि पव्वइतो हुंतो ततो किं एवं होंतं ?, वच्चामि, मा गोहेहिं निज्जीहामित्ति, गतो राउलं, राया उट्ठितो, भणति-संदिसह किं करेमि ?, तं मम विण्णप्पं चिंतंतु तुब्भेत्ति, सो भणति- जं जाणसि तं कीरतुत्ति, रयकसेणी य आगता, तं रायाए समं दट्ठूणं उल्लावितुं णट्ठा, कुमारामच्चो ठितो, सव्वं रज्जं तदायत्तं जातं, पुत्तावि से जाता तीसे अण्णाणं च ईसरधूयाणं ॥ अण्णदा कप्पकस्स पुत्तविवाहो, सो चिंतेति-संतेपुरस्स रण्णो भत्तं दातव्वं, आभरणाणि णिज्जोगो य सो ताणं सज्जेति, जो य तेण कुमारामच्चो उवट्ठितो सो तस्स छिद्दाणि मग्गति, तेण कप्पकस्स दासी दाणमाणसंगहिता कता, जो तव सामियघरे दिवसोदन्तो तं परिकहेज्जाहित्ति, तीए पडिवण्णं, साहितं च जहा रण्णो नियोगो घडिज्जति, तेण छिद्दं लद्धंति रायाए पाएसु पडितो विण्णवेति-जदिवि अम्हे तुम्हेहिं अवगीता तहवि तइं संतिकाणि सित्थाणि धरंति अज्जवि तेणं अवस्सं कहेतव्वं जथा किर कप्पतो तुब्भं अहितं चिंतेत्ता पुत्तं ठवेति, रायणिज्जोगो सज्जिज्जति, पेसविता चारपुरिसा, दिट्ठं, रुट्ठो राजा, सकुडुंबो कूवे छूढो, कोद्दवकूरसेतिका पाणियगलंतिका य सिं दिज्जति सव्वाणं, ताहे सो भणति- एएण सव्वेहिवि मरियव्वं, जो सक्को कुलोद्धरणं करेति वेरनिज्जायणं च सो जेमेतु, ताणि भणंति- अम्हे असमत्थाणि, भत्ताणि पच्चक्खामो, तेहिं पच्चक्खातं, ताणि देवलोगं गताणि, कप्पओ तं जिमति, पच्चंतरातीहिं य तं सुतं जहा कप्पओ विणासितो, जामो गिण्हामो णंदंति आगतेहिं पाडलिपुत्तं वेढितं, नंदो चिंतेति-जदि कप्पको होंतो तो ण एते एवं अभिद्दवंता, पुच्छिता चाररक्खपाला- अत्थि ||१८२||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

||१८३||

कोइ? भत्तं पडिच्छति ? जो तस्स वंसे कोइ दासोवि महामती, तेहिं भणितं--अत्थि, ताहे आसंदएण उक्कोएत्ता णीणितो पंडुल्लुइतो, वेज्जेहिं संधुक्खितो, आउक्खसा कारिते पागारे दरिसितो कप्पओ, ते भीता डंडा ससंकिता जाता, णंदं च परिहीणं णातूणं सुट्ठुतरं अभिद्दवंति, ताहे लेहो विसज्जितो-जो तुब्भं सव्वेसिं अणुमतो सो एतु तो संधी जं वा भणीहिह तं कज्जिहिति, तेहिं दूतो विसज्जितो, कप्पओवि निग्गतो, नदीए मज्झे णावाए मिलितो कप्पओ, हत्थसण्णाहिं भणितं-उच्छुकलावकस्स हेट्ठा उवरिं च छिण्णस्स मज्झे किं होति ?, दहिकुंडगस्स हेट्ठा उवरिं च छिण्णस्स मज्झे किं होतु ?, धसित्ति पडितस्स किं होतित्ति भणित्ता तं पदाहिणं करेंतओ पडिनियत्तो, इतरो विलक्खओ नियत्तो, पुच्छितो लज्जति अक्खाइतुं, पलवति- बडुकोत्ति अक्खातं, नट्ठा, णंदोवि कप्पएण भणितो-सण्णहह पच्छतो, आसहत्थी पगहिता, पुणो ठवितो तंमि ठाणे, सो य निग्घाडामच्चो मारितो। तस्स कप्पकस्स वंसो णंदवंसेण समं अणुयत्तति, नवमओ नंदवंसप्पसूतो महापदुमो, कप्पगवंसे सगडालो कुमारामच्चो। तस्स पुत्तो थूलभद्दो सिरियओ, धूताओ जक्खा जक्खदिण्णा भूया भूयदिण्णा सेणा वेणा रेणा ॥ इतो य वररुयी धिज्जाइतो अट्ठसतेणं वित्ताणं णंदं थुणति दिवसे दिवसे अपुव्वेहिं, राया तुट्ठो सगडालं पलोएति, सो न तूसतित्ति न देति, वररुइणा सगडालभज्जा पुप्फादीहिं ओलग्गिता, भणति-सगडालो पसंसतु सुभासितंति, सो तीए भणिओ, पच्छा भणति-किह मिच्छत्तं पसंसामित्ति?, एवं दिणे दिणे भणंतीए महिलाए कराणं कारितो, अण्णदा भणति-सुभासितंति, ताहे दिणाराणं अट्ठसयं दिण्णं, पच्छा दिणे दिणे पदिण्णो, सगडालो चिंतेति-निट्ठितो रायकोसो होतित्ति भणति-भट्टारगा! किं तुब्भे एयस्स देहत्ति?, तुब्भेहिं पसंसियात्ति, भणति-अहं पसंसामि लोककव्वाणि अविणट्ठाणि पढतित्ति, राया भणति-किं लोककव्वाणि ?, सगडालो भणति- एतं मम धूताओवि पढंति, किमंग

महापद्मनन्दस्य शकटालोऽमात्यः वररुचिवृत्तं

||१८३||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

||१८४||

महापद्मनन्दस्य शकटालोऽमात्यः वररुचिवृत्तं

पुण अण्णो लोको?, जक्खा एक्कासिं सोतूणं गिण्हति बितिका बितिके ततिका ततिके वारे गेण्हति,ताओ अण्णदावि पविसंति अंतेपुरं, जवणिकाअंतरिताओ कताओ, वररुची आगतो थुणति, पच्छा जक्खाए गहितं, ताए कड्ढियं, बितियाए दोण्हवारं सुतं, ततियाए तिन्नि वारं सुतं ताएवि कड्ढियं, रायाएवि पत्तीतं तं, वररुचिस्स दारं वारितं ॥ पच्छा सो दीणारे रत्तिं गंगाए जंते ठवेति, ताहे दिवसतो थुणति गंगं, पच्छा पादेण आहणति, गंगा देतित्ति एवं लोगो भणति, कालंतरेण रायाए सुतं, सगडालस्स कहेति-तस्स किर गंगा देति, सगडालो भणति-जदि मए गते देति तो देति, कल्लं वच्चामो,तेण पच्चयितो मणुस्सो विसज्जितो, विकाले पच्छण्णो अच्छाहि, जं वररुई ठवेति तं आणेहि, सो गतो, आणीता पुट्टलिका, सगडालस्स दिण्णा, गोसे णंदो आगतो पेच्छति थुणंतं, थुणे निबुड्डो हत्थेहिं पादेहि य जंतं मग्गति; नत्थि, विलक्खो जाओ, ताहे सगडालो तं पोट्टलियं दरिसेति, रण्णा ओभामितो गतो, पुणो छिद्दाणि मग्गति सगडालस्स एतेणं सव्वं खोडितंति । अण्णदा सिरिकस्स विवाहो, रण्णो आयोगो सज्जिज्जति, वररुचिणा तस्स दासी ओलग्गिता, तीए कहितं-रणो भत्तं देहित्ति,ताहे तेण चिंतितं-एतं छिद्दंति चेडरूवाणं मोदए दातूणं इमं पाढेति-णंदो राया णवि जाणति,जं सगडालो करेहिति। नंदो राया मारेविणु, सिरियं रज्जे ठवेहिति॥१॥ताणि पढंति, तं रण्णा सुतं, गवेसावितं, दिट्ठं, कुवितो राजा, जतो जतो सगडालो पाएसु पडाति तओ तओ राया पराहुत्तो ठाइ, सगडालो घरं गतो, सिरिओ महापडिहारो नंदस्स,तं भणति-पुत्त! किं अहं मारेज्जामि? सव्वाणि मारिज्जंतु?, तुमं ममं रण्णो पादपडितं मारेहि, सो कण्णे ठएति, सगडालो भणति-अहं तालपुडं विसं खामि पायपडितो अहं, ततो तुमं पुव्वं मतं ममं मारेहि, सिरिएण पडिस्सुतं, ताहे मारितो, राया उट्ठितो, हा हा अहो अकज्जं, सिरिओ भणति-तो तुब्भं पावो सो अम्हं पए चेव पावोत्ति, ||१८४||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१८५||

सक्कारितो, सिरिओ भणितो-कुमारामच्चत्तणं पडिवज्जाहि, सो भणति-मम भाता जेट्ठो थूलभद्दो बारसमं वरिसं गणियघरं पविट्ठस्स, सो सद्दावितो, भणति-चिंतेमि, राया भणति- असोगवणिकाए चिंतेहि, सो तत्थ अतिगतो चिंतेति-केरिसं भोगकज्जं वक्खित्ताणं ?, पुणरवि नरकं जाइतव्वं होहिति, एते णाम एरिसा भोगत्ति पंचमुट्ठितं लोयं कातूणं पाओतं कंबलरतणं रजोहरणं छिंदित्ता रण्णो मूले गतो, एयं चिंतितं, राया भणति-सुचिंतितं, निग्गतो, राया चिंतेति- पेच्छामि किं विडत्तणेण गणियाघरं पविसति णवत्ति ?, आकासतलगतो पेच्छति, नवरं मतगकलेवरस्स जणो ऊसरति मुहाणि य ठवेति, सो मज्झेण गतो, राया भणति- निव्विण्णकामभोगो नु भगवंति, सिरितो ठावितो। सो संभूतविजयस्स मूले पव्वइतो ॥ सिरितो किर भातुणेहेण कोसाए गणियाघरे अच्छियति, सा य अणुरत्ता थुलभद्दे अण्णमणुस्से णेच्छति, तीसे कोसाए डहरिका भगिणी ओवकोसा, तीए समं वररुची वसति, सो सिरिओ भातुज्जामूले भणति- एतस्स निमित्तं अम्हे पितुमरणं भातुवियोगं च पत्ता, तुज्झ य पियवियोगो जातो, एतं सुरं पाएहित्ति,तीए भगिणी भणिता-तुमं मत्तिका सो अमत्तो जं व तं व भणाधिसि,विरागो से होहिति, एतं पियाएहि, सा पपाइता, सो नेच्छति, सा भणति- अलाहि ममं तुमे, ताहे सो तीसे अवियोगं मग्गंतो चंदप्पभं सुरं पियति, लोगो जाणति खीरंति, कोसाए सिरिकस्स कहितं, राजा सिरिकं भणति- एरिसो तव पिता मम हितिको आसि, सिरिको भणति- सच्चकं भट्टारक ! एतेण मत्तवालएण एवं कतं, राजा भणति- मज्जं पियति ?, पियइ, कहं?, तो पेच्छह, सो राउलं अतिगतो, तेण उप्पलं भावितेल्लकं मणुस्सहत्थे दिण्णं,एयं वररुइयस्स देज्जासि, इमाणि अण्णेसिं, सो अत्थाणिकाए पभाइतो, जो सो भावितओ सो वररुइस्स दिण्णो, जं चेव अग्घाति तंचेव भिंगारेणं आगतं, निच्छूढो, चातुव्वेज्जेणं पादच्छित्तं

स्थूलभद्रस्य दीक्षा वररुचेमरणं

||१८५||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णिः- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने
||१८६||

श्रीस्थूलभद्रस्य अतिदुष्करकारिता

तचकतउकं पज्जितो मतो ॥ थूलभद्दसामीवि संभूतविजयाणं मूले घोराकारतवं करेति, विहरंता पाडलिपुत्तं आगता, तिण्णि अणकारा अभिग्गहं गेण्हंति, एगो सीहगुहाए, तं पेच्छंतओ सीहो उवसंतो, अण्णो सप्पगुहाए, सोवि दिट्ठिविसो उवसंतो, अण्णो कूवफलए, थूलभद्दो कोसाए घरे, सा तुट्ठा परीसहपराजितो आगतोत्ति, भणति- किं करेमि ?, उज्जाणघरे ठाणं देहि, दिण्णं, रत्तिं सव्वालंकारविभूसिता आगता,चाडुं पकिता, सो मंदरोपमो अकंपो, ताहे सब्भावेणं पडिस्सुणेति धम्मं, साविका जाया, भणति- जदि रायवसेणं अण्णेणं समं वसेज्जा, इतरहा बंभचारिणीवतं गेण्हति, ताहे सीहगुहातो आगतो चत्तारिवि मासे उववासे कातूणं आयरिएहिं ईसिंति अब्भुट्ठितो, भणितो य- सागतं तव दुक्करकारकत्ति, एवं सप्पइतोवि कूवफलगइतोवि, थूलभद्दसामी तत्थेव गणिकाघरे भिक्खं गेण्हति, सोवि चतुम्मासेसु पुण्णेसु आगतो, आयरिया संभमेण उट्ठिता, भणितो य- अतिदुक्करकारकत्ति, ते भणंति तिण्णिवि- पेच्छह आयरिका रागं वहंति अमच्चपुत्तोत्ति ॥ बितियए वरिसारत्ते सीहगुहासमणो भणति- गणियाघरं वच्चामित्ति अभिग्गहं गेण्हति, आयरिया उवउत्ता, वारितो, अपडिस्सुणेंतो गतो, वसही मग्गिता, दिण्णा, सा सब्भावेण ओरालसरीरा विभूसिता अविभूसिया वा, सुणेति धम्मं, सो तीसे सरीरे अज्झोववण्णो ओभासति, भणति- जादि नवरि किंचि देसि, किं देमि?, सतसहस्सं, सो मग्गितुमारद्धो, णेपालविसए सावओ, जो तहिं जाइ तस्स सतसहस्समुल्लं कंबलं देति, तहिं गतो, दिण्णं तेण सङ्गुरायाणएण, एति, एकत्थ चोरेहिं पंथो बद्धो, सउणो वासति- सयसहस्सं एति, चोरसेणावती जाणति, नवरिं संजतं पेच्छति, वोलीणो, पुणो वासति, सतसहस्सं गतं, तेण सेणावतिणा गंतूण पलोइतो, सब्भावं पुच्छितो भणति- अत्थि कंबलो, गणिकाए णमि, मुक्को, गतो, तीसे दिण्णो, ताए चंदणिकाए छूढो, सो भणति- मा विणासेहि, सा भणति- तुमं एतं सोयसि अप्पाणं णवि,

||१८६||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥१८७॥

तुमं एरिसओ चेव होहिसि, उवसामेति लद्धबुद्धी, इच्छामि वेदावच्चंति गतो, पुणोवि आलोवेत्ता विहरति । आयरिएहिं भणितो- एवं दुक्करदुक्करकारओ थूलभद्दो, पुव्वं खरिका इच्छति, इदाणिं सड्ढी जाता अदिट्ठदोसा तुमे पत्थितत्ति उवालद्धो, एवं चेव विहरंति ॥ सा गणिका रधिकस्स रण्णा दिण्णा, तं अक्खाणं जथा नमोकारे न दुकरं तोडितु अंब० । तंमि य काले बारसवरिसो दुक्कालो उवट्ठितो, संजता इतो इतो य समुद्दतीरे अच्छित्ता पुणरवि पाडलिपुत्ते मिलिता, तेसिं अण्णस्स उद्देसओ अण्णस्स खंडं, एवं संघाडितेहिं एक्कारस अंगाणि संघातिताणि, दिट्ठिवादो नत्थि, नेपालवत्तणीए य भद्दबाहुस्सामी अच्छंति चोद्दसपुव्वी, तेसिं संघेणं पत्थवितो संघाडओ दिट्ठिवादं वाएहित्ति, गतो, निवेदितं संघकज्जं तं, ते भणंति- दुक्कालनिमित्तं महापाणं ण पविट्ठो मि, इयाणिं पविट्ठो मि, तो न जाति वायणं दातुं, पडिनियत्तेहिं संघस्स अक्खातं, तेहिं अण्णोवि संघाडओ विसज्जितो- जो संघस्स आणं अतिक्कमति तस्स को डंडो ?, ते गता, कहितं, तो अक्खाइ- उग्घाडेज्जइ, ते भणंति- मा उग्घाडेह, पेसेह मेहावी सत्त पाडिपुच्छगाणि देमि, भिक्खायरियाए आगतो १ कालवेलाए २ सण्णाए आगतो ३ वेयालियाए४ आवस्सए पडिपुच्छा तिण्णि, महापाणं किर जदा अतिगतो होति ताहे उप्पण्णे कज्जे अंतोमुहुत्तेण चोद्दसवि पुव्वाणि अणुप्पेहेज्जंति, उक्कइओवइयाणि करेति, ताहे थूलभद्दसामिप्पमुक्खाणि पंच मेहावीणं सताणि गयाणि, ते य पपढिता, मासेण एकेण दोहिं तिहिंति सव्वे ओसरिता, न तरंति पाडिपुच्छएणं पढितुं, थूलभद्दसामी ठितो, थेवावसेसे महापाणे पुच्छितो-न हु किलमासि ?, न किलंमामि, खमाहि कंचि कालं, तो दिवसं सव्वं वायणा होहिति, पुच्छति-किं पढितं ?, केत्तियं वा अच्छति?, आयरिया भणंति- अट्ठासीतिं सुत्ताणि, सिद्धत्थकेण मंदरेण य उपमाणं, भणिओ य-एतो ऊणतरेणं कालेणं पढि-

स्थूलभद्रस्य पूर्वपाठः

॥१८७॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ॥१,२॥	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णिः- 2
दीप अनुक्रम [११-३६]	

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥१८८॥

हिसि, मा विसादं वच्चेज्जासि, समत्ते महापाणे किर पढियाणि णव पडिपुण्णाणि, दसमकं च दोहिं वत्थूहिं ऊणकं, एतंमि अंतरे विहरन्ता आगता पाडलिपुत्तं, थूलभद्दस्स य ताओ भगिणीओ सत्तवि पव्वइतिकाओ भणंति-आयरिका ! भाउकं वंदका वच्चामो, उज्जाणे किर ठितल्लका, आयरिए वंदित्ता पुच्छंति- कहिं जेट्ठभाते ?, भणति- एताए देवकुलिकाए गुणति, तेण य चिंतितं- भगिणीणं इड्ढिं दरिसेमित्ति सीहरूवं विउव्वितं, ताओ सीहं पेच्छंति, ताउ चेव भीता नट्ठाओ, भणंति- सीहेण खइओ, आयरिएणं भणितं- ण सो सीहो, थूलभद्दो, जाह इदाणिं, ताहे गताओ, वंदिओ य, खेमकुसलं पुच्छति, जथा सिरिओ पव्वइतो, अब्भत्तट्ठेणं कालगतो, महाविदेहे य पुच्छिका गता अज्जा, दोवि अज्झयणाणि भावणा विमोत्ती य आणिताणि, वंदित्ता गताओ। बितिय-दिवसे उद्देसणकाले उवट्ठितो, न उद्दिसंति, किं कारणं ?, अजोगो, तेण जाणितं कल्लत्तणकं, भणति-ण काहामि, भणति- ण तुमं काहिसि, अण्णे काहिंति, पच्छा महता किलेसेण पडिवण्णा,उवरिल्लाणि चत्तारि पुव्वाणि पढाहि, मा अण्णस्स देज्जासि, ते चत्तारि ततो वोच्छिणा,दसमस्स य दो पच्छिमाणि वत्थूणि वोच्छिण्णाणि,दस पुव्वाणि अणुसज्जंति। एवं सिक्खं प्रति योगा संगहिता थूलभद्दसामिणा ५ ॥

निप्पडिकम्मसरीरत्तणेणं जोगसंगहो कातव्वो । तत्थ इमं विधम्मेण उदाहरणं-११-१२ १३८२॥ पतिट्ठाणे णगरे णागवसू सेट्ठी, णागसिरी भज्जा, सड्ढाणि, नागदत्तो पुत्तो णिव्विण्णकामभोगो पव्वइतो, सो पेच्छति जिणकाणं पूयासक्कारं, विभासा, ॥१८८॥ पडिमापडिवण्णकाणं च विभासा, सोवि भणति-अहं जिणकप्पं पडिवज्जामि, आयरिएहिं वारिओ, न ट्ठाति, सतं चेव पडिवज्जति, णिग्गतो, एगत्थ वाणमंतरे पडिमं ठितो, देवताए सम्मदिट्ठिकाए मा विणस्सिहितित्ति इत्थिरूवेणं उवहारं गहाय आगता, वाण-

निष्प्रतिकर्मशरीरत्वं

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१८९||

मंतरिं अंचेत्ता भणति- गेण्हह खमणात्ति, पललकूरो भक्खरूवाणि य गहियाणि, खाइत्ता पडिमं ठितो, जिणकप्पिका ण सुवंति, पोट्टवोसरिका जाता, देवताए आयरियाणं कहितं, सो सेहो अमुकत्थत्ति, तो साधू पेसिता, आणीता, देवताए भणितं-बेल्लगिरिं देज्जाह, ठितं, सिक्खितो य, न एवं कातव्वं पडिकम्मं ६ ॥

इदाणिं अण्णातत्ताति, जं उवहाणं कीरति तं पच्छण्णं कातव्वं, एवं कतं न नज्जेज्ज पुणो, न गुणपूजादिनिमित्तं परिण्णातं कातव्वं । तत्थ उदाहरणं—१७,१३।१३८४॥ कोसंबी नगरी, अजितसेणो राया, धारिणी देवी, धम्मवग्गू आयरिया, ताणं दो सीसा- धम्मघोसो य धम्मजसो य, विगतभया महत्तरिका, विणयवती सीसिणिक्का, तीए भत्तं पच्चक्खातं, संघेण महता इड्डीए निज्जामिता विभासा, ते धम्मवग्गूसीसा दोवि परिकंमं करेंति ।

इतो य उज्जेणीये पज्जोतसुता दोण्णि-पालओ गोपालओ य, गोपालओ पव्वइतो, पालगो रज्जे ठितो, तस्स दो पुत्ता- रज्जवद्धणो अवंतिवद्धणो य,पालको अवंतिवद्धणं राजाणं रज्जवद्धणं जुवरायाणं ठवेत्ता पव्वइतो,रज्जवद्धणस्स भज्जा धारिणी,तीसे पुत्तो अवंतिसेणो, अण्णदा अवंतिवद्धणो राया धारिणीए उज्जाणे वीसत्थाए सव्वंगाइं दट्ठूणं अज्झोववण्णो, दूती विसज्जिता, सा णेच्छति, पुणो पुणो पेसेति, तीए अहाभावेण भणितं-भातुकस्सवि न लज्जति?, तेण सो मारितो, विभासा, तंमि वियाले सगाणि आभरणाणि गहाय कोसंबीं सत्थो वच्चति तत्थ एगस्स सड्डगस्स वाणियगस्स अल्लीणा गता, कोसंबीए संजतीण पुच्छिता वसहिं, रण्णो जाणसालाए ठिताओ, तत्थ गता, वंदित्ता साविकात्ति पव्वइता पुच्छासुद्धा, तीसे य गब्भो अहुणोववण्णो वड्ढति, मा ण पव्वावेहिंतित्ति तं ण अक्खातं, पच्छा णाते महरिकाए पुच्छिता, ताए सब्भावो कथितो जह रड्डवद्धणभज्जाहं, संजतिमज्झे

अज्ञातो-पधानता

||१८९||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

अज्ञातो-पधानता

अप्पसारिकं अच्छाविता,विआविता रत्तिं, साधुणीणं मा उड्डाहो होहितित्ति, ताहे सा अंतेउरं अतीती, नाममुद्दा आभरणाणि य उक्खणित्ता रण्णो अंगणए ठवेत्ता पच्छण्णे अच्छति, अजितसेणेणं आगासतले गतेणं पभा मणीणं दिट्ठा, गहितो यऽणेणं, अग्गमहिसीए दिण्णो, सो य अपुत्तो । सा संजतीहिं पुच्छिता भणति-उदाणकं जातंति, विकिंचितं, खइयं होहितित्ति, ताहे सा अंतेपुरं अतीति णीती य, अंतेपुरिकाहिं समं मित्तया जाया, तस्स मणिप्पभोत्ति नामं कतं, सो राया मतो, मणिप्पभो राया जातो, सो य तीए संजतीए धारिणीए णेहं वहति ।

सो य अवंतिवद्धणो पच्छातावेण भाताविं मारितो सावि देवी न जायत्ति भातुणेहेण य अवंतिसेणस्स रज्जं दातूण पव्वइतो ।

सो य मणिप्पभं कप्पाकं मग्गति, सो य ण देति, ताहे सव्वबलेणं कोसंबीं पधावितो । ते य दोवि अणकारा परिकंमे समत्ते एको चिंतेति जथा विणयवतीए इड्ढी तथा ममवि होतुत्ति नगरे भत्तं पच्चक्खाति, बितिओ धम्मजसो विभूसं नेच्छंतो कोसंबीए उज्जेणीए अंतरा वत्थकातीरे पव्वतकंदराए एकत्थ भत्तं पच्चक्खाति । ताहे तेणं अवंतिसेणेणं कोसंबी रोहिता, तत्थ जणो य अप्पए अद्दण्णो न कोति धम्मघोसस्स अल्लियति,सो य पत्थितमत्थमलभमाणो कालगतो, बारेहिं निप्फेडो न लब्भतित्ति पागा-

||१९०|| रस्स उवरिएण एडितो, सा पव्वइतिका चिंतेति- मा जणक्खयो होतुत्ति रहस्सं भिंदामि, अंतेपुरं अतिगता, मणिप्पभं उस्सारित्ता ||१९०||

भणति- किं भातुएण समं कलहेसि ?, सो भणति-कहंति ?, ताहे सव्वं परिवाडीए कहेति,जदि न पत्तियसि मातरं पुच्छाधि, पुच्छति, तीए णातं-अवस्सं रहस्सभेदो जाओत्ति, कहितं जथावत्तं, रट्ठवद्धणसंतिगाणि य आभरणाणि य नाममुद्दा य दाइया, पत्तीतो भणति- जदि ओसरामि ता मम अजसो, भणति- तंपि बोहेहि, एवं होतुत्ति निग्गता, अवंतिसेणस्स णिवेदितं-पव्वइका

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

अलोभता

दट्ठुमिच्छति, अतिगता, पादे दट्ठूण णाता अंगपडिचारिकाहिं, ताउ पादपडिताओ परुण्णाउ, कहितं तव मातात्ति, सोवि पादपडितो परुण्णो, तस्सवि सव्वं कहेति एस ते माता, दोवि बाहिं मिलिता, अवरोप्परं अवदासेतूणं परुण्णा,कंचि कालं कोसंबीए अच्छित्ता दोवि उज्जेणीं पधाविता, मातावि सह महरिकाहिं नीता जाव वच्छकातीरं पत्ताणि, ताहे जे तंमि जणपदंमि साधुणो ते वंदए ओतरंते विलग्गंते य दट्ठूणं पुच्छंति, ताहे ताहिवि वंदितो, बितियदिवसे राया पधावितो, ताओ भणंति-भत्तपच्चक्खा-तओ एत्थ ता अम्हे अच्छामो, ताहे ते दोवि रायाणो ठिता दिवे दिवे महिमं करेंति, कालगता, एवं ते गया रायाणो, एवं तस्स अणिच्छमाणस्सवि जाता, इतरस्स इच्छमाणस्स न जाता पूजा ७ ॥

लोभविवेगताए जोगा संगहिता भवंति, अलोभता तेण कातव्वा, कहं?, तत्थोदाहरणं-१७-१५।१७ ॥ १३८७।१३८७ ॥ साएतं नगरं पोंडरीओ राया कंडरीको जुवराया, जुगरण्णो भज्जा जसभद्दा, ताहे पुंडरीओ तं पत्थेति तहेव सो जुवराया मारितो, सावि सावत्थिं, अहुणोववण्णगब्भा जाता, अजितसेणो आयरिओ, कित्तिमती महत्तारिका, सा तीए मूले पव्वइता जथा धारिणी तथा विभासितव्वा णवरि दारओ न छड्डितो, खुड्डगकुमारोत्ति से नामं कतं, पव्वइओ, सो जोव्वणत्थो जातो चिंतेति-पव्वज्जं न तरामि कातुं, मातरमापुच्छति जामि, सा अणुसासति, तहवि न ठाति, ताहे भणति-तो खाइ मम निमित्तं बारस वरिसाणि करेहि

||१९१|| पव्वज्जं, भणति-करेमि, पच्छा आपुच्छति, महत्तारिकं आपुच्छाहित्ति, तीए बारस वरिसाणि, उवज्झायो बारस वरिसाणि, आयरिओ ||१९१||

बारस वरिसाणि, सव्वाणिवि अट्ठचत्तालीसं वरिसाणि, तहवि न ठाति, विसज्जितो, ताहे पच्छा माताए भणितो-मा जहिं वा तहिं वा वच्चाहि, महल्लपिता तुज्झ पुंडरीको तहिं वच्चाहि, इमा ते पितुसंतिका नाममुद्दिका कंबलरतणं च मए णीणितं,

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

||१९२||

एताणि गहिय वच्चाहित्ति गतो णगरं, रण्णो जाणसालाए आवासितो कल्लं रायाणं पेच्छामित्ति, तहिं च रत्तीए नट्टिका नत्तेति, सो य खुड्डओ अब्भितरपारिसाए पेच्छतित्ति,सा य नट्टिका सव्वं रत्तिं नाच्चिऊणं पभातकाले निद्दाति, ताहे सा धोरिया चिंतेति-तोसिता परिसा बहुगं च लद्धं, जदि एत्थ वियड्डति तो धरिसिता मोत्ति इमं गीतियं पगीता, सुट्ठु गाइतं सुट्ठु वाइतं० । एत्थंतरे खुड्डएणं कंबलरतणं उच्छूढं, जसभद्दो जुवराया, तेण कुंडलं सतसहस्समुल्लं, सिरिकंता सत्थवाही, तीएवि हारो, जयसंधो अमच्चो, तेणवि कडगो, कण्णवालो मेंठो, तेण अंकुसो, जो य किर तत्थ तूसति रूसति वा देति वा सो सव्वो लिखिज्जति, जदि जाणति सुट्ठु, न जाणति तो डंडो तेसिन्ति,एवं सव्वेवि लिहिता, पभाए सद्दावितो पुच्छितो खुड्डओ-तुमे किं दिण्णं ?, सो जथा पिता मारितो तं सव्वं परिकहेति, न समत्थो जं संमं अणुपालेतुं तो तुब्भं मूलं आगतो, रज्जं लभिमित्ति, सो भणति-देमि, खुड्डओ भणाति-अलाहि उ, सुविणंतओ वट्टति, मारेज्जा, मा व पुव्वकतोवि संजमो णासिहिति । जुवराया भणति-मारेतु मग्गामि, थेरो राया रज्जं न देतित्ति, सोवि दिज्जंतं णेच्छति । सत्थवाहभज्जा भणति- बारस वरिसाणि पउत्थस्स, पंथे वट्टति, तो अण्णं पवेसेमित्ति वीमंसा वट्टति । अमच्चो अण्णेहिं रायाणेहिं समं घडामि । हत्थिमेंठं पच्चंतरायाणो भणंति-एतं हत्थिं मारेहि आणेह वत्ति । ते भणिता रण्णा तहा करेहात्ति, णेच्छंति, खुड्डगकुमारस्स मग्गतो लग्गा पव्वइता । तेहिं सव्वेहिवि लोभो परिचत्तो ८ ॥

तितिक्खा कातव्वा । जहा सामाइके चक्कदिट्ठंते १७-१८।१९ ॥ १३८८-१३८९ ॥ इंदपुर इंददत्ते बावीस सुता सुरिंददत्ते य । पव्वइए निव्वतिसुता आगमण स रज्ज देज्जा य॥ १ ॥ (महुराए जियसत्तू सयंवरो निव्वुइए उ । १७-१८।१३८८ अग्गियओ पव्वतओ बहुलिय तह सागरो य बोद्धव्वो। एक्कदिवसेण जाता महुराए सुरिंददत्तो य

तितिक्षायां सुरेन्द्रदत्तः

||१९२||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णिः- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१९२||

आर्जवम् शौचं

१७-१९ ॥ १३८९ ॥ वृत्तं महुराए चेव बीयं नामं इंदपुरंति ॥

अज्जवत्तणं नाम अज्जत्तणं तं कायव्वं, तत्थ उदाहरणं १७-२०॥१३९०॥ चंपाए कोसियज्जो अज्झावओ, तस्स दो सीसा, अंगओ, से भद्दओ, तेण अंगरिसित्ति नामं कतं, रुद्दओ य त्रियओ, सो गंठिभेदओ. ते दोवि दारुयाणं पत्थविता, अंगरिसी दारुयाणं भारगं गहाय पडिएति, इमोवि दिवसं रमित्ता विकाले संभरितं ताहे पधावितो अडवीं, तं च पेच्छति दारुभारेणं एंतं, सो चिंतेति-णिच्छूढो होमित्ति । इतो य जोगजसा नाम वच्छवाली पुत्तस्स पंथगस्स भत्तं नेतूणं दारुभारएण एति, रुद्दएणं सा गद्दाए मारिता, दारुभारगं गहाय अण्णेण मग्गेण पुरतो अतिगतो, उवज्झायस्स हत्थे त्रिहुणमाणो कहेति-एतेण तुज्झ सुंदरसीसेण जोतिजसा मारिता वराई, विभासा, सो आगतो, धाडितो, वणसंडे चिंतेति, सुभज्झवसाणं जातीसरणं संजमो केवलनाणं, देवा महिमं करेंति, देवेहिं कहितं जथा एतेण अब्भक्खाणं दिण्णं, रुद्दओ लोकेणं हीलिज्जति, सो चिंतेति-सच्चयं मए अब्भक्खाणं दिण्णंति, सो चिंततो संबुद्धो पत्तेयबुद्धो जातो, बंभणो बंभणी य पव्वइताणि, चत्तारिवि सिद्धाणि १० ॥

सुईनाम सच्चं, सच्चं च संजमो, सो चेव सोयं, सच्चं पति जोगसंगहणं । तत्थ उदाहरणं- १७-२१ ॥१३९१॥ सोरिकं नगरं सुरंबरो जक्खो, तत्थ धणंजओ सेट्ठी सुभद्दा भज्जा, तेहिं सुरंबरो नमंसितो-जदि पुत्तो जाति तो महिसगसतं देमोत्ति, ताण संपत्ती जाता,
ताणि संबुज्झिहिंतित्ति महावीरसामी समोसरितो, सेट्ठी निग्गतो, सभज्जो संबुद्धो, अणुव्वताणि गहिताणि, सो जक्खो सुविणए ||१९३||
मग्गति महिससए, तेण पिट्ठमता दिण्णा । सामिस्स दो सीसा धम्मघोसो धम्मजसो य, एगस्स असोगपादवस्स हेट्ठा गुणेंति, ते पुव्वण्हे ठिता, अवरण्हेवि छाया ण परियत्तति, एक्को भणति- तुज्झं लद्धी, बितिओ भणति-तुज्झं, एको कातिकभूमिं गतो, तहेव

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

॥१९४॥

सम्यग्दर्शन शुद्धिः

अच्छाति, बिइओवि गतो, तहेव अच्छाति, तेहिं णातं जथा न एकस्सवि लद्धी,सामी पुच्छितो, इहेव सोरिए जह। समुद्दविजयो राया आसि, जण्णजसो तावसो भज्जा सोममित्ता पुत्तो तीसे जण्णदत्तो, सोमजसा सुण्हा, ताण पुत्तो नारदो, ताणि उंछवित्तीणि,एकदिवसं जेमेंति, एकदिवसं उववासं करेंति,ताणि तं नारदं पुव्वण्हे असोगपादवस्स हेट्ठा ठवेऊणं उंछंति। इतो य वेदड्ढातो वेसमणकाइका देवा जंभका तेणं अंतेणं वितीवयंति, ते पेच्छंति दारगं, ओधिणा आभोईति, सो तातो देवनिकायातो चुतो, ते ताए अणुकंपाए तं छाहिं थंभंति। एसा असोगपुच्छा नारदुप्पत्ती य। सो उम्मुकबालभावो तेहिं जंभएहिं विज्जाओ पण्णत्तिमादीओ पाढितो, कंचणकुंडियाए मणिपाउयाहिं आगासेण हिंडति, अण्णदा बारवतिं गतो, वासुदेवेण पुच्छितो- किं सोयंति?, सो न तरति निव्वेढेतुं, वक्खेवं काऊणं अण्णाए कहाए उट्ठेति, पुव्वविदेहे सीमंधरं तित्थगरं जुगबाहू वासुदेवो पुच्छति-किं सोयं ?, तित्थगरेण भणितं- सच्चं सोयं, तेण एक्केण पादेण सव्वं उवलद्धं, पुणो अवरविदेहं गतो, जुगंधरं तित्थगरं महाबाहू तं चेव पुच्छितो, तस्सवि सव्वं उवगतं, पच्छा बारवतिं आगतो वासुदेवं भणति- किं ते तदा पुच्छितंति ?, सोयं, भणति-सच्चं ?, किं सच्चंति पुच्छितो पुणो खोभाइतो, वासुदेवेण भणितं-जहिं ते तं पुच्छितं तहिं एतंपि पुच्छितव्वं होंतंति खिसितो, ताहे भणति-सच्चं भट्टारओ न पुच्छितोत्ति, चिंतितुमारद्धो, जाति सरिता, संबुद्धो, पढमं अज्झयणं सोच्चमेव वदंति०। एवं सोएण जोगा संगहिता ११ ॥

सम्यग्दर्शनविशुद्ध्यापि किल योगाः संगृह्यन्ते। तत्थ उदाहरणं-१७-२४॥१३९४॥ साकेते महाबलो राया, पुच्छति-किं नात्थि मम जं अण्णराईणं ?, चित्तसभा, कारिता, दो विक्खाता चित्तकारका तेसिं दिण्णा विमलो पभासो य, जइणिकाअंतरिया चित्तंति, ॥१९४॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥१९५॥

एक्केण निम्मविता, एक्केण भूमी कता, राधाए तस्स दिट्ठं, तुट्ठो य पूइतो, पभाकरो पुच्छितो भणति-भूमी कता, न ताव चित्तेमि, सो चिंतेति-केरिसा भूमी कता ?, गतो, जइणिका अवणीता, इतरं चित्तकम्मं तत्थ दीसति, राया कुविओ, पण्णविओ, पभणति-पभा एत्थ संकंता, तं छाइयं, नवरिं कुड्डं पेच्छति, तुट्ठो, एवं चेव अच्छतुति भणितो, एवं सम्मत्तं विसुद्धं कातव्वं। एवं जोगा संगहिता भवंति १२ ॥

समाधाणं-चित्तसमाधाणं । तत्रोदाहरणं—सुदंसणपुरं नगरं, सुसुणागो गाहापती, सुजसा भज्जा, ताणि सड्ढाणि, सुव्वतो पुत्तो, सुहेण गब्भे अच्छितो सुहेण जातो एवं वड्ढितो एवं जाव जोव्वणत्थो संबुद्धो, आपुच्छित्ता पव्वइतो, एकल्लविहारपडिमं पडिवण्णो, सक्कपसंसा, देवेहिं परिक्खितो अणुकूलेण- धण्णो कुमारबंभयारी एक्केण, बितिएण को एताओ कुलसंताणच्छेदगाओ अधण्णोत्ति?, सो भगवं समो, एवं मातापिताणि से विसयपसत्ताणि दंसिताणि, पच्छा मारिज्जंतगाणि कलुणं कहेंति, तहावि समो, पच्छा सव्वे उदू विउव्विया, दिव्वाए इत्थिगाए सविब्भमं पुलोइयमुक्कदीहनीसासमुवगूढो तथावि संजमे समाधिततरो जातो, केवलं उप्पण्णं जाव सिद्धो १३ ॥

समाधानं आचारोपगत्वं

आयारउवगच्छणताए जोगा संगहिता भवन्ति । उदाहरणं-पाडलिपुत्ते हुतासणो माहणो जलणसिहा भज्जा, सावकाणि, दो पुत्ता- जलणो य दहणो य, चत्तारि पव्वइताणि, जलणो उज्जुसंपण्णो, दहणो मायाबहुलो, एहित्ति जाति जाहित्ति एति, सो तस्स ठाणस्स अपडिक्कमित्ता कालगतो, दोवि सोहम्मे उववण्णा अब्भिंतरपरिसाए पंचपलिओवमाइंठितीगा देवा जाता, सामी ॥१९५॥

आगतो, आमलकप्पाए अंबसालवणे समोसरणं,ते दोवि देवा आगता, तत्थ नट्टविहिं दाएंति, एक्कं उज्जुयं विउव्विस्सामित्ति वंकं विकुव्वति, वंकं विकुव्विस्सामित्ति उज्जुयं विकुव्वति, एक्को उज्जुयं विकुव्विस्सामित्ति उज्जुयं विकुव्वति वंकं विउव्विस्सामित्ति वंकं विउव्वति, तं विकुव्वितं दट्ठूण गोतमसामी पुच्छति। ताहे सामी तं सव्वं परिकहेति मायादोसोत्ति, जलणेणं आयारोवगतेण जोगा संगहिता इति १४ ॥

विणयोपगतत्तणेण जोगा संगहिता भवन्ति, तत्थ उदाहरणं-उज्जेणी अंबरिसी माहणो मालुका भज्जा, सड्डाणि, मालुका कालगता, सो पुत्तेण समं पव्वइतो, सो दुव्विणीतो, काइकभूमीए कंटए निक्खणति, सज्झायं पढंताणं छीयति कालं उवहणति सव्वं समायारं विवच्चासेति, ताहे साहुणो आयरिए भणंति-जदि वा एसो अच्छतु अहवा अम्हे, सो निच्छूढो, पितावि से पच्छतो जाति, अण्णस्स आयरियस्स मूलं गतो, तत्थवि निच्छूढो, एवं किर उज्जेणीए पंच उवस्सयसताइं, सव्वेहिं निच्छूढो, सो खंतो गंतूण सण्णाभूमीए रुयति, सो भणति- किं खंत! रुयसि?, ताहे भणति खंतो-तुमं नामं निंबउत्ति कतं ण अण्णहा, एएहिं अणाभागेहिं आयारेहिं तुम्हतणएणं अहंपि थाणं न लभामि, ण य वट्टति उप्पव्वइतुं, ताहे तस्सवि खुड्डगस्स अद्धिती जाता, भणति- खंता! एक्कंसि कहिंचि ठाणं लभामोत्ति, भणति-न लब्भति, जदि नवरि पव्वावगाणं तहिं गता, पव्वइता अक्खुभिता, आयरिका भणंति- मा अज्जो! एवं होह, पाहुणका अज्ज, कल्लं जाहिंति, ठिता, ताहे सो चेल्लओ तिण्णि तिण्णि उच्चारपासवणभूमीओ पडिलेहेति, सव्वा सामायारी विभासितव्वा,तुट्ठा, सो णिंबओ यमयखुद्दीओ जातो, तरतमजोगेणं पंचवि सताणि पडिस्सकाणं आराधिताणि, निग्गंतुं न देति, एवं पच्छा सो विणओवगो जातो १५ ॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१९७||

धितीए जो मतिं करोति, तस्स जोगा संगहिता भवन्ति, तत्थ उदाहरणं–पंडुमंथुरा, तत्थ पंच पंडवा, तेहिं पव्वइतेहिं पुत्तो रज्जे ठवितो, ते अरिट्ठनेमिसामिस्स मूलं पधाविता, ते हत्थीकप्पे भिक्खं पहिंडिता, तेहिं हिंडंतेहिं सुतं-अरिट्ठनेमी कालगतोत्ति, तेहिं गहितं भत्तपाणगं च विगिंचित्ता सेत्तुञ्जे भत्तं पच्चक्खातं, सिद्धा। ताणं वंसे अण्णो राजा पंडुसेणो नाम, तस्स धूताउ मती य सुमती य, ताओ लक्खण० वंदियाओ सुरट्ठं वारिवसभोवहणंतेण समुद्देण एंति, उप्पातिएण लोको खंदरुद्दाणि नमंसति, इमाहिं धणिततरकं अप्पा संजमे जोइतो, एसो सो कालोत्ति, भिण्णं वहणं, ताओ संजयत्तं सिणागत्तंपि, कालगताओ सिद्धाओ, एवं एकत्थ सरीराणि उच्छलिताणि ताणि, सुट्ठितेण लवणाधिपतिना महिमा कता, देवुज्जोतो कतो, ताहे पभासं तित्थं जातं। दोहिवि ताहिं धितीमतिं करेंतीहिं जोगा संगहिता १६ ॥

धृतिमतिः संवेगः

सम्यग् वेगः उद्वेगः संवेगः, तत्थ उदाहरणं–॥१३९९-१४००॥चंपाए मित्तप्पभो राया,धारिणी देवी,धणमित्तो सत्थवाहो, धणसिरी भज्जा, तीसे उवाइकसतेहिं पुत्तो जातो, लोको भणति-जो एत्थ धणसमिद्धे कुले जातो तस्स सुजातं, निव्वित्ते बारसाहे सुजातोत्ति नामं कतं, सो किर देवकुमारोपमे रूवेणं, तस्स ललितं भणितं अण्णे पुण सिक्खंति, ताणि य सावगाणि। तत्थेव नगरे धम्मघोसो अमच्चो, पियंगू भज्जा, सा सुणेति एरिसो सुजातोत्ति, अण्णदा दासीओ भणंति-जदा सुजातो इतो वोलेज्जा तदा मम कहेज्जाए जं तो णं पेच्छामि, अण्णदा सो मित्तविंदपरिवारितो तेण अंतेण एति, दासीहिं पियंगूए कहितं, सा निग्गता, अण्णाओ य सवत्तीओ, दिट्ठो, ताओ भणंति-धण्णा सा जीए भागावडिओ, अण्णदा ताओ अवरोप्परं भणंति-अहो लीला तस्स, ताहे पियंगू सुजातस्स वेसं करेति, आभरणवसणेहिं विभासा, सा य रमति, एवं वच्चति, एवं हत्थच्छोभा विभासा, अमच्चो ||१९७||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||१९८||

संवेगः

य आगतो, निस्सढं अंतेपुरंति सोवाए निग्गच्छिय बारछिद्देण पलोएति, दिट्ठा विकुट्टंतिं, एसो चिंतेति-विणट्ठं अंतेउरंति, भणति-पच्छण्णं होतु, मा भिण्णं रहस्से सइरतराओ होहिंति, मारेतुं मग्गति सुजातं, बिभेति, पिता से रण्णो अच्चितो, मा ततो विणासे हितित्ति उवायं चिंतेति, लद्धो, अण्णदा कूडलेहेहिं पुरिसा कता, जो मित्तप्पभस्स विपक्खो तेण किर सामंतेण लेहा विसज्जिता-मित्तप्पभं मारेहित्ति सुजातस्स, तुमं वीसंभं गतो, ते अद्धं रज्जस्स देज्जिहित्ति, तेण से लेहा आणीता, रण्णो अग्गतो धारिता, राया कुवितो, तेवि लेहकारका वज्झा आणत्ता, तेण पच्छण्णा कता, मित्तप्पभो चिंतेति-जदि लोगणातं कज्जिहिति तो पउरक्खोभो मे होहितित्ति ममं च तस्स रण्णो देज्जा अयसो, उवाएणं मारेमि । तस्स मित्तप्पभस्स एगं पच्चंतं नगरं अरक्खुरी नाम, तस्स चंडज्झयो नाम राया, तस्स लेहं देति, जथा सुजातं पेसेमि तं मारेहित्ति, सुजातं सद्दावेत्ता भणति-वच्च अरक्खुरितं, तत्थ बितिज्जिओ होऊण रायकज्जाणि पेच्छाहि, गतो तं नगरिं अरक्खुरिं नाम, दिट्ठो, अच्छतु वीसत्थो तो मारिज्जिहिति, दिवे दिवे एगट्ठा अभिरमंति, सो तस्स रूवं सीलं समुदायारं च दट्ठूणं चिंतेति-णूणं अंतेपुरिए समं विणट्ठो तेण मारिज्जति, तो किह एरिसं रूवं विणासेमित्ति उस्सारेत्ता सव्वं परिकहेति लेहं च दरिसेति, तेण सुजातेणं भणति-जं जाणसि तं करेहित्ति, तेण भणितं-न तुमं मारेमित्ति, एकं करेहि, पच्छण्णो अच्छाहित्ति, तेण चंदजसा भगिणी दिण्णा, सा थि तंदूसिता, तीए समं अच्छति, परिभोगदोसेण वड्ढितं, सुजायस्सवि ईसिसि संकंतं, सावि तेण सड्ढी कता, चिंतेति-मम तणएणं एसोवि विणट्ठोत्ति संवेगमावण्णा, भत्तं पच्चक्खाति, तेण चेव निज्जामिता, देवो जातो, ओधीं पउंजति, दट्ठूणं आगता, वंदित्ता भणति-किं करेमि?, सो संवेगमावण्णो चिंतेति-जदि अम्मापियरो पेच्छेज्जा तो पव्वयामि, तेण देवेण सिला विकुव्विता नगरस्स उवरिं, नागरा पयता धूवहत्था पाद- ||१९८||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

पडिता विण्णवेंति , देवो तासेति—हा दासा! सुजातो समणोवासओ अमच्चेण अकज्जे दूसितो अज्ज मे चूरेमि, तो नवरि मुगामि
जदि नवरं तं आणेत्ता पसादेह, कहिं सो ?, भणति—एस उज्जाणे, सणागरो राजा णिग्गतो खामितो, अंमापितरो रायं
च आपुच्छित्ता पव्वइतो, मातापितंपि पव्वइतं, ताणि सिद्धाणित्ति। सो य धम्मघोसो निव्विसओ आणत्तो, जेण तस्स गुणा
पतरंति, जथा-यथा नेत्रे तथा सीलं, यथा नाशा तथार्जवम् । यथा रूपं तथा वित्तं, यथा सीलं तथा गुणाः ॥१॥ अथवा- विषम
समैविषमसमा, विषमैर्विषमाः समैः समाचाराः । करचरणकर्णनासिकदंतोष्ठनिरीक्षणैः पुरुषाः ॥ २ ॥ पच्छा सोवि निव्वेदमावण्णो,
सच्चं मए भोगलोभेण विणासावितोत्ति निग्गतो, हिंडंतो रायगिहे थेराणं अंतिए पव्वइतो ॥ विहरंतो बहुस्सुतो वारत्तपुरं गतो,
तत्थ अभग्गसेणो राया, वारत्तो अमच्चो, सो भिक्खं हिंडंतो वारत्तगस्स घरं गतो, तत्थ य घतमधुसंजुत्तं पायसत्थालं णीणितं,
भंडणं जातं, तत्थ बिन्दू पडितो, सो पाडितं तं नेच्छति, वारत्तओ ओलोकणगतो पेच्छति, जाव तत्थ मच्छिकाओ लीणा, ताओ
घरकोइलिका पत्थेति, तं मज्जारो, मज्जारं घरपच्चंतियसुणओ, तं वत्थव्वओ चिंतेति, ममत्ति ते दोवि भंडणं लग्गा, सुणसा-
मिका उट्ठिता, भंडणं जातं, मारामारी, बाहि निग्गता, पाहुणका बलं पिंडेत्ता आगता, महासंगामो जातो, पच्छा वारत्तओ
पचिंतितो-एतेण कारणेणं न इच्छितंति, सोभणं अज्झवसाणं उवगतो, जाती सरणं, संबुद्धो, देवताए भंडणकं उवणीतं॥ सो वारत्तक-
रिसी विहरंतो सुंसुमारपुरं आगतो, तत्थ धुंधुमारो राया, तस्स अंगारवती धूता रूविणी साविका, तत्थ परिव्वाइका अतिगता, ||१९९||
वादे पराजिता, पदोसमावण्णा, सा चिंतेति- बहुसावत्तए पाडेमित्ति चित्तफलहए लिहित्ता उज्जेणीए पज्जोतस्स अंते अतिगता,
दिट्ठं फलकं, पज्जोतेण पुच्छिता, कहितं च णाए, पज्जोतो तस्स अक्कंतीए दूतं पेसेति, सो धुंधुमारेण निच्छूढो, भणति-पिवा-

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२००||

प्रणिधिः

साए विणएण य दिज्जइ, दूतेणं पडिआगतेणं बहुतरकं पज्जोतस्स कहितं, आसुरत्तो निग्गतो सव्वबलेणं, सुसुमारपुरं रोहति, धुधुमारो अंतो अच्छति अप्पबलो य। वारत्तकरिसी एकत्थ जक्खघरए चच्चरमूले ठितेल्लओ,सो राया भीतो एसो महाबलवकोत्ति, णेमित्तिकं पुच्छति, सो भणति-जाव ताव निमित्तं गेण्हामि, चेडकरूवाणि रमंति,ताणि भेसाविताणि, तस्स वारत्तकस्स मूलं गताणि रोवंताणि, तेण भणिताणि- मा बीभेधत्ति, सो आगंतु भणति- तुज्झ जयोत्ति, ताहे मज्झण्णे उस्सण्णद्धाण उवरिं पडितो, वेढित्ता नगरं नीओ, बाराणि बद्धाणि, पज्जोतो भणितो-कतोमुहो ते वातो ?, भणति-जं जाणासि तं करेहि, भणति-किं तुमए महासासणेणं विणासितेणं ?, ताहे से महता विभूतीए अंगारवती दिण्णा, बाराणि मुक्काणि, तत्थ अच्छति, अण्णे भणंति-तेण देवताए उववासो कतो, तीए चेडरूवाणि विउव्विताणि, निमित्तं गहितंति, ताहे पज्जोतो नगरं हिंडति, पेच्छति अप्पसासणं रायाणं, अंगारवतीं पुच्छति- किह अहं गहितो?, सा साधुवयणं कहेति, सो तस्स मूलं गंतु भणति- वंदामि नेमित्तिकखमणात्ति, सो भगवं उवउत्ते पव्वज्जातो जाव चेडकरूवाणि विउव्विताणि संभरिताणि। चंदजसाए सुजातस्स धम्मघोसस्स वारत्तकस्स सव्वेहिवि संवेगेण जोगा संगहितात्ति, केइ तु सुरंवरं जाव मितावती पव्वइता परंपरओ, एतंपि संभवति। संवेगित्ति गतं १७ ॥

पणिधी नाम माया,सा दुविधा-दव्वपणिधी य भावपणिधी य,दव्वपणिधीए उदाहरणं-भरुकच्छे णधवाहणो राया कोससमिद्धो, इतो य पतिट्ठाणे सालवाहणो बलसमिद्धो, सो नहवाहणं रोहति, सो कोससमिद्धो जो हत्थं वा सीसं वा आणेति तस्स सहस्से य ||२००||
सतसहस्से य कोडादीए हियं देति, ताहे ते नहवाहणमणुस्सा दिवे दिवे मारेंति, सालवाहणमणुस्सावि केइ मारेत्ता आणेंति, सो तेसिं न किंचिवि देति, सो खीणजणो पडिज्जाति, पुणो बितीयवरिसे एति तत्थवि हतो णासेति, एवं कालो वच्चति,अण्णदा अमच्चो भणति-

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२०१||

प्रणिध्या- द्रव्ये योग- संग्रहाः १८

ममं अवराहेत्ता णिव्विसयमाणवेहि, मणूसाणि य बंधाहि, तेण तहेव कतं, सोवि ततो निग्गंतूण भरुयच्छं गुग्गलभारं गहाय गतो, एकत्थ देवकूले अच्छति,सामंतरज्जेसु य फुडितं जथा सालवाहणेण अमच्चो णिच्छूढोत्ति,भरुयच्छे य न णातो केणइ, केणइ कोसित्ति पुच्छितो भणति- गुग्गलभगवं नाम कतं अहंति, जहिं वा णातो ताणं कहेति जथा जेण विहाणेण निच्छूढो अहालहुसगेणंति, पच्छा नहवाहणेण सुतं, मणुस्सा विसज्जिता, नेच्छति कुमाराामच्चत्तणस्स गंधंपि, सो य आगतो राया, संतं नीओ ठवितो य, अमच्चो वीसंभं जातितूण भणति- पुण्णेहिं रज्जं लहति, पुणोवि अण्णस्स जम्मस्स पत्थयणं कीरतु, ताहे देवकुलाणि थूभतलागवावीओ नहवाहणखाइका च, एवमादीहिं दव्वं विणासितं, सालवाहणो आवाहितो,पुणोवि ता विसज्जितं,अमच्चं भणति- तुमंपि घडितो, सो भणति- न घडामि, अंतेपुरिगाण आभरणा णेहित्ति, पुणो गतो पतिट्ठाणं, पच्छा अंतेपुरियाणं णिव्वाहेति, तंमि निट्ठिते सालवाहणो आवाहितो, नत्थि दातव्वं, सोवि पलातो नगरंपि गहितं । एसा. दव्वप्पणिधी ॥ भावप्पणिहाणिए उदाहरणं- भरुयच्छे जिणदेवो आयरिओ, भयंतमित्तो कुणालो य तच्चंनिका दो भातरो वादी, तेहिं पडहओ निक्खालितो, जिणदेवो चेतियवंदओ गतो सुणेति, तेण वारितो, रायकूले वादो जातो, पराजिता रत्तपडा, दोवि य ते पच्छा विणा एतेसिं सिद्धंतेणं ण तीरति उत्तरं दातुंति पच्छा मातिट्ठाणेणं ताणं मूले पव्वइता, विभासा गोविंदवत् , पच्छा पढंताणं उवगतं,ते भावतो पडिवण्णा, साधुणो जाता । एसा भावप्पणिधी १८ ॥ ||२०१||

सुविधीए जोगा संगहिता भवंति, विधिरनुज्ञा जा जस्स इट्ठा सा भवति सुविधी, तत्थ उदाहरणं जहा सामाइयनिज्जुत्तीए अणुकंपाए-बारवती वेतरणी धन्नंतरि अ भवियअभविके वेज्जे । करुणा य पुच्छियंमी गति निद्देसे य संबोधी

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२०२||

प्रणिध्या-दमो योग-संग्रहाः १९--२१

||१||सो वानरजूहवती० चिंता य सोभणा जाता, साधुणा य कहितं तेहिं गतिंदिएहिं,सहस्सारे उववण्णो,सो य साहरितो १९॥

संवरेण जोगा संगहिता भवंति, तत्थ पडिवक्खेण उदाहरणं-रायगिहे सेणिएणं वद्धमाणसामी पुच्छितो, एक्का देवी नट्ट-विधिं उवदंसेत्ता गता, का एसत्ति?, सामी भणति-वाणारसीए भद्दसेणो जुण्णसेट्ठी, तस्स भज्जा नंदा इति, तीसे धूता सिरी, सा वड्डकुमारी वरकपरिवज्जिता, तस्स कोट्ठए चितिए पासस्सामी समोसढो, सिरी पव्वइता, गोवालीए सीसिणिका दिण्णा, सा पुव्वं उग्गेण विहरित्ता पच्छा ओसण्णा जाता, हत्थेण पादे धोवति जथा दोवती विभासा, वारिज्जंती उट्ठेतूण अण्णत्थ गता, विभत्ताए वसहीए ठिता, तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता चुल्लहिमवंते पउमे दहे सिरी जाता देवगणिका, एताए ण संवरो कतो, पडिवक्खा कातव्वो, अण्णे भणंति- हत्थिणिकारूवेणं वाउक्काएति, ताहे सेणिएणं पुच्छितं २० ॥

अत्तदोसोवसंहारो कातव्वो,जदि किंचि काहामि तो दुगुणो बंधो होहितित्ति,तत्थ उदाहरणं—बारमतीए अरहमित्तो सेट्ठी, अणुधरी भज्जा, सावकाणि, जिणदेवो पुत्तो, तस्स रोगो उप्पण्णो, ण तीरति चिगिच्छितुं, वेज्जा भणंति-मांसं खाहि, सो णेच्छति, सयणपरियणो अम्मापियरो य पुत्तणेहेणं अणुजाणंति, सो णेच्छति, किह चिररक्खितं वतं भंजामित्ति?, उक्तं च—

वरं प्रविष्टं ज्वलितं हुताशनं, न चापि भग्नं चिरसंचितं व्रतम्। वरं हि मृत्युः परिशुद्धकर्मणा,न शीलवृत्तस्खलितस्य जीवितम् ॥१॥

अत्तदोसोवसंहारो कतो, मरामित्ति सव्वं सावज्जं पच्चक्खातं, कहवि पउणो तहावि पच्चक्खातं चेव, पव्वज्जा कता, इतो सुहज्झवसाणस्स णाणमुप्पण्णं जाव सिद्धोत्ति २१ ॥ ||२०२||

सव्वकामेसु विरज्जितव्वं,तत्थ उदाहरणं—उज्जेणीए देविलासत्तो राया,तस्स भज्जा अणुरत्ता लायणा णामं,अण्णदा स

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२०३|| राया सेज्जाए अच्छति, देवी वाले जोएति, ताए पलितं दिट्ठं, भणति-भट्टारगा ! दूतो आगतो, सो य ससंभमं भयहरिसाइतो उट्ठितो, पच्छा देवी भणति-धम्मदूतोत्ति सणितं अंगुलीए वेढेत्ता उक्खतं, सोवण्णे थाले क्षोमजुयले ठएत्ता नगरं हिंडावितं, पच्छा आद्धितीं करेति, अण्णदा अजाते पलिते अम्हं पुव्वजा पव्वयंति, अहंपि पव्वयामित्ति पउमरहं पुत्तं ठवेत्ता पव्वइतो सदेवीओ तावसो, संगतओ दासो अणुमतिका दासी, ताणिवि अणुरागेण पव्वइताणि, असितागिरिंमि अस्समो तावसाणं, तत्थ गताणि, संगतओ य अणुमातिका य केणति कालंतरेण उप्पव्वइताणि, ताणि दोण्णावि अच्छंति, देवीए गब्भो नक्खातो, संवड्ढितुमारद्धो, राया अद्धितिं पकतो अयसो जातोत्ति, अन्नसंवसो पच्छण्णं सारवेति, सुकुमाला देवी वियायन्ता कालगता, तत्थ दारिका जाता, सा अण्णाणं तावसीणं थणं पियंती संवड्ढिता,ताहे से अद्धसंकासात्ति नामं कतं, सा जोव्वणत्था जाता, सा पितरं अडवीतो आगतं वीसामेति । सो तीसे जोव्वणे अज्झोववण्णो अज्जा हिज्जो लएमित्ति मुंज्झति, अण्णदा पधावितो गेण्हामित्ति, उडगकट्ठे आवडितो पडितो चिंतेतुमारद्धो-धिद्धीत्त, इहलोगे फलितं एतं, परलोए ण णज्जति किंपित्ति संबुद्धो, जाती सरिता, भणति-भवितव्वं खलु भो सव्वकामविरत्तेणांति अज्झयणं भासति । धूता विरज्जे, संजतीणं दिण्णा, सिद्धाणि । एवं सव्वकाम- प्रणिध्या- दमो योग संग्रहाः २२
विरज्जितेण जोगा संगहिता २२॥
पच्चक्खाणं दुविहं-मूलगुणपच्चक्खाणं च उत्तरगुणपच्चक्खाणं च, मूलगुणपच्चक्खाणे उदाहरणं—साएते सत्तुंजयो ||२०३||
राजा, जिणदेवो सावओ, सो दिसाजाताए गतो कोडिवरिसं, ते मेच्छा, तत्थ चिलातो राया, तस्स तेण पण्णाकारो रतणाणि मणीया पोत्ताणि य दिण्णाणि, तत्थ ताणि णत्थि, सो चिलातो पुच्छति, अहो रतणाणि रूवियाणि, कहिं एताणि?, सो साहेति,

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२०४||

प्रणिध्यादमो योगसंग्रहाः २३--२४

अण्णरज्जं, चिंतेति-जदि नाम संबुज्झेज्ज, सो राया भणति-अहं जामि, रतणाणि पेच्छामि, तुब्भ तणकस्स रण्णो बीहेमि, जिणदेवो भणति-मा बीभेहि, ताहे तेण तस्स रण्णो पेसितं, तेण भणितं-एउत्ति , आणीतो साकेतं, महावीरस्स समोसरणं, सत्तुंजतो निप्फिडो सपरिवारो,महता इड्डीए जणसमूहो निप्फिडितो,तं पासित्ता चिलातो जिणदेवं पुच्छति-कहिं जणो जाति?,सो भणति-एस सो रतणवाणिओ, भणति-जामो पेच्छामोत्ति, दोवि जणा निग्गता, पेच्छंति भट्टारगस्स छत्तातिच्छत्तं सीहासणाणि विभासा, पुच्छति- कहं लब्भति?, ताहे सामी दव्वरतणाणि भावरतणाणि य वण्णेति, भणति चिलातो-मम भावरतणाणि देहित्ति,भणति-रतहरणगोच्छएहिं साहिज्जंति, पव्वइतो । एते मूलगुणा २३ ॥

उत्तरगुणपच्चक्खाणे-वाणारसी णगरी, तत्थ दो अणगारा वासावासं ठिता-धम्मघोसो धम्मजसो य, ते मासेणं मासखमणेणं अच्छंति, चतुत्थे पारणगे मा णितियवासो होहितित्ति पढमाए पोरिसीए सज्झायं बितियाए अत्थपोरिसीं ततियाए उग्गाहेत्ता पधाइता, ते सारइएणं उण्हेणं अब्भाहता तिसाइता गंगं उत्तरमाणा मणसोवि पाणियं णेच्छंति, ते उत्तिण्णा, गंगादेवताए गोउलाणि विउव्वितााणि, आउट्टा समाणी विभासा, ताहे सद्दावेति-एह साधू ! भिक्खं गेण्हह, ते उवउत्ता दट्ठूण तस्स रूवगंधा साहूहिं पडिसिद्धा, पधाइता, पच्छा ताए अणुकंपाए वासवद्दलं विकुव्वितं, भूमी उल्ला सीतलेणं वातेणं अप्पाइता, गामं पत्ता, तत्थ भिक्खं गहाय पारितं, एवं उत्तरगुणा २४ ॥ ||२०४||

वियोसग्गो भाणितव्वो दव्वावियोसग्गे य भाववियोसग्गे य उदाहरणं जथा–चंपाए नगरीए दाहिवाहणो राया, चेडगधूता पउमावती देवी, तीसे दोहलो किह अहं रायनेवत्थणेवत्थिता उज्जाणकाणणाणि विहरेज्जा ?, सा उलुग्गसरीरा जाता,

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

||२०५||

राया पुच्छति , ताहे राया व सा य जयहत्थिमि, राया छत्तं धरेति, गता उज्जाणए, पढमपाउसं च, सीतलएण मट्टिगागंधेण हत्थी अब्भाहते वणं संभरइ, वियड्डो वणाभिमुहो पयायो, जणो ण तरति ओलग्गितुं, दोवि अडविं पवेसिता, राया वडरुक्खं पेच्छाति, देविं भणति—एतस्स वडस्स हेट्ठेण जाहित्ति तो तुमं साखं गेण्हेज्जासि, ताए पडिसुतं, न तरति, राया दक्खो, तेण साला गहिता, सो उत्तिण्णो, निराणंदो गतो चंपं, साविय इत्थिका णीता निम्माणुसं अडविं, जाव तिसागतो पेच्छति दहं महतिमहालयं, तत्थ उत्तिण्णो अभिरमति हत्थी, इमात्रि सणियं ओइण्णा, ओकिण्णा तलाक्काओ, दिसाओ न जाणति, एकाए दिसाए साकारभत्तं पच्चक्खाइत्ता पधाविता, जाव दूरं गता ता तावसो दिट्ठो, तस्स मूलं गता, अभिवादितो, पुच्छति- कतोसि अंमो ! इहं आगता ?, ताहे कहेति-अहं चेडगस्स धूता जाव इहं हत्थिणा आणीता, सो य तावसो चेडगनियल्लओ, तेण आसासिता—मा बीभेहित्ति, ताहे से वणफलाणि दातूणं एकाए दिसाए अडवीतो णीणिता, एतोहिंतो हलच्छित्ता भूमी, तं ण अक्कमामो, एसो दंतपुरस्स विसयो दंतचक्को राया, ता तुमं अडवीओ निग्गता, दंतपुरे अज्जाणं मूले पव्वइता, पुच्छिताए गब्भो नक्खातो, पच्छा णाते महत्तरिकाणं आलोएति, सा वियाया समाणी सह नाममुद्दाए कंबलरतणेण य सुसाणे उज्झति, तत्थ मसाणपालो पाणो तेण गहितो, भज्जाए अप्पितो, अवकिण्णपुत्तत्ति नामं कतं, सा अज्जा तीए पाणीए समं मेत्तिं करेइत्ति, सा अज्जा ताहिं संजतीहिं पुच्छिता-कहिं गब्भो?, भणति—मतगो जातो, मे उज्झितो, सो तत्थ संवड्ढति, ताहे दारगरूवेहिं समं रमति, सो ताणि डिक्करिकाणि भणति-अहं तुज्झ राया मम करं देह, सो सुक्खकच्छूए गहितो, ताणि भणति-मम कंडुयह, ताहे से करकंडुत्ति णामं कतं, सो य ताए संजतीए अणुरत्तो, सा य से मोदए देति, जं वा भिक्खं लट्ठं लभति, संवड्ढितो सो म-

व्युत्सर्गः

||२०५||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ॥१,२॥ दीप अनुक्रम [११-३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥२०६॥

साणं रक्खति, तत्थ दो संजता तं मसाणं केणति कारणेण अतिगता जाव एगत्थ वंसकुडंगे डंडगं पेच्छंति, तत्थ एगो डंडगलक्खणं जाणति, सो भणति-जो एतं डंडगं गेण्हति सो य राया होहितित्ति, किंतु पडिच्छितव्वओ, जाव अण्णाणि चत्तारि अंगुलाणि वड्डति ताहे जोगोत्ति, तं तेण मातंगचेडएणं एक्केण य धिज्जातिएणं सुयं, ताहे सो धिज्जाइको अप्पसारिकं तस्स चउरंगुलं खणिऊण छिंदति, तेण य चेडेण दिट्ठो, उद्दालिओ, सो तेण धिज्जाइएणं करणं णीतो—देहि डंडगं, सो भणति—मम मसाणे, न देमि, धिज्जातिगो भणति—अण्णं गेण्ह, सो णेच्छति, भणति- एतेण ममं कज्जं, सो दारओ न देति, ताहे दारओ पुच्छितो-किं न देसि ?, भणति-अहं एतस्स डंडगस्स पभावेण राया होहामित्ति; ताहे ते कारणिका हसितूणं भणंति- जदा तुमं राया होज्जासि तदा तुमं एतस्स गामं देज्जासि, पडिवण्णो, तेण धिज्जातिगेण अण्णे धिज्जातिगा गहिता जथा एतं मारेत्ता हरामो. तं तस्स मातपिताए सुतं. ताणि तिण्णिवि नट्ठाणि जाव कंचणपुरं गताणि, तत्थ राया मरति, आसो अधिवासितो, तस्स बाहिं पुत्तस्स मूलं आगतो, पदाहिणीकातूणं ठितो, जाव नागरा पेच्छंति लक्खणजुत्तं, जयसद्दो कतो नंदीतूरं आहतं,इमोवि जंभंतो उट्ठितो, वीसत्थो आसं विलग्गो, पवेसिज्जति, मातंगोत्ति धिज्जातिगा ण देन्ति पवेसं, ताहे तेणं डंडगरतणं गहितं, जलितुमारद्धं, ते भीता ठिता, ताहे तेण वाडहाणगा हरिएसा धिज्जातिगा कता, उक्तं च-दातृवाहनपुत्रेण, राज्ञा तु करकंडुना । वाटहानकवास्तव्याश्चांडाला ब्राह्मणीकृताः ॥ १ ॥ तस्स य घरनामं अवकिण्णकोत्ति, पच्छा से तं चेडरूवकतं पतिट्ठितं करकंडुत्ति, ताहे सो धिज्जातिको आगतो, देहि मम गामं, भणति—जो ते रुच्चति, सो भणति-मम चंपाए घरं तत्थ देहि, ताहे दहिवाहणस्स लेहं देति—देहि ममं एगं गामं अहं तुज्झं जं रुच्चति गामं वा नगरं वा तं देमि, सो रुट्ठो-दुट्ठमातंगो अप्पाणं न याणति,

व्युत्सर्गः ॥२०६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२०७|| — व्युत्सर्गः

तो मम लेहं देतित्ति, दूतेण आगतेण कहितं, करकंडू कुवितो, गतो, चंपा रोधिता, जुज्झं वट्टति, ताहे संजतीए सुतं-मा जणक्खओ होहितित्ति करकंडुं उस्सारेत्ता रहस्सं भिंदति एस तव पितत्ति, ताणि अंमापितरो पुच्छिताणि, तेहिं सब्भावो कहितो, माणेणं ण ओसरति, ताहे सा चंपं अतिगता, रण्णो घरं एति, णाता, पादपडिताओ दासीओ परुण्णाओ, रायाएवि सुतं, सोवि आगतो, वंदित्ता आसणं दातूणं तं गब्भं पुच्छति, भणति-एसो जो एस णगरं रोहित्ता अच्छति, तुट्ठो, निग्गतो, मिलितो, दोवि रज्जाणि तस्स दातूणं दधिवाहणो पव्वइतो, करकंडू महासासणो जातो। सो किर गोउलप्पिओ, अणेगाणितस्स गोउलाणि जाताणि, जाव सरदकाले एगं गोवच्छयं धोरगत्तं सेततं पेच्छति, भणति-एतस्स मातरं मा दुहेज्जह, जदा वड्ढितो होज्जा तदा अण्णाणं गावीणं दुद्धं पाएज्जाह, ते गोवा पडिस्सुणंति, सोवि उ वत्तविसाणो खंधवसभो जातो, राया पेच्छति, सो जुद्धिकतो जातो, पुणो कालेण राया आगतो, पेच्छति महाकायं जुण्णवसभं पड्डुएहिं परिघाट्टिज्जंतं, गोवे पुच्छति-कहिं सो वसभोत्ति?, तेहिं सो दाइतो, पेच्छंतओ विसण्णो, चिंतेति 'सेयं सुजायं० गोट्ठंगणस्स ० पोराणयं० एवं संबुद्धो, जाइसरणं, पव्वइतो विहरति ॥

इतो य पंचालासु जणवदेसु कंपिल्लं नगरं, तत्थ दुम्मुहो राया, सो इंदकेतुं पासति लोगेण महिज्जंतं अणेगकुडभीसहस्सपरिमंडिताभिरामं, पुणो य विलुत्तं पडितं च मुत्तपुरीसाण मज्झे, सोवि संबुद्धो, जो इंदकेतुं सुयलंकियं तु०। सोवि विहरति। ||२०७||

इतो य विदेहे जणवए मिहिला णगरी, तत्थ नमी राया, तस्स दाहो जातो, देवी चंदणं घसति, वलयाणि खलखलेंति, सो भणति-कण्णाघातो होति, देवीए एक्केण एक्कं अवणेंतीए सव्वाणिवि अवणीताणि, एक्केक्कं ठितं, राया तं पुच्छति, ताणि

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

||२०८||

वलयार्ति न खलखलेंति, सा भणति-अवणीताणि, सो तेण दुक्खेण अब्भाहतो परलोकाभिमुहो चिंतेति-बहुकाणं सो, एक्कस्स ण, एवं बहुयाणं० जाव विहरति । — व्युत्सर्गः

इतो य गंधारविसएसु पुरिसपुरं नगरं, तत्थ नग्गई राया, सो अण्णदा अणुजत्तं णिग्गतो, पेच्छति चूतं कुसुमितं, तेणं एगा मंजरी गहिता, एवं खंधावारेण लएन्तेणं कट्ठावसेसो कतो, पडिएंतो पुच्छति-कहिं सो चूतरुक्खो?, अमच्चेण अक्खातो, पस्सति, तो किह कट्ठाणि कतो?, भणति-तुब्भेहिं एगा मंजरी गहिता, पच्छा अण्णेण जणेण गहिता, सो चिंतेति-एवं रज्जसिरित्ति जाव रिद्धी ताव सो भणति—अलाहि, जो चूतरुक्खं ७ । १७-४६ । २१६ भा० । सोवि विहरति । चत्तारिवि विहरमाणा खितिपतिट्ठे णगरे चाउब्बारं देवकुलं, पुव्वेण करकंडू पविट्ठो, दुम्मुखो दक्खिणेण, किह साधुस्स अण्णतोमुहो अच्छामित्ति तेण वाणमंतरेण दक्खिणपासेवि मुहं कतं, नमी अवरेणं, ततोवि मुहं कतं, गंधारो उत्तरेण, तओवि मुहं कयं । तस्स किर करकंडुकस्स आबालत्तणाउ सा कंडू अत्थि चेव, तेण कंडूकणं गहाय मसिणमसिणं कण्णो कंडूइतो, तं तेण एगत्थ संगोवितं, तं दुंमुहो पेच्छति । सो भणति—जदा रज्जं०। १७-४-७। उ० २७६।। जाव करकंडू पडिवयणं न देति ताव नमी वयणसमकं इमं भणति—जदा ते पितिये रज्जे० ।। उ० २७७।। किं तुमं एतस्स आउत्तगोत्ति भणति, ताहे गंधारो भणति-सव्वं परिच्चज्ज० । उ० २७८ ।। ताहे करकंडू भणति-मोक्खमग्गपवण्णाणं० (ग्गं पवन्नेसु) । १७ प्र० । उ०२७९ ।। रूसउ वा परो मा वा० । १७-५१। जधा जलंताणि० । १७-५२। १४०९। सुचिरंपि वं० । १७-५३। १४१०। ताण सव्वाणंपि दव्वविउस्सग्गो जं रज्जाणि उज्झिताणि, भावविउसग्गो कोहादीणं २५ ।। — ||२०८||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२०९||

अप्रमादो योग- संग्रह:

न पमादो अप्पमादो, तत्थ उदाहरणं-रायगिहे जरासंधो राया,तस्स सव्वप्पहाणाओ दो गणिकाओ-मगहसुंदरी मगहसिरी य, मगहसिरी चिंतेति-जदि एसा न होज्जा मए एक्कलियाए राया हत्थगतो होज्जा जसो यत्ति, तीसे छिद्दाणि मग्गति, ताहे मगहसुंदरीए नट्टदिवसंमि कण्णिकारेसु सोवण्णिकाओ विसधूवित़ाओ सूचीओ केसरसरिकाओ पक्खित्ताओ, ताहे तीए मगहसुंदरीए महतरिका पेच्छति-भमरा कणिकाराणि न अल्लियंति, चूतेसु णिणेन्ति, ताहे ऊहितं-णूणं सदोसाणि पुप्फाणित्ति, जदि य भणिहिन्ति-एतेहिं पुप्फेहिं अच्चणिका अचोक्खा विसभाविताणि वा तो गामेल्लकत्तणं होहितित्ति, तो उवाएण वारेमि, सा य रंग उत्तिण्णा, अण्णदा मंगलं गाइज्जति, तं दिवसं इमं गीतियं पगीता-पत्तए वसंतमासए० ॥ सा चिंतेति- अपुव्वगीतिका, णातं सदोसाणि कण्णिकाराणि, ते परिहरंतीए गीतं नच्चितं च सविलासं, ण य छलिता, परिहरिय अप्पमत्ता नट्टं गीतं किर न चुक्का । एवं साधुणावि पंचविहे अप्पमादे रक्खेंतेण जोगा संगहिता भवंति २६ ॥

सो य अप्पमादो लवे अद्धलवे वा पमादं ण जाइतव्वं । भरुअच्छे एको आयरिओ, तेण विजयो सीसो उज्जेणिं पत्थविओ कज्जेणं, सो जाति, तस्स गिलाणकज्जेण केणइ वक्खेवो, सो य अंतरा वासावासेण रुद्धो, अणुगतणं उड्डितंति णडपिडए गामे वासावासं ठितो नागघरे, सो चिंतेति-गुरुकुलवासो न जातो, इहवि करेमि, तहेव जो उवदेसो तेण ठवणायरितु ठावितो, सो कालं गहाय आवस्सए काउस्सग्गं कातूणं वंदित्ता आलोएति, मज्झेवि वंदित्ता पच्चक्खाणं सयमेव गेण्हति, पच्छा कालं निवेदेति, सयं चेव भणाति-तहत्ति, एवं चक्कवालसमायारी विभासितव्वा,एवं किर सो सव्वत्थ ण चुक्को, खणे खणे उवक्खिज्जति-किं मे कतं किं च मे किच्च सेसमिति । एवं किर अप्पमादेणं जोगा संगहिता भवंति २७ ॥ ||२०९||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥२१०॥

ध्यान-संवरयोगः

झाणेणं संवरो जोगाणं जत्थ सो झाणसंवरजोगो, जोगसंगहो । तत्थोदाहरणं-संवबद्धणे णगरे मुंडिवओ राया, तत्थ वसुभूती आयरिया बहुसुता, तेहिं सो राया उवसामितो सड्ढो जातो, ताणं सीसो पूसमितो बहुस्सुतो अण्णत्थ ओसण्णो अच्छति, अण्णदा तेसिं आयरियाणं चिंता जाता-सुहुमज्झाणं पविसामि, तं महापाणसरिसयं, तं किर जाहे पविसति ताहे एत्रं जोगसंनिरोधं करेति जथा किंचिवि ण चेतति, ताण य जे मूले ते अगीतत्था, तेण पूसमित्तो सद्दावितो, आगतो, कहितं से, तेण पडिवण्णं, ताहे ते एकत्थ उव्वरए निव्वाघातेण झायंति, सो तेण अंतेण ताणं पवेसं न देति, भणति-एत्तो ठिता वंदह, आयरिया वाउला, ते एवं करेंति । अण्णदा ते अवरोप्परं मंतेति-किं मण्णे होज्जा ?, गवेसामु ता, एगो उव्वरगबारे ठितो निव्वण्णेइ, चिरं अच्छितो, आयरिओ न चलति न फंदति, ऊसासनीसासोवि नत्थि, सुहुमो किर एवं, तेण गंतूण अण्णेसिं कहितं, तेहिवि जोइतं, ते रुट्ठा, अज्जो ! तुमं आयरिए कालगएवि न कहेह; सो भणति- ण कालगतत्ति, झायंति, मा वाघातं करेह, अण्णे भणंति-पव्वइतगा एसो लिंगी मण्णे वेतालं वा साहेतुकामो लक्खणजुत्ता आयरिका तेण न कहेति, अज्ज रत्तिं पेच्छाहिध, ते आरद्धा तेण समं विवदितुं, तेण वारिता, ताहे तेहिं सो राया उस्सारेतूणं आणीतो, आयरिया कालगता सो लिंगी न देति निप्फेडितुं, एसोवि राया पेच्छति, तेणवि पत्तितितं जहा कालगतात्ति, पूसमित्तस्स न पत्तीयति, सीया सज्जिता, जाहे णिच्छओ णातो ताहे विणासितं सेहेहिंति, पुव्वं भणितो सो आयरिएहिं- जाहे अगणी अण्णो वा अच्चयो होज्जा ताहे वामंगुट्ठए छिवेज्जासित्ति, छित्तो, तो पडिबुद्धो, भणइ- किं अज्जो ! वाघातो कतो?, भणति-पेच्छह एतेहिं सेहेहिं तुज्झ कतं, ते अंबाडिता एरिसिका किरिका पविट्ठो । एरिसिकं किर झाणं पविमितव्वं तो जोगा संगहिता भवंति २८ ॥

॥२१०॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२११||

वेदना संगप्रायश्चित्ताराधनाः

उदओ जदिवि किर मारणंतिया वेदणा तोवि अहियासेयव्वा, एत्थोदाहरणं-रोहिडगं नगरं, ललिता गोट्ठी, रोहिणी जुन्नकणिका, सा अण्णं जीवणोवायं अलभंती तीसे गोट्ठीए भत्तं परंधिता, एवं कालो वच्चति, अण्णदा तीए कडुकं दोद्धिकं बहुसंभारसंभितं उवक्खडितं, विण्णासति जाव मुहे ण तीरति कातुं, तीए चिंतितं- खिसिया होमि गोट्ठिएहिंति सिग्घं अण्णं उवक्खडेमि, एतं भिक्खायराणं दिज्जिहिति, मा दव्वसंजोगो नासतु, जाव धम्मरुची नाम साधू मासखमणपारणगट्ठाए पविट्ठो, तस्स दिण्णं, आगतो आलोएति गुरूणं, तेहिं भाजणं गहितं, खारगंधो य णातो, विण्णासितं तेहिं, चिंतितं-जो एतं आहारेति सो मरति, भणितो विगिंहि बाहिन्ति, सो गहाय अडविं गतो, एकत्थ दड्ढरोक्खरे विकिंचामित्ति पत्ताबद्धं मुयंतस्स हत्थो लित्तो, सो तेण एकट्ठ पुट्ठो, तेण गंधेण कीडियाओ आगताओ, जा जा खाति सा सा मरति, तेण चिंतितं-मए एकेण वा समप्पतुत्ति मा जीवघातो भवतुत्ति एकंते थंडिल्ले आलोचितपडिक्कंतो मुहणंतकं पडिलेहेत्ता अणिंदंतेण आहारितं, वेदणा य तिव्वा जाता अहितासिता, सिद्धो। एवं अहियासेतव्वं २९ ॥

संगो नाम 'संज संगे' येनास्य भयमुत्पद्यते तं जाणणापरिण्णाए णातूणं पच्चक्खाणपरिण्णाए पच्चक्खातव्वं, तत्थोदाहरणं-चंपाए जिणदेवो सत्थवाहो सावको जाव उग्घोसेत्ता अहिछत्तं वच्चति, अंतरा अडविं पवण्णो,सत्थो पुलिंदेहिं विलुलितो, वच्चंतो सो सावओ नासंतो अडविं पविट्ठो, जाव पुरतो अग्गी मग्गतो वग्घा दुहतो पवातं, सो भीतो असरणं णातूणं सतमेव भावलिंगं पडिवज्जेत्ता कतसामायिको पडिमं ठितो, सावएहिं खइतो सिद्धो। एवं संगपरिण्णाए जोगा संगहिता भवंति ३० ॥ ||२११||

पायच्छित्तं करेंतस्स जथाविधीए देंतस्स य उववज्जित्ता जोगा किर संगहिज्जंति। तत्थोदाहरणं-एगत्थ नगरे धणगुत्ता

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२|| दीप अनुक्रम [११-३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥२१२॥

आयरिका, ते किर पायच्छित्तं जाणंति दातुं छदुमत्थत्तेवि, जहा एसिएण सुज्झति वा नवात्ति इंगितेण, जो य ताणं मूले वहति सो य सुहेण नित्थरति, तं च अतीचारं सोहेति, अग्गहिकं च निज्जरं पावति, एवं दाणे य करणे य जोगा संगहिता भवंति ३१॥ — आशातनाः ३३

आराहणाए मरणकाले जोगा संगहिता भवंति, तत्थोदाहरणं—विणीताए भरहो, उसभभगवतो समोसरणं, सव्वं वण्णेतव्वं जहा कप्पे, सा मरुदेवा भरहविभूतिं पासित्ता भणति भरहं- तुज्झ पिता एरिसं विभूतिं जहित्ता एकल्लओ अवसणो हिंडति, भरहो भणति- मम कतो विभूती तारिसी जारिसी तातस्स?, जदि न पत्तियह एस जामो पासामो, भरहो निप्फिडति सव्वबलेण, मरुदेवावि, एक्कहिं हत्थिमि विलग्गा जाव पेच्छति छत्तातिच्छत्तं सुरसमूहं च थुवंतं, भरहस्स य वत्थाभरणाणि ओमिलायंताणि, भरहो भणति- दिट्ठा ते पुत्तविभूती?, कतो मम एरिसा सा?, तो सएणं चिंतेतुमारद्धा, अपुव्वकरणं अणुपविट्ठा, जातीसरणं नत्थि, जेण वणस्सतिकातिएहिंतो उव्वट्टिका, तत्थेव हत्थिखंधवरगताए केवलनाणं, सिद्धा, इमाए ओसप्पिणीए पढमसिद्धो मरुदेवा। एवं आराहणं प्रति योगसंग्रहो कायव्वो ३२ ॥

सूत्र एते बत्तीसं जोगसंगहा, एत्थ पडिसिद्धकरणादिणा जो मे अतियारो कतो तस्स मिच्छामिदुक्कडंति।

तेत्तीसाए आसातणाहिं० ॥ सूत्रं ॥ आसातणा णामं णाणादिआयस्स सातणा, यकारलोपं कृत्वा आसातना भवति, ताओ य तेत्तीसं एवं भवंति, तंजहा- सेहे रातिणियस्स पुरतो गंता भवति आसातणा सेहस्स १। सेहे रातिणियस्स सपक्खं गंता भवति आसातणा सेहस्स २। सेहे रातिणियस्स आसण्णं गंता भवति आसातणा सेहस्स ३। एवं तेणं अभिलावेणं सेहे रातिणियस्स पुरतोवि चिट्ठित्ता भवति आसातणा ४। सेहे रातिणियस्स सपक्खं चिट्ठिता भवइ आसातणा ५। सेहे रातिणियस्स आसण्णं ॥२१२॥

*** अत्र ३३ आशातनानां वर्णनं क्रियते

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२१३||

गुरोः ३३ आशातनाः

चिट्ठित्ता भवइ आसातणा ६ सेहे रातिणियस्स पुरतो निसीइत्ता भवति आसातणा ७ सेहे रातिणियस्स सपक्खं निसीइत्ता भवति आसातणा ८ सेहे रातिणियस्स आसण्णं निसीयित्ता भवति आसातणा ९ सेहे रातिणिएण सद्धिं बहिया विहारभूमिं निक्खंते समाणे तत्थ पुव्वामेव सेहतराए आयमति पच्छा रातिणिए आसायणा सेहस्स १० सेहे रातिणिएण सद्धिं बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खंते तत्थ पुव्वामेव सेहतराए आलोएति पच्छा रातिणिए आसायणा सेहस्स ११ केयी रातिणियस्स पुव्वसंलत्तए सिया, तं पुव्वामेव सेहतलाए आलवति पच्छा राइणिए आसातणा सेहस्स १२ सेहे रातिणियस्स रातो वा दिया वा वाहरमाणस्स अज्जो! के सुत्तो के जागरे ?, तत्थ सेहे जागरमाणे रातिणियस्स अपडिसुणेत्ता भवति आसातणा १३ सेहे असणं वा ४ पडिगाहेत्ता तं पुव्वामेव सेहतरागस्स आलोएति पच्छा रातिणियस्स आसातणा सेहस्स १४ तहेव असणं वा ४ पडिगाहेत्ता तं पुव्वामेव सेहतरागस्स पडिदंसेति आसातणा १५ सेहे असणं ४ पडिगाहेत्ता पुव्वामेव सेहतरागं उवणिमंतेति पच्छा रातिणियं आसातणा सेहस्स १६ सेहे रातिणिएण सद्धिं असणं ४ पडिगाहेत्ता तं रातिणियं अणापुच्छित्ता जस्स इच्छति तस्स तस्स खद्धं खद्धं दलयति आसातणा सेहस्स १७ सेहे रातिणिएण सद्धिं असणं वा ४ आहारेमाणे तत्थ सेहे खद्धं खद्धं डायं डायं रसियं रसियं ऊसडं ऊसडं मणुण्णं२ मणामं२ निद्धं२ लुक्खं लुक्खं आहारेत्ता भवति आसातणा सेहस्स १८ सेहे रातिणियस्स वाहरमाणस्स अपडिसुणेत्ता भवति आसातणा सेहस्स १९ सेहे रातिणियस्स वाहरमाणस्स तत्थ गते चेव पडिसुणेत्ता भवति आसातणा सेहस्स २० सेहे रातिणियं किंति वत्ता भवति आसातणा सेहस्स २१ सेहे रातिणियं तुमंति वत्ता भवति आसातणा सेहस्स २२ सेहे रातिणियं खद्धं खद्धं वदति आसायणा सेहस्स२३सेहे रातिणीयं तज्जाएणं तज्जातं पडिहणेत्ता भवति आसातणा सेहस्स२४ कीस अज्जो!

||२१३||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥२१४॥

अर्हदादीनामाशातनाः ३३

गिलाणस्स न करेसि ?, भणइ- तुमं कीस तु न करेसि ?, आयरिओ भणति- तुमं आलसिओ, सो भणति- तुमं चेव आलसिओ इत्यादि २५ सेहे रातिणियस्स कहं कहेमाणस्स इति एतंति वत्ता भवति आसातणा २६ सेहे रातिणियस्स कहं कहेमाणस्स णो सुमणसे भवति आसातणा २७ सेहे रातिणियस्स कहं कहेमाणस्स परिसं भेत्ता भवति आसातणा सेहस्स २८ सेहे रातिणियस्स कहं कहेमाणस्स कहं अच्छिदित्ता भवति आसातणा २९ सेहे रातिणियस्स कहं कहेमाणस्स तीसे परिसाए अणुट्ठिताए अभिण्णाए अवोच्छिण्णाए अव्वोगडाए दोच्चंपि तच्चंपि तमेव कहं कहेत्ता भवति आसातणा ३० सेहे रातिणियस्स सेज्जासंथारगं पादेन संघट्टेत्ता हत्थेणं अणणुण्णवेत्ता गच्छति आसातणा सेहस्स ३१सेहे रातिणियस्स सेज्जासंथारगंसि चिट्ठित्ता वा णिसीतित्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति आसातणा ३२ सेहे रातिणियस्स उच्चासणे वा समासणे वा चिट्ठित्ता वा निसीतित्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति आसातणा सेहस्स ३३ ॥

अहवा सूत्रोक्तानां आसातणाए, तेत्तीसं पडुच्च इत्यर्थः, ताओ य इमाओ सुत्तेणेव भण्णंति,तंजथा-अरहंताणं आसातणाए १ सिद्धाणं आसातणाए २ आयरियाणं आसातणाए ३ उवज्झायाणं आसातणाए ४ साहूणं आसातणाए ५ साहूणीणं आसातणाए ६ एवं सावयाणं ७ सावियाणं ८ देवाणं ९ देवीणं १० इहलोगस्स ११ परलोगस्स १२ केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स १३ सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स १४ सव्वपाणभूतजीवसत्ताणं १५ कालस्स १६ सुतस्स १७ सुतदेवताए १८ वायणायरियस्स० १९ जं वाइद्धं२० विच्चामेलियं २१ हीणक्खरियं २२ अच्चक्खरियं २३ पयहीणं २४ घोसहीणं २५ जोगहीणं २६ विणयहीणं २७ दुट्ठु दिण्णं २८ दुट्ठु पडिच्छितं २९ अकाले कतो ॥२१४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥२१५॥

सूत्र

सज्झाओ ३० काले ण कओ सज्झाओ ३१ असज्झाइए सज्झाइयं ३२ सज्झाइए ण सज्झाइयन्ति ३३ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तत्थ अरहंताणं आसातणा भण्णति- णत्थि अरहंता, तिहिं णाणेहिं जाणंता वा कीह घरवासे भोगे भुंजंति ?, तत्रोत्तरं- भोगनिर्वर्तनीयगुणाः प्रकृतिबलादिति । भणति वा- तित्थकरो केवलणाणे उप्पण्णे देवमणुएहिं वागरति गंधधूवपुप्फोगारबलिमादीयं उवणीतं पाहुडियं किं उवजीवति दोसे जाणंतो ?, तत्रोत्तरं- ज्ञानदर्शनचारित्रानुपरोधकारकस्य अघातिकशुभप्रकृतेः तीर्थकृन्नामकर्मोदयाददोषः वीतरागत्वाच्चादोष इति ॥ सिद्धाणं आसातणा- सिद्धा नत्थि निच्चेट्ठा वा, उवयोगे वा सति रागदोसेहिं भवितव्वं, उत्तरं- सिद्धशब्दादेवास्ति, निच्चेट्ठाणं वीर्यान्तरायक्षयाददोषः, उवयोगेवि वा सति रागद्दोसा न भवति, कषायाणां निरवशेषक्षयात् , अण्णो भणति- केवलणाणदंसणाणं किं एगसमए उवयोगो नत्थि एगगाले ?, तत्रोत्तरं- एतेसिं दोण्हंपि जीवसारुव्वा एगकाले उवयोगो न भवतीति ॥ आयरियाणं आसातणा- सेहे रातिणियस्स पुरतो गंता जथा दसाहिंतो पुव्वभणितं, मणदोसेण वा- डहरो अकुलीणोत्ति व दुम्मेहो दमग मंदबुद्धित्ति । अवि अप्पलाभलद्धी सीसो परिभवति आयरियं॥१॥ परस्स वा उवदिसंति दसविहं वेयावच्चं अप्पणो किं ण करेंति?,एवमादी,उत्तरं-डहरोऽवि णाणवुड्ढो अकुलीणोत्तिय गुणाहियो किह णु । दुम्मेहादीणिवि ते भणंतऽसंताइं दुम्मेहो॥१॥ जाणंति नवि य एवं निद्धम्मा मोक्खकारणं नाणं । निच्चं पगासयंता वेयावच्चादि कुव्वंति ॥२॥एवं उवज्झायाणंपि ॥ समणाणं-असहणा तुरियगती विरूवणेवत्थत्ति एवमादि, एवं अण्णंवि आसातणापगारा संति-अरहंताणं आसातणा जथा-निरणुकंपताए अतिउग्गो उवदेसो कातव्वो इच्चादि,सिद्धाणं ॥२१५॥

अर्हदादीनामाशातनाः ३३

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥२१६॥

अर्हदादीनामाशातनाः ३३

असरीराणं नत्थि अणोवमं सुहं इच्चादि, आयरिया-भिक्खं न हिंडंति सुहसीला सीसपाडिच्छिए उवजीवंति इच्चादि, एवं उवज्झायाणवि सा, साधूणं अण्णोण्णपडिचोदणकोहादीहिं कंमबंधणेत्ति इच्चेवमादि ॥ साहुणीणं कलहणा बहुवगरणा, अहवा समणाणं समणीओ उवद्दवा एवमादि ॥ सावगाण जधा आरंभंताणं कत्तो सोग्गती? एवमादि ॥ एवं सावियाणवि ॥ देवाणं अविउव्विए ण तरंति किंचि कातुं, कामगद्दभा अणिमिसा य, अणुत्तरा वा निच्चेट्ठा, सामत्थे वा सति किमिति तच्चं पवयणमुण्णातिं न करेंति?, एवमादि ॥ एवं देवीणंपि ॥ इहलोगस्स-इहलोगो मणुस्सस्स मणुस्सलोगो, परलोगो सेसाओ तिण्णि गतीयो, आसातणा विभासेज्जा ॥ केवलिपण्णत्तो धम्मो सुतधम्मो चरित्तधम्मो य,आसातणाओ-पाययभासानिबद्धं को वा जाणति पणीत केणेदं?। किं वा चरणेणं तू? दाणेण विणेह भवति?त्ति, ॥१॥ एवमादि॥ सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स आसातणाए, देवादीयं लोगं अण्णहा भणति, सत्त द्वीपसमुद्राः, प्रजापतिकृतं वा ब्रुवते, प्रकृतिपुरुषसंयोगाद्वा ॥ सव्वपाणभूतजीवसत्ताणं आसातणाए पाणा-वेइंदियादयो जत्तो वत्तं आणमंति वा पाणमंति वा तम्हा पाणात्ति वत्तव्वा, भूता-पुढविमादि एगेंदिया जम्हा भुवं भवंति भविस्संति य तम्हा भूतत्ति वत्तव्वा, जीवा-जेसिं आउअसद्दव्वता,ते य सव्वे संसारिणो जम्हा जीविंसु जीवंति जीविस्संति य तम्हा जीवात्ति वत्तव्वा, सत्ता संसारिणो संसारातीता य जम्हा संतीति तम्हा सत्तत्ति वत्तव्वा, एगट्ठिता वा एते,एतेसिं आसादणा जथा सुहुमतसेहिं थावरेहि य अव्वत्तवेदणत्तणेणं उद्दवितेहिं तुच्छो कंमबंधो एवं विभासेज्जा ॥ कालस्स आसातणा, किं कालगहणेणं? किं वा पडिलेहणादिकाला आराहिज्जंति? एवमादि। सुतस्स आसातणा-को आतुरस्स कालो?,मइलंबरधोव्वणे व को कालो?। जदि मोक्खहेतु णाणं को कालो तस्सऽकालो वा? ॥ १ ॥ एवमादि। सुतदेवताए सुतदेवता० जीए सुतमधिट्ठितं ॥२१६॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥२१७॥

तीए आसातणा,णत्थि सा, अकिंचिक्करी वा एवमादि ॥ वायणायरियस्स आ० वायणायरिओ नाम जो उवज्झायसंदिट्ठो उद्देसादि करेति तस्स आसातणा- निदुक्खसुहो बहुवारा वंदणं वा दवावेति एवमादि । जं वाइद्धं व्याविद्धं विपर्यस्तरत्नमालावत् अण्णेण पगारेण जा आसातणा तीए, एवं जोएज्जा,विच्चामेलितं कोलिकपायसवत् , हीणक्खरं अक्खरहीणं अच्चक्खरं अहिगक्खरं पदहीणं घोसहीणं एवं जहा सामाइए जोगहीणं उवहाणं जोगो एवं विभासेज्जा जाव असज्झाइए सज्झाइतं सज्झाइए ण सज्झाइतंति, तत्थ असज्झाइयं नाम जंमि कारणे सज्झाओ नत्रि कीरति तं सव्वं असज्झाइयं, तं च बहुविहं, तस्स इमे भेया- असज्झाइतं तु दुविहं० ॥ १४१९ ॥ आयसमुत्थं चिट्ठतु ताव, उवरिं भण्णिहिति, जं पुण परसमुत्थं तं इमं पंचविहं-संजमघादो०॥ १४२० ॥ एतंमि पंचविहे असज्झाइए जो सज्झायं करेति तस्स आयसंजमविराहणा। तत्थ दिट्ठंतो- घोसणयमेच्छरण्णोत्ति, अस्य व्याख्या-मिच्छभय० ॥ १४२१ ॥ खितिपतिट्ठितं नगरं, जितसत्तू राया, तेण सचिसए घोसावितं जहा- मेच्छो राया आगच्छति, तं गामकुनगराणि मोत्तुं समासण्णे दुग्गेसु ठायह, मा विणस्सिहिह, जे ट्ठिता रण्णो वयणेण दुग्गादिसु ते ण विणट्ठा, जे पुण ण ठिता ते मेच्छादीहिं विलुत्ता, ते पुणो रण्णा आणाभंगो मम कतोत्ति जंपि किंचि हितसेसं तंपि डंडिता, एवं असज्झाइए सज्झातं करेंतस्स दुहतो डंडो,इह भवे सुरत्ति देवताय छलिज्जंति परभवे पडुच्च णाणादिविराहणा पच्छित्तं च, इमो दिट्ठंतोवणतो-राया इध० ॥ १४२२ ॥ जहा राया तहा तित्थगरो जथा जणवदजणा तथा साधू जथा आघोसणं तथा सुत्तं असज्झाइए सज्झाइतपडिसेहगंति, जारिसा मेच्छा तारिसा असज्झाइगा जहा रतणधणावहारो तथा णाणदंसणचरणविणासो, सव्वं उवसंहारेतव्वं ॥ को इत्थ लित्तो पमादेणंति, अस्य विभासा- थोवावसेस० ॥ १४२३ ॥ सज्झायं करेंतस्स

परसमुत्थमस्वाध्यायिकं

॥२१७॥

*** अत्र अस्वाध्यायिकम् वर्णनं क्रियते

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥२१८॥

संयमोपघातिकमस्वाध्यायिकं ॥२१८॥

थोवोऽवसेसगो उद्देसगो अज्झयणं वा ता पोरुसी अतिवच्चिसु ता अहवा सज्झायं कालवेला व सव्वादि, जो आउडियाए सज्झायं करेति सो णाणादिहीणो भवति, अणायारत्थो य देवताए य छलिज्जति संसारे य दीहकालं अणुपरियट्टति, पमादेणावि करेंतो छलिज्जति च्चेव, दुक्खं संसारे य अणुभवति ॥ तत्थ जं तं संजमोवघातियं तं इमं तिविहं—

महिया य० ॥ १४२४ ॥ पंचविहस्स य असज्झाइयस्स कं कहं परिहरितव्वमिति तप्पसाहगो इमो दिट्ठंतो- दुग्गाति० एगस्स रण्णो पंच पुरिसा, ते बहुसमरलद्धविजया, अण्णदा तेहिं अच्चंतविसमं दुग्गं गहितं, तेसिं तुट्ठो राया इच्छितं नगरे पयारं देति, जं ते किंचि असणादिकं वत्थादिगं वा जणस्स गेण्हंति तस्स वेतणयं सव्वं राया पयच्छति। एक्केण० ॥ १४२६ ॥ तेसिं पंचण्हं पुरिसाणं एक्केण राया तोसिततरो, तस्स गिहावणरत्थासु सव्वत्थ इच्छियपयारं पयच्छति, चउण्हं रत्थासु चेव इच्छितपयारं पयच्छति, जो एते दिण्णपयारे वा आसादेज्ज तस्स राया दंडं करेति, एस दिट्ठंतो, इमो उवसंहारो- जथा पंच पुरिसा तथा पंचविहं असज्झातियं, जथा सो एगो अब्भहिततरो पुरिसो एवं पढमं संजमोवघातियं, सव्वं वा ण सादिज्जति, तंमि वट्टमाणे ण सज्झातो णेव पडिलेहणातिका काइया चेट्ठा कीरति, इतरेसु चतुसु असज्झाइएसु जथा ते चतुरो पुरिसा रत्थासु चेव अणासायणिज्जा तथा तेसु सज्झाओ चेव ण कीरति सेसा सव्वा चेट्ठा कीरति,आवस्सगादि उक्कालियं पढिज्जति। महियादितिविहस्स संजमोवघातियस्स इमं वक्खाणं—

महिया० ॥ २२० भा० ॥ **महियत्ति** धूमिका, सा य कत्तियमग्गसिरादिसु गब्भमासेसु भवति, सा य पडणसमकालं च सुहुमत्तणतो सव्वं आउक्काइयभावितं करेति, तत्थ तक्कालसमं चेव सव्वावि चेट्ठा णिरुब्भति। ववहारसचित्तो पुढविक्कायो

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२१९||

अरण्णो वा उड्डन्तो आगतो रतो भण्णति, तस्स सचित्तलक्खणं धूणंतो ईसिं आतंबो दिगंतरेसु दीसति, सोवि निरंतरपातेण तिण्हं दिणाणं परतो सव्वं पुढविक्काइयभावितं करेति, तत्र उत्पातशंकासंभवः। अभिण्णवासं तिविहं बुब्बुदाति, जत्थ वासे पडमाणे उदगबुब्बुदा भवंति तं बुब्बुदवरिसं,तेहिं वज्जितं तव्वज्जं, सुहुमफुसारेहिं पडमाणेहिं फुसितवरिसं, एतेसु जहसंखं तिण्णि पंच सत्त दिणा, परतो सव्वं आउक्कायभावितं भवति। संजमघातस्स सव्वभेदाणं इमो चउव्विहो परिहारो-दव्वे खेत्ते०पच्छद्धं अस्य व्याख्या–

दव्वे तं चिय० ॥ २२१ ॥ भा० । दव्वतो तं चेव दव्वंति महिया सचित्तरयो भिण्णवासं वा परिहरिज्जति, जहितं चेत्ति जहिं खेत्ते महिया पडति तहिं चेव परिहरिज्जति, तच्चिरन्ति पडणकालाओ आरब्भ जच्चिरकालं पडति तच्चिरं परिहारो, सव्वंति भावतो ठाणभासादित्ति ठाणंति काउस्सग्गं न करेंति ण य भासंति, आदिसद्दाओ गमणागमणपडिलेहणसज्झायादि न करेंति मोत्तुं उस्सासउम्मेसान्ति मोत्तुं, ते णो पडिसिज्झंति उस्सासादिया, अशक्यत्वात् जीवितव्याघातकृत्त्वाच्च, शेषा क्रिया सर्वा णिषिध्यते, एस उस्सग्गपरिहारो। आइण्णं पुण्ण सचित्तरये तिण्णि भिण्णवासे तिण्णि पंच सत्त, ततो परं सज्झायादि सव्वं न करेति, अण्णे भणंति-बुब्बुयवरिसे अहोरत्त, तव्वज्जे दो अहोरत्ता,फुसियवरिसे सत्त,अतो परं आउक्कायभाविते सव्वचेट्ठा णिरुज्झति। कहं?—वासत्ता० ॥ १४२७ ॥ निक्कारणे वासकप्पकंबलीए पाउता णिहुता सव्वब्भंतरे चिट्ठंति, अवस्सकातव्वे वा कज्जे इमा जतणा-हत्थेण भूमादिअच्छिविकारेण वा अंगुलीए वा सण्णेति-इमं करेहि मा वा करेहित्ति, अह एवं नावगच्छति मुहपोत्तियअंतरिया जतणाए भासंति, गिलाणादिकज्जे वा वासकप्पपाउया गच्छंति। संजमघातेत्ति दारं गतं।

इदाणिं उप्पाएत्ति दारं, अभ्रादिविकारवत् विस्रसापरिणामतो उप्पातो, उत्पातो पांशुमादी भवति। पंसू य०॥१४२८॥

संयमोपघातिकमस्वाध्यायिकं ||२१९||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

||२२०||

औत्पाता-स्वाध्या-यिकं

पंसुवरिसं मंसवरिसं रुधिरवरिसं केसात्ति वालवरिसं, आदिकरणा सिलावरिसं रउग्घातपडणं च, एतेसिं इमो परिहारो-मंसरुधिरे अहोरत्तं सज्झाओ न कीरति, अवसेसा पंसुमादीया जच्चिरं कालं पडंति तेत्तियं कालं सुत्तं नंदिमादीयं न पढंति, पंसुरओग्घाताण इमं वक्खाणं-पंसू अचि० गाहा ॥ १४२९ ॥ धूमागारो आपांडरो रओ, अचित्तो य पंसू भण्णति, महास्कंधावारगमनसमुद्भूत इव विस्रसापरिणामतो समंता रेणुपतना रउग्घातो भण्णति, अहवा एस रओ, रओवग्घाओ पुण पंसुरिया भणति, एतेसु वातसहितेसु निव्वातेसु वा सुत्तपोरिसिं न करेंति ॥ किं चान्यत्-साभावि०॥१४३०॥ एतेसु पंसुरउग्घाता साभाविगा हवेज्ज असाभाविगा वा, तत्थ असाभाविगा जे निग्घातभूमिकंपचंदोवरागादिदिव्वसहिता, एरिसेसु असाभाविकेसु कते उस्सग्गे ण करेंति सज्झायं, सुगिम्हएत्ति जदि पुण चेत्तसुद्धिपक्खदसमीए अवरण्हे जोगं निक्खिवंति, दसमीओ परेण जाव पुण्णिमा एत्थंतरे तिण्णि दिणा उवराउवरिं अचित्तरउग्घातावणं काउस्सग्गं करेंति तेरसिमादिसु वा तिसु दिणेसु तो सब्भाविके पडंतेवि संवच्छरं सज्झायं करेंति,. अह ु तुस्सग्गं न करेंति तो साभाविकेवि पडंते सज़्झायं न करेंति। उप्पातंति गतं।

इदाणिं सादिव्वित्ति, सह देवेण सादेवं, दिव्वकृतमित्यर्थः। गंधव्व० ॥ १६ । ३१ ॥ गंधव्वनगरविउव्वणं दिसाडाह-कारणं विज्जुभवणं उक्कापडणं गज्जितकरणं जूवगो वक्खमाणो जक्खालित्तं जक्खुद्दित्तं आगासे भवति, एत्थ गंधव्वनगरं जक्खुद्दित्तं च एते नियमा दिव्वकता, सेसा भयणिज्जा, जतो फुडं न नज्जंति तेण तेसिं परिहारो, एते गंधव्वादिया सव्वे एक्कं पोरिसिं उवहणंति, गज्जितं दो पोरिसीओ उवहणति। दिसिदा० ॥ १४३२ ॥ अन्यतमादिसि महानगरं प्रदीप्तमिवोद्योतः, किंतु उपरि प्रकाशमधस्तादंधकारः ईदृग् छिन्नमूलो दिग्दाहः, उक्कालक्खणं सदेहवण्णरेहं करेंति जा पडति सा उक्का, ||२२०||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥२२१॥

सादिव्या-स्वाध्या-यिकं

रेहाविरहिता वा उज्जोतं करेति जा पडति सावि उक्का, जूवगोत्ति संझप्पभा चंदप्पभा य जेण जुगवं भवंति तेण जूवगो, सा य संझप्पभा चंदप्पभावरिता फिडंति न नज्जति, सुक्कपक्खपाडिवगादिसु तिसु दिणेसु, संझच्छेदे य अणज्जमाणे कालवेलं न मुणंति अतो तिण्णि दिणे पादोसियं कालं न गेण्हंति, तेसु तिसु दिणेसु पादोसियं सुत्तपोरिसिं न करेंति। केसिं च० ॥१४३३॥ जगस्स सुभासुभमत्थनिमित्तुप्पाओ अवितक्को आदिच्चकिरणविकारजणिओ आदिच्चेसु वत्थमिय आयंबो किण्हसामो वा सगडुद्धिसंठितो डंडो अमोहत्ति, एस जूवगो, सेसं कंठ्यं। किं चान्यत्- चंदि० ॥ १४३४ ॥ चंदसूरुवरागो गहणं भणति एयं वक्खमाणं, साभ्रे निरभ्रे वा व्यंतरकृतो महागर्जितध्वनिर्निर्घात:,तस्यैव विकारो गुंजमानो महाध्वनिर्गुंजितं,सामण्णतो तेसु चतुसुवि अहोरत्तं सज्झाओ न कीरति, निग्घातगुंजितेसु विसेसो-बितियदिणे जाव सा वेलत्ति णो अहोरत्तच्छेदेण छिज्जति, जथा अण्णेसु असज्झातिएसु, संझाचतुक्ति—अणुदिते सुरिए मज्झण्हे अत्थमणे अद्धरत्ते य, एतासु चतुसु सज्झायं न करेंति पुव्वुत्तं, पाडिवएत्ति चउण्हं महामहाणं चतुसु पाडिवएसु सज्झायं न करेंति, एवं अण्णंपि जंति महं जाणेज्जा जहिन्ति गामनगरादिसु तंपि तत्थ वज्जेज्जा,सो गिम्हगो पुण सव्वत्थ नियमा भवति, एत्थऽणागाढजोगा नियता निक्खिवंति, आगाढं न निक्खिवंति, पढंति, के य पुणो ते महामहा?, उच्चंति-आसाढी० ॥ १४३५ ॥ आसाढी-आसाढपुण्णिमा इह, लाडाण पुण सावणपुण्णिमाए भवति, इंदमहो आसोयपुण्णिमाए भवति, कत्तियात्ति कत्तियपुण्णिमा चेव सुगिम्हओ चेत्तपुणिमा, एते अंतदिवसा गहिता, आदितो पुण्णिमा, जत्थ जत्थ विसए जतो दिवसातो महामहा पवत्तंति ततो दिवसातो आरब्भ जाव अंतदिवसो ताव सज्झाओ न कातव्वो, एतेसिं चेव पुण्णिमाणं अणंतरं जे बहुलपाडिवगा ते चतुरोवि वज्जेतव्वत्ति। तत्थ को दोसो?-अण्णतरय० ॥१४३८॥

॥२२१॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने
॥२२२॥

सरागसंजतो संजयत्तणओ इंदियविसायादिअण्णतरपमादजुत्तो हवेज्जा, विसेसतो महामहेसु, तं पमादजुत्तं पडिणीया देवता छलेज्जा, अप्पिड्डिया खित्तादिच्छलणं करेज्जा, जतणाजुत्तं पुण साहुं जो अप्पिड्डिओ देवो अद्धोदधीऊणड्डिती सो न सक्केति छलेतुं, अद्धसागरोवमड्डितीओ पुण जतणाजुत्तं छलेज्जा. अत्थि से सामत्थं,तंपि पुव्ववेरसरणादिणा कोइ छलेज्जत्ति। चंदिमसूरुवरागत्ति अत्थ व्याख्या-उक्कोसेण०॥१४३९॥चंदो उदयकाले चेव गहितो संदूसंते रातीए चतुरो अण्णं च अहोरत्तं एवं दुवालस,अहवा उप्पादग्गहणे सव्वरातियगहणं सगहो च्चेव निबुड्डो संदूसितरातीए चतुरो अण्णं च अहोरत्तं.एवं बारस,अहवा अजाणतो अब्भच्छण्णे संकाए ण णज्जति कं वेलं गहणं?,परिहरिता राती पभाते दिट्ठं सग्गहो बुड्डो,अण्णं अहोरत्तं,एवं दुवालस,एवं सूरस्सवि उदयत्थमणग्गहेण सग्गहं निबुड्डे उवहतरातीए चतुरो अण्णं अहोरत्तं परिहरति, एवं बारस, अह उदेंतो गहितो तो संदूसितमहोरत्तं अवरं च अहोरत्तं परिहरति, एवं सोलस, अहवा उदयवेलाए गहितो उप्पादितग्गहणे सव्वदिणे होंतं गहणं सग्गहो चेव निबुड्डो संदूसितमहोरत्तस्स अट्ठ अण्णं च अहोरत्तं, एवं सोलस, अहवा अब्भच्छण्णे ण णज्जति, केवलं होहिति गहणं, दिवसओ संकाए ण पढितं, अत्थमणवेलाए दिट्ठं गहणं, सग्गहो निबुड्डो, संदूसितस्स अट्ठ अण्णं च, एवं सोलस । सग्गह० ॥ १४४० ॥ सग्गहनिबुड्डे एवमहोरत्तं उवहतं, कहं ?, उच्यते, सूरादी जेनऽहोरत्ता,सूरुदयकालाणु जेण अहोरत्तस्स आदी भवति, तं परिहरित्ता संदूसितं अण्णंपि अहोरत्तं परिहरितव्वं, इमं पुण आदिण्णं-चंदो रातीए गहितो रातीए चेव मुक्को तीसे चेव रातीए सेसं वज्जणिज्जं, जम्हा आगामिसूरुदये अहोरत्तमादी, सूरस्सवि दिया चेव गहिओ दिया च्चेव मुक्को तस्सेव दिवसस्स सेसं राती य वज्जणिज्जा, अहवा सग्गहनिबुड्डे एवं विही भणितो । ततो सीसो पुच्छति- कह चंदे दुवालस सूरे सोलस जामा ?, आचार्य आह- सूरादी जेण होंतहोरत्ता,

सादिव्यास्वाध्यायिकं
॥२२२॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२२३||

चंदस्स नियमा अहोरत्तद्धे गते गहणसंभवे अण्णं च अहोरत्तं, एवं दुवालस, सूरस्स पुण अहोरत्तादीए अतो संदूसितं अहोरत्तं परिहरितुं अण्णंपि अहोरत्तं परिहरितव्वं, एवं सोलस। सादिव्वन्ति गतं। इदाणिं वुग्गहेत्ति दारं, वुग्गह डंडियमादित्ति, अस्य व्याख्या—

सेणाहि० ॥ १४४२ ॥ डंडियस्स वुग्गहो, आदिसद्दाओ सेणाहितस्स च, एवं दोण्हं भोइयाणं दोण्हं महत्तराणं दोण्हं पुरिसाणं दोण्हं इत्थीणं मल्लाण वा जुद्धं पिट्ठातगलोट्टभंडणो वा आदिसद्दाओ विसयपासिद्धा सुभंखुरलसुत्रिग्रहाः प्रायोऽभ्यन्तरबहुला, तथा पमत्तं देवता छलेज्ज उड्डाहोवि, निद्दुक्खत्ति जणो भणेज्ज- अम्ह आवातिपत्ताणं इमे सज्झायं करेंतित्ति अचितत्तं हवेज्ज विसयसंखोहो परचक्कागमे दंडिए वा कालगते भवति अण्णराइएत्ति रण्णे कालगते पब्भट्ठेवि जावण्णो राया णो ठविज्जति सभएत्ति जीवंतस्स रण्णो बोहिगेहिं समंततो अहिदुयं, जच्चिरं सभयं तत्तियं कालं सज्झायं ण कीरति। जद्दिवसं सुतं निद्दोच्चं तस्स परतो अहोरत्तं परिहरंति, एस डंडिए कालगते, सेसेसु इमो विही-तद्दिवस० ॥ १४४३ ॥गामभोइए कालगते तद्दिवसंति तं दिवसं परिहरंति। आदिसद्दातो मतहर०॥१४४४॥गामरट्ठमतहरे अधिकारनिउत्तो बहुसंमतो य पगतो बहुपक्खितोत्ति बहुसयणो वागडसाहिअधिवे सेज्जातरे य अण्णंमि वा अणंतरघरगाओ आरंभ जाव सत्तघरंतरं एतेसु मतेसु अहोरत्तं सज्झातो न कीरति, अह करेति निद्दुक्खत्तिकाउं जणो गरहति अक्कोसेज्ज वा निच्छुब्भेज्ज वा,अप्पसद्देण वा सणितं करेंति अणुप्पेहंति वा, जो पुण अणाहो मरति तं जदि ओभिण्णं हत्थसतं वज्जेतव्वं, अणुब्भिण्णं असज्झाइयं न भवति, तहवि कुत्सितंति कातुं आयरणातो य दिट्ठं हत्थसतं वज्जिज्जंति, जदि एतस्स नत्थि कोइ परिट्ठवेंतओ ताहे- सागारिक० ॥ १४४५ ॥ गाथा, ताहे सागारिकस्स

विग्रहास्वाध्यायिकं ||२२३||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥२२४॥

शारीरास्वाध्यायिकं

आदिसद्दातो पुराणसङ्कअस्स भद्दस्स वा कहिज्जति इमं छड्डेह, अम्हं सज्झातो न सुज्झति, जदि तेहिं छड्डितं तो सुद्धं,अह नेच्छंति ताहे अण्णं वसहिं मग्गंति, अह अण्णा वसही न लब्भति ताहे वसभा अप्पसागारितं परिठ्ठावेंति, एस अभिण्णे विधी। अह भिण्णं काकसाणादिएहिं समंता विकिण्णं तं दिठ्ठं विवित्तंमि सुद्धा, असढभावं गवेसंतेहिं जं दिठ्ठं तं सव्वं विगिंचितंति छड्डितं, इतरंति अदिठ्ठं तंमि तत्थत्थेवि सुद्धा, सज्झायं करेंताणवि ण पच्छित्तं । एत्थ एतं पसंगतो भणितं । वुग्गहेत्ति गतं । इदाणिं सारीरन्ति दारं, तत्थ—

सारीरंपि० ॥ १४४६ ॥ एत्थ माणुसं चिठ्ठतु, तेरिच्छं ताव भणामि, तं तिविहं मच्छादियाण जलजं गवादिजाण थलजं मयूरादियाण खहचरं, एतेसिं एक्केक्कं दव्वादियं चतुव्विहं, एक्केक्कस्स वा दव्वादिओ इमो चउहा परिहारो- **पंचेंदिय०** ॥ १४४६॥ दव्वतो पंचेंदियाणं रुहिरादि दव्वं असज्झाइयं, खेत्ततो सठ्ठिए हत्थब्भंतरे,परतो न भवति,अहवा खेत्ततो पोग्गलाइण्णं, पोग्गलं मंसं, तेन सव्वं आकिण्णं-व्याप्तं, तस्सिमो परिहारो-तीहिं कुरत्थाहिं अंतरियं सुज्झति, आरतो न सुज्झति, महन्तरत्थाए य एक्काएवि अंतरितं सुज्झति, अणंतरितं दूरठ्ठितं ण सुज्झति, महंतरत्था रायमग्गो जेण राया बलसमग्गो गच्छति देवजाणरहो वा विविहा य संवहणा गच्छंति, सेसा कुरत्था, एसा णगरे विही, गामस्स नियमा बाहिं, एत्थ गामो अविसुद्धणेगमदरिसणेण सीमापज्जंतो,परग्गामसीमाए सुज्झतीत्यर्थः । **कालत्ति०** तिरियं असज्झाइयं संभवकालाओ जाव ततियाए पोरिसीए ताव असज्झाइयं, परतो सुज्झति, अहवा अठ्ठ जामा असज्झाइयं, ते जत्थावतणं तत्थ भवंति, भावतो पुण परिहरंति सुत्तं, तं च णंदिमणुयोगदारं तंदुलवेतालियं चंदगवेज्झगं पोरुसीमंडलमादी, अहवा चतुद्धा तुत्ति असज्झाइयं चतुव्विधं इमं-सोणियं रुहिरं ॥२२४॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२२९||

शारीरास्वाध्यायिकं

चम्मं अट्ठि च, साणिण उक्खित्तमंसे इमो विही-अंतो बहिं० ॥१४४९॥ साहुवसहीतो सट्ठीए हत्थाणं अंतो बाहिं च धोतन्नि भगंदर्शनमेतत् अंतो धोयं अंतो पक्कं,अंतोग्गहणाओ पढमबितियभंगा,बहिग्गहणा ततिओ भंगो,एतेसु तिसु असज्झाइयं, जंमि पदेसे धोतं आणेत्तुं वा रद्धं सो पदेसो सट्ठीए हत्थेहिं परिहरितव्वो, कालतो तिण्णि पोरिसीओ । बहिधोय० ॥ १४५० ॥ एस चउत्थभंगो, एरिसं जदि सट्ठीए हत्थाणं अब्भितरे आणीतं तथावि तं असज्झाइयं न भवति, पढमबितियभंगेसु अंतो धोविउं णीते रद्धे वा तंमि धोतट्ठाणे अवयवा पडंति तेणं असज्झाइयं,ततियभंगे बाहिं धोवित्तुं अंतो पणीते मंसमेव अवज्झायंति, तं च उक्खित्तमंसं-आइण्णपोग्गलं ण भवति, जं काकसाणादीहिं अणिवारितपयारेहिं विप्पकिण्णं नज्जति तं आइण्णं पोग्गलं भणितव्वं, महकाओ पंचेंदियओ जत्थ हतो तं आघातणं वज्जेतव्वं खेत्तओ सट्ठिं हत्था कालतो अहोरत्तं,एत्थऽहोरत्तच्छेदो सूरुदए,रद्धपक्कं वा मंसं असज्झाइयं न भवति, असज्झाइयं जत्थ य पडितं तेण पदेसेण उदगवाहो वूढो तं तिपोरुसिकाले अपुण्णेवि सुद्धं, आघातणं न सुज्झति । महाकाएत्ति अस्य व्याख्या-महाकाए पच्छद्धं,मूसगादी महाकाओ, सो बिरालादिणा हतो जदि तं अभिण्णं चेव गिलित्तुं घेत्तुं वा सट्ठीए हत्थाणं बाहिं गच्छति तो केई आयरिया असज्झाइयं नेच्छंति, ठितपक्खे पुण असज्झाइयं चेव, अस्यार्थस्य व्याख्या— मूसगादि ॥ २२२ ॥ भा० ॥ गतार्था । तिरियमसज्झाइकाधिकार एव इमं भणति—अंतो बहिं च० ॥ १४५१ ॥ अंतो बहिं च भिन्ने अंडयंति, अस्य व्याख्या— ||२२५||

अंडय० साधुवसहीतो सट्ठीए हत्थाणं अंतो भिन्ने अंडए असज्झाइयं, बाहिं भिण्णे ण भवति, अहवा साहुवसहीए अंतो बाहिं वा अंडयं भिन्नंति वा उज्झितंति वा एगट्ठं, तं च कप्पे वा उज्झितं भूमीए वा, जदि कप्पे तो तं कप्पं सट्ठीए हत्थाणं बाहिं

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२२६||

शारीरास्वाध्यायिकं

नेतुं धावंति ततो सुद्धं, अह भूमीए भिण्णं तो भूमी खणित्तु ण छड्डिज्जति, न सुज्झतीत्यर्थः, इतरहान्ति तत्थत्थे सट्ठि हत्था तिण्णि पोरिसीओ परिहरिज्जंति। इदाणिं बिंदुत्ति, असज्झाइयस्स किं पमाणं?, बिंदुमाणमेत्तेण हीणेण अधिकतरेण वा असज्झाओ भवतित्ति पुच्छा, उच्यते, मच्छियापादो जहिं बुड्डति तं असज्झाइयप्पमाणं । इदाणिं वियायत्ति- अजरायु० ॥ २२४ भा० ॥ जरु जासिं न भवति तासिं पसूयाणं वागुलितामाइयाणं तासिं पसूइकालाउ आरब्भ तिण्णि पोरुसीओ असज्झाओ मोत्तुं अहोरत्तच्छेदं, आसण्णपसूताएवि अहोरत्तच्छेदेण सुज्झति, गोमादिजरायुजाणं पुण जाव जरुं लंबति ताव असज्झाओ, जरे चुतेत्ति जाहे जरं पडितं ताहे ततो पडणकालाओ आरब्भ तिण्णि पहरा परिहरिज्जंति, रायपह वूढ सुद्धेत्ति अस्य व्याख्या- रायपहबिंदु० पच्छद्धं, साहुवसहिआसण्णेण गच्छमाणस्स तिरियंचस्स जदि रुधिरबिंदू गलिता ते जदि रायपधंतरिया तो सुद्धा, ते रायपहे चेव बिंदू गलिता तथावि कप्पति सज्झाओ कातुं, अह अण्णंमि पहे अण्णत्थ वा पडितं तं जदि उदगवुड्ढी वाहेण वा हरितं तो सुद्धं, पुणत्ति विशेषार्थप्रदर्शने, पलीवणगेण वा दड्ढं सुज्झति, परवयणे साणमादीणित्ति परोत्ति-चोयगो तस्स इमं वयणं- जदि साणो पोग्गलं समुद्दिसित्ता जाव साधुवसतिसमीवे चिट्ठति ताव असज्झाइयं, आदिसद्दाओ मज्जारादी, आचार्याह-जदि फुसति० ॥ २२५ ॥ भा०॥साणो भोत्तुं मंसं लेत्थारितेणं तुंडेणं वसहिआसण्णेण गच्छंतो तस्स गच्छंतस्स जदि तुंडं रुहिरलित्तं खोडादिफुसितं तो असज्झाइयं, अहवा लेत्थारियतुंडो वसहिआसण्णे चिट्ठति तहवि असज्झाइयं,इहरहत्ति आहारिएण चोयगा! असज्झाइयं न भवति, जम्हा तं आहारियं वंतं अवंतं वा आहारपरिणामेण परिणयं, तं च असज्झाइयं न भवति, अण्णपरिणामतो ||२२६||
मुत्तपुरिसादि व । तेरिच्छं गतं, इदाणिं माणुसं-माणुस्सयं० ॥ १४५२ ॥ तं माणुस्सं असज्झाइयं चउव्विहं- चंमं मंसं रुहिरं

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥२२७॥

मानुष्या स्वाध्यायिकं

अट्ठि च,अट्ठिं मोत्तुं सेसस्स तिविहस्स इमो परिहारो-खेत्तओ हत्थसतं कालतो अहोरत्तं,जं पुण सरीराओ चेव वणादिसु आगच्छति परियावण्णं विवण्णं वा तं असज्झाइयं न भवति, परियावण्णं जथा रुहिरं चेव पूतपरियाएण ठितं, विवण्णं खदिरकल्कसमाणं रसिगादिकं च, सेसं असज्झाइयं भवति, अहवा सेसं आगारिरितुसंभवं तिण्णि दिणा, वियायाए वा जो सावो से सत्त वा अट्ठ वा दिणे असज्झाइयं भवति। वियायाए कहं सत्त अट्ठ वा ?, उच्यते—

रत्तुक्कडा० ॥ १४१३ ॥ णिसेगकाले रत्तुक्कडताए इत्थिं पसवति तेण तस्स अट्ठ दिणा परिहरितव्वा, सुक्काहियत्तणतो पुरिसं पसवति तेण तस्स सत्त दिवसा, जं पुण इत्थिए तिण्हं दिणाणं परेण भवति तं रिउं न भवइ, तं सरोगजोणित्थीएमहोरत्तं भवति, तस्स उस्सग्गं कातुं सज्झायं करेंति। एस रुहिरे विही। जं वुत्तं 'अट्ठिं मोत्तूणं' ति तस्स इदाणिं विधी इमो भण्णति—

दिट्ठे दं० ॥ १४५४ ॥ जति दंतो पडितो सो पयत्तओ गवेसितव्वो, जदि दिट्ठो तो हत्थसताओ परं विगिंचितव्वो, अह न दिट्ठो तो उग्घाडयातुस्सग्गं कातूण सज्झायं करेति, सेसट्ठिएसु जीवविमुक्कदिणारंभातो हत्थसतब्भंतरे ठितेसु बारस वरिसे असज्झाइयं। 'झामिय सुद्ध सीताणे' त्ति अस्स व्याख्या- सीताणे० ॥ २२६ ॥ भा० ॥ पुव्वद्धं, सीताणेत्ति सुसाणे जाणि चियगरोवितदड्ढाणि न तं तु अट्ठितं असज्झाइतं करेंति, जाणि पुण तत्थ अण्णत्थ वा अणाहकलेवराणि परिट्ठविताणि अणाहाण वा इंधणादिअभावेण ठितत्ति णिक्खता ते असज्झायं करेंति, पाणात्ति मातंगा तेसिं अडंबरो जक्खो, हिरिमिक्खोत्ति भण्णति,तत्थ ॥२२७॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२२८||

हेट्ठा सज्जोमयअट्ठीणि ठविज्जंति, एवं रुद्दघरे य, कालतो बारस वरिसा खेत्तओ हत्थसतं परिहरणिज्जा । आवासितं०||१४५५|| एतीए पुव्वद्धस्स इमा विभासा—

असिवोमा०|| १४५६ || जत्थ सीतानट्ठाणं जत्थ वा असिवओ मताणि बहूणि छड्डिताणि आघातणंति जत्थ वा महासंगाममया बहू एतेसु ठाणेसु अविसोहितेसु कालतो बारसवरिसे खेत्ततो हत्थसतं परिहरति, सज्झायं न करेंतीत्यर्थः, अह एते ठाणा दवग्गिमादिणा दड्ढा उदगवाहो वा तेणंतेण वूढो गामणगरे वा आवासंतेण अप्पणो परिट्ठावणाय सोधितो, सेसंति जं गिहीहिं न सोधितं, पच्छा तत्थ साधू ठिता, अप्पणो वसही समंतेण मग्गिता, जं दिट्ठं तं विगिंचित्ता अदिट्ठे वा तिण्णि दिणे उग्घाडणउस्सग्गं करेत्ता असढभावा सज्झायं करेंति, **सारीरगाम०** पच्छद्धं, इमा विभासा--सारीरंति मतगसरीरं व जदि डहरग्गामे ण निप्फेडितं ताव सज्झायं न करेंति, अह नगरे महंते गामे वा तत्थ वाडगसाहीतो वा जाव न निप्फेडियं ताव सज्झायं परिहरंति मा लोगो निद्दुक्खत्ति उड्डाहं करेज्जा । चोयग आह— साहुवसहिसमीवेण मतगसरीरस्स णिज्जमाणस्स जदि पुप्फवत्थादि किंचि पडितं तं असज्झाइयं, आचार्य आह-**निज्जन्त०** ||१४५७|| मतगसरीरं उभयो वसहीए हत्थसतब्भंतरं जाव निज्जति ताव तं असज्झाइयं, सेसा परवयणभणिता पुप्फादी पडिसेहेतव्वा, ते असज्झाइयं न भवंति, जम्हा सारीरमसज्झाइयं चउव्विहं-सोणियं मंसं चम्मं अट्ठि च, अतो तेसु सज्झाओ ण वज्जणिज्जो । **एसो तु०** || १४५८ || एसो संजमघातादिओ पंचविहो असज्झातो भणितो, तेहिं चेव वज्जितो पंचहिं सज्झाओ भवति । तत्थत्ति तंमि सज्झायकाले इमा वक्ष्यमाणा मेरत्ति सामायारी ।। पडिक्कमित्तुं जाव वेला न भवति ताव कालपडिलेहणाए कताए गहणकाले पत्ते गंडगदिट्ठंतो भविस्सति, गहिते

मानुष्यास्वाध्यायिकं ||२२८||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

||२२९||

सुद्धे काले पट्ठवणवेलाए गंडगदिट्ठंतो भविस्सति । स्याद् बुद्धिः किमर्थं कालग्रहणं?, अत्रोच्यते- पंचविहा० ॥ १४५९ ॥ पंचविहं संजमोवघातादिगं,जदि कालं अघेत्तुं सज्झायं करेंति तो चतुलहुगा, तम्हा कालपडिलेहणाए इमा सामायारी-दिवसचरिमपोरुसीए चउभागावसेसाए कालगहणभूमीओ ततो पडिलेहेतव्वा, अहवा ततो उच्चारपासवणभूमी य- अधियासिया० गाथा ॥१४६०॥ अंतोत्ति निवेसणस्स तिन्नि उच्चार अहियासियाथंडिले आसण्ण मज्झ दूरे पडिलेहेति, अणाधियासिज्जथंडिलेवि अंतो एवं चेव तिन्नि पडिलेहेति,ततो थंडिला बाहिं निवेसणस्स, एवं चेव छ भवंति,एत्थ अहियासिया दूरयरे अणहियासिया आसण्णतरे कातव्वा, पासवणेवि एतेणेव कमेण बारस, एते सव्वे चतुव्वीसं, अतुरियमसंभितं उवउत्तो पडिलहेत्ता पच्छा तिन्नि कालग्गहणथंडिले पडिलेहेज्ज, जहण्णेण तत्थ हत्थमेत्तंतरिते, अहत्ति अणंतरं थंडिलपडिलेहजोगाणंतरमेव सूरो अत्थमेति, ततो आवस्सगं करेति, तस्सिमो विधी-अह पुण० ॥ १४६२ ॥ अह इत्यनंतरे सूरत्थमणाणंतरमेव आवस्सगं करेंति, पुनर्विशेषणे, दुविहमावस्सगकरणं विसेसेति- निव्वाघातं वाघातिमं च, जदि निव्वाघातं तो सव्वे गुरुसहिता आवस्सयं करेंति, अह गुरू सड्ढेसु धम्मं कहेंति तो आवस्सगस्स साहूहिं सह करणिज्जस्स वाघातो भवति, जंमि काले तं करणिज्जं तं भासेंतस्स वाघातो भण्णति, ततो ते गुरू निसिज्जधरो य पच्छा चरित्ताइयारजाणणट्ठता उवसग्गं ठाहेंति- सेसा तु० ॥ १४६३ ॥ सेसा उ गुरुं आपुच्छित्ता गुरुट्ठाणस्स मग्गतो आसन्ने दूरे अधारातिणियाए जं जस्स ठाणितं तं तस्स सट्ठाणं तत्थ, पडिक्कमंताण इमा ठवणा ॥०।०।०।०॥ गुरू पच्छा ठायंतो मज्झेण गओ सट्ठाणे ठायति, जे वामतो ते अणंतरसव्वेण गंतुं सट्ठाणे ठायंति,जे दाहिणयो अणंतरमवसव्वेणं तं चेव अणागतं ठातंति सुत्तत्थज्झरणहेतुं, तत्थ य पुव्वामेव ठायंता 'करेमि भंते ! सामाइय'मिति सुत्तं करेंति, जाहे पच्छा

कालभूमिप्रत्युपेक्षणा

||२२९||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने
॥२३०॥

आवश्यक-
विधिः
कालग्रहणं

गुरू सामाइयं करेत्ता वोसिरामित्ति भणित्ता ठिता उस्सग्गं ताहे पुव्वट्ठिता देवसियातियारं चिंतेंति, अण्णे भणंति- ताहे गुरू सामाइयं करेंति ताहे पुव्वट्ठियावि तं सामाइयं करेंति, सेसं कंठं। जो होज्ज० ॥ १४६४ ॥ परिसंतो प्राघूर्णकादि, सोपि सज्झायझाणपरो अच्छति, जाहे गुरू ठंति ताहे तेऽवि बालादिया ठंति। एतेण विधिणा- आवासं० ॥१४६५॥ जिणेहिं गणधराणं उवदिट्ठं, ततो परंपरएण जाव अम्हं गुरूवदेसेण आगतं तं कातुं आवस्सगं अण्णे तिण्णि थुतीओ करेंति, अहवा एगा एगसिलोइया बितिया बिसिलोइया तइया तिसिलोइया, तेसिं समत्तीए कालवेलपडिलेहणविधी इमा कातव्वा, अच्छतु ताव विही, इमो कालभेदो ताव वुच्चति—

दुविधो० ॥ १४६९ ॥ पुव्वद्धं कंठं, जा अतिरित्तवसही बहुकप्पडिगसेविया य सा घंघसाला, ताए णितअतिंताणं घट्टणपडणादि वाघातदोसो सड्ढकहणेण य वेलातिक्कमदोसो एवमादि। वाघाते० ॥ १४७० ॥ तम्मि वाघातिमे दोण्णि जे कालपडियरगा ते णिग्गच्छंति, तेसिं ततिओ उवज्झायादि दिज्जति, ते कालग्गाहिणो आपुच्छणं संदिसावणं कालपवेदणं च सव्वं तस्सेव करेंति, एत्थ गंडगदिट्ठंतो न संभवति, इतरे उवउत्ता चिट्ठंति, सुद्धे काले तस्सेव उवज्झायस्स प्रवेदिंति, ताहे डंडधरगो बाहिं कालपडियरगो चिट्ठति, इतरे दुयगादिवि अंतो पविसंति, ताहे उवज्झायस्स समीवे सव्वे जुगवं पट्ठवेंति, पच्छा एगो णीति, दंडधरो अतीति, तेण पट्ठविते सज्झायं करेति, 'निव्वाघाते' पच्छद्धं, अस्यार्थः- आपुच्छण० ॥ १४६८ ॥ निव्वाघाते दोण्णि जणा गुरुं पुच्छंति-कालं घेच्छामो?, गुरुणा अब्भणुण्णाता कितिकंमंति वंदणं कातुं डंडगं घेत्तुं उवउत्ता आवस्सितमासज्जं करेंता पमज्जंता य गच्छंति, अंतो जदि पक्खुडंति पडंति वा वत्थादि वा विलग्गति कितिकम्मादि किंचि वितहं करेंति तो कालवाघातो, ॥२३०॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२३१||

कालग्रहणं

इमा कालभूमीए पडियरणविधी-इंदिएहिं उवउत्ता पडियरंति, दिसात्ति जत्थ चउरोवि दिसाओ दिस्संति, उडुंमि जदि तिण्णि तारा दिस्संति,जदि पुण अणुवउत्ता अणिट्ठो वा इंदियविसओ दिसत्ति दिसामोहो दिसाओ तारगाओ वा ण दीसंति वासं वा पडति असज्झाइयं वा जातं तो कालवहो। किंच- जदि पुण० ॥ १४६९ ॥ तेसिं चेव गुरुसमीवातो कालभूमिं गच्छंताणं अंतरे जदि छीतं जोती वा फुसति तो नियत्तंति, एवमादिकारणेहिं अव्वाहता ते निव्वाघातेण दोवि कालभूमिं गता संडासगादि विधीए पमज्जित्ता निसण्णा उद्धट्ठिता वा एक्केक्को दो दिसाओ निरिक्खंतो अच्छंति। किंच-तत्थ कालभूमीए ठिता सज्झाय० ॥ १४७० ॥ तत्थ सज्झायं अकरेंता अच्छंति कालवेलं च पडियरन्ता, जदि गिम्हे तिण्णि सिसिरे पंच वासासु सत्त कणगा पेक्खेज्जा तथावि नियत्तंति,अहवा निव्वाघातेण पत्ता कालग्गहणवेला तो ताहे जो डंडधारी सो अंतो पविसित्ता साधुसमीपे भणति- बहुपडिपुण्णा कालवेला मा बोलं करेह, एत्थ गंडगोवमा पुव्वभणिता कज्जति, आघोसि० ॥ १४७१ ॥ जहा लोगे गामादि- गंडगेण आघोसिते बहूहिं सुते थोवेसु असुतेसु गामादिवित्तं अकरेंतेसु डंडो भवति, बहूहिं असुते गंडगस्स डंडो पडति, तहा इहंपि उवसंहारेतव्वं, ततो डंडधरे निग्गते कालग्गाही उत्थेति। सो कालग्गाही इमेरिसो-पियधंमो० ॥ १४७२ ॥ पियधंमो दढधम्मो य, एत्थ चतुभंगो, तत्थिमे पढमभंगे-निच्चं संसारभयुव्विग्गचित्तो संविग्गो, वज्जं- पावं तस्स भीरू वज्जभीरू, जथा तं न भवति तथा जयति, एत्थ कालविधिजाणको खेतण्णो, सत्तमंतो- अभीरू, एरिसो साधू कालं पडिलेहेति, जग्गति गृह्णाति चेत्यर्थः, ते य तं वेलं पडियरंता एमेरिसं कालं तुलेंति- कालं संझां० ॥ १४७३ ॥ संझाए धरंतीए कालग्गहणमाढत्तं, कालग्गहणं संझाए य जं सेसं एत्तो दोवि जथा समं समप्पेंति तथा कालवेलं तुलेंति, अहवा तिसु उतरादियासु ससंझं गेण्हंति, चरिमत्ति

||२३१||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२३२|| | कालग्रहणं

अवरा तीए अवगतसंझाएवि गेण्हंति, ण दोसो, सो कालग्गाही वेलं तुलेत्ता कालभूमीओ संदिसावणणिमित्तं गुरुपायमूलं गच्छंति, तत्थेसा विधी-आउत्त०॥१४७४॥ जथा निग्गच्छमाणो आउत्तो निग्गतो तहा पविसंतोवि आउत्तो पविसति, पुव्वनिग्गतो चेव जदि अणापुच्छाए कालं गेण्हति पविसंतोवि जदि खलते पडति वा एत्थवि कालुवघातो, अहवा वाघातोत्ति अभिघातो लेट्टुइट्टालादिणा, भासंत मूढ पच्छद्धं सांन्यासिकं उपरि वक्ष्यमाणं, अहवा एत्थवि इमो अत्थो भाणितव्वो- वंदणं देंतो अण्णं भासंतो देति,वंदणदुयं न ददाति,किरियासु वा मूढो आवत्तादिसु वा संका-कता ण कतात्ति,वंदणं देंतस्स इंदियविसओ वा अमणुण्णमागतो। णिसीहिय० ॥ पविसंतो तिन्नि निसीहिताओ करेति, नमो खमासमणाणंति णमोक्कारं च करेति, इरियावहियाए पंचउस्सासकालियं उस्सग्गं करेति, उस्सारिते णमो अरहंताणंति पंचमंगलं चेव कड्ढति, ताहे किंतिकम्मंति बारसावत्तं वंदणं देति, भणति- संदिसह पादोसियं कालं गिण्हामो, गुरुवयणं- गेण्हहत्ति, एवं जाव कालग्गाही संदिसावेत्ता आगच्छति ताव बितिओत्ति डंडधरो सो कालं परियरति। पुणो पुव्वुत्तेण विहिणा णिग्गतो कालग्गाही- थोवाव० ॥ १४७६ ॥ उत्तराहुत्तोत्ति उत्तरामुखः डंडधारीवि वामपासे रिजुतिरियदंडधारी पुव्वाभिमुहो ठायति, कालग्गहणनिमित्तं च अट्ठुस्सासकालियं काउस्सग्गं करेति, अण्णे पंचुस्सासियं करेंति, उस्सारिते चउवीसत्थयं दुमपुप्फिया सामण्णपुव्वयं च एते तिण्णि अखलिते पढित्ता पच्छा पुव्वाए एते च्चेव तिण्णि अणुप्पेहेति, एवं दक्षिणाए अवराए य,गेण्हंतस्स इमे उवघाता जाणितव्वा-बिंदू य छीए य० ॥ १८-६६ ॥ १४७७ ॥ ||२३२||
गेण्हंतस्स जदि उदगबिंदू पडेज्जा, अहवा अंगे पासओ वा रुधिरबिंदू, अप्पणा परेण वा जदि छीतं, अज्झयणं वा कड्ढंतस्स जदि अण्णतो भावो परिणतो, अनुपयुक्त इत्यर्थः. सगणेत्ति सगच्छे तिण्हं साहूणं गज्जिते संका, एवं विज्जुच्छीतादिसुवि। भासंत०

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२३३||

पच्छद्धस्स पूर्वन्यस्तस्य इमस्य च विभासा- मूढो व० ॥ १९-६७ ॥ १४७८ ॥ दिसामोहो संजातो, अहवा मूढो दिसं पडुच्च अज्झयणं वा, कहं ?, उच्यते, पढमं उत्तराहुत्तेण ठातव्वं, सो पुण पुव्वाहुत्तो पढमं ठायति, अज्झयणेसुवि पढमं चउव्वीसत्थओ, सो पुण मूढत्तणतो दुमपुप्फियं सामण्णपुव्वयं वा कड्ढति, फुडमेव वंजणाभिलावेण भासंतो कड्ढति, फुडफुडेत्ता वा गेण्हति, एवं न सुज्झति, संकमोत्ति पुव्वं उत्तराहुत्तेण ठातुं ततो पुव्वाहुत्तेण ठातव्वं, सो पुण उत्तराओ अवराहुत्तो ठायति, अज्झयणेसुवि चउवीसत्थातो अण्णं चेव खुड्डियायारगादि अज्झयणं संकमेति, किं अमुतीए दिसाए ठितो ण वत्ति, अज्झयणेत्ति किं कड्ढितं ण वेति, इंदियविसए य अमणुण्णोत्ति अणिट्ठो पत्तो जधा सोतिदिए रुदितं वंतरेण वा अट्टट्टहासं कतं रूवे विभीसिगादि विकृतरूवं वा गंधे कलेवरादिगंधो रसस्तत्रैव स्पर्शे अग्निज्वालादि, अहवा इट्ठेसु रागं गच्छति अणिट्ठेसु इंदियविसएसु दोसं, एवमादि-उवघातवज्जितं कालं घेत्तुं कालनिवेदणाए गुरुसमीवं गच्छंतस्स इमं भण्णति- जो वच्चं० ॥ १९-६८ ॥ १४७९ ॥ एसा भद्दबाहुकता गाथा, तीए अदिदेसे कतेवि सिद्धसेणखमासमणो पुव्वद्धभणितं अतिदेसं वक्खाणेति- आवासि० ॥१॥ (सिद्ध०) जदि णितो आवस्सितं न करेति पविसंतो वा णिस्सीहितं, अहवा अकरणमिति आसज्जं न करेति, कालभूमीओ गुरुसमीवं पट्ठितस्स जदि अंतरेण साणमज्जारादी छिंदंति, सेसा पदा पुव्वभणिता। एतेसु सव्वेसु कालवधो भवति। गोणादि० ॥ २ ॥ (सिद्ध०) पढमं ता गुरुं आपुच्छित्ता कालभूमिं गतो, जदि कालभूमीए गोणं णिसण्णं संसप्पगा वा उट्ठिता पेक्खति तो णियत्तते, जदि कालं पडिलेहिंतस्स गेण्हंतस्स वा णिवेदणाए वा गच्छंतस्स कविहसितादीएहिं कालवहो भवति, कविहसितं नाम आगासे विकृतरूपं मुहं वानरसरिसं हासं करेज्ज, सेसा पदा गयत्था। कालग्गाही निव्वाघातेण गुरुसमीवमागतो- इरिया०

कालग्रहणं ||२३३||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ॥२३४॥

कालग्रहणं

॥ १४८० ॥ जदिवि गुरुस्स हत्थंतरमेत्ते कालो गहितो तथावि कालपवेदणाए इरियावहिया पडिक्कमितव्वा, पंचूसासमेत्तं कालं काउस्सग्गं करेति, उस्सारितेवि पंचमंगलं वयणेण कड्ढति, ताहे वंदणं दातुं कालं निवेदेति-सुद्धो पादोसिओ कालोत्ति, ताहे डंडधरं मोत्तुं सेसा सव्वे जुगवं पट्ठवेंति, किं कारणं ?, उच्यते- पुव्वुत्तं जं मरुगदिट्ठंतोत्ति-सण्णिहित० ॥१४८१॥ वडो वंडूगो विभागो एगट्ठं, आरितो आगारितो सावितो वा एगट्ठं, वडेण आरितो वडारो, जहा सो वडारो संणिहिताण मरुयाण लब्भति, न परोक्खस्स, तथा देसकथादिपमादिस्स पच्छा कालं ण देति, दरात्ति अस्य व्याख्या-बाहिट्ठिते पच्छद्धं कंठं॥ सव्वेहिवि०पच्छद्धं अस्य व्याख्या- पट्ठवित० ॥ १४८२ ॥ डंडधरेण पट्ठविते वंदिते एवं सव्वेहिं पट्ठविते पच्छा भणति-अज्जो ! केण किं सुतं दिट्ठं वा?, दंडधरो पुच्छति अण्णो वा, तेवि सच्चं कहेंति, जदि सव्वेहिवि कहितं-ण किंचि दिट्ठं सुतं वा, तो सुद्धे करेंति सज्झायं, अह एगेणवि फुडं किंचि विज्जुमादिगं दिट्ठं गज्जितादि वा सुतं ततो असुद्धे न करेंति, अह संकितो- एगस्स उ.दि एगेण संदिद्धं दिट्ठं सुतं वा तो कीरति सज्झायो, दोण्हवि संदिद्धे कीरति, तिण्हं विज्जुमादि एगसंगहे ण कीरति सज्झायो, तिण्हं अण्णाण्णसंदेहे कीरति, सगणंमि संकितेत्ति परगणवयणातोऽसज्झातो न कातव्वो, खत्तविभागेण तेसिं चेव असज्झाइयसंभवो । 'जं एत्थं णाणत्तं तमहं वोच्छं समासेणं'ति अस्यार्थः-कालचतु०॥१४८४॥ तं सव्वं पादोसिते काले भणितं, इदाणिं चतुसु कालेसु किंचि सामण्णं किंचि वइसेसियं भणामि, पादोसिते दंडधरं मोत्तुं एक्कं सेसा सव्वे जुगवं पट्ठवेंति, सेसेसु तिसु अक्खरत्ते विरत्तिय पाभातिते य समं वा विसमं वा पट्ठवेंति ॥ किंचान्यत्-इंदिय० ॥ १४८५ ॥ सुट्ठु इंदिओवओगे उवउत्तेहिं सव्वकाला पडिजागरितव्वा, कणगेसु कालसंखाकतो विसेसो भण्णति- तिण्णि सिग्घमुवहणंतित्ति तेण उक्कोसं भण्णति, चिरेण उवघातोत्ति तेण सत्त जहण्णं, ॥२३४॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२३५||

कालग्रहणं

सेसं मज्झिमं, अस्य व्याख्या- कणगा० ॥ १४८६ ॥ कणगा गिम्हे तिण्णि सिसिरे पंच वासासु सत्त उवहणंति, उक्का एक्का चेव उवहणति कालं, कणगो सण्हरेहो पगासविरहितो य, उक्का महन्तरेहा पगासकारिणी य, अहवा रेहविरहितोवि फुलिंगो पहासकरो उक्का चेव। 'वासासु य तिण्णि दिसा' अस्य व्याख्या-वासासु य०॥ १४८७ ॥ जत्थ ठितो वासकाले तिण्णिवि दिसा पेक्खति तत्थ ठितो पाभातियं कालं गेण्हति, सेसेसु तिसुवि कालेसु वासासु उडुबद्धे चउसु चेव जत्थ ठितो चतुरोवि दिसाविभागे पेक्खति तत्थ ठितो गेण्हति ॥ 'उडुबद्धे तारगा तिन्नि'त्ति अस्य व्याख्या- तिसु तिण्णि० ॥ १४८८ ॥ तिसु कालेसु पादोसिए अड्ढरत्तिए वेरत्तिए य जहण्णेणं जदि तिण्णि तारिगाओ पेक्खंति तो गेण्हंति, उडुबद्धे चेव अब्भादिसंथडे जदिवि एक्कंपि तारं ण देक्खंति तहावि पाभातियकालं गेण्हंति, वासाकाले पुण चतुरोवि काला अब्भसंथडे तारासु अदीसंतीसुवि गेण्हंति। छण्णे णिविट्ठोत्ति अस्य व्याख्या— ठागासति० ॥ १४८९ ॥ जदि वसहीए बाहिं कालगाहिस्स ठाणो णत्थि ताहे अंतो छण्णे उद्धट्ठितो गेण्हति, अह उद्धट्ठितस्सवि अंतो ठाणो णत्थि ताहे छण्णे चेव निविट्ठो गेण्हति, बाहिं ठितो य एक्को पडियरति, वासबिन्दूसु पडंतीसु नियमा अंततो ठितो गेण्हति, तत्थवि उद्धट्ठितो निसण्णो वा, नवरं पडियरगोवि अंतो ठितो चेव पडियरति, एस पाभातिए गच्छुवग्गहट्ठा अववायविही, सेसा काला ठागासती ण घेत्तव्वा, आइण्णओ वा जाणितव्वं। कस्स कालस्स कं दिसं अभिमुहेहिं पुव्वं ठायव्वमिति भण्णति-पादोसिय० ॥ १४९० ॥ ||२३५|| पादोसिए अड्ढरत्तिए नियमा उत्तराभिमुहो ठाति, वेरत्तिए भयणत्ति इच्छा उत्तरमुहो पुव्वमुहो वा, पाभातिए णियमा पुव्वमुहो ॥ इदाणिं कालग्गहणपरिमाणं भण्णति—कालचतु० ॥ १४९१ ॥ उस्सग्गे उक्कोसेण चतुरो काला घेप्पंति, उस्सग्गे चेव जहण्णेण

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२३६||

कालग्रहणं

तिगं भवति, बितियपदंति अववादपदं तेण कालदुगं भवति अमायाविनः,कारणे अगृहाणस्येत्यर्थः, अहवा उक्कोसेण चतुष्कं भवति, जहण्णे हाणिपदे तिगं भवति, एकंमि अगहित इत्यर्थः, बितिते हाणिपदे कते दुगं भवति, द्वयोरग्रहणमित्यर्थः, एवं अमायाविणो तिण्णि वा अगेण्हंतस्स एक्को भवति, अहवा मायाविमुक्तस्य कारणे एकमपि कालं अगृह्णतो न दोषो- प्रायश्चित्तं भवति ॥ कहं वा पुण कालचउक्कं० ?, उच्यते--फिडियं० ॥ १४९२ ॥ पादोसियं कालं घेत्तुं सव्वे पोरुसिं कातुं पुण्णपोरुसीए सुत्तपाढी सुवन्ति, अत्थचिंतगा उक्कालपाढिणो य जागरंति जाव अड्ढरत्तो, ततो फिडिते अद्धरत्ते कालं घेत्तुं ते जागरयिया सुवंति, ताहे गुरू उट्ठेत्ता गुणेंति जाव चरिमो जामो पत्तो, चरमजामे सव्वे उट्ठेत्ता वेरत्तियं घेत्तुं सज्झायं करेंति, ताहे गुरू सुवंति, पत्ते पाभातिए काले जो पाभातियं कालं घेच्छिति सो कालस्स पडिकमितुं पाभातियं कालं गेण्हति, सेसा कालवेलाए पाभाइयकालस्स पडिक्कमंति, ततो आवस्सयं करेंति। एवं चतुरो काला भवंति। तिण्णि कहं?, उच्यते, पाभातिते अगहिते सेसा तिण्णि, अहवा-गहितंमि०॥१४९३॥वेरत्तिए अगहिते सेसेसु तिसु गहितेसु तिण्णि, अड्ढरत्तिए वा अगहिते तिण्णि, पादोसिए वा अगहिते तिण्णि, दोण्णि कहं ?, उच्यते, पादोसिअड्ढरत्तिएसु गहितेसु सेसेसु अगहितेसु दोण्णि भवे, अहवा पादोसिते वेरत्तिए गहिते दोण्णि, अहवा पाभातियपादोसिएसु गहितेसु सेसेसु अगहितेसु दोण्णि, एत्थ विकप्पे पादोसिएण चेव अणुवहतेण उवयोगतो सुपडिजुग्गितेण सव्वकाले पढंतित्ति न दोसा, अहवा अड्ढरत्तियवेरत्तिय गहिए दोण्णि, अहवा अड्ढरत्तियपाभाइएसु गहिइएसु दोण्णि, जदा ऐक्का तदा अण्णतरं गेण्हति। कालचउक्ककारणा इमे?, कालचउक्कग्गहणं उस्सग्गतो विधी व, अहवा पादोसिये गहिते उवहते अड्ढरत्तं घेत्तुं सज्झायं करेंति, तंमि- वि उवहते वेरत्तियं घेत्तुं सज्झायं करेंति, पाभातितो दिवसट्ठा घेत्तव्वो चेव, एवं कालचउक्कं दिट्ठं, अणुवहते पुण पादोसिते सुपडि- ||२३६||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

कालग्रहणं

||२३७||

यग्गिते सव्वं राइं पढंति, वेरत्तिएणवि अणुवहतेण सुपडियग्गितेण पाभानियमसुद्धे उद्दिट्ठं दिवसतोऽपि पढंति, कालचउक्के अग्गहणकारणा इमे-पादोसियं न गेण्हंति असिवादिकारणतो ण सुज्झइ वा, अड्डरत्तियं न गेण्हंति कारणतो न सुज्झति वा, पादोसिएण वा सुपडियग्गितेण पढंतित्ति न गेण्हंति. वेरत्तियं कारणतो ण गिण्हंति ण सुज्झति वा, पादोसियअड्डरत्तिएण वा पढंतित्ति ण गेण्हंति, पाभातियं ण गेण्हंति कारणतो न सुज्झति वा । इदाणिं पाभातियकालग्गहणविहिं पत्तेयं भणामि- पाभाइयं०॥१४९५॥ पाभाइयंमि काले गहणविधी पट्ठवणविही य । तत्थ गहणविधी इमा-णवका० ॥ भा. २२४ ॥ दिवसतो सज्झायविरहिताण देसादिकहासंभववज्जणट्ठं मेधावितराण य विभंगवज्जणट्ठाए, एवं सव्वेसिमणुग्गहणट्ठा णव कालग्गहणकाला पाभातिए अणुण्णाता, अतो णवकालग्गहणवेलाहिं सेसाहिं पाभातियकालग्गाही कालस्स पडिक्कमउ, सेसावि तंवेलं उवउत्ता चिट्ठंति, कालस्स तं वेलं पडिकमंति वा ण वा, एगो णियमा ण पडिकमति, जदि छीतरुतादीहिं ण सुज्झिहिति तो सो चेव वेरत्तिओ पडिजग्गितो होहितित्ति, सोवि पडिकंतेसु गुरुस्स कालं निवेदेत्ता अणुदिते सूरिए कालस्स पडिकमते, जदि घेप्पमाणेण णव वारा उवहतो कालो तो णज्जति जहा धुवमसज्झाइयमत्थित्ति ण करेंति सज्झायं, णववारग्गहणविधी इमो 'संचिक्खि तिण्णि छीतरुणाइं' ति, अस्य व्याख्या—एक्केक्क० ॥ २२५ भा. ॥ एगस्स गिण्हतो छीतरुतादीहिं हते संचिक्खतित्ति ग्रहणा विरमतीत्यर्थः, पुणो गिण्हंति, एवं तिण्णि वारा. ततो परं अण्णो अण्णंमि थंडिले तिण्णि वारा, तस्सवि उवहते अण्णो अण्णंमि थंडिले, तिण्हं असतीए दोण्णि जणा नववाराओ पूरंति, दोण्हवि असतीए एको चेव नववाराओ पूरेति, थंडिलेसुवि अववादो, दोसु वा एक्कंमि वा गेण्हंति । ' परवयणे खरमादि ' त्ति, अस्य व्याख्या--चोदेति० चोयग आह-जदि रुदितमणिट्ठे कालवहो ततो खरेण रडिते

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

||२३८||

कालग्रहणं

बारस वरिसे उवहंमतु, अण्णेसुवि अणिट्ठइंदियविसएसु एवं चेव कालवहो भवतु । आचार्य आह---चोयग० ॥ २२६ भा. ॥ माणुससरे अणिट्ठे कालवधो, संसगात्ति तिरिया तेसिं जदि अणिट्ठो पहारसद्दो सुणिज्जति तो कालवधो, 'पावासिगा' अस्य व्याख्या-पावासिय०॥ जदि पाभातियकालग्गहणवेलाए पवासितभज्जा पतिणो गुणा संभरंती दिवे दिवे रुवेज्जा तो तीए रोयणवेलाए पुव्वतरो कालो घेत्तव्वो, अह सावि पच्चूसे रुवेज्ज ताहे गंतुं पण्णविज्जति, पण्णवणमणिच्छाए उग्घाडणकाउस्सग्गो कीरति। 'एवमादीणि'त्ति अस्य व्याख्या--वीसरसद्द० ॥२२७ भा.॥ अच्चायासेण रुदंते वीसरसरं भणति तं उवहणते, जं पुण महुरसद्दं घोलमाणं च तण्णोवहणति, जावमजंपिरं ताव अव्वत्तं, तं अप्पेणवि विस्सरसरेण उवहणति, महन्तं उस्सुंभरोवणेणावि उवहणति, पाभातियकालग्गहणविधी गता ॥ इदाणिं पाभातियपट्ठवणविधी--गोसे दर० ॥ पच्छद्धं, गोसत्ति उदिते आदिच्चे दिसावाला दिसालोयं करेत्ता पट्ठवेंति, अद्धपट्ठविते जदि छीताइणा भग्गं पट्ठवणं पुणो दिसावलोगं करेत्ता तत्थेव पट्ठवेंति, एवं ततियवाराएवि । दिसावलोयकरणे इमं कारणं----आतिण्णं० ॥ १४९६ ॥ आइण्णपिसितंति आइण्णं पोग्गलं तं काकमादीहिं आणियं होज्जा, महिया वा पडितुमारद्धा एवमादि,एगट्ठाणे तयो वारा उवहते हत्थसतबाहि अण्णट्ठाणं गंतुं पेहिन्ति पडिलेहिन्ति य, पट्ठवेंतित्ति वुत्तं भवति, तत्थवि पुव्वुत्तविहाणेण तिण्णि वारा पट्ठवेंति, एवं बितियट्ठाणेवि असुद्धे ततोवि हत्थसतं अण्णं ठाणं गंतुं तिण्णि वारा पुव्वुत्तविहाणेण पट्ठवेंति, जदि सुद्धं तो करेंति सज्झायं, णव वारा खुतादिणा हते नियमा हतो कालो (ततो) पढमाए पोरुसीए सज्झायं न करेंति । पट्ठवितं०॥ जदा पट्ठवणाए तिन्नि अज्झयणा सम्मत्ता तदा उवरिं एगो सिलोगो कड्ढेतव्वो, तंमि समत्ते पट्ठवणं समप्पेति सुज्झवि य, बितियपादो गतत्थो । सोणितत्ति अस्य व्याख्या--आलोगेचि० ॥ १४९८ ॥ ||२३८||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२३९|| कालग्रहणं

तत्थ सज्झायं करेंतेहिं सोणितवच्चिका दीसंति तत्थ न करेंति सज्झायं, कडगचिलिमिलिं वा अंतरे दातुं करेंति, जत्थ सज्झायं चेव करेंताण मुत्तपुरिसकलेवरादियाण गंध अण्णंमि वा असुभगंधि आगच्छाति तत्थ सज्झायं न करेंति, अण्णत्थ गंतुं करेंति, अण्णंपि बंधणसेहणादिआलोयं परिहरेज्जा, एवं सव्वं निव्वाधाते काले भणितं, वाघातिमकालेवि एवं चेव, णवरं गंडगमरुगादिट्ठंते ण भवति। एतेसा० ॥ १३९९ ॥ बितिय० ॥ ॥ (न वृत्तौ) दोवि कंठाओ, एवं परसमुत्थं गतं।

इदाणिं आयसमुत्थं भण्णति- आयसमुत्थमसज्झाइयस्स इमे भेदा- आयस० ॥ १५०० ॥ एगविधं समणाणं, तं च वणे भवति, समणीणं दुविहं- वणे उडुसंभवं च, इमं वणे विहाणं- धोयंमि य० ॥ १५०१ ॥ पढमं चिय वणो हत्थसतस्स बाहिरतो धोवितुं णिप्पगलो कतो, ततो परिगलंते तिण्णि बंधा जाव उक्कोसेण करेंतो वाएति, दुविहं- व्रणसंभवं उडुयं च, दुविहेवि एवं पट्टगजतणा कातव्वा। समणो० ॥ १५०२ ॥ वणे धोवणप्पगले हत्थसतबाहिरतो पट्टगं दातुं वाएति, परिगलमाणेण भिण्णे तंमि पट्टगे तस्सेव उवरिं छारं दातुं पुणो पट्टं देति पुणो वाएति य, एवं ततियंपि पट्टगं बंधेज्जा वायणं च देज्जा, ततो परं गलमाणे हत्थसतबाहिरं गंतुं वणं पट्टगं य धोवितुं पुणो एतेणेव अण्णत्थ गंतुं अणेणेव कमेण वाएइ, अहवा अण्णत्थ गंतुं पढति। एमेव य० ॥ १५०३ ॥ इतरंति उडुयं, तत्थवि एवं चेव, णवरं सत्त बंधा उक्कोसेण कातव्वा, तहवि अट्ठंते हत्थसतबाहिरतो धोतुं पुणो वाएंति, अहवा अण्णत्थ पढन्ति। आणादोसा दोसा भवंति। इमे य--सुतणाणं० ॥ १५०६ ॥ सुतणाणअणुवयारतो अभत्ती भवति, अहवा सुतणाणभत्तिरागेण असज्झाइए सज्झाइयं मा कुणसु, उवएसो एस, जं लोगधंमविरुद्धं च तं न कातव्वं, अविधीते पमत्तो लब्भति, तं देवता छलेज्ज, जहा विज्जासाहणवइगुण्णत्ताए विज्जा न सिज्झति तहा इहंपि कंमखयो ण भवति, ||२३९||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

||२४०||

कालग्रहणं

वैगुण्यं वैधर्मता, विपरीतभावा इत्यर्थः, वेधम्मताए य-सुतधम्मस्स एस धम्मो जं असज्झाइए सज्झायवज्जणं, करेंति य सुतणाणायारं विराहेंति, तम्हा मा कुणसु। चोयग आह- जदि दंतट्ठिमंससोणितादी असज्झायो णणु देहो एतधम्मओ चेव, कहं तेण सज्झायं करेह ?, आचार्य आह- कामं दे० ॥ १५०६ ॥ कामं चोयगाभिप्पायणुमतत्थे, सच्चं तम्मयो देहो तथावि जे सरीरा ते अवजुत्तत्ति पृथग्भूता ते वज्जणिज्जा, जे पुण अणवजुत्ता तत्थत्था ते णो वज्जणिज्जा, इति उपप्रदर्शने, एवं लोके दृष्टं, लोकोत्तरेऽप्येवमित्यर्थः ॥ किं चान्यत्- अब्भिंतर० ॥ १५०७ ॥ अभ्यंतरा मूत्रपुरीषादी तेहिं चेव बाहिरे उवलित्तो ण कुणति, अणुवलित्तो पुण अब्भितरगतेसुवि तेसु अह अच्चणं करेति। किं चान्यत्- आउट्टिगा० ॥ १५०८ ॥ जा पडिमा संनिहितित्ति देवताहिट्ठिता सा जदि कोइ अणाढितेण आउट्टियंति जाणंतो बाहिरलित्तो तं पाडिमं छिवति अच्चणं च से कुणति तो न खमते, खित्तचित्तादि करेति रोगे वा जणेति मारेति वा, इयत्ति एवं जो असज्झाइए सज्झायं करेति तस्स णाणायारविराहणाए कंमबंधो, एस से परलोइओ दंडो। इहलोए पमत्तं देवता छलेज्ज। स्यात्-आणा व विराहणा वा धुवा चेव ॥ कोइ इमेहिं अप्पसत्थकारणेहिं असज्झाइए सज्झायं करेज्ज--रागेण० ॥ १५०९ ॥ रागेण दोसओ वा करेज्ज,अहवा दरिसणमोहमोहिओ भणेज्जा- का अमुत्तस्स नाणस्स आसातणा ?, को वा तस्स अणायारो ?, नास्तीत्यर्थः। एतेसिं इमा विभासा- गणिसद्द० ॥ १५१० ॥ महितोत्ति पूज्य तुट्ठाणंदिओ परेण गणिवायगो वाहरिज्जन्तो भवति, तदभिलासी असज्झाइएवि सज्झायं करेति, एवं रागे- ||२४०||
दोसे, किंवा गणि वाहरिज्जति वायगो वा, अहंपि अहिज्जामि जेण एतस्स पडिसवत्तीभूतो भवामि, जम्हा जीवसरीरावयवो असज्झाइयं तम्हा सव्वं असज्झाइयमयं, न श्रद्धातीत्यर्थः। इमे दोसा-उम्मायं० ॥ १५११ ॥ खित्ताइगो उम्मायो, चिरकालिओ

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने

||२४१||

रोगो, आसुघाती आतंको, एते वा पावेज्जा, धम्माओ भंसेज्जा मिच्छादिट्ठी वा भवति, चरित्ताओ वा परिवडति। इहलोए० ॥ १५१२ ॥ सुयणाणायारविवरीयकारी जो सो णाणावरणिज्जं कंमं बंधति, तदुदयाओ य विज्जाओ कतोवयाराओवि फलं न देंति, न सिध्यन्तीत्यर्थः, विधीए अकरणं परिभवो, एवं सुतासातणा, अविधीए य वट्टंतो नियमा अट्ठ कंमपयडीओ बंधेति हस्सट्ठितीओ य दीहट्ठितीओ करेति मंदाणुभावा य तिव्वाणुभावाओ करेति अप्पपदेसाओ बहुप्पदेसाओ करेति, एवकारीय नियमा दीहं संसारं निव्वत्तेति, अहवा णाणायारविराहणाए दंसणायारविराहणा, णाणदंसणविराहणाहिं नियमा चरणविराहणा, एवं तिण्हं विराहणाए अमोक्खो अमोक्खा नियमा संसारो, बितिय० ॥ पूर्ववत् । सर्वत्र अणुप्पेहा अप्रसिद्धा इत्यर्थः । असज्झाइयणिज्जुत्ती सम्मत्ता ॥ एत्थ पडिसिद्धकरणादिणा वा अतियारो तस्स मिच्छामिदुक्कडंति ॥

शेषातिचाराः

एवं ता सुत्तनिबंधं, अत्थतो पुण तेत्तीसाओ चोत्तीसा भवंतीत्ति चोत्तीसाए बुद्धवयणातिसेसेहिं, पणतीसाए सच्चवयणादिसेसेहिं छत्तीसाए उत्तरज्झयणेहिं एवं जहा समवाए जाव सतभिसयाणक्खत्ते सतगतारे पण्णत्ते, एवं संखेज्जेहिं असंखेज्जेहिं अणंतेहि य असंजमट्ठाणेहि य संजमट्ठाणेहि य जं पडिसिद्धकरणादिणा अतियरितं तस्स मिच्छामिदुक्कडंति । सव्वोविय एसो दुगादीओ अतियारगणो एगविहस्स असंजमस्स पज्जायसमूहो इति, एवं संवेगाद्यर्थं अणेगधा दुक्कडगरिहा कता ।

इदाणिं परिणामविसुद्धिथिरीकरणत्थं गुणबहुमाणतो यदिदं निग्गंथं पावयणं आराहितुमारद्धं तं जेहिं उवदिट्ठं आराहितं च ||२४१||
तेसिं णमोक्कारपुव्वगं एतस्स चेव गुणमाहप्पं भावेंतो एतम्मि अप्पणो ठितिं आराधणं च दरिसेन्तो इदमाह-णमो चउव्वीसाए तित्थगराणं उसभादिमहावीरपज्जवसाणाणं इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं जाव किरियं उवसंपज्जामित्ति॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२४२||

सूत्र

'णमो चउव्वीसाए जाव पज्जवसाणाणं' एयं सुगमं, एतेण तेसिं णमोक्कारो कतो । इणमेवेति इदं प्रत्यक्षीकरणे, तमेव पागतेण इणमोत्ति भणति, इदमेव निर्ग्रंथ्यं प्रवचनं वक्ष्यमाणगुणमाहात्म्यं, नान्यत् शाक्यादि, निग्गंथाणमिदं नैर्ग्रन्थ्यं, निग्गंथा जधा पण्णत्तीए, पावयणं सामाइयादि बिंदुसारपज्जवसाणं, जत्थ णाणदंसणचारित्तसाहणवावारा अणेगधा वण्णिज्जंति, एतं-एतद्गुणमाहप्पुववेतं पवत्तते, जथा सच्चं सद्भ्यो हितं सच्चं, सद्भूतं वा सच्चं, अणुत्तरं-सव्वुत्तिमं केवलियं केवलं अद्वितीयं एतदेवैकं हितं नान्यत् द्वितीयं प्रवचनमस्ति, केवलिणा वा पण्णत्तं केवलियं, पडिपुण्णं णाणादिसाधगपयोगऽपडिहिडितं, णेयाउगंति नैयायिकं न्यायेन चरति नैयायिकं, न्यायाबाधितमित्यर्थः, संसुद्धं समस्तं सुद्धं संसुद्धं बहुविधचालणादीहिं पेयालिज्जंतं सल्लकत्तणं सल्लाणि-मायानिदाणमिच्छत्तसल्लाणि तेसिं कत्तणं-छेदणं, सिद्धिमग्गं सिद्धत्तणं सिद्धी तीए मग्गो-प्राप्त्युपायः, एवं मुत्तिमग्गं मुत्ती-निर्मुक्तता निःसंगता इत्यर्थः निज्जाणमग्गं निर्याणं-संसारात्पलायणं निव्वाणमग्गं निव्वाणं-निव्वत्ती आत्मस्वास्थ्यमित्यर्थः, एयं चेव मग्गं विसेसेति-अवितहमविसंधिं सव्वदुक्खप्पहीणमग्गंति सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं णिज्जाणमग्गं णिव्वाणमग्गं अवितथं-तथ्यं एवं अविसंधि-अव्यवच्छिन्नं सव्वदुक्खप्पहीणमग्गं-सर्वसंक्लेशविहीनं, यतो एवंगुणं अतो एतमाहप्पयमित्यादि । एत्थंति निग्गंथे पावयणे स्थिता इति वृत्ताः जीवाः, किं?- सिज्झंति सिद्धा भवंति, परिनिष्ठितार्था भवंतीत्यर्थः, ते य बुज्झंति अत आह-बुज्झंति-बुद्धा भवंति, केवलीभवंतीत्यर्थः, एवं मुच्चंति मुच्चंति नाम सव्वकम्मादिसंगेण मुक्का भवंति, परिनिव्वायंति परिनिव्वुया भवंति, परमसुहिणो भवंतीत्यर्थः, सव्वदुक्खाण अंतं करेंति सव्वेसिं सारीरमाणसाणं दुक्खाणं अंतकरा भवंति, वोच्छिण्णसव्वदुक्खा भवंतीत्यर्थः । अण्णे भणंति-सिज्झंति मोहनीयक्खएण निष्ठितार्थाः भवंति

निर्ग्रन्थप्रवचनस्थितिः

||२४२||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२४३||

निर्ग्रन्थ-प्रवचन-स्थितिः

बुज्झंति केवलीभवंति मुच्चंति सव्वकम्मुणा परिणिव्वातंति निव्वाणं गच्छंति, एवं च सव्वदुक्खाणं अंतं करेंतित्ति। अण्णे पुण भणंति-सिज्झंति-अणिमहिमा(दि)सिद्धीसंपन्ना भवंति बुज्झंति अतिसतबोधजुता भवंति, विण्णाणयुता इत्यर्थः, मुंचंति मुक्ता भवंति सव्वसंगेहिं परिणिव्वायंति उवसंतपसंता भवंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति सव्वदुक्खरहिता भवंति, जतो य एवं एयं अतो एत्थ वट्टितव्वमिति अप्पणो ठितिं एतंमि दरिसेति, तं धम्मं सद्दहामि इत्यादि, जो एस वण्णितनिग्गंथपवयणाभिहितो धम्मो तं धम्मं सद्दहामि सामण्णेण एवमेतमिति पत्तियामि अप्पणो प्रतीतिं करोमि, एवं एव एवमेतंति रोएमि रुचिं करोमि, एतंमि अभिलाषातिरेकेण आसेवनाभिमुखतया इति, अण्णे पुण एताणि एगट्ठाणि भणंतित्ति। फासेमि आसेवणादारेणंति अणुपालेमि आसेवनाभ्यासेन अहवा पुव्वपुरिसेहिं पालितं अहंपि अणुपालेमित्ति, एवं च तं धम्मं सद्दहंतो पत्तियंतो रोएंतो फासेंतो अणुपालेंतो तस्स धम्मस्स अब्भुट्ठितोमि आराहणाए विरतोमि विराहणाए अतो असंजमं पडियाणामि संजमं उवसंपज्जामि परियाणामित्ति ज्ञपरिण्णया जाणामि पच्चक्खाणपरिण्णता पच्चक्खामि, उवसंपज्जामित्ति अविराधणाप्रयत्नमित्यर्थः। सो य असंजमो विसेसतो दुविहो—मूलगुणअसंजमो उत्तरगुणअसंजमो य, अतो सामण्णेण भणिऊण संवेगाद्यर्थं विसेसतो चेव भणति-अबंभं परियाणामि बंभं उवसंपज्जामि। अबंभग्गहणेण मूलगुणा भण्णंतित्ति, एवं अकप्पं कप्पं च, अकप्पग्गहणेण उत्तरगुणात्ति। इदाणिं द्वितीयसंसारमोक्षकारणमधिकृत्याह-अण्णाणं परियाणामि णाणं उवसंपज्जामि। तृतीयमधिकृत्याह-मिच्छत्तं परियाणामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि, इदाणिं सव्वं बज्झं किरियाकलावमधिकृत्याह--अकिरियं परियाणामि किरियं उवसंपज्जामि अप्पसत्था किरिया अकिरिया, इतरा किरिया इति। ||२४३||

प्रत सूत्रांक [सू.] + गाथा: ||१,२||

दीप अनुक्रम [११-३६]

प्रतिक्रमणाध्ययने ||२४४||

निर्ग्रन्थ-प्रवचन स्थितिः

इदाणिं असेसदोसाविसुद्धिणिमित्तमाह-संघयणादिदौर्बल्यादिना जं पडिक्कमामि परिहरामि करणिज्जं जं च न पडिक्कमामि अकरणिज्जं, तथा छाद्मस्थिगोपओगाच्च जं संभरामि जं च न संभरामि कव्वं, तस्यैवंविधस्य तस्स सव्वस्स अणायरितं पति पडिकमामि, अणायरितं घातिकर्मोदयतः खलितमासेवितं पडिकमामि मिच्छादुक्कडादिणा। स एवं पडिकमितूण पुणो अकुसलपवित्तिपरिहाराय आत्मानमालोचयन्नाह—**समणोऽहं संजतविरतपडिहतपच्चक्खातपावकंमो अणिदाणो दिट्ठिसंपण्णो मायामोसविवज्जितोत्ति**। **समणोऽहं**-पव्वइतोऽहं, तत्थ य संजतो-सम्मं जतो, करणीयेसु जोगेसु सम्यक्प्रयत्नपर इत्यर्थः, तथा **विरतो**--सव्वातो सावज्जजोगातो, एतं च एवं इतः यतो पडिहतपच्चक्खातपावकंमो अणिदाणो जाव वज्जितोत्ति-पडिहतं अतीतं णिंदणगरहणादीहिं पच्चक्खातं सेसं अकरणतया पावकंमं-पावाचारं येण स तथा, विसमो एस दोसोत्ति। एतत् हितमात्मनो भेदेन भावयन्नाह-**अणिदाणो**-निदानपरिहारी, सव्वगुणमूलभूतगुणयुक्तत्वं दर्शयन्नाह-**दिट्ठिसंपण्णोत्ति**-दिट्ठी संमदंसणणाणाणि, **मायामोसविवज्जितोत्ति**-मायागर्भमुसावादपरिहारी इत्यर्थः, एरिसो य होंतो कहं पुण अकुसलमायरिस्सं?, इतरहा मायामोसभासप्पसंग इति। एवं अप्पाणं समुक्कित्तेतुं ततो जे भगवंतो एतंमि प्रक्रमे स्थिता तेसिं बहुमाणतो सुकडाणुमोदणत्थं वंदणंकातुकामो ते समुक्कित्तेति—

सूत्र

अड्डातिज्जेसु दीवसमुद्देसु पण्णरससु कम्मभूमीसु जावंत केइ साधू रयहरणगोच्छपडिग्गहधरा पंचमहव्वयधरा अट्ठारससीलंगसहस्सधरा अक्खुयायारचरित्ता ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामित्ति ॥ केइ पुण ||२४४||
समुद्दपदं गोच्छपडिग्गहपदं च न पढंति, अण्णे पुण- अड्डाइज्जेसु दोसु दीवसमुद्देसु पढंति, एत्थ विभासा कातव्वा। ते इति

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+ गाथा:
||१,२||

दीप
अनुक्रम
[११-३६]

कायोत्सर्गाध्ययनं साधवः सव्वेत्ति गच्छनिग्गतगच्छवासीपत्तेयबुद्धादयो सिरसा इति कायजोगेण मत्थएणवंदामित्ति एस एव वइजोगो २। एवं वंदितुं सुप्पणिहाणत्थमिदमाह– संबन्धोऽधिकारश्च

||२४५|| सूत्र खामेमि सव्वजीवा,सव्वे जीवा खमंतु मे। कंठ्यं। मेत्ती मे सव्वजीवेसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥ १ ॥ मेत्ती णाम सिवं उपशम इत्यर्थः,एवं आलोइय णिंदिय गरहित दुगुंछियं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो वंदामि जिणे चउव्वीसं।२।ति। एवमिति अनेन प्रकारेण आलोइयं पयासितूणं गुरूणं कहितं णिंदियं-मणेण पच्छातावो गरहितं वइजोगेणं, एवं आलोइयणिंदियगरहियमेव दुगुंछितं, एवं तिविहेण जोगेण पडिकंतो वंदामि जिणे चउव्वीसंति। एवं दिवसतो भणितं। रातिमादिसुवि एवं चेव भणितव्वं, णवरं रातियादिअतियारो भाणितव्वो। भणितो अणुगमो। इदाणिं नयाः। ते य पूर्ववत् ॥ इति पडिक्कमणनिज्जुत्तीचुण्णी सम्मत्ता ॥

इदाणिं काउस्सग्गज्झयणं, तस्य चायमभिसंबंधः-आवस्सगं पत्थुतं, तस्स पढमारंभे मंगलं विग्घोवसमादिनिमित्तं कतं, मंगलादिपत्थणेण य णंदी अणुयोगद्दाराणि य वित्थरेण वण्णिताणि,तस्स य छव्विधस्स छ अज्झयणाणि सामाइयादीणि, ||२४५||
तत्थ चत्तारि अणुगताणि-सामाइयं चउवीसत्थयो वंदणयं पडिक्कमणंति,तत्थ य सावज्जजोगविरती उक्कित्तणं गुणवतो य पडिवत्ती खलितस्स निंदणा एते अत्थाधियारा पत्तकालमवस्सं कातव्वत्ति वण्णिता, एत्थवि पत्तकालं काउस्सग्गेण तिगिच्छा अवस्सं

*** अत्र अध्ययनं -४- 'प्रतिक्रमणं' परिसमाप्तं

*** अत्र अध्ययनं -५- 'कायोत्सर्ग' आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [सू.] + ||गाथा||

दीप अनुक्रम [३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययनं ||२४६||

संबन्धोऽधिकारश्च

कातव्वत्ति एतं वण्णिज्जति, पडिक्कमित्तू य पडिक्कमणसुत्तकड्डणेण ततो पच्छा चरित्तादीण उत्तरीकरणादिणा पावकम्मणिग्घा-
तत्थं काउस्सग्गो कातव्वोत्ति काउस्सग्गज्झयणं भण्णति, तस्स चत्तारि णियोगदाराणि उवक्कमादीणि परूवेत्ता अत्थाधिगारो
वणतिगिच्छाए, सो य वणो दुविधो- दव्वे भावे य, दव्ववणो ओसहादीहिं तिगिच्छिज्जति, भाववणो संजमातियारो तस्स
पायच्छित्तेण तिगिच्छणा, एतेणावसरेण पादच्छित्तं परूविज्जति । वणतिगिच्छा अणुगमो य, तं पायच्छित्तं दसविहं—आलोय १
पडिक्कमणं २ तदुभयं ३ विवेगो ४ वियोसग्गो ५। तवो ६ छेदो ७ मूलं ८ अणवट्ठप्पं ९ पारंचितं चेति १०
॥ १९-१ ॥ १५१२ ॥ जथावराहं, जहा सल्ले उद्धरिए वणातिगिच्छा कीरति, जथा कंटकगमादि जदि अप्पं निद्दोसं च सल्लं तो
उद्धरणमेत्तेण पाउणाति, अह णज्जति वड्डं खतं अमलितं दुक्खेज्ज ताहे मलिज्जति, जदि तहवि स्सभिज्जति तो उद्धरेत्ता कंनम-
लादीण पूरिज्जति, तहवि सदोसं होज्जा तो विभंगिज्जति, अह गाढविद्दारु फरुसं से दोसं गोणसखतितादि जहा तो मूलातो
छिज्जति, अह तहाविहं तो मूलच्छेदोवि कालंतरेण पयत्ततो कीरति, कंमिइ पुण वणे खेत्तादीण णिक्कालितूण तथा मूलच्छेदो
कीरतित्ति, एवं चेव इहवि भाववणे तिगिच्छा दसविहं पायच्छित्तं, तत्थ जो आलोयणाए सुज्झति सो ताए सोहेतव्वो, एवं जाव
जो पारंचितेणं सुज्झति सो तेणंति, तत्थ परोप्परस्स वायणपरियट्टणवत्थदाणादिए अणालोतिए गुरूणं अविणओत्ति आलोयणा-
रिहं, पडिक्कमणं पुण पवयणमादिसु आवस्सगकंमे वा सहसा अतिक्कमणे पडिचोतितो सयं वा सरितूण मिच्छादुक्कडं करेति
एवं तस्स सुद्धी, मूलुत्तरगुणातिकमसंदेहे आउत्तेण वा कए आलोयणपडिकमणसुभयं, आहारातीणं उग्गमादिअसुद्धाणं गहिताणं ||२४६||
पच्छा विण्णाताणं संपत्ताण वा विवेगो परिच्चागो, विओसग्गो कातुस्सग्गो गमणागमणसुविणणईसंतरणादिसु, तवो मूलुत्तरगुणा-

*** अत्र व्रण-चिकित्सा मध्ये प्रायश्चितस्य दशविध-भेदानां वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक [सू.] + ||गाथा||

दीप अनुक्रम [३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययनं ||२४७||

तियारे पंचरातिंदियाति छम्मासावसाणमणेकधा, छेदो अवराधो पंचएण सासणविरुद्धादिसमायारेण वा तवरिहमतिक्कंतस्स पंचराइंदियादिपब्बज्जाविच्छेद्यं, मूलं पगाढतरावराहस्स मूलतो परियातो छिज्जति, अणवट्ठो मूलच्छेदाणंतरं केणति कालविहिणा पुणो दिक्खिज्जति, पारंचितो खेत्तातो देसातो वा णिच्छुभति, छेदमूलअणवट्ठपारंचिताणि देसकालपुरिससामत्थादीणि पडुच्च दीज्जंतित्ति, एवं एसा अवरा वणस्स सोधी कीरति। एत्थं काउस्सग्गारिहेण अहिगारो, सेसाणि सट्ठाणे भण्णिहिन्ति, णामणिप्फण्णे पुण णिक्खेवे काउस्सग्गोत्ति, तत्थ दारगाथा—

निक्खेवेगट्ठ० ॥ १५२३ ॥ काउस्सग्गस्स निक्खेवो विभासितव्वो, एवं योज्जं. तत्थ काउस्सग्गो कायस्स उस्सग्गे य दो पदाणि, तत्थ कायस्स निक्खेवे इमा गाथा—णामंठवणसरीरे० ॥ १९-२४ ॥१५३७॥ कायस्स निक्खेवो दुवालसविहो, णामठ्ठवणाओ गताओ, सीर्यत इति सरीरं सरीरं चेव कायो सरीरकाओ सो ओरालियादि पंचविहो, गतिकायो निरयगातिमादिसु पत्तेयं पत्तेयं जो कायो, अहवा गतिसमावण्णस्स जो काओ सो गतिकाओ, गतीए कायो गतिकायोत्ति, तथा चापांतरालगतावपि तेयाकंमगाणि अत्थि चेव, निकायकायो छज्जीवनिकायो, अत्थिकायो धंमत्थिकायादि, दवियकायो कायपाओग्गदव्वा, जथा परमाणुमादी दुपदेसियादीणं, पत्तेयं पत्तेयं जस्स जस्स जे अणुरूवा मातुगादयो दिट्ठिवादे छायालीसं मातुगापदाणि बंभिलिवीए वा अक्खराणि अण्णत्थवि जत्थ एगपदे बहू अत्था समोयरंति सो मातुगाकायो, संगहकायो जथा परमाणुमादि सुवण्णादिपरिणामा पिंडिता बहवे, भारकायो कावोडी, उक्तं च–दुद्धकायो०, तत्थ कारकं-एक्को कायो दुहाजातो० ॥ १५४१ ॥ एत्थ अक्खाणकं जथा पडिक्कमणे परिहरणाए, भावकायो उदयियादीया वा भावा दुगमादी जत्थ विज्जंति जीवे अजीवे वा सो भावकायो,

काय-निक्षेपाः ||२४७||

*** अत्र काय + उत्सर्गस्य निक्षेपा: कथयते

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+
||गाथा||

दीप
अनुक्रम
[३७-६२]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

कायोत्सर्गाध्ययनं

॥२४८॥

एत्थ जथासंभवं सरीरकायादिणा अहिगारो। तस्स एगट्ठिया-कायो सरीर देहो० ॥१५४३॥ इदाणिं उस्सग्गो, सो छव्विधो-णामट्ठवणाओ गताओ, वतिरित्तो दव्वुस्सग्गो अकिंचिकरं सदोसं च कातुं जो जं दव्वं छड्डेति, तत्थ अकिंचिकरं जथा भिण्णभिक्खे भायणं सदोसं, जथा विसकतमभियोगकतं वा एवमादि, अहवा जेण दव्वेण जत्थ वा दव्वे दव्वभूतो छड्डेति एस दव्वुस्सग्गो। खेत्तुस्सग्गो जथा भरहादीहिं चक्कवट्टीहिं भारहं वासं पच्चयंतेहिं छड्डितं जो वा जं खेत्तयं चयति जंमि वा खेत्ते चयति किंचि जंमि वा खेत्ते उस्सग्गो वण्णिज्जति एवमादि, कालुस्सग्गो जो जं कालं उज्झति, जहा उज्झितो वसंतो मदेण, ण वाहति छड्डितो वा सिसिरो, एवमादि, अह चारित्तकालं पप्प रीयिज्जति वासारत्ते वा ण विहरिज्जति जच्चिरं च कालं उस्सग्गो जम्मि वा काले उस्सग्गो वण्णिज्जति एवमादि, णोआगमतो उस्सग्गो पसत्थो अपसत्थो य, पसत्थो अण्णाणादीणं जातिमदादीण य, अपसत्थो णाणादीण उज्झणा, जेण वा भावेण वा चयति एवमादि ॥ अथ तस्स एगट्ठिता-उस्सग्ग विओसरणउज्झवणा य० ॥ १५४८० ॥ एत्थ जथासंभवं अप्पसत्थओस्सग्गादिणा अधिगारो इति।

इदाणिं विधाणमग्गणत्ति, सो पुण काउस्सग्गो दुविधो-चेट्ठाकाउस्सग्गो य अभिभवकाउस्सग्गो य, अभिभवो णाम अभिभूतो वा परेणं परं वा अभिभूय कुणति, परेणाभिभूतो, तथा हूणादीहिं अभिभूतो सव्वं सरीरादि वोसिरामित्ति काउस्सग्गं करेति, परं वा अभिभूय काउस्सग्गं करेति, जथा तित्थगरो देवमणुयादिणो अणुलोमपडिलोमकारिणो भयादी पंच अभिभूय काउस्सग्गं कातुं प्रतिज्ञां पूरेति, चेट्ठाउस्सग्गो चेट्ठातो निप्फण्णो जथा गमणागमणादिसु काउस्सग्गो कीरति, अहवा जदि उवस्सग्गो अन्नो भवति छिंदिति वा तो चलति, जो एसो चेट्ठाकाउस्सग्गो, एस अणेगविधो पुरतो वण्णिहिज्जति। इदाणिं कालपरिमाणदारं

भेदौ कालमानं च

॥२४८॥

प्रत सूत्रांक [सू.] + ||गाथा||

दीप अनुक्रम [३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययनं ||२४९||

कालप्पमाणेण पुण अभिभवकाउस्सग्गस्स इमं कालपमाणं-जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संवत्सरं, जथा बाहुबलिस्स, सेसा मज्झिमा काउस्सग्गा। चेट्ठाकाउस्सगे पभेदा अणेगेसु ठाणेसु गमणागमणादिसु भवंति,तेसिं कालपमाणं उवरि भण्णिहिति। इदाणिं भेदपरिमाणं, तत्थ भण्णति- सो पुण काउस्सग्गो दव्वतो भावओ य भवति,दव्वतो कायचेट्ठानिरोहो, भावतो काउस्सग्गो झाणं, तं दुविधं- पसत्थं अपसत्थं च, पसत्थं धम्मसुक्काणि, अपसत्थं अट्टरोद्दाणि, एत्थ दव्वभावसंजोगेणं काउस्सग्गस्स णव भेदा उप्पज्जंति, इमे—

कायोत्सर्गभेदाः

उसिउस्सितो तु पढमो १ उसितो २ उसितणिसण्णओ चेव ३। णिसणुस्सिओ ४ णिसण्णो ५ णिसण्णगणिसण्णतो चेव ६ ॥ १५५६ ॥ निवणुस्सितो ७ णिवण्णो ८ णिव्वण्णगाणिवण्णओ य ९ णातव्वो। एतेसिं तु पदाणं पत्तेयपरूवणं वोच्छं ॥ १५५७ ॥ संवरितासवदारो० ॥ १५६२ ॥ चेतणमचेतणं० ॥ १५६३ ॥ धम्मं सुक्कं च दुवे झायति० ॥ १५७६ ॥ धम्मं सुक्कं च दुवे णवि झायति० ॥ १५७७ ॥ अट्टं रोद्दं च दुवे झायति ॥ १५८६ ॥ धम्मं सुक्कं च दुवे० ॥ १५८७ ॥ धम्मं सुक्कं च दुवे नवि झायति० ॥ १५८८ ॥ अट्टं रोद्दं च दुवे झायइ० ॥१५८९॥ धम्मं सुक्कं च दुवे ॥ १५९० ॥ अट्टं रोद्दं च दुवे धम्मं सुक्कं च दुवे नवि० ॥ १५९१ ॥ झायइ० ॥१५९२॥ अतरन्तो तु निसण्णो करेज्ज० ॥ १५९३ ॥ गाथाद्वादशकं तु भावेतव्वं। तत्थ सरीरमुत्थितं भावोपि धर्मशुक्लध्यायित्वादुत्थित एव, एस उसिउस्सितो पढमो गमो १ द्वितीयस्तु केवलमस्य शरीरद्रव्यमुच्छ्रितं भावस्तु ध्यानचतुष्टयवियुतः अर्थादापन्नं तत्प्रायोग्यलेश्यायुक्तः २ तृतीयस्तु केवलमस्य कायोत्सर्गकृत्वात् शरीरमुच्छ्रितं भावस्तु निषण्णः आर्तरौद्रं च ध्यायतीति ३ अण्णे ||२४९||

*** अत्र कायोत्सर्गस्य नव-भेदानां वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक [सू.] + ||गाथा||

दीप अनुक्रम [३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययनं

||२५०||

तिण्णि गिलाणथेरादीणं अगणी वा वासं वा महिया वा महावातो वा सागारितं वा मसगा वा अणधियासतो वा असमत्थो होज्जा ताहे उवविट्ठोवि करेति, तं पुण णिवण्णो करेति, तं किल नियमा असमत्थत्तणेणं जावतिओ उड्डितओ सक्केति कातुं तावतिए तथा करेति, सेसे उवविट्ठो करेति, जत्तिए सक्केति उवेट्ठो कातुं तेत्तिकं करति, सेसे असमत्थो संविट्ठो करेति, एवं विभासेज्जा । तत्थ पढमो सरीरेग निसण्णो भावस्तु धर्मशुक्लध्यायीति, द्वितीयस्तु यथाठितो, एवं तृतीयः, जदि णिसण्णो ण तरिति ताहे असहू णिवण्णोवि करेज्ज काउस्सग्गं, णिवण्णस्सवि जहा उत्थियस्स तिण्णि गमा इति । एवं णामणिप्फण्णो किल गतो । इदाणिं सुत्तालावगनिप्फण्णस्स अवसरः इत्यादिचर्चः पूर्ववत् । एत्थ पुण इमं सुत्तं-'करेमि भंते सामाइयं वोसिरामित्ति, एतस्स वक्खाणं जथा सामाइए ।। आह-वेलं वेलं करेमि भंते! सामाइयंति एत्थ पुणरुत्तदोसो न?, उच्चते, यथा वैद्यः विषघातादिनिमित्तं वेलं वेलं ओमंजणादि करेति मंतपरियट्टणादि च, जहा वा भत्तीए णमो णमोत्ति,न य तत्थ पुणरुत्तदोसो, एवं एसोऽवि

१-सूत्र

रागादिविसघातणत्थं संवेगत्थं सामाइयपत्थितो अहंति परिभावणत्थं एवमादिणिमित्तं पुणो पुणो भणतित्ति ण दोसो, महागुण इति । अथ करेमि भंते! इत्याद्युक्त्वा कायोत्सर्गाध्ययनप्रथमसूत्रमिदमारभ्यते-इच्छामि ठाइतुं काउस्सग्गं,इच्छामीत्यास्मानं निर्दिशति, स्थातुं आसितुं, कायोत्सर्गो भणितः, अनेन इच्छापूर्वकं करणं दर्शयति, न तु बलाभियोगादिना इत्यादि भाष्यं ।

२-सूत्र

अथ किमर्थं कायोत्सर्गकरणमित्याह— जो मे देवसिओ अतियारो जाव मिच्छामि दुक्कडंति एतस्स अत्थो जथा पडिक्कमणे, पुणो भणणं अनुसरणाद्यर्थं । तस्स उत्तरीकरणेणं० सुत्तं । तस्स आलोइयणिंदियपडिक्कंतस्स अतियारस्स ||२५०||

३-सूत्र

उत्तरीकरणादिणा पावाणं कम्माणं निग्घातणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं, उत्तरकरणं णाम तस्स पुव्वं आलोयणादि कतं, इमं पुण

कायोत्सर्ग-सूत्र व्याख्या

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+
||गाथा||

दीप
अनुक्रम
[३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययनं ॥२५१॥

कायोत्सर्ग-सूत्र व्याख्या

काउस्सग्गकरणं उत्तरकरणं तस्स, एवंकरणेण पावकम्मनिग्घातणा भवतित्ति एवं भाव्यं, एत्थ गाथा- खंडितविराहिताणं० ॥ १९-९८ ॥ १६०४ ॥ भाविताथा, अवराहे पायच्छित्तं कातव्वमित्याह- पायच्छित्तकरणेणं, काउस्सग्गो य पंचमं पायच्छित्तंति, पायच्छित्तस्स पुण निरुत्तगाथा- पावं छिंदति० ॥ १६०५ ॥ अवराहेणं मलिणत्तणं भवतीति तद्विशुद्धिः कार्येत्याह-विसोधीकरणेणं, दव्वभावविसोधी विभासेज्जा, अवराहो सल्लं भवति तत उद्धरेतव्वमित्याह-विसल्लीकरणेणं, दव्वभावसल्लं (१६०६) पुव्वं भणितं, एवं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, भिण्णं कायोस्सग्गपयोयणमिदमिति केचित्। अट्ठविहंपि कम्मं पावं जेण थोवेऽवि संते णेव्वाणगमणं णत्थि तेण तं अट्ठविहंपि पावं कम्मं णिग्घातेतव्वं अतस्तदर्थं ठामि काउस्सग्गंति, एगट्ठिताणि वा उत्तरकरणपायच्छित्तकरणविसोहीकरणविसल्लीकरणपदाणि, अण्णे पुण भणंति-तस्सालोइतणिंदितस्स जं किंचि अपडिक्कंतं अपरिसोधितं तस्स इदं उत्तरकरणं, अनेनातिचारविशुद्धिर्भवतीति, अहवा एवं सो आलोइयणिंदियदोवि उस्सग्गेण चउत्थेण पायच्छित्तविहाणेणं अप्पाणं सोहेति, अहवा सामाइयचउव्वीसत्थयवंदणपडिक्कमणाणि विसोहीए कातव्वाए मूलं, इमं से उत्तरकरणं, किं पुनस्तद्?, उच्यते, पायच्छित्तकरणं, प्राय इति बाहुल्यास्याख्या, चित्त इति जीवितस्याख्या, प्रायश्चित्तं सोधयतीति प्रायश्चित्तं, प्रशस्तं वा चित्तस्य विशुद्धिकारणमिति वा प्रायश्चित्तं, वा अथवा 'चिती संज्ञाने' प्रायशः वितथमाचरितमर्थमनुस्सरतीति वा प्रायश्चित्तं, तस्स पायच्छित्तस्स करणं, किंनिमित्तं?-विशोधिनिमित्तं, विसोही निसल्लत्तं तंणिमित्तं, उद्धारितसव्वसल्लो० अहवा विसल्लो पावाणं कम्माणं निग्घातणाए पक्कीरति, अट्ठविहस्स कम्मस्स, एतं चेव पावं, 'हन हिंसागत्योः' निः आधिक्य, आधिक्येन घातः निर्घातः अस्यार्थाय, अर्थ्यत इत्यर्थः, पावाणं कम्माणं निग्घावणट्ठाए ठामि काउ- ॥२५१॥

*** अत्र कायोत्सर्ग-सूत्रस्य व्याख्या क्रियते

प्रत सूत्रांक [सू.] + ||गाथा||

दीप अनुक्रम [३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययने सूत्र ॥२५२॥

स्सग्गं, 'ष्ठा गतिनिवृत्तौ' तिष्ठामि-उपगच्छामि कायोत्सर्गं पुव्वं भणितमिति ॥ कथमिति चेत् भण्णति-**अण्णत्थूससितेणं नीससितेण**मित्यादि, अन्यत्र इमाणि कारणाणि व्युदस्य, जाणि कज्जाणि भणति ताणि मोत्तुं कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं वोसिरामीत्यर्थः। तत्थ ऊर्ध्वं स्वासः उच्छ्वासः अधः स्वासः निःस्वासः, **खासितेणं छीएणं जंभाइतेणं उड्डुएणंति** कंठ्यं **वातनिसग्गितेणं** वातनिसग्गतो वाउकाइयं **भमलीए पित्तमुच्छाए** भमली-आकस्मिकी शरीरभ्रमिः मुच्छणा प्रतीतैव **पित्तमुच्छा**-पित्तसंखोभेण जा मुच्छा। **सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं** सुहुमा अंगसंचालो रोमुग्गममादी वीरियसयोगिसद्व्वताए चलणं वा होज्जा, दश्यादश्यं सुहुमं बाह्यं, **सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं** अब्भंतरेहिं **सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं** सुहुमो दिट्ठिसंचालो ण तीरति एगंमि दव्वे दिट्ठिनिवेसो कातुं, उम्मेसादि य होज्जत्ति। किमित्येवमिति चेत् ?, उच्यते—**उस्सासं ण णिरुंभति०** ॥ १९-१०१ ॥ १६०७ ॥ **कासखुत०** ॥ १९-१०२ ॥ १६०८ ॥ **वायणिसग्गुड्डोए०** ॥ १९-१०३ ॥ १६०९ ॥ **वीरिय०** ॥ १९-१०४ ॥ १६१० ॥ **आलोयण०** ॥ १९-१०५ ॥ १६११ ॥ **न कुणइ नि०** ॥ १९-१०६ ॥ १६१२ ॥ एताओ भाणितव्वाओ, जतो एवमेते उस्सासादी अनिरोधक्खमा अत एवमाह, जदि पुण अण्णत्थूससितादि अभणित्ता काउस्सग्गं ठितो उस्सासादीणि करेति तो मा भंगविराहणाओ होज्जत्ति अतो **एवमादिएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ होज्ज मे काउस्सग्गोत्ति**, एवमादिएहिं-एवंप्रकारेहिं अण्णेहिवि, जथा अगणी बोहिभयं वा तिरिया वा मज्जारादी ओछिंदेज्जा पवडेज्जा अण्णो वा सावतमादी पवडेज्जा दीहजातिडक्को वा सतं अण्णे वेति, एवमादिग्गहणं सव्ववाघातज्ञापनार्थं, आगारा-कारणाणि, तेहिं अभग्गो अविराहितो होज्जा मे काउस्सग्गोत्ति। कालावधारणार्थं **जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमोक्कारेणं ण पारेमि ताव**। जावत्ति ॥२५२॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+
||गाथा||

दीप
अनुक्रम
[३७-६२]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

कायोत्सर्गाध्ययनं

॥२८३॥

कायोत्सर्ग-स्वरूपं

जथा सामाइए अरहंता जथा नमोक्कारे भगवंतो जथा पेढियाए पूजावचनमेतत् नमोक्कारो पुव्ववण्णितो, पाराणितं वा पालणंति वा पारगमणंति वा एगट्ठा, तस्स परिमाणे असमत्ते जदि उस्सारेति ण पालितं भवति, तम्हा पुण्णे वत्तव्वं णमो अरिहंताणं, एवं पालितं भवति। एत्थ य जावइयं जस्स परिमाणं अणेगविहं भणितं तावइयं कालं ठातूण णमोक्कारेणं पारेतव्वंति नमोक्कारगहणं, तावच्छब्दः प्रतिनिर्देशे, जाव नमोक्कारं न करेमि तावइयं कालं कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि, कायो पुव्वभणितो तं ठाणेणंति- उद्धट्ठाणादिगं ठाणमभिगिज्झ, कायप्पसरनिरोधेणेत्यर्थः, एवं मोणेणंति वतिपसरणिरुंभणेण झाणेणंति सद्विषयचिन्तनादिमभिगृह्येत्यर्थः वोसिरामित्ति संस्कारादिव्यापाराकरणेन परित्यजामित्ति। इयमत्र भावना-कायं स्थानमौनध्यानाभिग्रहणेण उक्तक्रियाव्यतिरेकेण क्रियान्तराध्यासद्वारेण व्युत्सृजामि,नमस्कारेण पारगमनं यावदूर्ध्वस्थानादिस्थितः निरुद्धवाक्प्रसरः प्रशस्तध्यानानुगतस्तिष्ठामीतियावत्, वोसट्ठे काकंमि य दिट्ठिनिवेसं कातुं अच्छंति तेण निच्चलत्तं भवति, काउस्सग्गस्स ठाणविधी जथा ओहनिज्जुत्तीए निव्वाघाते ठायंता चेव पुव्वं सामायिकं करित्ता सुत्तं अणुपेहंति जावायरिएण वोसिरामित्ति भणितं ताहे इमेवि अतियारमुहपोत्तियापडिलेहणादीयं चिंतेंति, अण्णे भणंति- जाहे आयरिया सामाइयं पगड्डिता ताहे ते तहाठिता चेव अणुप्पेहेंति, पढमं सुत्तं चिंतेंति। अत्राह-एत्थ किंनिमित्तं काउस्सग्गो कीरति?, जेण णिरेज्जस्स णिरवज्जता होति सुहं च एक्कग्गो चिंतेहिति,उक्तं च-काउस्सग्गंमि ठितो नेरजकायो निरुद्धवइपसरो। जाणति सुहुमेगमणो देवासियादिअतियारं॥२२प्र.॥परिजाणेत्तु य तत्तो संमं गुरुजणपयासणेणं तु। सोहेति अप्पगं सो जम्हा य जिणेहिं सो भणितो॥२३प्र.॥सो काउस्सग्गो एत्थ-काउस्सग्गं मोक्खपहदेसितं०॥१५९१॥ काउस्सग्गं मोक्खपहं इति देसितं जिणेहिं ॥२५३॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+
||गाथा||

दीप
अनुक्रम
[३७-६२]

कायोत्सर्गा ध्ययनं

॥२५४॥

जेण णिरवज्जता होति, अहवा मोक्खपहो जैनसासनं तंमि देसितं विधेयत्वेन,मोक्खपहिगेहिं वा जिणेहिं दर्शितं मोक्षजिगमिषूणां कर्तव्यतया, अहवा मोक्खपहो- णाणादीणि तस्स देसियं, देसयतीति देसियं, तं देशयतीत्यर्थः । एवं जाणितूणं ततो धीरा धीः- बुद्धिस्तया राजन्त इति धीराः, देवसियातियारस्स य परिजाणणट्ठं काउस्सग्गं ठंतित्ति॥ एवं काउस्सग्गे ठितेण मुहणन्तियमादि ॥ १५९६ ॥ कातुं जाव एत्थ काउस्सग्गे ठितो ताव अणुप्पेहेतव्वं, सव्वं देवसितं चिंतेत्ता जावइया देवसियातियारा ते सव्वे समाणइत्ता ते दोसे आलोयणाणुलोमे पडिसेवणाणुलोमे य ठवेज्जा, तेसु समत्तेसु ॥ १५९७॥ धम्मसुक्काणि झाएज्जा जाव आय- रिएहिं उस्सारियंति ॥ १६१५ ॥ आयरिया पुण अप्पणोच्चयं देसियं चट्टं दो वारे चिंतेंति ताव इमेहिं एक्कसिं चिंतितो होति, किं कारणं ?, तस्स अहिंडितस्स अप्पा यतियारा सिस्सादीणं हिंडंताणं बहुतरा, दिवसग्गहणं किं निमित्तं ?, दिवसादीयं तित्थं पसत्थो वेति, एवं एताओ तिण्णि गाथाओ दिवसे, एवं पक्खिएवि दिवसो चाउम्मासिएवि दिवसो संवच्छरीएवि दिवसो, तेण दैवसा तिण्णि, एवं ता पदोसे, पच्चूसे रातिया आतियारा, पक्खिया चाउम्मासिया संवत्सरिया णत्थि, एतेण कारणेग दिवसग्ग- हणं पुव्वं, णेव केवलं दुगुणाणुप्पेहा पव्वइताणं वा पयोगतं णातूण अपरिमितेणं कालेण उस्सारेतव्वं, तं च णमो अरिहंताणंति भणित्ता पारेति, पच्छा थुतिं भणति, सा य थुती जेहिं इमं तित्थं इमाए ओसप्पिणीए दोसियं णाणदंसणचरित्तस्स य उवदेसो तेसिं महतीए भत्तीए बहुमाणतो संथवो कातव्वो, एतेण कारणेणं काउस्सग्गाणंतरं चउवीसत्थओ, सो य उवउत्तेहिं पढित्ता गुणवतो पडिवत्तिनिमित्तं सबहुमाणं संवेगसारं अवराधालोयणा कातव्वा, विणयमूलो धम्मोत्तिकातुं वंदितुकामो गुरुं संडासयं पाडिलेहेत्ता उववेट्ठो मुहणंतयं पडिलेहिति, ससीसं कायं पमज्जित्ता परेण विणएण तिकरणविसुद्धं कितिकंमं कातव्वं, तत्थ सुत्तगाथा–

कायोत्सर्ग- ध्ययनं

॥२५४॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+
||गाथा||

दीप
अनुक्रम
[३७-६२]

||२८८|| आलोयण वागरणा पुच्छणा पूयणा य सज्झाये। अवराहे य गुरूणं विणओ मूलं च वंदणयं ॥ १ ॥ पर्युंजित्ता अब्भुत्थाय जधारातिणियाए दोहिं हत्थेहिं रयहरणं गहाय अक्खलियं आलोएति जथा गुरू सुणेंति, ओणतकाओ संजतभासाओ पुव्वरयिये दोसे पागडेति गुरुस्स। तत्थ सुत्तगाथाओ- विणएण विणयमूलं गंतूणं साधु पादमूलंमि। जाणावेज्ज सुविहितो जह अप्पाणं तह परंपि ॥१॥ कतपावोवि मणुस्सो आलोइय णिंदिउं गुरुसगासे। होंति अइरेगलहुओ ओहरियभरोव्व भारवधो ॥२॥ उप्पण्णा उप्पण्णा माया अणुमग्गतो णिहंतव्वा। आलोयणा णिंदणगरहणाहिं ण पुणो य बितियंति ॥ ३ ॥ जादि नत्थि अतियारो ताहे संदिसहत्ति भणिते पडिक्कमहत्ति भाणियव्वं, अह अतियारोत्थि तो पायच्छित्तं पुरिमड्ढादीयं दिंति, तं च तहेव अणुचरितव्वं, मा अणवत्थादीया दोसा भविस्संति। एत्थ सुत्तगाथा-- तस्स य पायच्छित्तं जं मग्गाविदू गुरू उवदिसंति। तं तह अणुचरितव्वं अणवत्थपसंगभीतेणं॥१॥अणवत्थाए उदाहरणं तेलहारएण चेडेणं,कद्दमलित्तएणं तेणएणं पसंगविणिवारणट्ठाए आता उवालभितव्वो जथा ण पुणो अतियरति, एतेण कारणेणं वंदणाणंतरं आलोयणा, आलोइय पुणरवि सामाइयं, ववगतरागदोसमोहो होतूणं पंचेंदियअसंवुडो तच्चित्तो तंमणो जाव तब्भावणाभावितो सुत्ते सुत्ते उवउत्तो अणुसरेज्ञा। एतेण अभिसंबंधेण आलोयणाणंतरं सामाइयं, ततो णाणदंसणचरित्ताणं विसुद्धिणिमित्तं पडिसिद्धाणं करणातियारस्स किच्चाणं अकरणातियारस्स जधोवदेसस्स असद्दहणाअतियारस्स वितहपरूवणातियारस्स य विसोहिनिमित्तं ||२५५||
उवेट्ठपाडिक्कमणेणं पदं पदेण अणुसज्जितव्वं उवउत्तेण, तीतं निंदामि अणागतं पच्चक्खामित्तिकालविभागेण पसत्थेसु ठाणेसु जथा अप्पगो ठाति तहा कातव्वं। तत्थ सुत्तगाथा-एते चेव अणभिगता भावा विवरीततो अभिणिविट्ठो। मिच्छादं-

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+
||गाथा||

दीप
अनुक्रम
[३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययनं सगमिणमो बहुप्पगारं वियाणाहि ॥ १ ॥ एवं णातूणं अविवरीतं पदंपदेणं णेतव्वं, पुणरावत्ती खलिते,ततो वेज्जतिगयपु- क्षामणा
व्वुत्तदिट्ठंतेण विणयमूलो धम्मोत्ति पुव्वुत्तविहिणा वंदणखमावणापुव्वं णिवेदणं च, पडिक्कंतोत्ति आयरियाणं वंदणं कातूणं
सेसगावि खमावेतव्वा । तत्थ सुत्तगाथा—
||२५६|| ■ आयरिय उवज्झाए सीसे साहम्मिए कुल गणे वा । जे मे केइ कसाया सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥
सव्वस्स समणसंघस्स भगवतो अंजलिं करे सीसे । सव्वं खमावइत्ता खमामि सव्वस्स य तुमंपि ॥२॥ एएणा-
भिसंबंधेण वंदणाणंतरं खमावणा,ततो सेसगावि जीवा खमावइतव्वा, एवं ववगतरागदोसमोह इति पुणरवि सामाइकपुव्वगं चरित्त-
विसोधणहेतुं काउस्सग्गे ह्विज्जत्ति । गयदिट्ठंते च चेव जा काइ चरित्तविराधणा कया पडिक्कमणालोयणाहिं ण सुद्धा तीसे
विसोहिणिमित्तं काउस्सग्गोत्ति वा जोगनिग्गहोत्ति वा, एतेण कारणेणं चरित्तातियारविसोधिनिमित्तं सामाइयं कड्ढितूण काउस्स-
ग्गदंडगं च जाव तस्स उत्तरीकरणेणं जाव वोसिरामित्ति । एवं णिरवज्जेणं णिरेजेणं तस्स भत्तीए काउस्सग्गो कातव्वो । केच्चिरं
कालं पमाणेणं ऊसासाणं ?, सिलोगे चत्तारि पादा, पादे पादि ऊसासो । तत्थ गाथा- पादसमा उस्सासा कालपमाणेण
होंति णातव्वा । एतं कालपमाणं उस्सग्गे होति णातव्वं ॥ १९१-३६१६३६ ॥ तत्थेमा परिमाणगाथा- साय सतं
गोसद्धं सायं वेयालियसंज्ञा तत्थ, अत्थेट्ठपडिक्कमणे पढिते पच्छा तिसुवि काउस्सग्गेसु उस्साससतं भवति, तेसिं पढमो ||२५६||
चारित्तकाउस्सग्गो, तत्थ पण्णास उस्सग्गो, उस्सारेत्ता विसुद्धचरित्तदेसयाणं महामुणीणं महाजसाणं महाणाणीणं जेहिं णिव्वाण-
मग्गोवदेसो कतो तेसिं तित्थगराणं अविहतमग्गोवदेसगाणं दंसणसुद्धिनिमित्तं णामुक्कित्तणा कीरति । किंनिमित्तं ?, चरित्तं

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+
||गाथा||

दीप
अनुक्रम
[३७-६२]

सूत्र–'लोगस्स-सूत्र, गाथा: १-७

कायोत्सर्गा व्ययनं

अर्हच्चैत्य-स्तवः

विसोधितं, इदाणिं दंसणविसोधी कातव्वत्ति, एतेणाभिसंबंधेण चउवीसत्थओ, सो पुव्विं भणितो, तस्स विसोहणनिमित्तं काउस्सग्गं करेंतो पराए भत्तीए भणति—

||२५७|| सूत्र 'सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं० वंदणवत्तियाए०' इत्यादि, अस्य व्याख्या-न केवलं चउवीसाए, जेवि सव्वलोए सिद्धादी अरिहंता चेतियाणि य तेसिं चेव प्रतिकृतिलक्षणानि 'चिती संज्ञाने' संज्ञानमुत्पद्यते काष्ठकर्मादिषु प्रतिकृतिं दृष्ट्वा, यथा अरहंतपडिमा एसा इति, अण्णे भणंति-अरहंता तित्थगरा तेसिं चेतियाणि-अरिहंतचेतिताणि, अर्हत्प्रतिमा इत्यर्थः, तेसिं वंदनाप्रत्ययं ठामि काउस्सग्गमिति योगः, तत्र वंद्यत्वात्तेषां वंदनार्थं कायोत्सर्गं करेमि, श्रद्धादिभिर्वर्द्धमानैः सद्गुणसमुत्कीर्त्तनपूर्वकं कायोत्सर्गस्थानेन वंदनं करोमीतियावत् एवं पूज्यत्वात्तेषां पूजनार्थं कायोत्सर्गं करोमि, श्रद्धादिभिर्वर्धमानः सद्गुणसमुत्कीर्तनपूर्वकं कायोत्सर्गस्थानेनैव पूजनं करोमीत्यर्थः, जथा कोइ गंधचुण्णवासमल्लादीहिं समभ्यर्चनं करोतीति। एवं सक्कारवत्तियाए सम्माणवत्तियाएऽवि भावेतव्वं, णवरं सक्कारो जथा वत्थाभरणादीहिं, सक्कारेणं संमं मणणं, केई भणंति- वंदणादयो एगट्ठिता आदरार्थं उच्चारिज्जंतित्ति, वंदणादीणि किमर्थमित्याह- बोधिलाभवत्तियाए बोधिलाभो- संमदंसणादीहिं अविप्पयोगो, सद्धर्मावाप्तिरित्यन्ये, प्रेत्य सद्धर्मावाप्तिर्बोधिलाभ इत्यन्ये तदर्थं, बोधिलाभो किमर्थमित्याह- निरुवसग्गवत्तियाए, निरुवसग्गो- मोक्खो तदत्थं, एत्थ सिद्धाए मेहाए धितीए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि-करेमि काउस्सग्गमिति, तत्थ सद्धा- भक्त्यतिशयः, साभिलाषता इत्यन्ये, संमत्ते तीव्राभिनिवेश इत्यन्ये, तीए वड्ढमाणीए। एवं मेहाए, मेहा-पडुत्वं न पुनः चलः, इतो तद्गुणपरिज्ञानमित्यन्ये,अन्ये पुनः मेधाएत्ति आसातणाविरहितो तच्चे य मग्गे ठितो इति, ठिती मणोसुप्प- ||२५७||

*** अत्र अर्हत्चैत्यस्य व्याख्या क्रियते

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+
||गाथा||

दीप
अनुक्रम
[३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययनं

॥२५८॥

श्रुतस्तवः

णिहाणं, ण दु रागादीहिं आकुलो, धारणा यथोपदेशाविस्सरणं, अन्ये तु धारणाएत्ति अर्हद्गुणाविस्मरणरूपया, नतु तच्छून्यतया इति, अनुप्रेक्षा तद्गुणानामनुचिंतनं, वड्डमाणी वर्द्धमाना, केइ पुग अणुप्पेहाए वड्डमाणीए ण पढंति, अन्ने पुण वण्णंति-श्रद्धार्थं श्रद्धा निमित्तं च ठामि काउस्सग्गं, एवं मेहादिसुवि भावेतव्वं। ठामि काउस्सग्गं इत्यादि पूर्ववत्। पणुवीसउस्सासकाउस्सग्गो, णमोक्कारेणं पारेति,ततो णाणातियारविसुद्धिनिमित्तं सुतणाणंणं मोक्खसाहणाणि साहिज्जंतित्तिकातुं तस्स भगवतो पराए भत्तीए तप्परूवगणमोक्कारपुव्वगं थुतिकित्तणं करेति, तंजथा–

सूत्र

पुक्खरवरदीवद्धे धातयिसंडे य जंबूदीवे य। भरहेरवयविदेहे धम्मादिकरे णमंसामि ॥ १ ॥ इत्यादि, पुष्करवरद्वीपस्य अर्धं पुष्करवरदीवड्ढं तंमि धातकीखंडे य दीवे जंबुद्दीवे य अड्डाइज्जा दीवा समयखेत्तं, तं च माणुसुत्तरेणं णगरमिव सव्वतो पागारपरिक्खित्तं, तत्थ पंच भरहाणि पंच एरवयाणि पंच महाविदेहाणि तेसु सत्तरं चक्कवट्टिविजयशतं तेसु धंमादिकरे णमंसामि, तीर्थमेव धर्मस्तस्यादिकर्तारस्तीर्थकराः, तथाहि-प्रत्येकं स्वस्वतीर्थानां आदिकर्तारस्तीर्थकराः, तत्थ उक्कोसपदेणं सत्तरं तीर्थकरसतं, जहण्णपदेणं वीस तीर्थकरा, एते ताव एगकाले भवंति, अतीताणागता अणंता तित्थकरे णमंसामित्ति ॥१॥ एवं तप्परूवगणमोक्कारो कतो, इदाणिं सुतधम्मस्स भगवतो थुइं भणति--

तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स। सीमाधरस्स वंदे पप्फोडियमोहजालस्स ॥ २ ॥ ॥२५८॥

तमो-विण्णाणमंदता जहा पुढविकायादीणं तिमिरं- विज्ञानाल्पता जथा सेसगाणं, तमतिमिराणं णिमित्तभूतं पडलं तमतिमिरपडलं णाणावरणादिकंमबंधमेव अहवा तमो-अणवबोधो सो चेव तिमिरं तमतिमिरं तस्स कारणं पडलं तमतिमिरपडलं चेव, अहवा

*** अत्र श्रुतस्तवस्य व्याख्या क्रियते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + ||गाथा||

दीप अनुक्रम [३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययनं ||२५९||

श्रुतस्तवः

तमो- अपरिज्ञानहेतुः स एव तिमिरपडलं, अहवा तमो- अपरिज्ञानहेतुः स एव बहलो तिमिरं तस्स पडलं वर्गः समूहः पडलाणि वा, अण्णे पुण भणंति- तमो बद्धं पुट्ठं निधत्तं णाणावरणीयं विकारितं तिमिरं तस्स पटलं-वृंदं पटलानि वा-समानजातीयवृंदानि तमतिमिरपटलानि वा, अण्णे पुण भणंति- तमो अपरिज्ञानं तं चेव बहुतरं तिमिरं तं चेव बहुतरतमं पटलं एवमादि भंगे दंसेज्जा, तं तमतिमिरपटलं ताणि वा जेण विद्धंसिज्जंति तं तमतिमिरपटलविद्धंसणं, तथाहि- ज्ञानावरणीयं ज्ञानावसायेन विद्धंसिज्जतित्ति अतो तस्स । तथा सुरगणनरिंदमहितस्स सुराणं गणा सुरगणा सुरगणाणं णरगणाण य इंदा सुरगणनरिंदा अहवा सुरगणा णरिंदा य सुरगणणरिंदा,एवं भावेज्जा,तेहिं महितस्स-पूजितस्य,नमस्कृतस्येत्यर्थः,तथा सीमा मेरा मर्यादा इत्यनर्थान्तरं, णाणादीणं अविराधणं, सीमं धारयतीति सीमंधरं तस्स, एतेसिं विशेष्यपदं उवरिं भण्णिहिति, केयी पुण भणंति-इमं चेव विशेष्यपदं सीमाधरस्येति सुतणाणस्स,सुतणाणग्गहणं पुण जतो-सुतणाणंमि णेपुण्णे,केवले तदणंतरं । अप्पणो सेसकाणं च, जम्हा तं पविभावग॥१॥न्ति, वंदे वंदणं करेमि । मोहणिज्जं कम्मं सभेदं मोहजालमित्युच्यते तं जम्हा सुतणाणेण पप्फोडिज्जति वत्थे रेणुवत् तस्मादुपचारतः श्रुतज्ञानमेव प्रस्फोटितमोहजालं भण्णति, मोहणिज्जे य विहते ततो एतस्स लाभ इति एवं निर्देश इति, अहवा मोहजालं-मूढविकप्पजालमित्यन्ये कुविकल्पजालमिति वा, नास्ति श्रुतज्ञाने अज्ञानमित्यर्थः, पप्फोडितमोहजालं श्रुतणाणमित्यन्ये ॥ एवंविहस्स सुतणाणस्स वंदणं काउं इदाणिं तस्स चेव गुणोपदर्शनद्वारेणाप्रमादगोचरतां दर्शयन्नाह— ||२५९||

जातीजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स ।
को देवदाणवणरिंदगणच्चितस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमादं ? ॥ २ ॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+
||गाथा||

दीप
अनुक्रम
[३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययनं

॥२६०॥

श्रुतस्तवः

जातीजरामरणसोगपणासणस्सेति भाव्यं, अणेण सव्वदुक्खप्रतिघातित्वमाह,कल्याणं श्रुतज्ञानविदो या ऋद्धयः ऐहिकाः पारलौकिकाश्च तैः पुष्कलं-समधिकं विशालसुखं निर्वाणं आवहति-ढौकयति तदुपदेशकर्तुः कल्लाणपुष्कलविशालसुहावहं, अण्णे भणंति-कल्लाणं पुव्वं भणितं, एतत्कल्याणं पुष्कलमिति-शोभनं, सतीष्वपि ऋद्धिषु तासु यन्न मूर्च्छति तत्फलं पुष्कलं भवति, तं विशालं-सुबहुलं बहुविधं सुहं आवहति तदुवदेशकर्तुः कल्लाणपुष्कलविसालसुहावहं तस्सेवंगुणसुहावहस्स, अण्णे भणंति- कल्लाणं प्रधानं पुष्कलं संपूर्णं, न च तदल्पं, किं तु विशालं-विपुलं, किं तं?,सुहं,तं आवहति-प्रापयति, एवं अणेगे भंगे दरिसेति, अनेन सर्वसुखावहत्वमाह, को सकन्नविण्णाणो पाणी देवदाणवणरिंदगणच्चितस्स गतार्थं, अस्य च गतार्थस्यापि पुनर्भणनं पूर्वोक्ततमतिमिरविद्धंसणादिविसेसणत्थं, संगहणसूयणत्थं, तस्स सुतधम्मस्स एवंविहं सारं—सामर्थ्यं द्रव्यादिज्ञेयपरिज्ञानमित्यन्ये चरणमित्यन्ये उवलभितूण करे पमादं ?, को सकन्नविन्नाणो नरो कुर्यात्प्रमादं?, तदधिगमे तद्भक्तौ तदुपदेशे च एत्थ पमादकरणमखममित्याकूतमिति ॥ यतश्चैवमत एतदाह—

सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमते णंदी सदा संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगणसब्भूअभावच्चिते ।

लोगो जत्थ पतिट्ठितो जगामिणं तेलोक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढतु सासतं विजयतो धम्मोत्तरं वड्ढतु ॥४॥

एवंविधाय एस इति सिद्धोपन्यासः, क्व सिद्धः?, जिणमते वद्धमाणसामिणो तित्थे सेसाणं व तित्थगराणं, अहवा एवंविधो ॥२६०॥
स इति सिद्धो नाम साधनं, यः कुतः ?, जिनमत इतिकृत्वा, सर्वज्ञैरर्थस्य भाषितत्वात् सर्वलब्धिसंपन्नैश्च गणधरैः दृब्धत्वात्सिद्धंनिर्वचनीयमविचाल्यं, श्रुतज्ञानमेवेत्यर्थः, अण्णे पुण भणंति-सिद्धं-प्रतिष्ठितं प्ररूढं सर्वकालिकं नित्यमित्यर्थः जिणमतं, तथाहि-

प्रत सूत्रांक [सू.] + ||गाथा|| दीप अनुक्रम [३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययनं ||२६१||

श्रुतस्तवः

एतं दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ नासी न कयाइ णत्थि न कयाइ न भविस्सइ भुविं च भवइ य भविस्सइ य एवमादि । सिद्धे जिणमते भो इत्यानंश्यस्यामंत्राणि, पयतो प्रयत्नपरः, पुणोवि भत्तिबहुमाणतो णमो इत्याह, अहवा प्रयतो भूत्वा नमस्करोमि, एताओ य णंदीओ संजमे भवंतु, नंदी-समिद्धी, किंभूते संजमे ?- देवणागसुवण्णकिन्नरगणेहिं सद्भूतभावेनार्चिते, तथा लोको छजीवनिकायो लोको लोकयतीति लोकः जत्थ संजमे प्रतिष्ठितो विषयतया संस्थितः तथा जगम्मिणं चराचरं जत्थ पतिट्ठितं सर्ववत्, तथा तेलोक्कमणुयासुरं वा जत्थ पतिट्ठितं, मनुष्याश्चासुराश्च मनुष्यासुरं, तथाहि—पढमंमि सव्वजीवा० ॥ तंमि संजमे नंदी सदा भवतु, एतदप्पभावे नित्याशीर्वादः, एवं संजमे नंदिं आससितूणं सुतधम्मस्स सव्वकालिकं विजयतो वड्ढिं आसंसितो एवमाह ' धम्मो वड्ढतु ' इत्यादि, स एस एवंभूतो सुतधम्मो वड्ढतु वृद्धिं उपगच्छतु शाश्वतं यथा भवति, विजयमासृत्य विविधेहिं अणातापरदावदाणि जणे इत्यर्थः, तथा धर्मोत्तरं सम्मदंसणं तं वड्ढतु, सम्यग्दर्शनस्य च समृद्धिं करोत्वित्यर्थः, अहवा णंदि सदा संजमे भणितगुणो धंमो वड्ढतु सासओ सासयं वा, धंमो- सुतधंमो भणितगुणो, वड्ढतु, वड्ढतु सुद्धिं णेतु, सासओ। जम्हा पंचसुवि महाविदेहसु ण कदाइ वोच्छिज्जति तम्हा सासओ, सासतं वा जथा भवति । एवं स्वयं च विजयतो धर्मोत्तरं वड्ढतु। विजयेनान्यधर्मोत्तरं यथा भवति एवं च वर्द्धतां, धर्मैर्वा गुणैः उत्तरं धर्मोत्तरमिति, अण्णो अण्णभावे वण्णेति तंपि अनया दिशा भाव्यं, संपुण्णं पुण चोद्दसपुव्विमादी वण्णेंति, तस्सेवं वण्णितस्स सुतस्स भगवतो वंदणवत्तियाए जाव वोसिरामित्ति । ||२६१||
काउस्सग्गो पणुवीसउस्सासो णमोक्कारेण पारणं ॥ एवं चरित्तदंसणसुतधम्मअतियारविसोहिकारगा काउस्सग्गा कता । इदाणिं चरित्तदंसणसुतधम्माणं संपुण्णफलं जेहिं पत्तं तेसिं बहुमाणतो पराए भत्तीए मंगलनिमित्तं च भुज्जो थुतिं भण्णति—

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+
||गाथा||

दीप
अनुक्रम
[३७-६२]

सूत्र

कायोत्सर्गाध्ययनं
॥२६२॥

सिद्ध-स्तुतिः

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगताणं परंपरगताणं । लोयग्गमुवगताणं णमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ २ ॥ सूत्रं ॥

सिद्धाः-परिनिष्ठितार्थाः बुद्धा-विण्णाणमता पारगता णाणसुहादीणं पर्यंतं प्राप्ताः परंपरगताः अप्रमत्तस्थानाद्यनुक्रमप्राप्तेः लोयग्गं उडुलोयस्स अग्गं तं लोयग्गं उवगताणं णमो सदा सव्वकालं सव्वसिद्धाणं सव्वेसिंपि सिद्धाणं । तत्थ सिद्धादीणंति अहवा णमो सव्वसिद्धाणंति अतीतद्धाए जत्तिया सिद्धा संपतं च जे सिज्झंति तेसिं णमो, अहवा सदाग्रहणं सिद्धत्तबुद्धत्तादीणं साद्यपर्यवसितत्वख्यापनार्थमिति, अण्णे भणंति- सिद्धाणं-सिद्धत्वं प्राप्तानां, ते य सामन्नेण विज्जासिद्धादीयावि भवंति अतो भण्णति- बुद्धाणं, अवगतसयाऽविपरीततत्त्वानां, एवमवि मा प्रयोजनांतरतः पुणोवि संसारं एहिंतित्ति भण्णति- पारगताणं-संसारस्य प्रयोजनव्रातस्य वा पर्यंतं गताणं, एतेवि पारंपर्येण गता, एगे गया पुणो अणागता पुणो अण्णे, एवं पुण सव्वेवि एगदा अणादिसिद्धा वा, अथवा एगे पडुच्च अण्णे गता अण्णे पडुच्च अण्णे, एवं परंपरगता, तेऽवि लोयग्गमुवगता, ण पुण इह जत्थ वा तत्थ वा ठिता, एवं णमो सदा सव्वसिद्धाणं, सव्वेसिं सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं, अहवा सव्वें साध्यं सिद्धं येषां ते सर्वसिद्धा इति । अण्णे पुण सिद्धाणं बुद्धाणं पारगताणं परंपरगताणं एताणि एगट्ठिताणि भणंति, सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य पारगतत्ति य परंपरगतत्ति वयणाओ इत्याद्यलं विस्तरेणेति ॥ इदाणिं भत्तिबहुमाणतो जस्स भगवतो तित्थे वयं ठिता तस्सवि थुती भंणति - जो देवाणवि देवो० ॥ २ ॥ सूत्रं ॥ य इत्युपदेशवचनं, देवाणवि देवो, देवाधिदेव इत्यर्थः, यं देवा प्रकृतजलयः प्रांजलयः णमंसंतित्ति नमस्कुर्वंति, तमिति निर्देशे,देवदेवमहितं च, महितं-पूजितं, अहवा देवदेवं अधिकं अहवा देवदेवा इंदा तेसिंपि आधिकं तेहिंपि वा महितं देवदेवमहितं, सिरसा वंदे महावीरं सिरसागहणेण तज्जातीयत्वात् मणसा वायाए य वंदे महावीरं- महति- ॥२६२॥

*** अत्र सिद्धस्तवस्य व्याख्या क्रियते

प्रत सूत्रांक [सू.] + ||गाथा||

दीप अनुक्रम [३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययनं

||२६३||

महावीरवद्धमाणसामिं ॥ वर्धमानस्वामिन एव नमस्कारसामर्थ्यदर्शनद्वारेण थुतिं भणति--

एक्कोऽपि णमोक्कारो० ॥ ३ ॥ सूत्रं । ओघतः किर कंठंति, भगवतो पुण अणेगनयभंगआगमगहणं गुरू भणंतित्ति एते तिण्णि सिलोगा भण्णंति, सेसा जहिच्छाए। ततो पुण संसारणित्थारगाणं आयरियाण वंदणं। जथा रण्णो मणूसो आणत्तियाए पेसितो पणामं कातूणं गतो तं कज्जं समाणेत्ता पुणरवि पणामं कातूणं तं आणत्तियं णिवेदेति, एवं इत्थावि गुरूणं वंदित्ता चरित्ते विसोहिं कातूण दंसणे णाणे य मंगलं च कातूणं जे पूजारिहा पुणरवि गुरुं वंदंति, भगवं! कतं पेसणं आयविसोहिकारगन्ति, एतेण कारणेण मंगलाणंतरं भत्तिबहुमाणविणयप्पसमापुच्छणाणिमित्तं वंदणं च करेंति, वंदणं कातूणं उक्कुडुओ आयरियाभिमुहो विणयरइयमत्थगंजलिपुडो जाहे पुव्विं आयरिया थुतिं भणिता पच्छा सो भणति, अण्णहा अविणयो भवति, आयरिया वा किंचि अत्थपदं, पच्छित्तंतरालो य कतो, मा ताव आयरिया कस्सइ अतियारं मेरट्ठवणं च विस्सरितं सारेंति, ताओ य थुतीओ एगसिलोगादिवड्ढंतियाओ पदअक्खरादीहिं वा सरेण वा वड्ढंतेण तिण्णि भणितूणं ततो पादोसियं करेंति। एवं ता साधं। इदाणिं पभाते को विधी?- पढमं सामाइयं कातूणं चरित्तविसोधिनिमित्तं काउस्सग्गो बितिओ चउवीसत्थयं कड्ढितूण दंसणविसोहिकारको ततिओ सुतणाणविसोहिनिमित्तं, तत्थ राइयातियारे चिंतेति, तथा थुतीणं अवसाणाया आरद्ध जाव इमो ततिओ काउस्सग्गोत्ति, पमाणं किं एत्थ?, सुत्तं गोसद्धं सतस्स, पढमे पणुवीसा बितिएवि पणुवीसा, ततिए णत्थि पमाणं। तत्थ आयरिओ अप्पणो अतियारे चिंतेतूण उस्सारेति जेण पुणाढिता सव्वेवि, ततो वंदणगं, ततो आलोयणा ततो पडिक्कमणं ततो पुणरवि वंदणगं खामणं ततो सामाइयाणंतरं काउस्सग्गो, ततो पच्चक्खाणं गुणधारणाणिमित्तं, तत्थ चिंतेंति- कम्हि नियोगे णिउत्ता गुरुहिं तो तारिसं

प्राभातिकादिप्रतिक्रमणानि

||२६३||

*** अत्र प्रात: प्रतिक्रमण-विधि: प्रदर्शयते

आगम (४०)	"आवश्यक"- मूलसूत्र-१ (निर्युक्तिः+चूर्णिः) अध्ययनं [५], मूलं [सूत्र /३७-६२] / [गाथा-], निर्युक्तिः [१२४३-१६५१/१४१९-१५५४], भाष्यं [२२८-२३७]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + ||गाथा||

दीप अनुक्रम [३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययनं ||२६४||

तवं संपडिव्वज्जिस्सामि, साहुणा य किर चिंततव्वं- छम्मासखमणं जाव करेमि ?, ण करेज्जा, एगदिवसेण ऊणगं करेतु जाव पंचमास पंच ३-२-१ अद्धमासो चउत्थं आयंबिलं, एवं एगट्ठाणं एगासणं पुरिमड्ढणिव्वीय पोरुसी णमोक्कारोत्ति, अज्जत्तणगाओ य किर कहुं जोगवड्ढी कातव्वा, एवं वीरियायारो ण विराधितो भवति, अप्पा य णिद्धाडितो भवति, जं समत्थो कातुं तं हिदए करेति, अण्णे भणंति-एवं चिंततव्वं-किं मए पच्चक्खातव्वं ?, जदि आवस्सयमादियाणं जोगाणं सक्केति संधरणं कातुं ता अभत्तट्ठं ववसति, असक्केंतो पुरिमड्ढायंबिलेगट्ठाणं, असक्केंतो निव्वीयं असक्कंतो पोरुसमादिविभासा, अह चउत्थभत्तिओ छट्ठं ववसइ छट्ठभत्तिओ अट्ठमीमिच्चादि विभासा उस्सारेत्ता संथवं कातुं पच्छा वंदित्ता पडिवज्जति, सव्वेहिवि णमोक्कारइत्तेहिं समगं उट्ठेतव्वं, एवं सेसएसुवि पच्चक्खाणिसु, पच्छा तिण्णि थुतीओ अप्पसद्देहिं तहेव भण्णंति जथा घरकोइलियादी सत्ता ण उट्ठेंति, कालं वंदित्ता निवेदिंति। जदि चेतियाणि अत्थि तो वंदन्ति थुतिअवसाणे चेव, पडिलेहणा मुहणंतगादि संदिसह पडिलेहेमि बहुवेला य। एवं च कालं तुलेतूणं पडिक्कमंति जथा ततिया थुती भणिता पडिलेहणवेला य होति। आह—किं निमित्तं विवरीतं पडिक्कमिज्जति जथा सायं गतं तथा पदेत्ति पडिकमिज्जतु ?, उच्यते,कोइ साहू णिद्दाइमो होज्जा तो णिद्दाभिभूतो ण तरति चिंतेतुं, अवियअंधकारे वंदेताणं आवडणादयो दोसा, असंखडं च तुमं ममं उवरिं पडसि, मंदधम्मा य कितिकंमं लोवेंति, एवमादि, जाव पुण तिण्णि काउस्सग्गा कीरंति ताव पभायं होति,एतेण कारणेण विवरीतं कीरति। एवं ता देवसिए भणितं। पक्खिए इमा विधी-देवसियं जाहे पडिक्कंता णिवट्टगपडिकमणेणं ताहे गुरू निविसंति,ताहे वंदित्ता भणंति-इच्छामि खमासमणो ! पक्खियं खामणयं, एवं जहण्णेणं तिण्णि उक्कोसेणं सव्वे, पच्छा गुरू उट्ठेत्तणं अहारायणियाए खामिति, इतरेवि जथाराइणियाए खामंति, सव्वेवि

प्राभातिकादिप्रतिक्रमणानि

||२६४||

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+
||गाथा||

दीप
अनुक्रम
[३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययनं

||२६६||

सूत्र

क्षामणा-विधिः

भणंति इमं-देवसियं पडिकंतं पक्खियं पडिकमावेह,ताहे पक्खियं पडिकमणंसि कड्डिज्जति, कड्डित्ता मूलगुणउत्तरगुणेहिं जं खंडितं जं विराहितं तस्स पच्छित्तानिमित्तं तिण्णि उस्साससताणि काउस्सग्गो कीरति, पारिते उज्जोयकरन्ति, ओवविट्ठा मुहणंतगं पडिलेहेत्ता वंदंति, पच्छा पक्खियं विणयाइयारं खामेंति बितिए, जधा राया जाणमवि पूसमाणएणं एवं इमेवि सीसा कालगुणसंथवं करेंति । पियं च जं भे हट्ठाणं०सव्वं सोभणो कालो गतो अण्णोवि एवं चेव उवाट्ठितो, गुरूवि भणंति-साधूहिं समं, ततिए खमावितावसूत्र घोधिताणं चेइयवंदणं च साहुवंदणं च निवेदेंति, इच्छामि खमासमणो! पुव्विं चेतियातिं वंदित्ता इत्यादि कंठं, णवरं समाणा-वुड्ढवासी वसमाणा--णवविगप्पविहारी, आयरिओ भणति-अहंपि वंदामि । चउत्थे अप्पगं गुरुसु णिवेदेंति, तत्थ जो अविणओ कतो तं खमावेंति--इच्छामि खमासमणो! तुज्झं संतियं अहा-कप्पं०, आयरिओ भणति--आयरियसंतियं, अहवा गच्छसंतियंति, पंचमे भणंति--जं विणएह तं इच्छामि सव्वं, इच्छामि खमासमणो! कताइं च मे कितिकंमाइं जाव तुब्भण्हं तवतेयसिरीए इमाओ चाउरंतसंसारकंताराओ साहत्थं णित्थरिस्सामोत्तिकट्टु सिरसा मणसा मत्थएणवंदामोत्तिकट्टु, गुरू आह--आयरिया णित्थारगा, एवं सेसाणवि सव्वेसिं साहूणं खामणवंदणगं पढमगं, जाहे अतिवियालो वाघातो वा ताहे सत्तण्हं पंचण्हं तिण्हं वा । पच्छा देवसियं पडिकमंति । पडिकंताणं गुरूसु वंदिएसु वड्ढमाणिगाओ तिण्णि थुतीओ आयरिया भणंति, इमे य अंजलिमउलियहत्थया एक्केकाए समत्ताए णमोकारं करेंति, पच्छा सेसगावि भणन्ति । तद्दिवसं ण सुत्तपोरुसी णवि य अत्थपोरुसी, थुतीओ भण्णंति जीसे जत्तियाओ । एवं चेव चातुम्मासिएवि, णवरं इमो विसेसो-चाउम्मासियकाउस्सग्गो पंच सताणि उस्सासाणं, संवत्सरिए च अट्ठसहस्सं उस्सासाणं, एस विसेसो, चाउम्मासियसंवच्छरिएसु सव्वेहिं मूलउत्तरगुणाण ||२६५||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+
||गाथा||

दीप
अनुक्रम
[३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययनं

॥२६६॥

आलोएतव्वं, ताहे पडिक्कमिज्जति, चाउम्मासिए एगो उवसग्गदेवताए काउस्सग्गो कीरति, अब्भाहओ पभाते आवासए कते चातुम्मासियसंवत्सरिएसु पंचकल्लाणगं गेण्हंति, पुव्वगहिता अभिग्गहा णिवेदेतव्वा, जदि ण संमं अणुपालिता तो कूजितकक्कराइतस्स काउस्सग्गो कीरति, पुणरवि अण्णे गेण्हितव्वा, णिरभिग्गहेणं किर ण वट्टति अच्छितुं, संवच्छरिए य आवासए कते पज्जोसवणाकप्पो कड्डिज्जति, पुव्विं चेव अणागतं पंचरत्तं सव्वसाधूणं सुणिंताणं कड्डिज्जति कहिज्जति यत्ति॥ एते ताव वेलाणियमेण भणिता काउस्सग्गा, इमे अणियता, तत्थ दारगाथा--भत्ते पाणे० ॥२३४॥ गमणं गामादिसु आगमणं ततो चेव, भत्तस्स जत्थ वच्चति जदि ण ताव देसकालो ताहे पडिक्कमित्ता अच्छति, ततो पडियागतो पुणोवि पडिक्कमति, एवं पाणस्सवि, सयणं संथारओ वसही वा, आसणगं पीढगादि, एतेसिं मग्गतो गतो एतं पाडिक्खेज्ज, अरहंतघरं गतो साधूणं च वसहिं गतो, अट्ठमिचउद्दसीसु अरहंता साधुणो य वंदेतव्वा, उच्चारविओसग्गे पासवणवियोसग्गे दोसुवि जदिवि हत्थमेत्तं गंतूणं वोसिरति तोवि पडिक्कमति, अह मत्तए ताहे जो विगिंचति सो पडिक्कमति, सेसएसु जदि हत्थसतं नियत्तणस्स बाहिं वा तो पडिक्कमति, अह अंतो ण पडिक्कमति, एतेसु पणुवीसं उस्सासा, गमणागमणेत्ति गतं॥ विहारेत्ति असज्झाए अण्णत्थ सज्झायणिमित्तं गतस्स पणुवीस उस्सासा॥ इदाणिं सुत्तेत्ति, उद्देससमुद्देसे सत्तावीसं अणुण्णवणियाए, सुत्ते उद्दिट्ठे जो काउस्सग्गो समुद्दिट्ठे अणुण्णवणियाए, तेसु सत्तावीसं उस्सासा अच्छितूणं सयं चेव उस्सारति जदि असढो, सढस्स आयरिआ उस्सारेंति, जाव आयरिओ न उस्सारेति ताव सुत्तं झायति, आयंबिलविसज्जणे विगयविसज्जणे य सत्तावीसं. उवस्सयदेवयाए य सत्तावीसं, कालग्गहणे पट्ठवणे य अणेसणाए पडिक्कमणे अट्ठ उस्सासा, आदिग्गहणा कज्जणिमित्तं गच्छंतो अवक्खलितो अट्ठ उस्सासे काउस्सग्गो कातव्वो, ताहे गमति, जदि

कायोत्सर्गः

॥२६६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.] + ||गाथा||

दीप अनुक्रम [३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययनं ||२६७||

बितियंपि तो सोलस उस्सासा, ततियं जदि अवसउणो तो अच्छति अण्णं सोभणं सउणं पडिच्छंतो, सुतक्खंधपरियट्टणे पणुवीसं उस्सासा, अण्णे भणंति-कालगेण्हणे पट्ठवणे य पंच उस्सासा, अणेसणाए कालपडिकमणे सुतक्खंधपरियट्टणे य एतेसु अट्ठ, सुत्तत्ति गत्तं ॥ सुमिणे पाणवहे मुसावादे अदत्ते परिग्गहे सतं उस्सासाणं, मेहुणे दिट्ठीविप्परियासियाए सतं, इत्थीए सह अट्ठसयं, रात्रिग्रहणं दिवासोतव्वणिवारणत्थं, णावत्ति णावउत्तिण्णो जदिवि ण संघट्टेति तथाविरियावहियाए पणुवीसं उस्सासा, नईं उत्तिण्णा तत्थवि पणुवीसं, चला वा संडेवो वा तत्थवि पणुवीसंति, दारं ॥ इदाणिं असढत्ति, एते सव्वेवि नियया अ अणियता य काउस्सग्गा निकूडं कातव्वा । विसेसतो आवासगवेलाए पडिमाट्ठाणेसु य, तत्थ गाथा–जो खलु तीसतिवरिसो० ॥२३५भा०। तीसतिगस्स उदक्को बालस्स, सत्तरिकस्स परिहाणी, जो तीसतिओ सत्तरिएण समं ठाती समं च उस्सारेति सो जथा कूडवाही बइल्ले मरालो, जति मरालो विसमे अद्धाणसीसके समिलं पच्छतो विलंघति पच्छा हंमति तस्स दो दोसा-हम्मति वहाविज्जति य, दोवि भरा उवरिं होंति, एवं इमोवि अप्पणो दो भरे उवरिं करेति, मायानिप्फण्णं तं च कायकिलेसं, तम्हा वीरियं ण णिगूहेतव्वं, निकूडं कातव्वो सविसेसो सरिसगातो, ऊणगे का पुच्छा?, एवं तवोकंममादीवि वयाणुरूवं तरुणेण थेराओ सविसेसं बलाणुरूवं।ति, कोइ तरुणो असमत्थो थेरो समत्थो तेणवि विरीयं ण निगूहेतव्वं, थाणुरिव अचलत्तणं, उड्ढंति कायो य झाणं च गहितं, अव्वाबाहंमि जत्थ ण छिज्जति अप्पणो परस्स वा जहिं वा बाहा ण भवति तत्थ ठाइतव्वं, सढं पुण एवं भवति-पयलायति० ॥ १६४० ॥ काउस्सग्गकरणवेलाए मायाए पयलायति, आलावमादिं वा पुच्छति, कंटकमादि वा उद्धरति, उच्चारपासवणवोसिरओ वा गच्छति, धम्मकहं वा करेति, मायाए गेलण्णं वा दरिसेति, एवमादीहिं कूडं हवति एयंति । इदाणिं विहित्ति, काए विहीए काउस्सग्गो

कायोत्सर्गः ||२६७||

प्रत सूत्रांक [सू.] + ||गाथा||

दीप अनुक्रम [३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययनं ||२६८||

ठावितव्वं ?, तत्थ—

चउरंगुलमुह० ॥ १६४२ ॥ चउरंगुलं पदांतरं कातव्वं, उज्जुगहत्थे मुहपोत्ती डब्बए रजोहरणं, दोहिवि पासेहिं दोवि हत्था लंबिज्जंति, घणं चोलपट्टं अवलंबित्ता दिट्ठी जुगंतरे, अण्णे भणंति जथा पदे पेच्छति, सव्वगत्तेहिं मुक्केहिं जहा काउस्सग्गं ठाति, वोसट्ठं जं कंडुयणादिपडिकमणं तं ण करेति, वियत्तो सुहे वा दुहे वा सो चियत्तदेहो करेज्जा । दोसत्ति काउस्सग्गं च करेंतो इमे दोसे परिहरेज्जा—

घोडग लता य० ॥ १६४३ ॥ ससिोकंपिय० ॥ १६४४ ॥ घोडओ जहा विसमेण पादेण ठाति आउंटावेत्ता १ लता जहा कंपति २ खंभे वा कुड्डे वा अवत्थंभेत्ता माले वा सीसं अवत्थंभेत्ता ठाति ३ र.बरी जहा सागारीयमग्गं अच्छाएति ४ । वहू जहा ओमत्था ठाति, हेट्ठाहुत्तं मुहं करोतीत्यर्थः ५ णियलियओ जथा पादे मेलेत्ता ठाति, अतिविसाले वा करेति ६ लंबुत्तरं जण्णुगाणि पावेति चोलपट्टगं, उवरिं वा णाभिं चोलं दिंति ७ थणत्ति थणए अच्छाएति चोलपट्टेणं जहा इत्थी सीतादीहिं अच्छति ८ असंतुत इति वा उद्धित्ति बाहिरओद्धी पण्हिताओ मेलेत्ता अग्गपादे बाहिराहुत्ते करेति अब्भिंतरउद्धी अग्गपादे मेलेत्ता पण्हिताओ वित्थारेति ९ संजती पाउएणं ठाति १० रयहरणं जथा खलितं तधा धरेति १० वायसो जथा दिट्ठि भमाडेति ११ छप्पतियाहिं खज्जामित्ति चोलपट्टयं जहा कविट्ठं तहा सागारियठाणे करेउं ठाति, अण्णे भणंति—कविट्ठं जथा गेण्हित्ता ठाति १२ सासं ओकंपेति १३ मूओ जहा हुंएति अच्चंतं एसो एवं गुणुगुणेंतो अणुप्पेहिति १४ छिज्जंते अंगुलि चालेइ १५ आलावए वा गणेइ संठावेइ वा १५ भमुहा वा चालेइ काउस्सग्गे ठिओ छिज्जंते वा भमुहाओ चालेइ १७ वाणरो जहा ओट्ठे लंबावेइ एवं

कायोत्सर्गदोषाः ||२६८||

*** अत्र कायोत्सर्गस्य दोषा: वर्णयते

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+
||गाथा||

दीप
अनुक्रम
[३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययनं

॥२६९॥

उद्दे लंबावेइ काउस्सग्गे ठिओ, वारणो हत्थी, अण्णे भणंति-वाणरो मक्कडो, सो तहा उद्धे चालेत्ता अणुप्पेहेति १८ अहवा वारुणी सुरा जहा बुडबुडेति अणुप्पेहिंतो १९ एवमादी दोसे परिहेज्जा। णाभी करतल कोप्पर उस्सग्गे पारियंमि थुती॥ णाभित्ति णाभीओ हेट्ठा चोलपट्टो कातव्वो, करतलात्ति हेट्ठा लंबंतकरतलेहिं ठतितव्वो कोप्परेहिं धारेतव्वो, उस्सग्गे पारिते णमो अरहंताणन्ति थुती कातव्वात्ति।

कायोत्सर्ग-फलं सुभद्रादीन्युदाहरणानि

कीसत्ति कस्स पुण काउस्सग्गो विराधितो न भवति ?, वासीचंदणकप्पो जो मरणे जीविए य समदरसी। देहे अप्पडिबद्धो काउस्सग्गो हवति सुद्धो ॥१॥ तत्थ पुण इमाओ आलंबणगाथाओ—णत्थि भयं मरणसमं जम्मेण समं न विज्जती दुक्खं। जंमणमरणाबाहं छिंद ममत्तिं सरीरंमि ॥ १ ॥ अण्णं इमं सरीरं अण्णो जीवोत्ति एवकतबुद्धी। दुक्खपरिकेसकरिं छिंद ममत्तिं सरीरातो ॥ १६४९ ॥ जावइया किर दुक्खा संसारे जे मए समणुभूता। एत्तो दुव्विसहतरा णरएसु अणोवमा दुक्खा ॥ १६५० ॥ तम्हा तु णिम्ममेणं मुणिणा उवलद्धदेहसारेणं। काउस्सग्गो कम्मक्खयट्ठाए उ कातव्वो ॥१६५१॥ इदाणिं फलं, एवंगुणसंपण्णं काउस्सग्गं करेमाणस्स एहियं फलं पारत्तियं च, एहिते उदाहरणं सुभद्दा, कहं?, चंपाए जिणदत्तस्स धूता, सा सुभद्दा रूविणी तच्चंनियगसड्ढेण दिट्ठा, अज्झोववण्णो मग्गति, अभिग्गहित-मिच्छादिट्ठित्ति ण लभति, साहुसमीवं गतो, धम्मं पुच्छति, कहिते कवडसावगधम्मं पगहितो, उवगता से सब्भावो, आलोएति- ॥२६९॥
मए दारियानिमित्तं कवडं आरद्धं, अण्णाणि अणुव्वताणि देह, दिण्णाणि, लोगप्पगासो सावगो जातो, कालंतरेणं वरगा पट्ठविता, सम्मदिट्ठित्ति दिण्णा, कतविवाहा विसज्जिता, जुतकं से घरं कतं, तच्चंणिएसु भत्तीं ण करेतित्ति सासुणणंदाओ पदुट्ठाओ, भत्ता-

प्रत सूत्रांक [सू.] + ||गाथा||

दीप अनुक्रम [३७-६२]

कायोत्सर्गाध्ययनं

||२७०||

कायोत्सर्गफलं सुभद्रादीन्युदाहरणानि

रस्स से कहेंति-एसा खमणेहिं समं, सो न सद्दहति, खमगस्स भिक्खट्ठामतिगतस्स कणुयं लग्गं सुभद्दाए जीहाए फेडितं, तिलगो से खमगनिलाडं पासिण्णं संकंतो, उवासियाहिं सावगो सिचि भत्तारस्स से सासूयं दरिसियं, पत्तियं ण, तहावि मन्दमणुयत्तति, सुभद्दा चिंतेति-किं चित्तं जदि अहं गिहत्था छोभगं लहामि?, जं सासणउड्डाहो एतं कट्ठं, काउस्सग्गं ठिता, देवो आगतो, संदिसाहि, अयसं संपमज्जाहित्ति, देवो भणति- एवं, अहं चत्तारिवि णगरदाराणि ठएहामि, भणीहामि य-जा पतिव्वता सा उग्घाडेहित्ति, तुमं चेव उग्घाडिहिसि, सयणपच्चयनिमित्तं चालणिगतमुदगं दरिसेज्जाहि अणिग्गलंतं, आसासेऊण गओ, ठातियाणि, अद्दण्णो जणो, आगासे वाया- मा किलिस्सह, जा सती सयणेण चालणीगतमुदगमगलंतं घेत्तूणऽच्छोडेति (सा उग्घाडेति) कुलवहुवग्गो किलिस्संतो ण सकेति, सुभद्दा सयणमापुच्छति, अविसज्जेंताणं चालणीगतेण उदगेण पाडिहेरे दरिसिते विसज्जिता, ओवासिताओ पवंधिति-एसा किल उग्घाडेहिति, चालणिगतं से उदगं ण गलतित्ति विसण्णाओ, ततो महाजणेण समुस्सुतेण दीसंती गता, अरहंताणं णमोक्कारं काऊणं चालणीओ उदगेण अच्छोडिता दारा, महता कोंचारवं करेमाणा तिन्नि दारा उग्घाडिता, उत्तरं न उग्घाडितं, भणितं- जा मए सरिसा सा एतं उग्घाडेज्जा, तं अज्जवि अच्छति, णगरे जणेण साधुक्कारो कतो, सक्कारिता य । एवं इहलोइयं काउस्सग्गफलं, अण्णे भणंति-वाणारसीए सुभद्दाए काउस्सग्गो कओ । एलकच्छुप्पत्ती भाणितव्वा । रायाओ दिओदएत्ति, उदितोदयस्स रण्णो भज्जालोभा पज्जोयणिवरोहितस्स उवस्सग्गुवसमणं जातं, कहाणगं जथा णमोक्कारे । ||२७०|| सेट्ठिभज्जा यात्ति चंपाए सुदंसणो सेट्ठिपुत्तो, सो सावगो अट्ठमिचाउद्दसीसु चच्चरेसु उवासगपडिमं पडिवज्जति, सो महादेवीए पत्थिज्जमाणो णेच्छति, अण्णदा वोसट्ठकायो देवपडिमाषि तत्थ वेढिओ, चेडीहिं अंतेउरं नीओ, देवीए णिबंधे कते णेच्छति,

प्रत
सूत्रांक
[सू.]
+
||गाथा||

दीप
अनुक्रम
[३७-६२]

प्रत्या-ख्यान-चूर्णिः ॥२७१॥

पदुट्ठाए कोलाहलो कतो, रण्णा वज्झो आणत्तो, णिज्जमाणो भज्जाए से मित्तवतीए सावियाए सुतं, सुव्वाणजक्खस्साराहणाकाउ- स्सग्गं ठिता, सुदंसणस्सवि अट्ठ खंडाणि कीरतुत्ति खंधे असी वाहिओ, सव्वाणजक्खेण पुप्फदामं कतो, मुक्को रण्णा पूजितो, ताहे मित्तवतीए पारितं। तथा सोदासत्ति सोदासो राया जथा णमोक्कारे खग्गत्थं, भण्णति--कोइ विराधितसामण्णो खग्गो समुप्पण्णो वट्टाए मारेति, साधू पधावित्ता, तेण दिट्ठा, आगतो, इतरेवि काउस्सग्गेण ठिता, ण पहवति, पच्छा दट्ठूण उवसंतो। एतदैहिकं फलं, णिज्जरा देवलोगो सुमाणुसत्तं णेव्वाणगमणं, कहं ?, तत्थ गाथाओ-' जह करकयो णिकिंतति दारुं पत्तो पुणोवि वच्चंतो० ॥ २३७ ॥ भा० ॥ काउस्सग्गे जह सुट्ठितस्स० ॥ १६४ ॥ इमा काउस्सग्गे परंपरसुहवेल्ली जथा

संवरेण भवे गुत्तो, गुत्तीए संजमुत्तरो। संजमेण तवो होति, तवातो होति णिज्जरा ॥ १ ॥
णिज्जराएऽसुहं कंमं, खीयते कमसो सदा। आवासगेसु जुत्तस्स, काउस्सग्गे विसेसओ ॥ २ ॥
णया इच्छितव्वा, तत्थ गाथाओ २ पूर्ववत् ॥

प्रत्याख्यानस्य भेदाः

काउस्सग्गणिज्जुत्तीचुण्णी सम्मत्ता ॥

अथ प्रत्याख्यानाध्ययनं—भणितं पंचमज्झयणं, इदाणिं छट्ठं पच्चक्खाणज्झयणं भण्णति, अस्य चायमभिसंबंधः-आव- स्सगं पत्थुतं, तत्थ य जथा सावज्जजोगा विरतिमादीणि पत्तकालमवस्सं कायव्वाणि, एवं पच्चक्खाणमवि पत्तकालमवस्सं कातव्वामिति एवं वक्खिज्जति। पाभातियआवस्सये य अंतिमं काउस्सग्गं कातुं पच्चक्खातव्वं हिदए ठवेत्ता उस्सारेतुं चउवीसत्थय- ॥२७१॥

*** अत्र अध्ययनं -५- 'कायोत्सर्गं' परिसमाप्तं

*** अत्र अध्ययनं -६- 'प्रत्याख्यानं' आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्या-ख्यान चूर्णिः ॥२७२॥

प्रत्याख्या-नस्य भेदाः

वंदणगाणि विधीए कातुं पच्चक्खाणस्स उवट्ठाइज्जति, तं कतिविहं केरिसं वा पच्चक्खाणंति?, भण्णति, अण्णे भणंति-जो पुव्विं वणदिट्ठंतो कतो सो इहंपि कातव्वो, जो परिमद्दणादीहिं ण सुज्झति सो उववासादीहिं अपत्थपरिवज्जणादीहिं सोधिज्जति, एवं इहंपि जो अतियारो आलोयणपडिक्कमणकाउस्सग्गेहिं ण सुज्झति सो तवेण पच्चक्खाणेण य विसोधिज्जति, एतेणाभिसंबंधेणाग-तस्स चत्तारि उ णियोगद्दाराणि उवक्कमादी जहा हेट्ठा वण्णतव्वाणि, तत्थाधिगारो गुणधारणाए, गुणा णाम मूलगुणे, उत्तरगुणा उवरिं भणिहिंतित्ति । णामणिप्फण्णे पच्चक्खाणंति, तत्थ इमाणि दाराणि–

पच्चक्खाणं पच्चक्खाओ० ॥ १६५२ ॥ पच्चक्खाणं पच्चक्खाओ पच्चक्खेयं परिसा कहणविधी फलंति एते छब्भेदा, अहवा पच्चक्खाणंति आदिपदस्स इमे छब्भेदा–णामपच्चक्खाणं ठवणापच्च० दव्वप०अदिच्छप०पडिसेहप०भावपच्चक्खाणन्ति, णामठवणाओ गताओ, दव्वपच्चक्खाणं दव्वणिमित्तं दव्वे वा, दव्वेण वा जधा रयहरणेणं, दव्वेहिं वा दव्वस्स वा दव्वाण वा दव्वरूवो वा जं पच्चक्खाति एवमादि दव्वपच्चक्खाणं । तत्थ रायसुता उदाहरणं–

एगस्स रण्णो धूता अण्णस्स रण्णो दिण्णा, सो य मतो, ताहे पितुणा आणीता, धम्मं करेहित्ति भणिता पासंडीणं दाणं देति, अण्णदा कत्तिको धम्ममासोत्ति मंसं ण खामित्ति पच्चक्खातं, पारणए दंडिएहिं अणेगाणि सत्तसहस्साणि मंसत्थाए उवणीताणि, ताहे भत्तं दिज्जति, सा भुंजति, णाणाविहाणि मंसाणि दिज्जंति, तत्थ साधू अदूरेण वोलेन्ता णिमंतिता, भत्तं गहितं, मंसं ण इच्छंति, सा भणति--किं तुब्भं कत्तिओ ण पूरितो?, तेण भण्णंति-जावज्जीवं अम्हं कत्तिओ, किं वा कहं वा ?, ताहे तेहिं धम्मो कहिओ मंसदोसा य, पच्छा संबुद्धा पव्वइया । एवं ताए पुव्वं दव्वपच्चक्खाणं, पच्छा भावपच्चक्खाणं जातंति । ॥२७२॥

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥२७३॥

प्रत्याख्यानस्य भेदाः ॥२७३॥

अतित्थापच्चक्खाणं जहा अतित्थ बंभणाण एवमादि। पडिसेहपच्चक्खाणं णत्थि मे जं तुमं मग्गसि। भावपच्चक्खाणं दुविहं-सुतपच्चक्खाणं णोसुतपच्चक्खाणं च, जं तं सुतपच्चक्खाणं तं दुविह-पुव्वसुत० णोपुव्वसुतपच्चक्खाणं, पुव्वसुतप० णाम पुव्वं णवमं जं तं, णोपुव्वसुतपच्चक्खाणं तं अणेगविहं, तं० आतुरपच्चक्खाणं महापच्चक्खाणं, इमं पच्चक्खाणज्झयणं जं तं णोसुतपच्चक्खाणं,तं दुविहं-मूलगुणपच्चक्खाणं उत्तरगुणपच्चक्खाणं च, जं तं मूलगुणपच्चक्खाणं तं दुविहं-सव्वमूलगुणपच्चक्खाणं देसमूलगुणपच्चक्खाणं च,सव्वमूल०पंच महव्वता,देसगुणमूलपच्चक्खाणं च पंचं अणुव्वता,उत्तरगुणपच्चक्खाणं दुविहं सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणं देसुत्तरगुणपच्चक्खाणं च, सव्वुत्तरगुणप०दसविहं अणागतमतिक्कंतं०॥१६६१॥एतं दसविहं,देसुत्तरगुणपच्चक्खाणं सत्तविहं तिन्नि गुणव्वताणि चत्तारि सिक्खावताणि, एवं सत्तविहं, अहवा उत्तरगुणपच्चक्खाणं दुविहं- इत्तिरियं आवकहियं, जथा णियंटितं, तं दुक्खिमादिसुवि जं पडिसेवति, सावगाणं च तिन्नि गुणव्वतानि आवकहिताणि, साधूणं केति अभिग्गहविसेसा सावगाणं च तिन्नि गुणव्वतानि आवकहिताणि,साधुणं केति अभिग्गहविसेसा सावगाणं चत्तारि सिक्खावताणि इत्तिरियाणित्ति,तत्थ जं तं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणं तत्थिमा गाथा पाणवह मुसावाए०॥२४३॥भा०॥समणाणं जे मूलगुणा ते सव्वमूलगुणपच्चक्खाणंति भण्णति, तंजथा सव्वाओ पाणातिवाताओ वेरमणं, तिविहं तिविहेणंति जोगत्तियं करणत्तियं च गहितं, तत्थ तिविहंति न करेमि न कारवेमि करंतंपि अण्णं ण समणुजाणामि, तिविहंति मणसा वयसा कायसा। एवं पंचसु महव्वतेसु भणितव्वं।

इदाणिं देसमूलगुणा एते चेव देसओ पच्चक्खाति, तं सावयाणं पंचविहं इमं-थूलाओ पाणातिवायाओ वेरमणं जाव इच्छापरिमाणं। तत्थ ताव सावगधम्मस्स विधिं वोच्छामि, ते पुण सावगा दुविहा-साभिग्गहा य णिरभिग्गहा य० ॥ १६५४ ॥

*** अत्र श्रावक-व्रतस्य भेदा: वर्णयते

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत्याख्यान-चूर्णिः ॥२७४॥

श्रावक-भेदाः

ओहेणंति समासतो । तत्थ साभिग्गहा मूलगुणेसु वा उत्तरगुणेसु वा एगम्मि वा अणेगेसु वा उभयाभिग्गहा वा भवंति, णिरभिग्गहा णाम केवलदंसणमेत्तेण सावगा जथा कण्हसच्चतिसेणियादी । एते चेव दोवि विभज्जमाणा अट्ठविधा भवंति । कहं?—

दुविहं तत्थ जे ते एगं वा अणेगा वा अभिग्गहे अभिगेण्हंति ते दुविहं तिविहेणं दुविहं वा एक्कविहेणं एक्कविहं वा तिविहेणं एकविहं दुविहेण एकविहं वा एक्कविहेण, एते छप्पगारा, उत्तरगुणसावगो सत्तमो, अविरयसम्मद्दिट्ठी अट्ठमो । एते चेव अट्ठविहा विभज्जमाणा बत्तीसतिविहा भवंति, कहं?-जे ते आदिल्ला छप्पगारा ते ताव तीसविहा, कहं?, पणगचतुक्कं० ॥१६५०॥ पंचाणुव्वतिए अभिग्गहे ६ भेदा चतुअणुव्वतिए अभिग्गहि ६ जाव एगंमि ६ फु, एते तीस मूलगुणेसु, खिप्पण्णे एक्कतीसमो उत्तरगुणसावओ अविरतसम्मद्दिट्ठी बत्तीसतिमो । भणिता बत्तीसतिविधा ।

णिस्संकित० ॥ १६५८ ॥ जे ते साभिग्गहा य णिरभिग्गहा य ओहेण विभागेण भणिता, एतेसिं णिस्संकितणिक्कंखित-णिव्वितिगिच्छताअमूढदिट्ठीहिं होतव्वं, एतेसिं तिण्णि आदिल्ला सम्मत्तइयारेसु वण्णिज्जिहिंति, अमूढदिट्ठी सामाइए सुलसा पुव्ववण्णितमुदाहरणं एतेच्चि जे भणिता एते चेव बत्तीसतिविहा विगप्पिज्जमाणा करणतिगजोगतिगकालतिएण विसेसिज्जमाणा अणेगविगप्पसहा भवंतीति वण्णेंति । एतेसिं पुण मूलगुणाणं उत्तरगुणाण य आधारवत्थुं सम्मत्तं, जथा चित्रस्य मूलाधारा कुड्यादिः, कुड्याद्यभावे चित्रकर्माभावः, एवं सम्यक्त्वाभावे मूलगुणउत्तरगुणानामभाव इतिकृत्वेदमुच्यते-समणोवासओ पुव्वामेव मिच्छत्तातो पडिक्कमति, संमत्तं उवसंपज्जति ॥ सूत्रं इत्यादि ॥ ॥२७४॥

तत्थ पाहुडिया—जारिसओ जतिभेदो जह जायति जह व एत्थ दोसगुणा । जयणा जह अतियारा भंगो

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णी ॥२७५॥ | सूत्र

तह भावणा णेया ॥१॥ भंगो वा अतियारो वा एतेसु भवंति। रागद्दोसकसाया परीसहा वेयणा पमाया य। एते अवराहपदा जत्थ विसीदंति दुम्मेहे॥१॥तत्थ समणोवासओ पुव्वामेव मिच्छत्तातो पडिक्कमतीति,से य मिच्छत्तं दव्वओ भावओ,तत्थ दव्वओ आगमणोआगमादी य अणेगविहं,भावतो पुण मिच्छत्तमोहणीयकम्मोदयसमुत्थे तच्चभावासद्दहणासग्गहादिलिंगे असुभे आयपरिणामे पण्णत्ते, तं तिविहं—संसइयं अभिग्गहितं अणभिग्गहितं च,णिमित्तं पुण एतस्स अधोधो असदभिनिवेसो संसओ वा, पडिक्कमणं पुण मिच्छत्तातो संमत्तगमणं, अत एवाह-संमत्तं उवसंपज्जतित्ति,से य सम्मत्ते पसत्थसम्मत्तमोहणीयकम्माणुवेयणोवसमखयसमुत्थे पसमसंवेगादिलिंगे सुभे आयपरिणामे पण्णत्ते,तस्सोवसंपत्ती सहसंमुइयाए परवागरणेणं अण्णोसिं वा सोच्चा, तत्थ सहसंमुतियाए जातीसरणादिणा, तत्थापरो तित्थगरो तस्स वागरणेणं, अण्णेणं अण्णे तित्थगरवतिरित्ता साधुमादी तेसिं भत्तिबहुमाणविणयपज्जुवासणा, सुस्सूसधम्मरागादिणा सोऊण सबुद्धीए सद्धत्थवेयणेण, परस्स दंसणमोहविसुद्धीए एवं भवति। मिच्छत्तातो अपडिक्कंतस्स दोसा-मिच्छत्तपरिणतो जीवो कम्मघणमहाजालं अणुसमयं बंधति, तव्विवागेण जातिजरामरणादिवसणसतसंसारं परियट्टइ, पडिक्कंतस्स पुण गुणा सुदेवत्तसुमाणुसत्तादि मोक्खपज्जवसाणा त्ति। तत्पुनः सम्यक्त्वं यथा कुड्यादिभूमौ सुष्ठु परिकर्मितायां यदि चित्रं क्रियते तदा शोभनं राजते, एवं यदि सम्यक्त्वं सुष्ठु मिथ्यात्वा सुपरिशुद्धं कृत्वा व्रतान्यारोप्यन्ते ततस्तानि व्रतानि विशुद्धिफलानि भवंति अतः सम्यक्त्वं सुपरिसुद्धं कर्तव्यं इत्युपदेशः। ॥२७५॥

तस्स मिच्छत्तातो पडिकंतस्स सम्मत्तरसायणं ओगाढस्स इमा जतणा, जयणा नाम ससत्तीए अकप्पपरिहारो, णो से कप्पति अज्जप्पभिति अण्णओत्थिए वा अण्णओत्थितदेवताणि वा अण्णओत्थितपरिग्गाहिताणि वा चेइयाणि वंदित्तए वा णमंसित्तए

वादशाधाभेदाः

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत्याख्यान चूर्णिः

राजाभियोगाद्याः

वा पुव्विं अणालित्तएणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा कल्लाणं मंगलं देवयं चेतियन्ति पज्जुवासित्तए वा तेसिं असणं वा पाणं वा४ दातुं वा अणुप्पदातुं वा, णण्णत्थ रायाभियोगेणं गणाभियोगेणं बलाभियोगेणं देवयाभियोगेणं गुरुणिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं वा इति । आह-रागद्वेषभाक्त्वं?, उच्यते, सद्भूतार्थतया यो नैव ब्रह्मचारी नाप्यहिंसकः लुब्धः मिथ्यादृष्टिः अणार्जवः तस्य प्रणामः
॥२७६॥ कृतोऽफलः कम्मबंधो य, असब्भावुब्भावणाए अप्पपरणासणं च,तं दट्ठुं अण्णतित्थियाणं इमं सोहणंति मती भवति बला बंभलत्त-गमणं, अहुणोगाढाणं च बला बंभलत्तं भवति, अण्णउत्थिते य वंदमाणस्स बहू दोसा भवंति, संदंसणाओ पेम्मं वहति, पच्छा अभियोगादीहिं मिच्छत्तं णेज्जा, मिच्छादिट्ठीणं सिद्धत्तं सावगोवि अम्हच्चए वंदति, पुव्वावलणेपि एते दोसा, तेसिं च जदि असणादि देति तो लोगं वुग्गाहेति- अम्हं दायव्वं चेव, जेण सावगावि देंति, एवमादी बहू दोसा, अयगोलसमत्ति य कातूण तेण वायणएण सावगस्स सयणपरियणो संबंधं गच्छेज्जा, ततो तेसिं विणासो होज्जा, तं वा दट्ठूणं अण्णे तंमि अण्णउत्थिए बहुमाणं करेज्जा, सो वा तं जणं वुग्गाहेज्जा, आलावो एक्कासिं, बहुसो संलावो, असणादीणि पसिद्धाणि, दाणेवि पक्कअंतसो से पावं कम्मं बज्झति तेण न देति, कोलुणियाए पुण देतिवि, जतणाए, ण वा धम्मोत्ति, अण्णत्थ रायाभिओगणत्ति रायाभियोगे मोत्तूण णो कप्पति, रायाभिओगेण पुण दवाविज्जतिवि, जथा सो कत्तियसेट्ठी—

तत्थ हत्थिणापुरं णयरं जियसत्तू राया कत्तिओ णगरसेट्ठी णेगमट्ठसहस्सपढमासणिओ, एवं वच्चति कालो, तत्थ परिव्वा-
ओ मासंमासेण खमति, सो सव्वो आढाति, सो से पदोसमावण्णो, छिद्दाणि मग्गति, अण्णदा णिमंतेति राया पारणए, सो ॥२७६॥
णेच्छति, राया आउट्टो भणति,जति णवरि कत्तिओ परिवेसेति तो जिमेमि, राया भणति-एवं करेमि, समणूसो राया कत्तियघरं गतो,

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥२७७॥

राजाभियोगाद्याः

भणति कत्तिओ-संदिसह, राया भणति-परिवेसेहि, कत्तिओ भणति-ण वट्टति अम्हं, तुज्झविसयवासी किं काहामि ?, जदि पव्वइओऽहं होंतो तो ण एवं होंतं, पच्छा परिएसिओ, सो परिव्वाओ अंगुलिं चालेति- किह ते ?, पच्छा सो तेण णिव्वेगेण पव्वतिओ णगमहऽट्ठसहस्सपरिवारो मुणिसुव्वयसामिसगासे, बारस अंगाणि अधीतो बारस वासाणि परियाओ, मासिएणं भत्तेणं सो सोधम्मकप्पे सक्को जातो। सो परिव्वायतो तेणाभियोगेण आभिउग्गो एरावणो जातो, पासति सक्कं, पलायितो, गहितो, सक्को विलग्गो, दो सीसाणि कताणि, सक्कोवि दो जातो, एवं जावतियाणि विउव्वति तावतियाणि सक्को विउव्वति, ताहे णासितुमारद्धो, सक्केणाहतो पच्छा ठिओ, एवं रायाभियोगेणं देंतोवि णातिक्कमति, केत्तिया एरिसया होहिंतित्ति जे उ पव्वइस्संति वा, तम्हा ण दातव्वं। गणाभियोगेणं जथा वरुणसारथी, गणथेरातीहिं अब्भत्थेऊण मुसले संगामे णिउत्तो, एवं कोवि सावओ गणाभियोगेणं भत्तं दवावेज्जति, गणो णाम समुदयो। एवं बलाभियोगेण विवसीयंतओ दवाविज्जते भत्तादि। देवताभियोगेणं जथा एगो गिहत्थो सावओ जातो, तेण वाणमंतराणि उज्झिताणि, एगा वाणमंतरी पदोसमावण्णा, तीए तस्स गाविरक्खओ जुत्तो गावीहिं अवहितो, जाहे विउलाणि जाताणि ताहे आधिट्ठा महिला, साहति, तज्जेति-किह ममं उज्झति पावेत्ति, सो सावओ चिंतेति-णवरं ममं धम्मातो विराधणा मा भवतु, ताहे सा भणति-ममं अच्चेहि, सो भणति-पडिमाणं अवसाणे ठाहि, आमं, ठविता, ताहे गावीओ दारओ य आणीतो, एरिसा केत्तिया होहिंति? तम्हा ण देज्जा। एवं दव्वाविज्जंतोऽवि णातिचरति। गुरुनिग्गहेणं गुरुणिग्गहो अरहंतचेतियपवयणसरीरमादीणि तेण, तत्थ उदाहरणं उवासगपुत्तो सावगाधूतं मग्गति, सावओ ण देति, सो सड्डत्तणेणं साधू सेवेति, तस्स भावतो उवगतं, पच्छा साधति, एतेण कारणेणं पुव्वं ढुक्को मि इदाणिं सब्भावतो, सावओ पुच्छति, ॥२७७॥

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः

॥२७८॥

राजाभियोगाद्याः

साधुतेहिं भणितं, पच्छा तेण दिण्णा धूता, सो सावओ जुतयं घरं करेति, अण्णदा तस्स अम्मापितरो भत्तं करेंति भिच्छुगाणं, ताइं भणंति-अज्ज एक्कसिं वच्चाहित्ति, सो गओ, भिच्छुएहिं विज्जाए अभिमंतूण फलं दिण्णं, तेण वाणमंतरीए अभिद्दुओ गिहं गतो, तो सावगधीतं भणति-भिच्छुगाणं भत्तं देमित्ति, सा णेच्छति, दासरूवाणि सयणा य आढत्ता सज्जेतुं, साविया आयरियाणं गंतु कहेति, तेहिं जोगो पडिदिण्णो, सा वाणमंतरी णट्ठा, सो सावओ जाओ, पुच्छति- किह व किं वति ?, कहिते पडिसेहेति। अण्णे भणंति- तीए वलम्मि जेमावितो, पच्छा सुत्थो साभाविओ जाओ भणति-अम्मापिउच्छलेण हं मणा वंचितोत्ति, तं किर फासुगं साधूणं दिण्णं, एरिसिया आयरिया कहिं मग्गितव्वा ?, तम्हा परिहरेज्जा। वित्तीकंतारेणं देज्जा जथा-सोरट्ठओ सड्ढो उज्जेणिं वच्चति, दुक्कालो, रत्तपडेहिं समं वच्चंतस्स पत्थयणं खीणं, तच्चण्णिएहिं भण्णति-अम्ह एत्तं वहाहि तो तुज्झवि दिज्जिहिति, तस्स पोट्टसराणिया जाता,सो तेहिं अणुकंपाए चीवरेहिं वेढिओ,सो णमोक्कारं करेंतो कालगतो, देवो वेमाणिओ जाओ, जा ओहिणा तच्चंणियरूवं पेच्छति, ताहे सभूसणेणं हत्थेणं परिवेसेति, सड्ढाणं ओभावणा, आयरियाणं कहणं च, तेहिं भणितं-जाह अग्गहत्थं घेत्तूण भणह- बुज्झ गुज्झगत्ति, तेहिं जाइतु अग्गहत्थं घेत्तूण भणियं णमोअरिहंताणं तु बुज्झ गुज्झया!, स बुद्धो, वंदित्ता लोगस्स य कहेति जथा ण एत्थ धम्मो, तम्हा परिहरेज्जा ॥

तं पुण संमत्तं मूलं गुणसताणं, तं पंचअइयारविसुद्धं अणुपालेतव्वं, जथा संका० ५, तत्थ-संका ण कातव्वा- किं एतं एवं णवित्ति?, गुरुसगासे पुच्छितव्वं, सा संका दुविहा-देसे सव्वे य, देसे किं जीवो अत्थि? णत्थि? एवमादि, अण्णतरे देसे, सव्वे किं जिणसासणं अत्थि णत्थित्ति?, एवं तित्थगरा, देसे सव्वे वा संका ण कायव्वा, किं कारणं ?, वीतरागा हि सर्वज्ञाः०तमेव सच्चं ॥२७८॥

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्या-ख्यान चूर्णिः ॥२७९॥

संकाद्या अतिचाराः

णीसंकं०, ५ देसे जथा थोवेणं पाणियमग्गेणं तलायं भिज्जति एवं जो संकं करेति सो विणस्सति, जथा वा सो वेज्जापायो, वेज्जाए मासा, तेहिं परिभज्जिता, अंधकारे लेहसालीगता दो पुत्ता पियन्ति, एगो चिंतेति--एताओ मच्छिगाओ, तस्स संकाए वग्गुली वाधी जातो, मतो य, बितीओ चिंतेति-ण मे माया मच्छिया देइत्ति, सो जीवितो, एते दोसा, अहवा अंडगणातं तदाहरणं भाणितव्वं ।

कंखा ण कातव्वा, जथा इमोवि सरक्खधम्मो तच्चीन्नियधम्मो अत्थि एवं साधुधम्मो, तोवि सो चुकति, जथा सो मंडिसुणओ । अहवा राजा आसेणं कुमारामच्चो य अवहितो, अडविं पविट्ठो, छुहापविद्धा वणफलाणि खायंति, पडिणियत्ताणं राया चिंतेति--कोंडगपूवगमादीणि सव्वाणिवि खामि, आगता दोवि जणा, रायाए सूता भणिता-जं लोके पसरति तं रंधेहत्ति, तेहिं रद्धं, उवट्ठवियं च रन्नो, सो राया पेच्छणयदिट्ठंतं करेति, कप्पडिया बलिएहिं धाडिज्जंति, एवं मिट्ठस्समोगासो होहितित्ति कणकुंडमंडगादीणि खइताणि, तेहिं सूलेण मतो । अमच्चेण वमणविरेयणाणि कताणि, सो आभागी भोगाणं जातो, इतरो विणट्ठो ॥ वितिगिच्छाए सावओ णंदीसरदीवगमणं मित्तआपुच्छणं, विज्जाए दाणं, साहणं, मसाणे तिपायंसि कयंसि कज्जं, हेट्ठा इंगाला, खाइरो य सूलो, अट्ठसतं वारे परिजवेत्ता पादो छिज्जति, एवं बितिओ, ततिये पच्छिण्णे आगासे वच्चति । केति भणंति-कट्ठसतं सिक्कपादाणं कातूणं एकेकं पादं एकसिंस वारा परिजवेउं छिज्जति, एवं अट्ठसतेणं वाराहिं अट्ठसतं पादाणं छिंदितव्वं, तेण सा विज्जा गहिता, कालचाउद्दसिं रत्तिं मसाणे साधेति, चोरो य णगरारक्खिएहिं परज्झंतो मसाणमतिगओ, वेढेतूण ठिता पभाते घेप्पिहितित्ति, सो य भमंतो तं विज्जासाधगं पेच्छति, तं पुच्छति सो चोरो, सो भणति-विज्जं साहेमि, केण ते दिण्णा ?, सा- ॥२७९॥

प्रत सूत्रांक [सू.] दीप अनुक्रम [६३-९२]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥२८०॥

सम्यक्त्वाविचाराः

वएणं, चोरेण भणाति--एतं दव्वं गेण्हाहि, एतं विज्जं देहि, सो सड्डो वितिगिच्छिति सिज्झेज्जा णवात्ति तेण दिण्णा, सो चोरो चिन्तेति- समणोवासओ कीडियाएवि पावं णेच्छति, सच्चमेतंति, सो साहेतुमारद्धो, सिद्धा, इतरो सगेवेज्जो गहिओ, तेणं लोगो भेसितो, ताहे मुक्को, सावओ जातो, एवं णिव्वितिकिच्छेण होतव्वं। विदुगुच्छत्तिवि भणाति, ण किर पवयणे दुगुंछा कातव्वा, तत्थ उदाहरणं सड्डो पंथे पच्चंते वसति, तस्स धूताविवाहे किहवि साधुणो आगता, सा पितुणा भणिता-तुमं पुत्ता! पडिलाभेहित्ति, सा मंडिया पसाधिता पडिलाभेति, साहूणं जल्लगंधो तीए अग्घातो, सा हिदए चिन्तेति-अहो अणवज्जो भट्टारएहिं धम्मो भणितो, जदि पुण फासुएणं ण्हाएज्जा तो को दोसो होंतो?, सा तस्स ठाणस्स अणालोतियपडिकंता कालं किच्चा मगधाए राहगिहे गणियाए पोट्टे आयाता, अण्णे भणंति--वाणिगिणीए गब्भगता, तेणं चेव अरतिं जणेति, गब्भपाडणेहिं पाडेतुं मग्गति, जाया समाणी उज्झिता, सा गंधेण तं देसं वासेति, सेणिते य तेणंतेण गच्छति भट्टारगं वंदतो, सो खंधावारो तं गंधं ण सहति रन्ना पुच्छितं-किं एतं?, तेहिं कहितं-दारियाए गंधो, तेण गंधेण दिट्ठा, भणति-एसेव ममं पुच्छत्ति, गतो, वंदित्ता पुच्छति, भट्टारतो पुव्वभवं कहेति, भणोति-कहिं एसा पच्चणुभविहिति सुहं वा दुक्खं वा?, भट्टारतो भणति-एतेणं कालेणं वेदितं, इदाणिं तवच्चेव भज्जा भविस्सति, अग्गमहिसी य बारस संवच्छराणि, अण्णे भणंति-अट्ठमे, जा य तुज्झं रममाणस्स पट्ठी हिंसोलीणं काहिति तं जाणेज्जासि, गतो वंदित्ता। सा य अवगतगंधा एगाए आहीरीए गहिया, जोव्वणत्था जाता, कोमुदिवासरे माताए समं आगता, अभओ सेणिओ य पच्छंणं कोमुदिचारं पेच्छंति, तीसे दारियाए गायसंफासो जातो, सेणिएणं अज्झोववण्णेणं णाममुद्दा दसिताए तीसे बद्धा, अभयस्स कहेति-णाममुद्दा णट्ठा, मग्गाहि, तेण मणूसा बारीए बद्धाए एक्केक्कं णीणिज्जंति, सा ॥२८०॥

प्रत सूत्रांक [सू.] दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्या-ख्यान-चूर्णिः

सम्यक्त्वा-तिचाराः

दारिया दिट्ठा, चोरिति गहिता परिणीता य। अण्णदा वाहिंगइयाहिं रमति, रायणियाए पोत्तं वाहेति, इतरी पोत्तं दिंती य विलग्गा, रण्णा सारियं, मुक्का पव्वतिया। एवंविहं दुगुंछाफलं ॥

॥२८१॥ **परपासंडपसंसाए**—पाडलिपुत्ते चाणक्को, चंदओत्तेण भिच्छुयाणं वित्ती हरिता, ते तस्स धम्मं कहेंति, राया तूसदि, चाणक्कं पलोएति, ण पसंसतित्ति ण देति, तेहिं चाणक्कभज्जा ओलग्गति, तीए सो करणं कारितो, तेहिं कहिते भणति-सुभासितंति, रण्णा तं च अण्णं च दिण्णं, बितियदिवसे चाणक्को रायाणं भणति--कीस दिण्णं?, भणति--तुब्भेहिं पसंसितं, सो भणति-मए पसंसितं अहो सव्वारंभपवत्ता किह लोगवत्तियावणगाणि करेंतित्ति, पच्छा ठितो, कतो एरिसगा?, तम्हा ण कातव्वा॥ संथवे सो चेव सोरट्ठओ सड्ढो। एवं पंचातियारविसुद्धं संमत्तं मूलं गुणसताणं, मज्जादातिक्कमं पुण पकरेंतो अतिसंकिलिट्ठपरिणामेण सव्वत्थ परिच्चयति धम्ममिति। दारं मूलं परिट्ठाणं, आहारो भायणं णिही। दुच्छक्कस्सस्स धम्मस्स, सम्मत्तं परिकित्तियं ॥ १ ॥ एवमिदाणिं सुद्धं संमत्ते वतावि गेण्हेतव्वा, तत्थ विसयसुहपिवासाए अहवा बंधवजणाणुराएण अचयंतो बावीसं परिसहे दुस्सहे सहिउं जदि न करेति विसुद्धं सम्मं अतिदुक्करं तवच्चरणं तो कुज्जा गिहिधम्मं, ण य वंझो होति धम्मस्स।

सूत्र

तत्थ **पढमं थूलगपाणातिवातं समणोवासओ पच्चक्खाति** (सू०) इत्यादि, थूलगपाणा-बेंदियादी, तेसिं मज्जायातिक्कमेण पातो थूलगपाणातिवातो, से य पाणतिवाते दुविहे-संकप्पओ य आरंभओ य, संकप्पओ पच्चक्खाति, णो आरंभतो, अभिसंचिन्त णिरवराही ण मारेतीत्यर्थः, सवराहिंपि जहसत्तिसारंभतोत्तिकातुं, सारंभे वावत्ती णियमा तेण ण पच्चक्खा- ॥२८१॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]

दीप
अनुक्रम
[६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥२८२॥

स्थूल-प्राणातिपात-विरमणं

भित्ति, सुहुमा- एगिंदिया तेसिं वहो अट्ठाए य अणट्ठाए य, अट्ठाए नाम जेण विणा धम्मववहारं लोगववहारं वा ण णित्थरति, सेसगमणट्ठाए, एत्थवि सव्वत्थ जयति। वयपडिवत्तीए पुण वियप्पं एवमाह-पुव्विं ताव अहं भंते ! दंसणविसोहिं पडिवज्जामि, णो खलु मे कप्पति अज्जप्पभिति जावज्जीवाए अण्णउत्थिते वा सेसं जथा पुव्विं जाव वित्तीकंतारेणं वा इति, तदणंतरं च णं थूलगं पाणातिवातं संकप्पओ पच्चक्खामि जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि. तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। अत्थविवरणा सामाइयाणुसारेण णेया, केई पढंति- थूलगप्पाणातिवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं ण करेमि ण कारवेमि मणसा वयसा कायसा, सेसं तह चेव, एवमादि विभासेज्जा, एवं थूलगमुसावातादिसुवि सेसवतेसु भावेतव्वं, जं पुण तिविहं तिविहेण भणितं एयं पडिमापडिवण्णस्सत्ति कम्मि विसए।

एत्थ पाणातिवाते के दोसा ? वेरमणे च के गुणा ?, दोसे णातुं णिवित्ती काहिति, गुणा णातु वेरमणणिच्चलो भविस्सति, एतेणालंबणेण तं वयं सुहं धरेहित्ति। तत्थ दोसे उदाहरणं-एक्को कोंकणओ, तस्स भज्जा मता, पुत्तो से खुड्डओ, अण्णं दारिकं मग्गति, दारिकं दायिकभएणं कओवि ण लभति, कोंकणगेणं णातं-दारका दायिकभएणं ण कोइवि देति, ताहे मारेतुं ववसितो, अद्दलक्खेणं रमितुमारद्धो, कंडं वाहेतूणं पुत्तं पेसेति-जाहि कंडं आणेहित्ति, अण्णं कंडं वाहेतूणं बप्पो बप्पोत्ति वाहरेंतो मारितो ॥ बितियं उदाहरणं—कोंकणओ अवरण्हे छेत्ताणं पच्चुवेक्खणट्ठाए पट्ठिओ, पुत्तो से खुड्डलओ पिट्ठओ पधाविओ, भज्जा ॥२८२॥

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥२८३॥

स्थूल-प्राणातिपात-विरमणं

भणिया-णियत्तेहि दारकं, ताए पमादेणं ण णियत्तितो, कोंकणओ छेत्तादिं गओ, पितरं अमण्णेमाणो वप्पो वप्पोत्ति वाहरति, कोंकणओ पिसाओत्तिकाउं कंडं वाहराति, तेण सो विद्धो मतो, सो सायगिहे आगतो, कहिं !, भणाति-णत्थि, सोगेण मतो, णरगगमणं । एवमादि । इहलोए परलोए० एवमादि, जथा कालसोयरियादीणं, एत्रमादि पाणातिवाते अपच्चक्खाते दोसा । इदाणिं गुणे सत्तपदितो उदाहरणं पुव्वं वण्णितं । बितियं उज्जेणीदारआ मालवेहिं हरिता, सावगदारओ सूतेण कीतो, सो तेण भणिओ-लावए ऊसासेहित्ति, तेण मुक्का, पुणो भणिओ-मारेहित्ति, सो णेच्छति, पच्छा पिट्टेतुमारद्धो, सो कूवाति, रण्णा सुतं, छतो सद्दावेऊण पुच्छिओ-किं एतन्ति?, सो साहाति, रायाएवि भणिओ णेच्छति, पच्छा हत्थिणा भेसावितो, तहवि णेच्छति, पच्छा रन्ना सीसारक्खो ठविओ, ते दारगा मोयिता, थेरा समोसढा, तेसिं अंतिके पव्वातितो । ततियं-पाडलिपुत्तं णगरं, जितसत्तू राया, खेमो से अमच्चो, चउव्विहाए बुद्धीए संपन्नो सावगो वण्णओ, सो पुण रण्णो हितगोत्ति अण्णेसिं दंडभडभोइयाणं अप्पितो, ते तस्स संतिए पुरिसा दाणमाणसंगहिता कातुं रण्णो य अभिमरप्पयोगे णियुंजंति, गहिता य भणंति हम्ममाणा-अम्हे खेमसंतगा तेण चेव णिउत्ता, खेमो गहिओ, भणति-अहं सव्वसत्ताणं खेमंकरो, किमंग पुण रन्नो सरीरगस्सत्ति?, तहवि वज्झो आणत्तो, रण्णो य असोगवणियाए अगाधा पुक्खरिणी संछण्णपत्तभिसमुणाला, सा य मगरगाधेहिं दूरोगाहा, ण य ताणि उप्पलादीणि कोइ ओच्चिणिउं समत्थो, जो य वज्झो आदिस्सदि सो भणाति-एत्तो पउमाणि आणेहित्ति, उत्तिण्णमत्तो य मगरादीहिं खज्जति, आदिट्ठो य खेमो तत्थ, ताहे उट्ठेतुं णमोत्थुणं अरहंताणंति भणितुं जदिऽहं णिरवराधी तो मे देवता साण्णेज्झं देज्जा, सागारं पच्चक्खाणं कातुं ओगाढो, देवतासाणिज्झेणं मगरपिट्ठिट्ठिओ बहूणि पउमाणि गेण्हेउं उत्तिण्णो, रण्णा हरिसितेण खामिओ ॥२८३॥

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान-चूर्णिः ॥२८४॥

स्थूल-प्राणाति-पात-विरमणं

उवगूढो य, पडिवक्खनिग्गहं कातुं भणिओ-किं ते वरं देमि ?, तेण णिरुज्झमाणेणावि पव्वज्जा चरिता, पव्वइतो, एवमादि इहलोगे, परलोगे सुदेवत्तसुमाणुसत्तदीहाउयादिणो उदाहरणं उवरिं भण्णिहिति । जयणाए य वट्टितव्वं-परिसुद्धजलग्गहणं दारु(गोम)गधण्णादियाण य तहेव । गहिताणवि परिभोगो विधीए तसरक्खणट्ठाए ॥१॥ एवं सो सावगो थूलगपाणातिवाततो णियत्तिं कातुं पंचतियारसुद्धमणुपालेति, गुणवेयालो नाम परिमाणं, पच्छा ण समायरियव्वा ॥

के अतियारा ?, पंच-बंधो वहो छविच्छेदो अतिभारो भत्तपाणवोच्छेदो । बंधो दुविहो-दुपदाणं चतुप्पदाणं च, अट्ठाए अणट्ठाए य, अणट्ठाए ण वट्टति, अट्ठाए सावेक्खो णिरवेक्खे य, णिरवेक्खो णिच्चलं धणितं बज्झति, साविक्खो जं संचरपासएण आलीवणगादिसु य जं सकेति मुंचितुं वा दामगंठिणा, एवं चतुप्पदाणं, दुपदाणं दासी वा चोरो वा पुत्तो वा ण पढंतओ तेण सविक्कमाणि तं बंधेतव्वाणि रक्खितव्वाणि य जथा अग्गिभयादिसु ण विणस्संति, तारिसयाणि किर दुप्पयचउप्पयाणि सावएण गेण्हितव्वाणि जाणि अबद्धाणि चेव अच्छंतीति । वहोऽवि तहेव, अणट्ठाए णिरवेक्खो णिद्दयत्तेणं, साविक्खो पुव्वं भीतपरिसेण होतव्वं, जदि ण करेज्जा ताहे मंमं मोत्तूण गलिताए(लताए)दोरेण वा, एवं दो तिन्नि वारे तालेज्जा एवमादि विभासणं । छविच्छेदो अणट्ठाए तहेव णिरवेक्खो हत्थपायकण्णणक्खाणं णिद्दयत्ताए, साविक्खो गंडं वा अरतिं वा छिंदेज्जा दहेज्ज वा, चतुप्पदो कण्णे लंछिज्जति एवमादि विभासा । अतिभारो ण आरोवेतव्वो, पुव्वं ताव एवं जा वहणाए जीविता सा मोत्तव्वा, अह ण होज्जा अण्णा जीविता दुपए जथा सतं उक्खिवेति ओयारेति एवं वाहिज्जति, बइल्लादीणं जथा साभावियाओवि भराओ ऊणओ कीरति, हलसगडेसुवि वेलाए मुयति, आसहत्थीसुवि एस विधी । भत्तपाणवोच्छेदो ण कातव्वो, तिक्खछुहाए वा मरेज्जा, ताहे अण- ॥२८४॥

*** श्रावक-व्रतानां अतिचाराणां वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥२८५॥

द्वितीय-अणुव्रतं

ड्ढाए दोसे परिहरेज्जा, सावेक्खो वा रोगणिमित्तं, वायाए वा भणेज्जा--अज्ज ते ण देमि, संतिणिमित्तं वा उववासे कारावेज्जा, सव्वत्थवि जयणा, जथा थूलगस्स पाणातिवातवेरमणस्स अतियारो ण भवति तथा पयतितव्वं, एवं करेंतेण भोगंतरियादि कतं ण भवति। नवि अतिदारुणडंडो हवेज्ज अणुकंपको सदा य भवे। तह होज्ज अप्पमत्तो जथा तु णातिक्कमे पाणे ॥ १ ॥ एवं तु भावेज्जा-सव्वेसिं साधूणं णमामि जेसिं तु णत्थि तं कज्जं। जत्थ भवे परपीडा एवं च मणेण चिंतेज्जा ॥ २ ॥

सूत्र

गतं पढमं, इदाणिं वितियं थूलातो मुसावायातो वेरमणं। तत्थ थूलगमुसावायस्स समणोवासओ पच्चक्खाति, थूलवत्थुविसओ थूलो, जेण भासिएणं अप्पणो परस्स वा अतीवोवघातो अतिसंकिलेसे वा जायते तं ण वएज्जा, अट्ठाए अणट्ठाए वा, सुहुमो उवहासखेड्डादी, एत्थवि जातितव्वं, भेदा पुण पंच, तंजथा-कण्णालिए० इत्यादि, तत्थ कण्णालियं जथा अकण्णं कण्णं भणति विवरीयं वा इत्यादि, एवं भणेंतेण भोगंतराइयं कतं भवति, पदुट्ठो वा घातं करेज्जा कारवेज्जा मारेज्ज वा १। भोमालिये अणूसरं ऊसरं भणेज्जा वा, ऊसरं वा अणुसरं,एवं अप्पसासं बहुसासं बहुसासं अप्पसासं, अणाभवंतंपि रागदोसेण आभवंतं भणेज्जा, एत्थवि ते चेव अंतराइयपदोसा विभासितव्वा २। एवं गवालिए अप्पक्खीरं पसंसेज्जा बहुखीरं वा णिंदेज्जा गुणदोसविवज्जओ वा, एत्थवि ते चेव दोसा ३। कूडं सक्खेज्जं करेज्ज, रागेण दोसेण वा लंचेण वा करेज्जा, एत्थवि ते चेव दोसा ४। निक्खेवं अवहरति मुसावादेणं, थोवं वा ठवितं भणति, एवमादि, एत्थवि ते चेव दोसा ५। तत्थ मुसावादे पुरोहितो उदाहरणं जथा णमोक्कारे, ण भणेज्जा, परलोए दुग्गंधमुहादी विभासेज्जा। गुणे उदाहरणं जथा कोंकणओ सावओ, मणूसेणं भणितं घोडए णासन्ते- ॥२८५॥

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥२८६॥

द्वितीयमणुव्रतं

आहणाहित्ति, तेण आहओ, मओ, गहितो, धारणिं णीओ, पुच्छिओ-को ते सक्खी ?, घोडगसामिएण भणितं-तस्स चेव पुत्तो सक्खी, तेण दारएण भणितं-सच्चमेतंति तुट्ठा दंडो य से मुक्को। परलोए सच्चवयणेण जथा सच्चभासा सुरा, तथा जयणं करेज्जा, जदिवि गिही अणियत्तो, णिच्चं भयकोहलोहहस्सेसु। णातिपमत्तो तेसुवि ण होज्ज जंकिंचिभणिओ य ॥१॥ किं तु बुद्धीए णिउणं भासेज्जा उभयलोगसुविसुद्धं। सपरोभयाण जं खलु ण सव्वहा पीडजणगं तु ॥ २ ॥ तं च सच्चं पंचतियारविसुद्धं अणुपालेतव्वं, तं० सहसा अब्भक्खाणे इत्यादि, सहसा भणति-तुमं चोरो पारदारिओ रायावगारित्ति, तं च अण्णेण सुतं खलपुरिसेणं, सो वा इतरो वा मारेज्ज वा दंडेज्ज वा एवंगुणोसित्ति, भएणं अप्पाणं वा तं वा सयणं वा विहावेज्जत्ति, तम्हा पुव्वं बुद्धीए पेहेत्ता ततो वक्कमुदाहरे१॥ रहस्सब्भक्खाणं, रहस्सं मन्तेंताणं भणति-एते इमं वा २ रायावगारित्तणं वा मंतेंतीति इत्येवमादि, तन्निमित्तं जा विराहणा २। मोसोवदेसो नाम मोसं उवदिसंति, जहा पवंचमोसभासणे पगारं दंसेतित्ति, मोसोवदेसे उदाहरणं-एगेण चोरेण खत्तं खाणियं णंदियावत्तेहिं, बितियदिवसे तत्थ लोगो मिलितो, चोरकम्मं पसंसति, सोवि तत्थेव अच्छइ, तत्थ एगो परिव्वायगो भणति-किं चोरस्स मुक्खत्तणं पसंसह?, ताहे चोरेण विरहे सो परिव्वाओ पुच्छिओ-कहं मुक्खो?, ताहे भणति-एवं करेंतो वज्झेज्ज मारेज्ज वा, उवाएणं तं कज्जति जेण जीविज्जइत्ति, को उवाओत्ति ?, अहं कहेमि, केराडं दाणमग्गणवाउलं अच्छिन्नं मग्गेज्जाहि, ताहे सो वाउलत्तणेणं पडिवयणं तव ण देहिति ताहे कालुद्देसे दाणग्गहण-वाउलं चेव प्रतिदिवसं भणेज्जासि-देहि तं ममं देहि तं ममंति बहुजणेणं बहुसुयं, जाहे भणति-ण किंचि धरेमि ताहे मए सक्खि उवदिसिज्जाहि, एवं करणे ओसारिओ दवावितो य। सदारमंतभेओ जो अप्पणो भज्जाए सहजाणि रहस्सिपत्तोछियाणि ताणि

॥२८६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥२८७॥

तृतीय-मणुव्रतं

अण्णोसिं पगासेति, ताहे सा लज्जिता अप्पगं वा परं वा मारेज्जा, तत्थ मधुरावाणियओ उदाहरणं, दिसाजत्तं गतो, भज्जा से उब्भामएण समं संसत्ता, अण्णदा सो वाणियओ पडियागतो, कप्पडियवेसेणं अप्पणो घरं आगतो, भज्जाए भणाति-कप्पडिया ! मम वयणं करेहि भोयणं ते सुंदरं दाहामि, जं आणवेसि तं करेमि, सा ओगाहिमगाणि वियडं च पिंडियाए काऊणं कप्पडियस्स खंधे दातुं उब्भामगघरं गंतु भणति- कप्पडिया ! तहिं चेव घरे जाहि रक्खेज्जाहि य, उब्भामएण समं मिलंतीए जं किंचि बोलियं तंपि णेण उग्गाहियं, सा उब्भामएण समं सोतुं पडियागया, कप्पडिओ णिग्गंतु बितियदिवसे घरमागतो, तद्दिवसं रत्तिं पतिणा समं सुवंती तं पुच्छति- कहं घुलिओसि एच्चिरं ?, सो भणति-अत्थनिमित्तं, इमं च मे दिट्ठं, ताहे सव्वं परववदेसेणं कहेति, सा चिंतेति--अहं चेव पडिभिन्ना, तीए अप्पओ मारिओ । कूडलेहकरणे अनृतदोसेण वज्झेज्ज मारेज्ज वा भैरवीसु जातो, अण्णे य एवमादि उदाहरणा । एतं च भावए--कुंदुज्जलभावाणं णमामि णिच्चं च सव्वसंघाणं । सव्वेसिं साहूणं चिंतेयव्वं च हिदएणं ॥ १ ॥ गतं बितियं ॥

सूत्र

इदाणिं ततियं थूलगादत्तादाणातो वेरमणं, तत्थ थूलगादत्तादाणं सेत्यादि, थूलगादत्तादाणं नाम जेण चोरसद्दो होइ तं परिहरितव्वं, चोरबुद्धीए अप्पंपि जणवयसामन्नं पच्चक्खाति खेत्ते वा खले वा पंथे वा ण गेण्हियव्वं, जे पुण लड्डुगादि अणणुन्नवेत्ता गेण्हंति तं सुहुमं, तं पुण अदत्तादाणं दुविहं--सच्चित्तेत्यादि, एत्थवि अट्ठाणट्ठा जहसंभवं योज्जं, दोसगुणे एक्कं चेव उदाहरणं--एगा गोट्ठी, तत्थ एगो सावओ, ते गोट्ठिया एवं ववसिया-एक्कस्स वाणियगस्स रत्तिं घरं मोसामोत्ति, सावओ णेच्छति, इयरे ववसितु एक्कं थेरिं पेच्छंति, आयुधं ओग्गिरिउं भणंति-मा वड्ढी, मारेस्सामोत्ति, तीसे थेरीए आहाभावेणं मोरपिच्छं मूले, ॥२८७॥

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥२८८॥

तृतीयमणुव्रतं

साऽवेक्कमेक्कस्स पाए पडति, मा भट्टारया ! मारेह, तेणं विहाणेणं सव्वे पाएसु मोरपिच्छेणं अंकिता, मुसित्ता गता, पभाते रण्णो कहियं, थेरी भणति--संजाणामि जदि पेच्छामि, किह ?, भणति-अंकियत्ति, तम्मि णगरे जे मणूसा ते सद्दाविता, थेरीए णाया, ताहे गहिता, असुगाए गोट्ठीए मुसं(सियं)ति, सो सावओ गहिओ, थेरी भणति ण पविट्ठो एस, अण्णो य लोगो भणति-एस एरिसकं न करेतित्ति, अण्णे भणंति–ते बत्तीसं गोट्ठिगा, तेहिं कहिअं--ण एस चोरो, मुक्को पूजितो य, इयरे सासिया, सावगस्स गुणो इयरेसिं दोसो इत्यादि । अविय-सावगेण गोट्ठीए चेव ववसियव्वं जदि परिभविज्जति हारति वा एवमातीहिं कारणेहिं ताहे जा कुलपुत्ता तत्थ परिवसति तत्थवि ओहारगं हिंसादिएसु न देंति णवि वा ताणं आयोट्ठासु ठातित्ति, सव्वत्थ जयति,उचितं मोत्तूण कलं दव्वादिकमागतं च उक्करिसं । णिवडियमवि जाणंतो परस्स संतं ण गेण्हिज्जा ॥ १ ॥ तं च पंचातिचारविसुद्धं वेरमणं, ते च तेनाहड इत्यादि, तत्थ तेनाहडं जं चोरा आणेत्ता पच्छण्णं चोराहतं विक्किणंति तं न गेण्हियव्वं, तत्थ चोरपडिच्छगादयो दोसा १। तक्करपयोगो तदेव तस्य कर्म तस्करः तेसिं भत्तं देति पत्थयणं वा अप्पेति वा एवमाइसु पयोगेसु ण वट्टियव्वं २। विरुद्धं ण विदिण्णं गमणागमणं गामाईहिं तं जो अतिकमति अदिण्णादाणातियारे वट्टति ३। कूडतुलाए महल्लीए घेत्तुं थुड्डलियाए पडिदेति, माणेवि पत्थगादिणा खुड्डलएणं देति महल्लएण गेण्हति, पडिमाणेवि विभासा । तप्पडिरूवं कूडरूवे करेइ सुवण्णथूवितए दीणारे करेति,तेल्लस्स रुक्खतेल्लादि घते वसादि सुवण्णस्स जुत्तिसुवण्णादि एवमाति विभासा। एते परिहरंतेण अदिण्णादाणवेरमणमणुपालियं भवति। इणमवि चिंतयव्वं अदिण्णदाणेदिण्णिव्व (दाणाउ णिच्च) विरयाणं। समतिणमतिमुत्ताणं णमो णमो सव्वसाहूणं ॥ १ ॥ ततियं गयं । ॥२८८॥

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान-चूर्णिः ॥२८९॥

तुर्यं स्थूल-मैथुन-विरतिः

सूत्र

इदाणिं चउत्थं, तत्थ समणोवासओ परदारगमणं पच्चक्खाति सदारसंतोसं वा उवसंपज्जति, स्वदारं-स्वकलत्रं परदारं-परकलत्रं च,से य परदारे दुविहे-ओरालिए वेउव्विए य,ओरालिए दुविहे-तेरिक्खे माणुसे य,विउव्विए देवाण वा माणुसाण वा,एतप्पसंगो पुण-संदं-सणेण पीती पीतीओ रई रईओ वीसंभो । वीसंभातो पेम्मं पंचविहं वड्ढए पेम्मं ॥१॥ ति। सदारणिरतेण य होयव्वं । अविरयस्स दोसा-मातरं वा धूतं वा भगिणिं वा गच्छेज्जा, तत्थ उदाहरणं–गिरिणगरे तिण्णि पावासियातो, तातो उज्जेंतगतिया-तो वाणिगिणीओ चोरेहिं णीताओ, पारसकूले विक्कीताओ, तासिं पुत्ता डहरका उज्झितका घरे, तहेव मित्ता जाता, वाणिज्जाए गया पारसकूलं, तातो य गणिताओ कयातो, सदेसकाओत्ति तासिं भाडिं देंति, तेवि संपत्ताए सयाहिं सिज्जाहिं गता, एक्को य सावओ, तेहिं ताओ अणिच्छितो णेच्छंति,महिला अणिच्छि णातुं तुण्हिक्का अच्छति, सो भणति-कओ तुब्भं आणीयाओ ?, ताए कहियं, णाते परिहरिया, तेण सावएण तेसिं कहियं—दुरात्मा ! तुब्भे सयाहिं मायाहिं समं वोच्छा, मोइतातो, अद्धितीए अप्पाणं मारेतुमारद्धा, धम्मो कहिओ, पव्वातिया य १ ॥ बितियं-धूयाए समं वसेज्जा, जहा गुव्विणीए भज्जाए वाणियतो दिसाजत्तं गतो, धूया य जाया, सा य दिण्णा अन्नत्थ णगरे, सो पडिएन्तो तंमि णगरे वासारत्ते ठिओ, धूयाए समं घडिओ, वत्ते वासारत्ते गतो सभवणं, धूयाकहणं, दारियाए पिता आगतोत्ति दारिया आणिज्जतु जाव पितरं पेच्छतित्ति आणीया, तं दट्ठुं विलक्ता णिवत्ता, तीए अप्पा मारितो, इयरो पव्वातितो २ ॥ ततियं-एगा गोट्ठी, एत्थ एगस्स गोट्ठिल्लयस्स माया उब्भामाति, तो सा रत्तिं उब्भा-मतिलस्स पासं जाति, याताए गोट्ठीए दिट्ठा, तहिं रत्तिं ण संमं णाता, तहिं प्राभा अणियम्छिल्लयं पुत्तस्स परिवाडी जाया,पाविओ विस्सामणंतेणं तस्स च्चयाणि पोत्ताणि, विभाए भज्जाए से पोत्ता दिट्ठा, पुट्ठो कतो एते ?, कातु तो किरिया ?, विलक्खो जातो, ॥२८९॥

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत्याख्यान चूर्णिः

तुर्ये स्थूलमैथुनविरतिः

||२९०||

णिव्वेगेणं पव्वतिओ ३ ॥ चउत्थं एगा गणिया, सा पढमं चेव गुव्विणी,पसूया जाहे ताहे मा थोवं भाडिं लंभिस्सामित्ति [सा य जमलपसूया दारकं दारियं च, गणिया य जा अप्पसूतिया सा बहुतरकं मोल्लं लभति, चिंतेति-मा अतिथोवं लभीहामि,] तो एते डिकरुका उज्झामि, पुव्वे नगरद्दारे दारिया अवरे दारतो परिट्ठवियाणि, परिट्ठवेत्ता ताव पडियरिया जाव तम्मि णगरे दो वाणियगा मित्ता, तेसिं भवियव्वताते एक्केण दारतो दिट्ठो एक्केण दारिया, पडियरिया दासी गता, जाहे ताणि महंतीभूयाणि ताहे तेहिं वाणियएहिं परप्परं वरणं कयं, मम दारयस्स दारियं देहि, दिण्णा सा भगिणीभूता, ताहे सो दारतो गोट्ठीए मिलितो, तं दारियं नाढायति,अण्णया सो दारतो ताए गणियाए जा से माता ताए समं पसत्तो, तेणं तस्स दारतो जातो, सावि गणियादारिया छड्डियामित्ति पव्वतिता,ओहिणाणं से समुप्पण्णं । अन्नया भिक्खं हिंडंती गणियाघरं गता,जा आभोगेति ताहे सम्बोहेमित्ति तं दारयं गहाय परियट्टति-भाया पुत्तो दियरो मज्झ तुमं जो तुमं पिया होति । सो मे पिता य भाया पति जणणी सासु सवित्ती मे॥१॥संबुद्धो पव्वतितो ॥ अहवा हत्था वा से छेज्जेज्ज अन्नाओ वा कारणओ करिज्जेज्ज वा,जह सो सोमिलिओ वाणियदारतो, दोण्ह वाणियगाणं घराणि समोसियकाणि, सो सोमिलितो पासादाणं दुक्कयाणं कट्ठं दातुं ओयरति, तस्स सुण्हाए समं वसति, एवं वच्चति कालो, अण्णया तेणं वाणियएणं नायं, अरे घट्टयं कट्ठं, णूणं कट्ठेणं कोइ चडति, संसरंतो पडियरिओ, गहिओ वच्चकूवे छूढो, स तत्थत्थो मीढं खाति मुत्तं च पीवति, अण्णया वच्चघरयं वासारत्ते सोधिज्जति पाणियाणुसारेणं णिद्धमणेणं अप्पणिज्जं घरं गतो , दिट्ठो णास णामेति दुब्भिगंधतो , तेणं संवादितो , ताहे वेज्जेहिं पोराणरूवो कतो समाणो पुणो पुणो तं चेव अविरइयं पत्थेति, एवं तिन्नि वारा, चउत्थियवारा वच्चघरए संकलबद्धो कालेणं मतो । एते दोसा

||२९०||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]

दीप
अनुक्रम
[६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥२९१॥

तुर्ये स्थूलमैथुनविरतिः

इहलोइए, परलोइए य णपुंसादि भवंति। णियत्तस्स गुणा, इहलोए- कच्छे आभीराणि सड्ढाणि, आणंदपुरतो धिज्जातिओ
दरिद्दो भूलिस्सरे उववासे ठितो, वरं मग्गति चाउव्वेज्जस्स भत्तमुल्लं देहि, वाणमंतरेण भण्णाति- कच्छे सावगाणि
मज्जपत्तियाणि ताणं भत्तं करेहि, अक्खयं ते फलं होहिति, दो तिन्नि वारा भणितो गतो कच्छं, दिन्नं ताण भत्तं दक्खिणं च,
भणति-साहह किं तवच्चरणं? जे तुब्भे देवस्स पुज्जाणि, तेहिं भणियं-एगंतरं मेहुणस्स णिवत्ती कता, अण्णया कहावि अम्हं
संजोगो कतो, तं च विवरीयं समाचरितं, जंदिवसं एगस्स तंदिवसं बितियस्स पोसहो, अम्हे घरं गयाणि कुमारगाणि चेव,
धिज्जातितो संबुद्धो। अहवा मुरंडयंतःपुरमहत्तरं, जथा मुरंडेणंतेपुरवालो अपुमंसो दूतो पेसितो, कयकज्जो णियत्तो, पूजितो,
भणितो- अंतेपुरं पविस, भणाति-णवि किंचि अहं पुमं जातो, भणति-कहं आइक्खति ?, वत्थिल्लावड्ढितदेवताए वरो दिण्णो एव-
मादि। इहलोइए पहाणपुरिसत्तणं देवत्ते पहाणातो अच्छरातो मणुयत्ते पहाणाउ मणुस्सितो विउला य पंचलक्खणा भोगा
पियसंपयोगा य आसण्णसिद्धिगमणं चेति। जयणा पुणो- वज्जेज्जा मोहकरं परजुवतीदंसणादि सवियारं। एतेसु
सयण्णजणो चरित्तपाणे विणासेति ॥ १ ॥ तं च पंचातियारसुद्धं अणुपालेयव्वं, सदारसंतुट्ठस्स अंतिल्ला तिण्णि, परदार-
विवज्जगस्स पंचवि सयपरिग्गहियअपरिग्गहियातो, अण्णे भणंति-सदारसंतुट्ठस्स अंतिल्ला तिन्नि सदाराणियत्तस्स पंचवि, तत्थ
सोदामिं वा गच्छंतो जच्चिरं कालं अण्णेण परिग्गहिता जाव तं पूरति ताव परदारत्तणं, तेणं च ण कप्पति। अपरिग्गहिता णाम ॥२९१॥
जा मातादीहिं ण परिग्गहिता, अच्चि कुलटा य सा, अण्णे पुण भणंति-देवपुत्तिया घडदासी वा, एवमादि। सा पुण भाडीए वा
अभाडीए वा गच्छति, जो भाडिए गच्छति तस्स जदि अण्णेणं पढमं भाडी दिन्ना सा ण वट्टति परनियत्तस्स गंतुं, जा पुण

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान-चूर्णिः ॥२९२॥

पञ्चमे परिग्रह-प्रमाणं

अमाडीए गच्छति सा जति अण्णेणं भणति-अज्ज अहं तुमए समं सुविस्सामि, ताए य पडिच्छितं, तस्स ण वट्टति अंतराइयं काउं। अंगं मुक्त्वा सेसमनंगं, क्रीडा उवभोगः, आसकतोसकाओ पडिसेवणं ण वट्टति काउं। परवीवाहकरणं नाम कोति अभिग्गहं गेण्हति- धूया णवि मम वसो तं अणुपालेति, कोति पुण एवं अभिग्गहं अभिगेण्हति-धूयाणवि मम वट्टति, सो तं अणुपालेति, कोति पुण एवं अभिग्गहं गेण्हति-णियछुगाणं मोत्तुं अण्णेसिं न कप्पति, ण वट्टति सावगस्स भणिउं- महंती दारिया दिज्जउ, गोधणे वा वसभो छुब्भउ एवमादि। कामभोगतिव्वाभिणिवेसो णाम अच्चंततिव्वज्झवसायी तच्चित्ते तम्मणेत्ति, ण वट्टति सावगस्स तिव्वेणं अज्झवसाणेणं पडिसेविउं, दिया बंभचारी रातो परिमाणकडेण होतव्वं, दिवसओवि परिमाणं एवमादि विभासा, एवं विभासेज्जा, चिन्तेतेवं च णमो तेसिं जेहिं तिविहमच्चंतं। चत्तं अहम्ममूलं मूलं भवगब्भवासाणं ॥ १ ॥ चउत्थं गतं।

सूत्र

इयाणिं पंचमं, तत्थ अपरिमियपरिग्गहं इत्यादि, से य परिग्गहे दुविहे-सचित्ते अचित्ते य, विभागतो पुण णेगविहो- धणधन्नखेत्तवत्थुरुप्पसुवण्णकुवितदुपदादिभेदेण, तत्थ धणं-भंडं, तं चउविहं-गणिमं धरिमं मेज्जं परिच्छेज्जं, तत्थ गणिमं पूगफलादि धरिमं मंजिष्ठादि मेज्जं लक्खायततेल्लादि पारिच्छेज्जं परीक्ष्य मूलतः परिच्छिज्जते तच्च मणिपद्महीरकादि, धण्णं सालिकोद्दवादि, खेत्तं सेतुं केतुं उभयं च, सेतुं जत्थ सेकजं भवति, केतुं इतरं उभयं सेकजमितरं च, वत्थुं खातं ऊसितं उभयं च, खातं भूमिघरादि, ऊसितं जं उच्छएण कयं, उभयं जं खातं ऊसितं च, रुप्पं सुवण्णं प्रतीतं, उपलक्षणं चेदं एवंजातियाण, कुवियं-घरोवक्खरकणगपारसलोहीदीहकडाहगादिणाणाविहं, दुपदं दासीदासमुगसारिगादि, अपदं वाहणरुक्खादि, चतुप्पदं आसहत्थिगजादि एवमादि, अट्ठा- ॥२९२॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]

दीप
अनुक्रम
[६३-९२]

प्रत्या-
ख्यान-
चूर्णिः

॥२९३॥

पञ्चमे
परिग्रह-
प्रमाणं

णड्डवेयालणेण जहासत्तीए वयं गेण्हति, जावइयस्स परिग्गहस्स आगारो कतो ततोऽविरतो सेसाओ अणंतातो परिग्गहातो विरतो तेण सो विरयाविरतोत्ति भवति । एवं पाणवहादिसुवि विरताविरयविभासा । परिग्गहे असंतुट्ठस्स दोसा संतुट्ठस्स गुणा, तत्थ- उदाहरणं- लुद्धणंदो, कुसीतो उड्डीहिं विक्कियातो, णिमंतणए गमणं, पुत्तेहिं णेच्छियातो, अरक्खिज्जंती भग्गा, लोएण दिट्ठा, रण्णो कहितं, लुद्धणंदेणं, पाया भग्गा, सावतो पूजितो, एवं जथा णमोक्कारे । लोहुदाहरणो बितियं- वाणिगिणी वद्दाविया, रयणाणि विक्किणाति, सड्ढेण भणिया-एच्चितो पडिकतो नत्थि, अन्नस्स णीयाणि, तीए भणियं-जं जोग्गं तं देहि, सो तुच्छं देति, दइओ आगतो पुच्छति, तीए भणियं अमुगत्थ चइयाणि, सो रन्नो मूलं गतो, एरिसे अग्घे वट्टंतगाण एतेसिं मणिरयणाणं एएण एत्तियं दिण्णं, सो विणासितो, सावगेण णेच्छितंति पूइतो एवमादि । जयणा पुण इमा-भावेज्जा संतोसं गहियमादीणि अयाणमाणेण । एवं (च जाणमाणा) गेण्हिस्सामो ण चिंतेज्जा ॥ १ ॥ तं च पंचातियारविसुद्धं । ते य खेत्ते वत्थुपमाणादिसु जं पमाणं गहितं तं ण वतिक्कमियव्वं, अहवा जं पणं गहितं ततो आहितं धारणिओ अप्पेज्जा पडिमुल्ले वा देज्जा, असमत्थो तं धणादि काउं ताहे खेत्तं वा वत्थुं वा देज्जा । एवं पविरलवित्थरो विभासियव्वो, सो य सावगो चिंतेज्जा- जहा मए दव्वप्पमाणं जं गहितं तं अज्जापि न पूरेति, एसो य धारणितो तस्स ठाणे इमं देति, तेन सोपि किल दव्वलेक्खगो चेव इमं देति, तं ममापि किल दव्वलेक्खगे चेव इमं, एवं खेत्तवत्थुप्पमाणातिक्कमणं कुणंतो आतियरति, एवमादिविभासा, ॥२९३॥ सव्वत्थ एसो विभागो उ० स च पुणो सयसहस्से वा कोडीए वा सव्वं गणिज्जमाणं तस्स, एस च एक्को अतियारो, विभागे पदे पदे अतियारो विभासियव्वो, एयाणं मूलप्पमाणे गहिते संववहारं पिवासयाणं कयविक्कयस्स दिवे दिवे परिमाणं करेति जं

च रात्तिं न करेति तस्स पच्चक्खाति, आरंभपरिग्गहदमणवाहणादिएसु पएसु विभासियव्वं, जथाविहिं एत्थ भावणा—जह
जह अप्पो लोभो जध जध अप्पो परिग्गहारंभो। तह तह सुहं पवड्ढति धम्मस्स य होति संसिद्धी ॥ १ ॥
धन्ना परिग्गहं उज्झिऊण मूलमिह सव्वपावाणं। धम्मचरणं पवन्ना मणेण एवं विचिंतेज्जा॥२॥अणुव्वता समत्ता ॥

॥२९ सूत्र अहुणा गुणव्वयाणि, एषामणुव्रतानां भावनाभूतानि त्रीणि- दिशिव्रतं उवभोगव्रतं अणत्थदंडव्वतं, तत्थ दिसासु वतं दिसिव्वतं, तत्थ दिसिं पाणादिवायवेरमणगुणनिमित्तं, सेसाण य विभासा, तं उड्ढं एवाणिय (रेवतिय) नागपव्वयादिसु अहे इंदपदकूवातिसु तिरियं चउदिसिं जोयणपरिमाणेणं जेत्तियं अणुपालेंति तं गेण्हति, ततो परं जे तसथावरा तेसिं दंडो णिक्खित्तो भवतीति, जतो-तत्तायगोलकप्पो पमत्तजीवो णिवारियप्पसरो। सव्वत्थ किं न कुज्जा पापं तक्कारणाणुगतो ? ॥ १ ॥ एते गुणदोसे णाऊण जतियव्वं। एवं-जत्थत्थि सत्तवीला दिसासु अह पेलवं तहिं कज्जं। कुज्जा णाति-पसंगं, सेसासुवि सत्तिओ मतिमं ॥ १ ॥ तस्स य पंचइयारा, उड्ढं जं पमाणं गहितं तत्थ जदा विलग्गो भवति, जइ तस्स उवरि मक्कडे पक्खी वा वत्थं आभरणं वा घेत्तुं वच्चेज्जा एत्थ मे ण कप्पति पयत्तेउं, जाहे पडियं अण्णेण वा आणीयं ताहे कप्पति , एवं पुन अट्ठावते हेमकूडसंमेतसुपतिट्ठओज्जिंताचित्तकूडअंजणगमंदरादिसु पव्वएसु भवेज्जा, एवं अहिवि कूला-दिसु विभासा, तिरियंपि जं परिमाणं तं णातिचरियव्वं, तिविहेणवि करणे बुद्धी ण कायव्वा, का पुण सा खेत्तवुद्धी ?, तेण ॥२९४॥
पुव्वेण अप्पतरं जोयणपरिमाणं कयं अवरेण बहुतरं, सो पुव्वेण गतो जाव तं परिमाणं जाव तत्थ एयं भंडं ण अग्घति परेण अग्घतित्ति ताहे पुव्वादिसिच्चएहिंतो जाणि अब्भहियाणि ताणि अवरदिसाए ओसारेत्ता पुव्वेणं नेतुं गच्छति, एस खेत्तवुद्धी,

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः

सप्तमं भोगोपभोगमानं

सियत्ति वोलीणो होज्जा णियत्तियव्वं । सतिअंतरद्धा णाम सरणं स्मृतिः अन्तर्द्धानं जा तं विस्सरितं पमाणं होति, जति वीसारितं न गंतव्वं, जाए दिसाए सव्वातो वा, अहवा सती णाम लाभतो, ताए दिसाए अंते करेऊण अण्णस्स हत्थे विसज्जेति, सतपथितस्स लाभट्ठं पण्णन्ति ण वट्टति, अ[illegible]णाए गतो जं परेण लद्धं तं ण लएति उरेणं जं तं लएतित्ति । किं च-चिंतेयव्वं च णमो साहूणं जे सदा णिरारंभा । विहरंति विप्पमुक्का गामागरमंडितं वसुहं ॥ १ ॥

॥२९॥ सूत्र

उवभोगपरिभोगव्वयं णाम 'भुज पालनाभ्यवहारयोः' सति उवभोगो पुणो पुणो परिभोगो, वत्थाभरणादीणं पुप्फतंबोलाईण य, एवं विभासा, सो दुविहो-भोयणतो कम्मतो य, भोयणतो सावगेण उस्सग्गेणं सावज्जभोयणं वज्जेयव्वं, असति सचित्तं परिहरितव्वं, असति बहुसावज्जं मज्जमंसपंचुंबरमादि, गुणदोसा विभासितव्वा, सव्वत्थ जयणाए वट्टितव्वं, भोगुवभोगे मोत्तुं जेणऽसमत्थो घुधोऽघुणा तेहिं । अवसेसे वज्जेज्जा बहुसावज्जे य सविसेसं ॥ १ ॥ पुप्फफलेहिं रसेहि य बहुतसपाणेहिं अजतण्हाणेहिं । मज्जेहि य मंसेहि य विरमेज्जा अत्तहियकामो ॥ २ ॥ जत्थत्थि सत्तवीला उवभोगो पेलवो तु तहियं तु । कुज्जा ण्हादिपसंगं सेसेसुवि सत्तितो णिउणं॥३॥ एयस्स अतियारा सचित्ताहारे सचित्तपडिबद्धाहारे अवोलिय० दुवोलिय० तुच्छोसहि०, तत्थ उस्सग्गेण सावतो जत्थ सचित्तासंका भवति तं सचित्तं, तं ण संभुंजति, इयरो मूलकंदबहुबीयाणि अल्लगपुढविकायमादीणि, ण चयंतो परिमियाण अभिग्गहविसेसं पगरेति १-२। तथा अवोलितं ण वट्टति, इसित्ति अवोलितं ३, दुपउलितं सचित्तपडिबद्धं जथा खउरो विहेलओ पक्काणि फलाणि, अचित्तं कडाहं सचित्तातो मिंजातो एवमादि ४ तुच्छोसही ण वट्टति जेण बहुणावि आहारो ण भवति, एस दोसो । अहवा जदा किर अचित्तो ण होज्जा तो भत्तं पच्चक्खातितव्वं, ण चरति ॥२९५॥

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यानचूर्णिः ॥२९६॥

सप्तमं भोगोपभोगमानं.

ताहे तुच्छाओ ओसहीतो परिहरति, जहा मुग्गसिंगातो चणगादिसिंगातो इच्चादि,तत्थ दोसे सिंगरखातो उदाहरणं, खेचरक्ख-
तो मुग्गसिंगाओ खाति, राया णिग्गतो, खायंतं पेच्छति, ततो पडिनियत्तो तहवि खायति, वलयाणं कूडं कयं, रन्ना पोट्टं फला-
वियं कत्तियातो खत्तियातो होज्जा,णवरि फेणो,किंचिवि णत्थि,अहवा केसिंचि केति अतियारा जहासंभवं जोज्जा, अभिग्गहविसेसेण
वा होज्जा। इमं च अन्नं-भोयणतो असणे अणंतकायं अल्लगादि मंसादि,पाणंमि रसगवसमज्जादि,खादिमे उडुम्बरवडपिप्परिपिलक्खु-
मादीसु महुमादिसु सादिमे सत्तितो वयं,जो पुण अभिग्गहविसेसेणं उवभोगपरिभोगविहिपरिमाणं करेति सो उव्वलणियावणविहि-
परिमाणं करेति,एवं दंतवणविहे य फलविहे य अब्भंगणतेल्लविहे य,उव्वलणविहे य एसिं मज्जणजलवत्थवि० विलेवणविही आभरण-
विहे पुप्फविहे धूवविहे,भोयणविहिपरिमाणं करेमाणो भिज्जाविहि परिहीखज्जगविही सूयविही चोप्पडविही माहुरगविही परिजेमणग-
सूत्र विही पाणियविही सागविही एवमादिविहि महुमांसविहीपरिमाणं करेंति, अवसेसे पच्चक्खामित्ति । कम्मे अकम्मो ण तरति
जीविउं ताहे सावज्जाणि परिहरउ बहुसावज्जाणि वा, तत्थ पन्नरस कम्मा ण समातरियव्वा, इंगाले दाहिऊण विक्किणति, तत्थ
छक्कायाण वधो, तन्न वट्टति, अहवा लोहकारादि १ वणकम्मं जो वणं किणति, पच्छा रुक्खे छिंदिऊण जीवति तेण मुल्लेणं, एवं
पं(खं)डिगादीवि पडिसिद्धा भवंति २ सागडिगत्तेणं जीवति तत्थ एवं वहादी दोसा ३ भाडगकम्मं एस णं भंडीवक्खरेण भाडएणं
वहति परायं, अन्नाणं वा भाडएणं सगडबल[illegible]एवमादि ४ फोडितो उक्खणणं, हलेणवि भूमी फोडिज्जति ५ दंतवाणिज्जे पुलिं-
दाणं मोल्लं देति पुव्वं चेव दन्ते देहित्ति,पच्छा ते मारेंति अचिरात्ति सो वाणियतो एहितित्ति, एवं मग्गे रण्णे संखाणं जीवति,एवं ॥२९६॥
चमरादीणं,ण वट्टति,पुव्वाणीतं किणंतिवि ६लक्खावाणिज्जेवि एस चेव गमगो,तत्थ किर किमिगा होंति,किमिया किं(णं)रुधिरस्स वा

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्या-ख्यान-चूर्णिः

अनर्थदण्ड-विरतिः

७विसवाणिज्जं तेण बहुगाणं विराहणा८रसवाणिज्जं कल्लागत्तणं, तत्थ सुरादीहिं बहु दोसा मारणअक्कोसणं एवमादी९ केसवाणिज्जं दासादी घेत्तुं विकिणाति१० जन्तपीलणकंमं तेल्लियजंतं उच्छुआदीणं चक्कादी, ण वट्टति ११ णिल्लंछणं वद्धितकरणं १२ वणदवं देति, तत्थ रक्खट्ठा, उत्तरापहे दड्ढे पच्छा तरुणगत्तणं उट्ठेतित्ति वा,तत्थ सयसहस्साण वधो १३ सरसोसेत्ति तलागादी पच्छा वा-
||२९७|| विज्जति १४ असतीतो पोसेंता भाडिं लएंति १५। एवमादी ण वट्टति। तथा--सव्वेसिं साधूणं णमामि जेणाहियंति णातूण। तिविहेण कामभोगा चत्ता एवं विचिंतेज्जा॥ १॥

सूत्र

अनर्थाय आत्मानं येन दंडयति सो अणत्थादंडो, सो य सव्वत्थ जोएतव्वो, जो निरत्थएणं दंडिज्जति कम्मबंधे ण तं वट्टति, सो चउव्विहो–अवज्झाणं, जहा तस्स कोंकणगस्स, वाये वायंते चिंतति-किह वल्लराणि डज्झेज्जा ?, पमादायरितं कसाएहिं णत्थि काति वुद्धी अप्पणो परस्स वा, तेण अणत्थाए ण वट्टति, एवं इत्थिकहादिविभासा, इंदियनिमित्तं च विभासा एवमादिप्पमादा, हिंसप्पदाणं आयुधं अग्गी विसमफलमादीणि, ण वट्टति सत्तघायगाणि दातुं, पावकम्मं ण वट्टति उवदिसिउं जहा (किस) छित्ताणि एवं जहा कसिज्जंति गोणा एवं दमिज्जंति तहा 'अलं पासायथंभाण' इत्यादि, एसो उ अणुवउत्ताणं भवति, तम्हा सव्वत्थ उवउत्तेणं भवितव्वं। सव्ववएसु जहासंभवं योज्जोयमिति दोसगुणविभासा कायव्वा, जतो-अट्ठेण तं ण बंधति जमणट्ठेणेति थोवबहुभावा। अट्ठे कालादीया णियामगा ण तु अणट्ठाए॥ १॥ तम्हा जदियव्वं, कज्जं अहिगिच्च ||२९७||

सूत्र

गिही कामं कम्मं सुभासुभं कुणति। परिहरियव्वं पावं णिरत्थमियरं च सत्तीए॥ १॥ खेत्ताइं कसह गोणे दमह एमादि सावगजणस्स। उवदिसिउं णो कप्पति जाणियजिणवयणसारस्स॥ २॥ तस्स पंचइयारा कंदप्पेति-

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥२९८॥

अनर्थदण्डविरतिः

अट्टहासे वा ण वट्टति, जदि णाम हसियव्वं तो इसित्ति विहसितं कीरति१ कुक्कुतियं ण तारिसाणि भासति जहा लोगस्स हासमुप्पज्जति, एवं गतीए ठाणेणं वा एवमादि विभासा २ मोहरिओ मुहेण अरियणो जहा कुमारामच्चेणं, रन्नो तुरियं किंपि कज्जं जायं को सिग्घओ होज्जत्ति ?, कुमारामच्चा भणंति-अमुगो चारुभडो, पत्थविओ, कुमारामच्चस्स पदोसमावन्नो, एएण एयं कयंति, तेण रुट्ठेण कुमारामच्चो मारिओ। अहवा एगो राया, देवी से अतिप्पिया कालगया, सो य मुद्धो, सो तीए वियोगदुक्खितो ण सरीरट्ठितिं करेति, एवं जहा णमोक्कारे अमच्चकहाणगे, तेण धुत्तेण वायालेण मुहेण अरी आणितो, एवमादि ३ संजुत्ताधिगरणागं सगडाणि जुत्ताणि चेव सह उवगरणेहिं अच्छंति पच्छा अहिगरणं सत्ताणं, पुव्वं चेव कए कज्जे विसंजोइज्जंति, पच्छा न दुरुस्संति, अग्गीवि जाहे गिहत्थेहिं उद्दीवंति ताहे उद्दीवउ, गावीओ धणे ण पसरावेइ पढमं, हलेण वा ण वाहेइ पढमं, एवं वावीहलपरसुमादि विभासा एवमाई५ एसा विही, उवभोगातिरित्तयं नाम जदि तेल्लामलए बहुगे गेण्हइ तो बहुगा ण्हाणया वच्चंति तस्स लोलियाए, अण्णेवि अण्हावयगा ण्हायंति पच्छा पूयरगआउवहो, एवं पुप्फतंबोलमाइविभासा। एवं वट्टति विधी सावगस्स उवभोगे-ण्हाणे घरे ण्हाइतव्वं, नत्थि तेल्लामलए घंसेत्ता सव्वे झाडेऊण ताहे तलागादीणं तडे निविट्ठो अंजलीए ण्हाति, एवं जेसु य पुप्फेसु कुंथुमादीणि ताणि परिहरति, एवमादि विभासा, चिन्तेयव्वं च नमो असत्थगा (ग्गिसत्था) ई जेहिं पावाति। साहूहिं वज्जिताइं णिरत्थगाइं च सव्वाइं ॥ १ ॥ एते तिन्नि गुणवया।

इयाणिं सिक्खावताणि, शिक्षा नाम यथा शैक्षकः पुनः पुनर्विद्यामभ्यसति एवामिमाणि चत्तारि सिक्खावयाणि पुणो पुणो ॥२९८॥ अब्भसिज्जंति, अणुव्वयगुणव्वयाणि एक्कसि गहियाणि चेव, एताणि सिक्खावयाणि सामातियं देसावगासियं पोसहोववासो अहा-

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥२९९॥

सूत्र

संविभागो, तत्थ सामातियं नाम सावज्जजोगपरिवज्जणं णिरवज्जजोगपरिसेवणं च, तं सावएण कहं कायव्वं ?, सो दुविहो- इड्डिपत्तो अणड्डिपत्तो य, जो सो अणिड्डिपत्तो सो चेइयघरे वा साधुसमीवे वा घरे वा पोसहसालाए वा जत्थ वा वीसमति अच्छति वा णिव्वावारो सव्वत्थ करेति सव्वं, चउसु ठाणेसु णियमा कायव्वं, तंजहा-चेतियघरे साहुमूले पोसहसालाए वा घरे वा आवासं करेंतोत्ति, तत्थ जदि साहुसगासे करेति तत्थ का विही?, जदि पारंपरभयं णत्थि जइवि य केणइ समं विवादो णत्थि जदि कस्सति ण धरेति मा तेण अंछवियंछियं कड्डिज्जति, जदि धारणगं दट्ठूण ण गिण्हति मा पडिभज्जिहि, जति य वावारं ण वावारेति ताहे घरे चेव सामातियं काऊण उवाहणातो मोत्तूणं सचित्तदव्वविरहितो वच्चति, पंचसमिओ तिगुत्तो इरियाए उवउत्तो जहा साहू भासाए सावज्जं परिहरंतो एसणाए कट्ठं लेट्टुं वा पडिलेहित्तु पमज्जित्तु एवं आदाणणिक्खेवणे खेलसिंघाणे ण विगिंचति, विगिंचिन्तो वा पडिलेहिय पमज्जिय थंडिले, जत्थ चिट्ठति तत्थ गुत्तिणिरोधं करेति,एताए विहीए गंता तिविहेण णमिऊण साधुणो पच्छा साधुसक्खियं सामातियं करेति- करेमि भंते ! सामाइयं० दुविहं तिविहेणं जाव साहू पज्जुवासामित्ति काऊणं, जइ चेतियाइं अत्थि तो पढमं वंदति, साहूणं सगासातो रयहरणं निसेज्जं वा मग्गति, अह घरे तो से ओग्गहितं रयहरणं अत्थि; तस्स असति पोत्तस्स अंतेणं, पच्छा इरियावहियाए पडिक्कमइ, पच्छा आलोइत्ता वंदइ आयरियादी जहारायणियाए, पुणोवि गुरुं वंदित्ता पडिलेहेत्ता णिविट्ठो पुच्छइ पढइ वा, एवं चेइएसुवि, असइ साहूचेइयाणं पोसहसालाए सगिहे वा, एवं सामाइयं वा आवस्सयं वा करेइ, तत्थ नवरि गमणं नत्थि, भणइ-जाव णियमं समाणेमि । जो इड्डिपत्तो सो किर एंतो सव्विड्ढीए एइ तो जणस्स अत्था होति, आढिता य साहुणो सप्पुरिसपरिग्गहेणं, जति सो कयसामातितो एति ताए आसहत्थिमादि

शिक्षाव्रतेषु सामायिकं ॥२९९॥

प्रत सूत्रांक [सू.] दीप अनुक्रम [६३-९२]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत्याख्यान-चूर्णिः ||३००|| शिक्षाव्रतेषु सामायिकं

जणेण य अहिगरणं पवट्टति ताहे ण करेति, कयसामातिएण य पाएहिं आगंतव्वं तेण ण करेति, आगतो साहुसमीवे करेति, जदि सो सावतो ण कोति उट्ठेति, अह अहाभद्दउत्ति पूया कया होहित्ति भणति ताहे पुव्वरातियं आसणं कीरति, आयरिया उट्ठिता अच्छंति, तत्थ उट्ठंतमणुट्ठंते दोसा भासियव्वा, पच्छा सो इड्ढिपत्तो सामातियं काऊण पडिकंतो वंदित्ता पुच्छति, सो य किर सामातियं करेंतो मउडं ण अवणेति, कुंडलाणि णाममुद्दं पुप्फतंबोलपावारगमादि वोसिरति, अण्णे भणंति-मउडंपि अवणेइ, एसा विधी सामातियस्स। णणु जदि सो पंचसमितो तिगुत्तो जहा साहू तहा वण्णितो तो किं तिविहं तिविहेण ण कीरति इत्तिरियं सामातियं ?, उच्यते, ण करेति, कीस?, तस्स पंचसमियत्तणंपित्तिरियं ण आवकहियं, साहुस्स पुण आवकहितं,तस्स य पुव्वपवत्ता आरंभा गिहे पवट्टंति, तो सो ण वोसिरति सातिज्जति य, हिरण्णसुवण्णादिसु ममत्तं अत्थि चेव तेण तिविहं तिविहेण ण पठति। इमं च गाथासुत्तं पडुच्च साहुस्स य तस्स य विसमं--सिक्खा दुविहा (१९*) गाहा, सिक्खा दुविहा--आसेवणासिक्खा य१ गहणसिक्खा य२,साहू आसेवणं सिक्खं दसविहचक्कवालसामायारिं सव्वं सव्वकालं अणुपालेइ, सावतो देसं इत्तिरियं अणुपालेति, गहणसिक्खं साहू जहण्णेणं अट्ठपवयणमायातो सुत्तओवि अत्थतोवि उक्कोसेण दुवालसंगाणि, सावगस्स जहण्णेणं तं चेव उक्कोसेणं छज्जीवणिकायं सुत्ततोवि अत्थओऽवि, पिंडेसणज्झयणं ण सुत्ततो, अत्थतो पुण उल्लावेण सुणदि १, अपिच गाथासूत्रप्रमाणात् वैषम्यमेव सामातियंमि तु कए (२०*) गाथा, श्रावकः सामाइके कते समणो इव, यदेतद्वचनं श्रवण इव श्रावको भवति, एसा हि एकदेसोपमा, यथा चंद्रमुखी स्त्री इत्युक्ते यत् परिमांडल्यं चंद्रमसः सौम्यता कांतिश्च तदेकदेशो गृह्यते, न तु सर्वात्मना चंद्रतुल्यं मुखं यस्याः सेयं चंद्रमुखी, एवं साधुगुणानां एकदेशेन श्रावकस्योपमा क्रियतेऽनेनेति, यतः एकदेशः साधुगुणानां श्रावकस्य ||३००||

प्रत सूत्रांक [सू.] दीप अनुक्रम [६३-९२]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥३०१॥

भवति, तेन पुनः सामायिके क्रियमाणे श्रावकस्य बहवो गुणा भवंतीति दर्शितमिति, एतेण गाहासुत्तोवदेसेणवि तिविहं तिविहेणं ण करेइ२ उववायंपि पडुच्च विसमं,जहण्णेणं सोधम्मे उक्कोसेणं सावगस्स अच्चुते,साहुस्स जहण्णेणं सोहम्मे उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धी३ ठिती सावगस्स जहण्णेणं पलिओवमे उक्कोसेण बावीसई सागराणि, साहुस्स जहण्णेण पलितपुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरा ४ गतिंपि पडुच्च साधू पंचमंपि गतिं गच्छंति सावया चत्तारि, अण्णे भणंति-सावगस्स गतीतो चत्तारि, साधुस्स दोन्नि, अविरतस्स एगा देवगती ५ कसाएसु साहुस्स बारसाविधे कसाए खविते (११३) ६ बंधंति साधुणो सत्तविहं वा अट्ठविहं वा छव्विहं वा एगविहं वा अबद्धंतो वा, उवासतो सत्त वा ७ वेदन्ति साहवो सत्त वा अट्ठ वा चत्तारि वा सावतो अट्ठ वेदेति ८ पडिवत्तीए साहू नियमा रातीभोयणवेरमणछट्ठाणि पंच महव्वयाणि, सावओ एगं वा २-३-४-५-अहवा साधू सामातियं एक्कसिं पडिवन्नो, सावतो पुणो पुणो पडिवज्जति ९ साहुस्स एगंमि वते भग्गे सव्वाणि भज्जंति, सावगस्स एगं चेव भज्जति १०। किं चान्यत्-इदं च कारणं, जेण सावतो तिविधं तिविधेण ण करेति सामातियं, सव्वंति भाणिऊण० ॥ (२१*) ण सो सव्वतो विरतो तिविहेण करणजोएण तेण सो तिविहं तिविहेणं सामातियं न करेतित्ति, एवं सामातियं कातव्वं। एत्थ जयणा-धम्मज्झाणोवगतो उवसंतप्पा सुसाहुभूतो य। सव्विंदिय संवुडओ तह संजमतो य साहूणं॥१॥ इरिएसणभासासु य निक्खेवंमि य तहा वि-उवसग्गे। तंकालमप्पमत्तो जह साहुजणो तहा होज्जा ॥ २ ॥ तस्स पंच अतियारा मणदुप्पणिहाणं, पणिधी नाम निरोधो मणसः, तं मणं ण सुट्ठु निरोधेति, चिंतोति पोसाहिते-इमं च सुकयं धारे इमं दुकडयंति, वायादुप्पणिहाणं ण सुट्ठु वायं सावज्जेण रुंभति इमं वा करेह इमं वा ममत्ति सावज्जं उवदिसति, कायदुप्पणिहाणं ण पडिलेहेति ण पमज्जति ण वा ठाणणि-

सामायिकं ॥३०१॥

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः

देशावकाशिकं

सीयणादिसु, उल्लंघणमाति वा करेज्जा, ण वट्टति सामातियस्स, सतिअकरणया नाम अन्नं करेति, अहवा ण जाणति-किं सामा-
तियं कयं ण कयं वत्ति ?, एवं विभासा, सामातियस्स अणवट्ठियस्स करणया णाम सामातियं काऊणं पुणो तक्खणं चेव पारेंतो
चेव वच्चति, ण वट्टति एवं, जदि चिरं अच्छति तो करेति, अहवा सव्वं वावारं काऊणं जाधे खणितो ताहे करेति तो से ण
॥३०२॥ भज्जति, एवं विभासा। धन्ना जीवेसु दयं करेंति धन्ना सुदिट्ठपरमत्था। जावज्जीवं व दयं करेंति एवं च चिंतेज्जा
॥ १ ॥ कतिया णु अहं दिक्खं जावज्जीवं जहट्ठिओ समणो। णिस्संगो विहरिस्सं एवं च मणेण चिंतेज्जा ॥२॥

सूत्र

देसावगासियं नाम देशे अवकाशं ददातीति, पूर्वं दिक्खु तं बहूणि जोयणाणि आसि, इदाणिं दिवसे दिवसे ओसारेति,
जत्तियं जाहिहिति, रत्तिं तंपि उवारेति दिसं उवक्कमाति, एत्थ दिट्ठीविससप्पदिट्ठंतो, पुव्वं तस्स बारस जोयणाणि दिट्ठीए
विसतो आसि, पच्छा तेण विज्जावातिएणं ओसारितो जोयणे ठवितो, एवं सावओ दिसिव्वए बहुयं अवरज्झियातितो पच्छा
देसावगासिएणं तंपि ओसारेति, अहवा विसादिट्ठंतो, अगदेणं एगाए अंगुलीए ठवियं विभासा। एवं सावओऽवि आवकहिया-
तो दिसिव्वयातो दिणे दिणे ओसारेति जाव अज्ज घरातो ण णीमि गामणगरउज्जाणातो, अह जातितुकामो होति सो भणति–
अज्ज पुरत्थिमेणं जोयणं दो तिन्नि जत्तिए वा जोयणे गंतुकामो, अण्णतरएणं दिवसेण तस्स आकारं करेति, किंचिमित्तविराह-
ओत्ति सेसाणं अविराहो, अण्णे भणंति- एवं वएसु जे पमाणा ठविता ते पुणो दिवसे ओसारेति, एवं-एगमुहुत्तं दिवसं रातिं ॥३०२॥
पंचाहमेव पक्खं वा। वतमिह धारेउ दढं जावतियं उच्छहे कालं ॥ १ ॥ पुढविदगअगणिमारुयवणस्सती तह
तसेसु पाणेसु। आरंभमेगसो सव्वसो य सत्तीए वज्जेज्जा ॥ २ ॥ ण भणेज्ज रागदोसेहिं दूसितं णावि गिह-

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥३०३॥

देशावकाशिकं

त्थसंबंधं । 'भासेज्ज धम्मसहियं भोणं च करेज्ज सत्तीए ॥ ३ ॥ ण य गिण्हिज्ज अदिन्नं किंचिवि असमिक्खियं च दिन्नंपि । भोयणमहवा वित्तं तु एगसो सव्वसो वावि ॥ ४ ॥ होज्ज य परिमाणकडो सएवि दारंमि बंभयारी य। दढधितिमं पंडियतो दुगुंछतो कामभोगाणं ॥ ५ ॥ संलेसुवि अत्थेसु तु तक्कालं तेसु णातितिण्हातो। पच्छाए एगदेसं अहवा सव्वंपि जो इत्थं ॥ ६ ॥ णाऊण जाव भोगे भोगे य अणुव्वयं तहिं कुज्जा । सत्तीए एगसो सव्वसो य गिहिसुव्वतो मातिमं ॥ ७ ॥ दंडं समत्थविबुधो चएज्ज तो दिट्ठमित्तारं कालं । देसं उद्दिसितं तो पच्छारंभं परिहरेज्जा ॥ ८ ॥ देसावकासियं खलु णायव्वं अप्पकालियं एतो । एक्कमवि वयं कुज्जा पडिमं च तहा ससत्तीए ॥ ९ ॥ एयस्स पंच अयियारा- सतंपि अवच्चंतो जदिमं कारेति तो विराहेति देसावगासियं, आणावेति अन्नं संतितं पत्थितं जथा असुगातो ठाणातो असुगं आणेज्जा । संदेसं दिसति सयणं वा मज्झ अज्ज देसावगासियं जाव असुगं खेत्तं गामं वा तत्थ परिभाएति असुगो एतत्ति, एवमादि विभासा । अण्णे भणंति--अमणुण्णपयोगे अमणुण्णा सद्दादी जाया तो सदेसस्स चेव मज्झे अच्चत्थं वच्चति जत्थ तेसिं संपातो ण भवति, चिंतइ वा-काहे पोसहो पूरिहिति तो अन्नत्थ वच्चीहामो इत्यादि, पेसवणं संतिपत्थियं भणति-एयं तत्थ नेह, खेत्तं वा गामं वा, सद्दाणुवातो गंधव्वं वट्टति, सो तत्थ ठितो ण सुणेति, ताहे तत्थ अत्तणा गंतूणं णिसामेति, अतियरति, अहवा तत्थ ठितो जत्थ सो आगच्छेति, रूवाणुवातो तत्थ संतो णट्टं लोमंथियं वा पेच्छति देसावगासियस्संतो, एवं आसहत्थिरायादि जथा वा सो पेच्छति, तया गंडमंडाणि छिंदति ताहे सो एति, बहिया पोग्गलक्खेवो णाम खेत्ते परोहडे वा तोतिण्णं पहाणेणं कट्ठेणं वा वावारेति,तत्थ ण वच्चति, मा किर देसावगासियं भज्जिहित्ति, एवं ण कायव्वं।

॥३०३॥

प्रत सूत्रांक [सू.] दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यानचूर्णिः ॥२०४॥ सूत्र — पोषधोपवासः

एवं देसावगासिते कए परेण पाणादिवायमुसावायअदत्तादाणमेहुणपरिग्गहा य ते पच्चक्खाया भवंति । एत्थ भावणा-**सव्वे य सव्वसंगेहिं वज्जिता साहुणो णमंसेज्जा । सव्वेहिं जेहिं सव्वं सावज्जं सव्वओ चत्तं ॥ १ ॥**

पोसहोपवासो पोसह उववासः, पोसहो चउव्विहो-सरीरे पोसहो२ देसे अमुगं ण्हाणादि न करेति, सव्वे ण्हाणमद्दणवन्नगविलेवणपुप्फगंधाणं तथा आभरणाण य परिच्चातो, अव्वावारपोसहो णाम देसे य सव्वे य, देसे अमुगं वा वावारं ण करेमि, सव्वे ववहारसेवाहलसगडघरपरिकम्ममातितो ण करेति, बंभचेरं २ देसे दिवा रत्तिं वा एक्कसिं दो वा, सव्वे अहोरत्तं बंभयारी, आहारे २ देसे अमुगा विगती आयंबिलं वा एक्कसिं वा, सव्वे चउव्विहो आहारो अहोरत्तं, जो देसे पोसहं करेइ सो सामातियं करेति वा ण वा, जो सव्वपोसहं करेति सो नियमा करेति, जदि ण करेति वंचिज्जति । तं कहिं?, चेतियघरे साधूमूले घरे वा पोसहसालाए वा, तोम्मुक्कमणिसुवण्णो पढंतो पोत्थगं वा वायंतो धम्मज्झाणं झियायति, जथा एते साहुगुणा अहं मंदभग्गो असमत्थोत्ति विभासा, **तं सत्तितो करेज्जा तवो उ जो वन्निओ समणधम्मे । देसावगासिएण व जुत्तो सामातिएणं वा ॥ १ ॥ सव्वेसु कालपव्वेसु पसत्थे जिणमए तहा जोगो । अट्ठमि पन्नरसीसु य णियमेण हवेज्ज पोसहितो ॥२॥** तस्सवि अतियारा दुप्पडिलेहियं चक्खुना सेज्जं दूरुहति करेति वा, दुप्पमज्जितं करेति सेज्जं पोसहसालं वा, आदत्ते निक्खिवति वा, सुद्धे वा वत्थं, भूमीए कातियभूमीए, कातियभूमीओ वा आगतो पुणरवि ण पडिलेहति, एवं अप्पडिलेहणाए बहुतरा दोसा, एते ॥२०४॥ चेव उच्चारपासवणेवि विभासियव्वा, **पोसहस्स सम्मं अणणुपालणया** शरीरं उव्वदेहति दाढीयातो वा केसा वा रोमरातिं वा सिंगाराभिप्पाएणं संठवेति, बाहे वा सिंचति, अव्वावारे वावारेति, कयमकयं वा विचिंतति, बंभचेरे इहलोतिया पारलोइए वा

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत
सूत्रांक
[सू.]

दीप
अनुक्रम
[६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः

यथा-संविभागः

भोगे पत्थेति संबाधेति वा, अहवा सद्दफरिसरसरूवगंधे वा अभिलसति, बंभचेरेण पोसहो कया पुज्जिहिति चइयामो बंभचेरेणंति, आहारे एगं सव्वं वा पत्थेति, बीयदिवसपारणगस्स वा आढत्तियं करेति इमं वा तिमं वत्ति, ण वट्टति । उग्गं तप्पंति तवं जं ते तेसिं णमो सुसाहूणं । णिस्संगा य सरीरेवि सावओ चिंतए मतिमं ॥ १ ॥

॥२०५॥ सूत्र अहासंविभागो णाम जदि अहाकम्मं देति ते साधूणं महव्वए भंजंति, हेट्ठिल्लेहिं संजमट्ठाणेहिं उत्तारेति, तेण आहाकंमेणं सो अहासंविभागो न भवति, जो अहापवत्ताणं अण्णपाणवत्थओसहभेसज्जपीढफलगसेज्जासंथारगादीण संविभागो सो अहासंविभागो भवति, फासुएसणिज्जसंविभागोत्ति भणियं होति, तेण पोसहं पारेंतेणं साहूणं अदातुं ण वट्टति पारेतुं, पुव्विं साहूणं दातुं पच्छा पारितव्वं, काए विहीए दायव्वं ?, जाहे देसकालो ताहे अप्पणो सव्वसरीरस्स विभूसं अविभूसं वा काऊणं साहुपडिस्सयं गतो णिमंतेति-भिक्खं गेण्हहात्ति, साहूणं का पडिवत्ती ?, ताहे अन्नो पडलं अन्नो भायणं पडिलेहेति, मा अंतरातियदोसा ठवियदोसा य भविस्सन्ति, सो जदि पढमाए पोरुसीए निमंतेति अत्थि य नमोक्कारसित्ता ताहे घेप्पति, जदि णत्थि ताहे ण घेप्पति, तं धरियव्वं होहित्ति, सो घणं लग्गेज्जा ताहे घेप्पति संचिक्खाविज्जति, जो वा उग्घाडपोरिसीए पारेति पारणगइत्तो अन्नो वा तस्स विसज्जिज्जति, तेण सावएण सह गम्मति, संघाडतो वच्चति, एगो ण वट्टति, साहू पुरतो सावगो पच्छा, सो घरं जाऊण आसणेणं निमंतेति, जदि णिविट्ठो लट्ठं, जदि ण णिविट्ठो विणतो पउत्तो, ताहे भत्तपाणं सयं देति अहवा भाजणं धरेति, अहवा ठितो अच्छति जाव दिन्नं, सावसेसं च गेण्हियव्वं पच्छेकम्मादिपरिहरणट्ठा, दाऊणं वंदित्ता विसज्जेति, अणुगच्छति, पच्छा सयं भुंजति, जं च किर साहूणं ण दिण्णं तं सावएणं ण भोत्तव्वं, जहिं पुण साहू णत्थि तेण देसकालवेलाए ॥२०५॥

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥३०६॥

यथा-संविभागः

दिसालोगो कायव्वो विसुद्धेणं भावेणं, जदि साहुणो होन्ता तो णित्थारिओ होन्तो, एसा विही। णाणीसु बंभयारीसु भत्तीए गिही अणुग्गहं कुज्जा। पाविउकामो पवरं इह परलोगे य दाणफलं॥ १॥ तं च पंचतियारविसुद्धं दायव्वं, भत्तं पाणं वा कंदादीणं (भायणे निक्खिवति) चाद्रा (?) एवं पिहितुंपि ण वट्टति, तं साहू ण गिण्हंति, कालातिक्कमो पए हिंडतित्ति ण उस्सारेयव्वं, उस्सारेति वा ण उस्सक्कावेयव्वं, जा वेला सच्चेव, अहवा जाहे ते हिंडिउं णियत्ता ताहे निमंतेति, ताहे किं तेण ?, उक्तं च—अणागतं तु गोविंदा, वर्तमानं तु पांडवाः। अतिक्रान्तं धार्तराष्ट्रास्तेन ते प्रलयं गताः॥ १॥ काले दिन्नस्स पहेणयस्स अग्घो न तीरए कातुं। तस्सेवाकालपणामियस्स गेण्हंतया नत्थि॥ २॥ परववदेसो नाम विज्जमाणेवि अन्नं ववदिसति अमुगस्स अत्थित्ति मग्गितो समणं, अहवा परेण दवावेति, अवज्जाए परं वा उद्दिस्सावेति-अमुगस्स पुन्नं होउ मयस्स जीवंतस्स वा, मच्छरियता नाम मग्गिते रूसति, संतं वा मग्गितो न देति, अमुएण वा दिन्नं अहं किं ता ऊणतरो?, अहंपि देमि, तम्हा साहूणं उवरि पसन्नचित्तेण दायव्वं। वरसाधुगुणसमिद्धं साधुजणं साधुवच्छलं पूए। तस्स उ भत्तीए होति धम्मो (एसो) जिणपसत्थो॥ १॥ ते जं करेंति धीरा सुसाहुणो साधुवच्छलं धम्मं। तेसिं भत्तीए गिहीवि होति धम्मेण संजुत्तो॥ २॥ कालंमि वट्टमाणे अतीयकाले अणागते चेव। अणुजाणदि जीवदयं समणे भावेण वंदंतो॥ ३॥ तो सक्कारेयव्वा धुवेण वरधम्मचारिणो णियतं। कायव्वा जीवदया होति निस्सेसकामेण॥ ४॥ धन्नो अणुग्गहीतो संपत्ती जं मए इमा पत्ता। चित्तं पत्तं मतिसुद्धता य एवंति कल्लाणं॥ ५॥ ॥३०६॥

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्या-ख्यान चूर्णिः

॥३०७॥

सूत्र

एमेवेसो दुवालसविहो गिहत्थधम्मो । एत्थ पंच अणुव्वया तिण्णि गुणव्वया, एएसिं दोण्हवि थिरीकरणानि चत्तारि सिक्खावयाणि इत्तिरियाणि, सेसाणि अट्ठवि आवकहियाणि णायव्वाणि । एयस्स मूलं सम्मत्तं, उक्तं च—द्वारं मूलं प्रतिष्ठानं, आधारो भाजनं निधिः । द्विषट्कस्यास्य धर्मस्य, सम्यग्दर्शनमिष्यते ॥ १ ॥ तं दुविहं—निसग्गेण वा अभिगमेण वा, णिसग्गो जहा सावगपुत्तनत्तुयाणं, अभिगमेणं जं सोऊणं पढिऊण य जायति, तस्स अतियारा पुव्वभणिया । एस दुवालसविहो, एक्कारस पडिमाओ अभिग्गहा य अणेगे, एवं मए दायव्वं, भावणातो अणिच्चयातीतो, पच्छा किर पव्वतियव्वं, सो सावगधम्मे उज्जमितो भवति ॥

उपसंहारः संलेखना

ताहे भत्तपच्चक्खाणं संथारसमणेण भवियव्वं, अपच्छिमा मारणंतिया संलेहणाज्झूसणाराहणा, अपच्छिमग्गहणं मंगलार्थं, मरणांते—तज्जीवितपर्यंते भवा मारणांतिकी, संहेलणा दुविहा—दव्वे भावे य, दव्वे फलगादि मंसं सोणियं वा, भावे कोधादि, 'जुषी प्रीतिसेवनयोः' आराहणा अतियारविसुद्धया । तस्स पंच अतियारा-इहलोतियं रिद्धिं पत्थेति रायसिद्धिमादीणं, पारलोइया देवो होमित्ति पत्थेति, जीविताासंसप्पओगो जीवितुं देवादीहिं पूजितो इच्छति, अणिट्ठेहिं फासातीहिं पुट्ठो मरिउमिच्छति, कामभोगासंसा जहा बंभदत्तेण कयं ॥ एसो सावगधम्मो, अह इयाणिं सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणं,आह-किं सावगधम्मो मज्झे कतो?, एसो सावगाणं, जं तं सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणं एत्थ किंचि सावगाणं सामन्नंति । तत्थ-पच्चक्खाणं उत्तरगुणेसु० ॥ १६६० ॥ ॥३०७॥
उत्तरगुणपच्चक्खाणं जं तं खमणादीयं अणेगविहं, आदिग्गहणेणं अभिग्गहणजोगा अणेगविहा, तं पुण इमं दसविहं, तंजहा-अणागयमतिक्कंतं० ॥ २०-२३ ॥ १६६१ ॥ संकेतं० ॥ २०-२४ ॥१६६२॥ तत्थ अणागयं पच्चक्खाणं, जहा अणागयं तवं

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत्या-
ख्यान
चूर्णिः
॥३०८॥

उत्तरगुण-
प्रत्याख्यानं

करेज्जा, पज्जोसमणागहणं एत्थ विकट्ठं कीरति, सव्वजहण्णो अट्ठमं, जहा पज्जोसमणाए तथा चाउम्मासिए छट्ठं पक्खिते अभ-
त्तट्ठं अण्णेसु य ण्हाणाणुजाणातितेसु, तहिं अंतराइयं होज्जा, गुरु-आयरिया एसिं भत्तपाणादिवेयावच्चं कायव्वं, किं?, ते
उवासं ण करेंति, असहू वा होज्जा, जहा सिरितो, अहवा अन्ना आणत्तिया होज्जा कायव्विता गामंतरादिसु सेहस्स आणेयव्वं,
सरीरवेतावडिगा वा, ताहे सो उववासं च करेति गुरुवेयावच्चं च ण सक्केति, जो अण्णो दोण्हवि समत्थो सो करेउ, जो वा
अण्णो असमत्थो उववासस्स सो करेउ, णत्थि न वा लभेज्जा ण याणेज्जा वा विधिं ताहे सो चेव पुव्वं उववासं काऊण पच्छा
तद्दिवसं भुंजेज्जा, तवस्सी णाम खमतो तस्स कायव्वं होज्जा, किं तदा ण करेति?, सो तीरं पत्तो पज्जोसवणा य उस्सरिया,
असहुत्ति वा सयं पारावितो ताहे सयं हिंडेउं असमत्थो, जाणि अब्भासे तत्थ वच्चंतु, णत्थि ण वा लब्भाति सेसं जहा गुरुम्मि
विभासा, गेलन्नं-जाणति जथा तहिं दिवसे असहू होहामि, वेज्जेण वा भणियं-अमुगं दिवसं कीराहित्ति, अहवा सतं चेव जाणति
सगंडरोगातिएहिं तेहिं दिवसेहिं असहू भविस्सामि, सेसविभासा, जहा गुरुम्मि करणं कुलगणसंघादि आयरियगच्छे वा तहेव
विभासा। पच्छा सो अणागए काले करेतूणं पच्छा जेमेज्जा पज्जोसवणादीहिं तहेव सा अणागते काले भवति। अतिक्कन्तं
णाम पज्जोसवणाए तवं तेहिं कारणेहिं ण कीरति गुरुतवस्सिगिलाणकारणेहिं सो अतिक्कंते करेति, तहेव विभासा। कोडिसहितं
णाम जत्थ कोणो कोणो य मिलति, गोसे आवासे पकए अभत्तट्ठो गहितो, अहोरत्तं अच्छिऊणं पच्छा पुणरवि अभत्तट्ठं करेति,
बीयट्ठवणा पढमस्स य निट्ठवणा, एए दोण्णि कोणा एगत्थ मिलिता, एवं अट्ठममादि दुहओ कोडीसहियं, जो चरिमदिवसो
तस्सवि एगा कोडी, एवं आयंबिलं णिव्विए य, एगासणएगठाणाणवि, अहवा इमो अण्णो विही-अभत्तट्ठो कतो, आयंबिलेण पारियं, ॥३०८॥

*** अथ प्रत्याखान-विषये दृष्टान्ता:

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥३०९॥

दश प्रत्याख्यानानि

पुणरवि अभत्तट्ठो कीरति आयंबिलेणं पारेइ, एत्थ संजोगा कायव्वा णिव्वित्तीकादिसु सव्वेसु सरिसेसु विसरिसेसु य। णियंटियं नाम नियामितं, जहा एत्थ कायव्वं, अहवा छिन्नं पुव्वं, एत्थ अवस्स कायव्वंति मासे अमुको अमुको दिवसे चतुत्थादि अट्ठमभाति एवतिओ छट्ठेण वा हट्ठो तात्र करेतिच्चिय जदावि गिलाणो होति तयावि करेति च्चेव, णवरं ऊसासो धरउ। एयं पच्चक्खाणं णियंटियं धीरपुरिसपन्नत्तं। जं गिण्हंतिऽणगारा पढमसंघयणी अणीस्साणा ॥ १ ॥ इह परत्थ य। अहवा न ममं असमत्थस्स अण्णो काहिइत्ति सरीर एव अपडिबद्धा, एयं पुण चोद्दसपुव्वीसु पढमसंघयणेण य जिणकप्पेण य समं वोच्छिन्नं, थेरावि तदा करन्ति। सह आगारेहिं सागारं, ते आगारा उवरिं भण्णिहिंति, तं पुण अभत्तट्ठो पच्चक्खातो, ताहे आयरिएहिं भण्णति-अमुगं गामं जातियव्वं, तेण निवेदेतव्वं- मम अज्ज अभत्तट्ठो. जादि य समत्थो करेउ जातु य, ण तरति तो अन्नो वच्चउ, णत्थि असमत्थो ण वा तस्स कज्जस्स समत्थो ताहे से गुरू विसज्जेंति, एवं किर तस्स तं जेमंतस्सवि अणभिलासस्स अभत्तट्ठियस्स णिज्जरा जा सच्चेव पत्ता भवति गुरुणिओएणं, एवं उपूरलंभेवि विणस्सति अच्छत्तविभासा, जदि थोवं ताहे जे णमोक्कारपोरुसिया तेसिं विरज्जिज्जति, जे वा असहू विभासा, एवं गिलाणकज्जेसु अण्णतरेसु वा कारणेसु कुलगणसंघकज्जादिविभासा, एवं जो भत्तपरिच्चायं करेति सागारकडमेतं। अणागारं णाम निम्मज्जायं, जथा एत्थ आगारा न कायव्वा, एवं परिणिट्ठियंतस्स जहा नत्थि एत्थ किंचिवित्ति महत्तरगादि आकारा ण करेति, अणाभोगसहसकारे करेज्जा, किं निमित्तं ?, कट्ठं वा मुहे पक्खिवेज्जा अणाभोगेण सहसा वा तेण से आगारा कज्जंति। तं कहं होज्जा ?, कंतारे जहा सिणवल्लीमाइएसु वत्ती न लब्भति, पडिणीएण वा पाडिसिद्धं होज्जा, दुभिक्खं वा वट्टति हिंडंतस्सवि न लब्भति, अहवा णं जाणति-अहं ण जीवामित्ति, ताहे ॥३०९॥

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥३१०॥

णिरागारं पच्चक्खाति । परिमाणकडं नाम दत्ती, अज्ज मम एक्का वा २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, किं च दत्तीए पमाणं ?, छप्पकंपि जदि एक्कासिं छुब्भाति एक्का दत्ती, डोविलयंपि जदि वारे पप्फोडेति तावयियातो दत्तीतो, एवं कवलेणं एक्केण दोहिं जाव बत्तीसा, दोहिं ऊणगा कवलेहिं परेहिं एगमादिएहिं २, ३, ४, ५, ६, ७, भिक्खातो एगादियातो, दव्वं अमुगं ओदणो खज्जगविही वा जहा अज्ज आयंबिलं कायव्वं अमुगं वा कूसणं सीहकेसरगा वा एवमादिविभासा, एवं परिमाणकडं । जो असणस्स सत्तविहस्सवि वोसिरति, पाणगाण पुण विविहाणं खंडपाणगादीणं, खातिमं णेगविहं फलमादि, सातिमं णेगविहं मधुमादि, तं सव्वं वोसिरति । एयं निरवसेसं पच्चक्खाणं । साकेयं णाम केयमिति गृहव्याख्या, गृहवासिनां प्रत्याख्यानमित्युक्तं भवति, द्वितीयोऽर्थः- केयं णाम चिण्हं पच्चक्खाणे जाव एयं ताव ण जेमिमित्ति । तत्थ गाथा अंगुट्ठ । २०-३७ ॥ १६७४ ॥ सावतो पोरिसिं पच्चक्खाइत्ता खेत्तं गतो, घरे वा ठियस्स ण ताव सिज्झति, ताहे किर न वट्टति ता अपच्चक्खाणिस्स अच्छिउं ताहे अंगुट्ठगमुट्ठं करेति जाव ण मुयामि ताव न जेमिमित्ति जाव वा मुट्ठिं मुयामि जाव वा गंठिं न मुयामि एवं जाव घरं ण पविसामि जाव सेदो ण णस्सति जाव एवतियातो उस्सासा जाव एवतियातो नीसासा थिभागो पाणे मंचियाए वा जाव देवता जलंति ताव न भुंजामित्ति, ण केवलं भत्ते, अण्णेसुवि अभिग्गहविसेसेसु । अण्णे भणंति-सव्वंपि संकेतपच्चक्खाणं साहुणावि कायव्वंति,पुण्णे काले किं अपच्चक्खाणिणा अच्छियव्वंति ? ॥

अद्धा नाम कालः, कालो यस्स परिमाणं तं कालेण अवरद्धंति कालपच्चक्खाणं, णमोक्कारपोरिसि०॥ २०-३८ ॥१६९३॥ णमोक्कारपोरिसि पुरिमड्ढं पच्छिमड्ढादि अद्धमास मासा,चसद्देण दो दिवसा तिन्नि दिवसा मासे वा जाव छम्मासोत्ति पच्चक्खाति । ॥३१०॥

दश प्रत्याख्यानानि

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥३११॥

अद्धाप्रत्याख्यानानि

एवं अद्धापच्चक्खाणं, भणियं दसविहं पच्चक्खाणं। एत्थ सीसो आह-जहा साहू पाणातिवायं ण करेति ण कारवेति करंतंपि अण्णं ण समणुजाणति एवं किं अभत्तट्ठे पच्चक्खाए सयं ण भुंजति अण्णेणवि ण भुंजावेति ?, उच्यते, एयं सयं चेव पालनीयं, दाणंपि साहूणं दवावेज्जा वा उवदिसेज्ज वा दाणं, सयं ण भुंजति, अण्णेसिं आणत्ता देति, संतं विरियं न निगूहेतव्वं, अण्णे- ण आणावेति जहा अमुगस्स आणेहित्ति, उवदेसो-तेणं पाणगस्स गएणं संखडी दिट्ठा, सण्णं वा गएणं सुया व होज्जा, ततो भणति व-अमुगस्स संखडित्ति उवदिशति, परिजिते गंतुंपि दवावेज्जा वा, उवधि सेज्जा वा, जहा जहा साहूणं समाही अप्पणो य तहा तहा जइयव्वं ॥

एयस्स दसविहस्स पच्चक्खाणस्स वा सत्तावीसतिविहस्स वा तं०पंच महव्वया दुवालसविहो सावगधम्मो दसविधं उत्तरगुणपच्च- क्खाणं, एते सत्तावीसं,एयस्स छव्विहा विसोही-सद्दहणा जाणणा विणय०अणुभास०अणुपाल०भावविसोही हवति छट्ठा,तत्थ सद्दहणा- सोही सव्वण्णूहिं देसियं जं सत्तावीसाए अन्नतरं जहिं जिणकप्पो वा अहवा चाउज्जामो वा जहा दिवसतो वा रत्तीए वा सुभिक्खे वा दुब्भिक्खे वा पुव्वण्हे वा अवरण्हे वा चरिमकाले वा तं जो अवितहमेयं(ति सद्दहति तं)सद्दहणासुद्धं १। जाणणासुद्धं णाम जाणाति जिण- कप्पियाणं एवं चाउज्जामियाणं वा एवं सावगाण मूलगुणाण उत्तरगुणाण य तं जाणणासुद्धं २। विणयसुद्धं णाम जो कितिकम्मस्स जे गुणा ते अहीणमतिरित्ता पउंजित्ता ओणयकातो दोहिवि हत्थेहिं रयहरणं गहाय पंजलिउडो उवट्ठाति पच्चक्खावेतित्ति एयं विणयविसुद्धं ३। अणुभासणासुद्धं णाम जं गुरू उच्चारेति तं इमोवि सणियागं उच्चारेति अक्खरेहिं पएहिं वंजणाणि अणुच्चारो पंजलिकडो अभिमुहो तं जाणऽणुभासणासुद्धं, आयरिया भणंति-वोसिरति, सो भणति वोसिरामि ४। अणुपालणासुद्धं णाम ॥३११॥

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः

॥३१२॥

विशुद्धिषट्कं

बायालीसं दोसा पडिसिद्धा णिच्चं ते जो आवतीएवि ण य पडिसेवति तं अणुपालणासुद्धं, का पुण आवति ?, कंतारे दुब्भिक्खे आतंके वा जो ण भंजति तं अणुपालणासुद्धं । आह-णणु जं पालितं तदेव अभग्गमेव, यदेव णो भग्गं तदेव पालेति, उच्यते,पालितग्रहणे कृते यद्भग्नग्रहणं क्रियते तत् ज्ञाप्यते अववादतो यतनया प्रतिसेवा तत्पालितमेव भवति, जम्हा अपायच्छित्ती भवतित्ति५। भावविसुद्धं णाम रागेणं एसो लोए पूएज्जइत्ति एवं अहंपि करेमि तो पुज्जीहामित्ति रागेणं करेति, दोसेणं तह करेमि जहा लोगो मम संमुहो होति,एयं दोसेणं दूसियं परिणामेणं, जो इहलोगट्ठयाए कित्तिजसहेउं अण्णपाणवत्थलेणसयणहेउं वा ण करेति एयं भावसुद्धं ६। एते गुणा, पडिवक्खतो असुद्धं,असद्दहणाए असुद्धं अजाणणाए अविणएणं अणणुभासणाए अणणुपालणाए भावतो असुद्धं, अहवा इमेहिं कारणेहिं भावतो असुद्धं थंभा माणिज्जिहीहामि एसो माणिज्जति अहंपि करेमि, कोहेणं अभत्तट्ठं करेति- अंबाडितो णेच्छति जेमेउं,अणाभोगेणात्ति किंचि पच्चक्खायंति तहवि समुद्दिसति जिमिएणं संभरियं भत्तपच्चक्खाणंति, अणापुच्छा जेमेति ण आयरिए आपुच्छति,अहवा अणापुच्छा सयमेव पच्चक्खाया, अहवा वारिज्जीहामि जथा तुमे अब्भत्तट्ठो पच्चक्खातोत्ति, अहवा जेमेति तो भणीहामि विस्सरितंति, असंतती णाम णत्थि एत्थ किंचिवि ता वरं पच्चक्खातंति पच्चक्खाति, परिणामो पुव्वभणितो इहलोगादी, अहवा एसेव परिणामो थंभादी,विद्नाम परिन्नावान्, सो य जाणतो करणजुत्तो य, सो पमाणं, एवमादि जाणिऊण वा विधिकरणपवत्तो एत्थ पमाणं भणियं होति, असुद्धो वादोत्ति अहंपि करेमि मा णिच्छुभीहामित्ति एएण अवाएणं पच्चक्खावेति, ण वट्टति,तम्हा जाणतो एते दोसे परिहरति तेण सो पमाणं। णामणिप्फन्नो गतो। सुत्तालावगनिप्फन्नो सुत्ताणुगमो य सुत्तफासियनिज्जुत्ती य एगंतओ णिज्जंति, तत्थ सुत्ताणुगमे संधिया य० सिलागो । संधिता सुत्तं

॥३१२॥

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यानचूर्णिः ॥३१३॥

सूत्र

णमोक्कारं पच्चक्खाति सूरे उग्गए चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सातिमं। एमेव पदच्छेदो, “असभोजने” एवं लोगे, उत्तरे उ आसुं खुधां शमयतीत्यशनं, पा पाने लोगे, उत्तरे उ प्राणानामुपग्रहं करेति तेन पानमिति भवति, खाद भक्षणे खाज्जत इति खातिमं लोके, उत्तरे खमित्याकाशं तच्च मुखाकाशं तस्मिन्मायत इति खातिमं, ‘स्वद आस्वादने’ लोके, उत्तरे गुणान् सावयति सातिमं, तस्य द्रव्यस्य परमाण्वादयो गुणानास्वादयमानाः सादयंती विनाशंयतीत्यर्थः संयमगुणान् वा स्वादी स्वादिमं, एगपदत्वान्नास्ति विग्रहः, आक्षेपयती-आसु खुधं समेतित्ति असणं; तेण पाणंपि असणं क्षीरघयादि, फलाणि खातिमानि खुहं समेंति, साइमंपि महुगुडादी खुधं समेंति, एवं चउसुवि विभासा, असणंपि पाणाणुग्गहकरं, एवं सव्वंपि खादिमादि, सव्वेसिपि गुणा सातिज्जंति, आचार्य आह--बाढं, सव्वोऽविय आहारो असणं० ॥ २०-५६ ॥ १६८६ ॥ किंतु असणं पाणं खातिमं सातिमं एवं परूविए सुहं सद्दहिउं आयरियपच्चक्खावेंतयाणं सुहं दाउं पच्चक्खाणं तेसिं आयरियस्स, जदि पुण असणंति करेज्जा तो जया असणंति पच्चक्खाइज्जति तो पाणयं अपरिचत्तयं, अपरिचत्तेंतस्स ण वट्टति पाणगं काउं, रसविगइओवि अपरिचयंतस्स न वट्टइ आहारेउं, अहवा जदि सव्वं असणंति करेज्जा तो पाणगं अपरिच्चयंतो तिविहमाहारं ण परिच्चइहितित्ति दसविगतीतो वा ण परिच्चइहितित्ति एवं विभासा, जम्हा एए दोसा तम्हा चउव्विहो असणादिविभागो कओ। इमं असणन्ति व्यवहर्तव्यं इमं पाणकमिति इत्यादि। तत्थ सीसो भन्निहिति-अण्णत्थ णिभित्ती (वाडि) ए० ॥ १६८९ ॥ सीसो अज्झप्पहेउं उवट्ठितो- मए पोरिसी पच्चक्खायव्वत्ति, तो कहमवि सहसा भणियं-पुरिमड्डुं पच्चक्खाइ, ताहे पच्चक्खायव्वं, तत्थ कयरं पमाणं किं ताव वंजणाणि पमाणं अह संकप्पियं?, भण्णति-संकप्पियं, जं अणुवउत्तस्स वंजणुच्चारणं णेय आयरियस्स

प्रत्याख्यानानि ॥३१३॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]

दीप
अनुक्रम
[६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥२१४॥

शुद्धिकारणानि प्रत्याख्यानगुणाः

तं पमाणं, ते अन्नस्स तणगा आगारा छलणा सा अणुवउत्तस्स, एवं अन्नेसुवि पच्चक्खाणेसु णायव्वं । तं पच्चक्खाणं कयमवि इमेहिं कारणेहिं सुद्धं भवति, तं०—

फासियं० ॥ १६९० ॥ तत्थ फासियं च, फासियं नाम जदि सो कालो अभग्गपरिणामेण अन्तं णीयो भवति, फासियं नाम जं अंतरा न खंडेति असुद्धपरिणामो वा अन्तं नेति १ पालियं पुणो पुणो पडिजागरमाणेणं जहा तेणं महुरावाणियतेणं निसट्ठपुत्तोक्खेवतो संमं अणुपालितो पच्छा निरंतरेणं पीती जाया उवसंहारो, बितिएणं ण पालितो, एवं जो पुणो २ पडिजागरति तेण तं पालियं २ सोभितं नाम जो भत्तपाणं आणेत्ता पुव्वं दाऊणं सेसं भुजति दायव्वपरिणामेण वा, जदि पुण एक्कतो भुंजति ताहे ण सोहियं भवति ३ पारियं च तीरियं च, पारियं नाम जदि पुण्णमेत्तए पच्चक्खाणे जेमेति, ताहे पारं नीतं णो तीरियं, तीरियं पुण जं पुण्णेऽवि मुहुत्तमेत्तं अच्छाति असणं निरुंभति ४ किट्टियं जदि जेमणवेलाए उक्कित्तेति, जहा मए अमुगं पच्चक्खायन्ति, तुण्हिक्कएणं भुंजंतेणं ण कट्टियं भवति, एवं सव्वेहिं आराहियं अणुपालियं भवति ५ अनुपालियं नाम अनुस्मृत्यानुस्मृत्य तीर्थकरवचनं प्रत्याख्यानं पालियव्वं ६ ॥

पच्चक्खाणेण के गुणा ?, (१६९१) आसवदाराणि पिहियाणि, छिन्नाणि ठतियाणित्ति भणितं होति, जीवस्स कम्मबंधत्ताए परिणममाणाण पोग्गलाण आगमो आसवो तस्स दाराणि आसवदाराणित्ति, आसवदारेहिं पिहितेहिं जा अज्झवसायतण्हा सा वोच्छिण्णा भवति, तण्हाए वोच्छिण्णाए प्रशमो भवति, आतुलभावे णत्थित्ति भणियं होति, एवं यदासौ प्रशान्तो भवति तदा तस्स पसमवसेणं अतुलं सुहं भवति, तेण ण दिट्ठीमोहो धुत्तो भवति, तेण पच्चक्खाणं सुद्धं भवति, चशब्दाच्च सुद्धे ॥२१४॥

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥३१५॥

आकार व्याख्या

पच्चक्खाणे अतुला चारित्तधम्मपत्ती, अतुलचरित्तधम्मपत्तीए अतुला कम्मनिज्जरा, अतुला० ए वड्डमाणस्स अपुव्वकरणादी, ततो कम्मक्खतो, ततो केवलणाणुप्पत्ति, ततो कमेण य सेसकम्मक्खतो, ततो संसारविप्पमोक्खो, ततो सिद्धत्तं, सिद्धस्स य अतुलं सोक्खं अव्वाबाहं भवतीति, एवं पच्चक्खाणे मोक्खोऽधिकाणितो गुणोत्ति, तच्च पच्चक्खाणं दसविधं णमोकार पोरिसी पुरिमड्डेकासणेगट्ठाणे य। ० ॥ १६९४ ॥

एएसिं आगारा दो छच्च सत्त० ॥ १६९५ ॥ तत्थ णमोकारस्स दुवे आगारा, तत्थ अच्छंतु ताव आगारा, णमोकारपच्चक्खाणं चेव ताव ण जाणामो, णमोकारं काऊणं जेमेउं वट्टति तम्हा जेमणवेलाए भाणियव्वं—नमो अरहंताणं मत्थएण वंदामो खमासमणा ! णमोकारं पारेमित्ति। तं पुण एवं पच्चक्खाणं—

नमोक्कारं पच्चक्खाति सूरे उग्गते चउव्विहमाहारं असणं ४ अन्नत्थणाभोगेणं सहसाकारेणं वोसिरति।

अणाभोगो णाम एकान्तविस्मृतिः, विस्सरिएणं णमोकारं अकाऊणं मूहे छूढं होज्जा, संभरिते समाणे मुहेतणगं खेलमल्लए जं हत्थे तं पत्ते पच्छा भुंजे, णमोकारं काऊणं जेमेति ता न भग्गं, सहसाकारे णाम सहसा मुहे पक्खित्तं, छड्डति, जाणंतेवि तहेव विगिंचित्ता णमोकारं काऊणं भुंजति पच्छा, एवंपि किर जीवो आहाराभिमुहो णियत्तिओ भवति, तेण तण्हाच्छेदणे णिज्जरा १ ॥ ॥३१५॥
पोरिसीआगारा, पोरुसिं ताव न जाणामो, पुरुषनिष्पन्ना पोरुषी, जदा किर चउब्भागो दिवसस्स गतो भवति तदा सरीरप्पमाणच्छाया भवति, तीसे छ आगारा।

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान-चूर्णिः

॥३१६॥

आकार-व्याख्या

सूत्र

पोरुसिं पच्चक्खाति चउव्विहंपि आहारं असणं ४ अन्नत्थणाभोगणं सहसाकारेणं पच्छन्नेणं कालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरति ।

अणाभोगसहसकारा तहेव, पच्छण्णातो दिसातो मेहेहिं रएहिं रेणुणा पव्वएण वा पुण्णेत्ति कए पजिमितो होज्जा, जाहे णायं ताहे ठाति, जं मुहे तं खेल्लमल्लए, जं लंबणे तं पत्ते, पुणो संदिसावेति मिच्छादुक्कडन्ति करेति, जेमेति, अह एवं न करेति तहेव जेमेति तो भग्गं । दिसामूढो ण जाणहिति हेमंते जहा पोरिसी, जाणति अवरण्हे वट्टइत्ति, साहुवयणेणं अन्ने साहू भणंति उग्घाडा पोरुसी, सो जेमेत्ता मिणाति अद्धजिमिते वा अण्णे मिणंति तेण से कहियं जहा ण पूरितित्ति, तहेव ठातितव्वं । सम्माधी णाम तेण य पोरुसी पच्चक्खाया, आसुकारियं दुक्खं उप्पन्नं तस्स अन्नस्स वा, तेण किंचि कायव्वं तस्स, ताहे परो विज्जे(हवे)ज्जा तस्स वा पसमणणिमित्तं पाराविज्जति-ओसहं वा दिज्जति,एत्थंतरा णाए तहेव विवेगो२॥ पुरिमड्ढो णाम पुरिमं दिवसस्स अद्धं तस्स सत्त आगारा,ते चेव छ,महत्तरागारो सत्तमतो, सो जथा पुव्वं भणिओ३॥

सूत्र

एगासणगं नाम पुता भूमीतो ण चालिज्जंति, सेसाणि हत्थे पायाणि चालेज्जावि,तस्स अट्ठ आगारा-अणाभोगेणं सहसक्कारेणं सागारिएणं आउंटणपसारणेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरयागारेणं सव्वसमाधि० । अणाभोगसहसकारे तहेव, सागारियं अद्धसमुद्दिट्ठस्स आगतं जदि बोलेति पडिच्छति, अह थिरं ताहे सज्झायवाघातोत्ति उट्ठेत्ता अन्नत्थ गंतूणं समुद्दिसति,हत्थं वा पायं वा सीसं वा आउंटेज्जा वा पसारेज्ज वा ण भज्जति, अब्भुट्ठाणारिहो आयरितो वा आगतो अब्भुट्ठेयव्वं तस्स, एवं समुद्दिट्ठयस्स पारिट्ठावणिया जदि होज्जा करेति, महत्तरसमाहीतो तहेव ४॥ एकट्ठाणे जं जथा अंगुवंगं ठवियं तहेव समुद्दिसितव्वं, आगारे से ॥३१६॥

★ मू.(८५) एगासणं० मू.(८६) एगट्ठाणं० मू.(८७) आयंबिलं० मू.(८८) सूरे उग्गए अभत्तट्ठं०

मू.(८९) दिवसचरिमं पच्चक्खाइं चउव्विहंपि असणं पाणं खाईमं साइमं०

मू.(९०) भवचरिमं पच्चक्खाइं० मू.(९१) अभिग्गहं पच्चक्खाइं० मू,(९२) निव्विगइयं पच्चक्खाइं०

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥३१७॥

आउंटणपसारणं णत्थि,सेसा सत्त तहेव ५॥ इयाणिं आयंबिलं, ताव न जाणामो किं आयंबिलं किं अणायंबिलं च भवति?,आयं-
बिलमिति तस्स गोण्णं नाम, अह समयकतं आयामेणं आंबिलेण य आहारो कीरति तम्हा आयंबिलंति गोण्णं नाम, तं तिविहं-
ओदणं कुम्मासा सत्तुगा, तत्थ आयंबिलं आयंबिलपायोग्गं च, तत्थ तोदणो आयंबिलं च आयंबिलपाउग्गं च, आयंबिलं
सत्त कूरा, जाणि वा कूरविकरणाणि, पायोग्गं तंदुलकणियातो कुंडतो पिट्ठं बहुगा भरोलगा उंडेरगा मंडगा कलमादी, कुम्मासा
जहा पुव्वं पाणितो आकड्ढिज्जंति पच्छा उक्खलीते चुण्णिज्जंति ताहे णत्रविहा कया सण्हा मज्झिमा थुल्ला, एते आयंबिलं, आयं-
बिलपायोग्गा पुण जे तस्स तुसमीसा कणियातो कंकडुगा य एवमादी, सत्तुया जवाण वा गोधूमाण वा वीहीण वा एए आयंबिलं,
पायोग्गं पुण गोहूमे भुंजिता बाहुगा लाया जवभुंजिया जे य जंतएणं ण तीरति पीडिउं रोहो, तस्स चेव कणिकाणाभी वा,एयाणि
आयंबिलपओग्गाणि, तं तिविहंपि आयंबिलं उक्कोसं मज्झिमं जहण्णं, दव्वतो कलमसालिकूरो उक्कोसो, जं वा जस्स पत्थं, उव्वए
वा रालको वा सामको वा जहण्णो, सेसा मज्झिमा । जो सो कलिमसालिकूरो सो रसं पडुच्च तिविहो-उक्कोसे मज्झिमो जहण्णो,
तं चेव तिविहंपि आयंबिलं णिज्जरागुणं पडुच्च तिविहं, उक्कोसो णिज्जरागुणो मज्झो जहण्णोत्ति, कहं ?, कलमसालिकूरो दव्व-
ओ उक्कोसं चेव फरिसेण समुद्दिसति, रसतोवि उक्कोसं. तस्सच्चएण आयामेणवि उक्कोसं रसतो, जहण्णं थोवा णिज्जरात्ति भणियं
होति, सो चेव कलमोदणो जदा अण्णेहिं दव्वतो उक्कोसो रसतो मज्झिमगुणतो मज्झिमं चेव, जेण दव्वतो उक्कोसो, इयाणिं जो
मज्झिमा तोदणाते दव्वतो मज्झिमा अंबिलेण रसओ उक्कोसा गुणतो मज्झं, ते चेव आयामेणं दव्वतो जहण्णं रसओ मज्झं गुणओ
मज्झं उण्होदएण दव्वजहण्णं रसजहण्णं गुणुक्कोसं, बहुनिज्जरंति भणियं होति, अहवा उक्कोसए तिन्नि विभागा-उक्कोसुक्कोसं उक्को-

आकार व्याख्या ॥३१७॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]

दीप
अनुक्रम
[६३-९२]

प्रत्याख्यान-चूर्णिः

आकार-व्याख्या

॥३१८॥ समज्झिमं उक्कोसजहन्नं, कंजियाआयामउण्होदयादिहिं जहण्णा मज्झा उक्कोसा णिज्जराવि, एवं मज्झिमउक्कोसं ३, जहन्नमुक्कोसं ३, एवं तिसुवि भासियव्वं । छलणा णाम एगेण आयंबिलं पच्चक्खायं, हिंडंतेण सुकोदणो णेण गहितो, अण्णेण णवखीरेण णिमंतितो, घेत्तूण आगतो आलोतिय पजिमितो, गुरूहिं भणियं-तुज्झ अज्ज आयंबिलं पच्चक्खायं, सो भणति-सच्चगं, तो किं जेमेसि ?, भणति-जेण मे पच्चक्खायं, जहा पाणातिवाए पच्चक्खाते ण मारिज्जति एवं आयंबिले पच्चक्खाते ण तं कीरति, एसा छलणा णाम णायव्वा । पंच कुडंगा लोगो वेदा समतो अन्नाणं गिलाणं, कुंडगात्ति एगेण आयंबिलस्स पच्चक्खायं, हिंडंतेण संखडी संभोतिया, सो पडिग्गहं भरितो आगतो. अण्णतो आलोतितो भणितो-तुज्झ आयंबिलं पच्चक्खायं, सच्चयं खमासमणो !, एयं आयंबिलं लोगसत्थाणि परिमिलियाणि अम्हेहिं, तत्थ ताव ण दिट्ठं आयंबिलं च, तहा चउसुवि संगोवंगेसु वेदेसु समयाचारपरिव्वायसक्कादीण, ण कहिंवि दिट्ठं, तुब्भं कतो आगतोत्ति, अण्णाणेण भणति-ण याणामि खमासमणो ! केरिसं तं आयंबिलं ?, अहं जाणामि कुसणाहिवि जिम्मिविंति, तेण मए गहितं, मिच्छामि दुक्कडं, पुणो पेच्छामि, गिलाणकुडंगो भणति-मम अकारयं आयंबिलं सूलो वा उट्ठेति अन्नं वा किंचि उद्दिसति ताहे ण तीरति करेतुं । तस्स अट्ठ आगारा—

अणाभोग०सहसक्कार०लेवालेवेणं उक्खित्तविवेगेणं गिहत्थसंसट्ठेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरति ॥

अणाभोगसहसकारा तहेव, लेवालेवे जदि भायणेणं पुव्वं लेवाडं गहियं जा समुद्दिट्ठं संलिहियं, जाति तेणं आणेति ण भज्जति, उक्खित्तविवेगो जं आयंबिले पडाति विगतिमादि तं उक्खिवित्ता परिट्ठाविज्जति य, णवरि गलिओ अण्णं वा आयं- ॥३१८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्या-ख्यान-चूर्णिः ॥३१९॥

आकार व्याख्या

बिलअप्पाउगं जदि उद्धारितुं तीरति, उद्धरिएणं ण हम्मति । गिहत्थसंसट्ठे णाम जदि गिहत्थडोयलियभायणं वा लेवालेवाडं कुसणादीहिं तेण जदि ईसित्ति लेवादीहिं देति ण भज्जति , जदि बहुरसो आलिखिज्जति बहुतो ताहे ण कप्पति, परिट्ठावणिय-महत्तरगसमाहीतो तहेव ६ ॥ इयाणिं अभत्तट्ठो । तस्स पंच आगारा- अणाभोग सहसक्कारा पारिट्ठावणिया महयर समाहित्ति, जति तिविहस्स पच्चक्खाति विगिंचणियं कप्पति,जदि चउव्विहस्स पाणगं च नत्थि न वट्टति,जदि पुण पाणगंपि उद्धरियं ताहे से कप्पति ॥ जदि तिविहस्स पच्चक्खाति ताहे से पाणगस्स छ आगारा–लेवाडेण वा अलेवाडेन वा अच्छेण वा बहलेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरति । वुत्तत्था एते पदा छप्पि७॥ चरिमं दुविहं-भवचरिमं दिवसचरिमं च, तत्थ भवचरिमं णाम जावज्जीवं गतं,तस्स चत्तारि आगारा,दिवसचरिमस्स अणाभोगो सहस्सकारो महत्तरागारो सव्वसमाहीती, जावज्जीवकस्सवि एमेव चत्तारि ८। अभिग्गहे अवाउडियस्स पच्चक्खाति, अणाभोगे सहसक्कारो चोलपट्टएणं महत्तरग सामाधित्ति एते पंच, सेसाणं अभिग्गहाणं एते चेव चोलपट्टवज्जं चत्तारि आगारा ९। निव्वितीए णव आगारा, अहवा तत्थ विगति चेव न जाणामो,का य विगतित्ति?,तत्थ नव विगतीतो तं०खीरं दधिं नवनीतं सप्पि तेल्लं महुं मज्जं गुलो पुग्गलत्ति, तत्थ पंच खीरा-णि-गावीणं महिसीण उट्टीणं अजाणं एलियाणं,उट्टीणं दधिं नत्थि नवनीतं घयं च, णवणीतघयवज्जा, चत्तारि खीरा, असत्तिकुसुंभ-सरिसवतेल्लाणि, एयातो विगतीतो लेवाडाति पुण होंति । दो विगडा कट्ठनिप्फण्णं उच्छुमादि पिट्ठनिप्फण्णं,फाणिया दोन्नि-दवगुडो य ॥३१९॥
पिंडगुडो य, मधूणि तिण्णि-मच्छियं कुत्तियं भामरं,पोग्गलाणि जलचरं थलचरं खहचरं अहवा चम्मं मंसं सोणितं । एयातो नव विगतीतो, ओगाहिमं च दसमं ;तं जाहे कवल्ली अद्दहिया ताहे एगं ओगाहिमगं चलंतं पच्चाति,सप्फेणं तेणेव घाएणं बितियं ततियंति,सेसाणि अ ओग-

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥३२०॥

पारिष्ठापनिकी

वाहिणिवीताणं कप्पंति यदि णज्जंति,अह एगं चेव जाहे तवगं सव्वं पूरेति ततो बितियं च कप्पति,लेवाडाणि य।। विगतीए दुविहा आगारा अट्ठ नव य,दवेसु अट्ठ अणाभोगो सहस्सक्कारो लेवालेवो गिहत्थसंसट्ठेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिट्ठावणियाए महत्तरगा-समाहिआकारेहिं वोसिरति। पडुच्चमक्खियं णाम जदि अंगुलीहिं गहाय मक्खेति तेल्लेण वा घएण वा थोवएणं ताहे निव्वीत-कस्स कप्पति, धाराए स वीगई भवति, सेसाणि पुव्वभणियाणी, ताणि ओगाहिमगगुलाणं, जं वा अघग्घरितं णवणीयं घयं वा तेसिं नव आगारा, उक्खित्तविवेगेणं गतो, तत्थ जं गिहत्थसंसट्ठं तस्स केरिसयं?, तस्सेमा विधी- खीरेण जदि कुसाणियतो कूरे लब्भति तस्स जदि कुंडगस्स ओदणातो चत्तारि अंगुलाइं पुव्वं ताहे निव्वितगयस्स कप्पति,पंचमं चारद्धं विगती य,एवं दहिस्सवि, एवं विगडस्सवि, केसुवि देसेसु विगडेणं मीसिज्जति ओदणो ओगाहिमओ वा,फाणियगुलस्स णवणीयस्स अद्दामलगमेत्तं संसट्ठं, जदि बहुगाणिवि एयप्पमाणाणि तो कप्पति,एक्कंपि वड्डं न कप्पति। इदाणिं पारिट्ठावणियाआगारो तेसु तेसु ठाणेसु भणितो तो सो कस्स दायव्वो ण वा दायव्वो केरिसं वा पारिट्ठावणियं दायव्वं ण दायव्वंति?, ते सव्वेवि दुविहा आयंबिलगो य अणायं-बिलगो य,आयंबिलिओ आयंबिलितो चेव,अणायंबिलितो निव्वीयं एगासणगं एगट्ठाणगं चउत्थं छट्ठं अट्ठमं, दसमादियाणं ण वट्टति दातुं, तस्स पेज्जे उण्हं वा देति,अविय सो सदेवयतो होति। एक्को आयंबिलिओ एगो चउत्थभत्तितो कस्स दायव्वं?,चउत्थभत्तियस्स दायव्वं, दोवि ते आयंबिलिगा अभत्तट्ठिगा वा, एगो वुड्ढो एगो बालो, बालस्स दायव्वं, दोवि बाला दोवि वुड्ढा एगो सहू एगो असहू, असहुस्स य दायव्वं, दोवि असहा एगो हिंडतो एगो अहिंडगो, अहिंडयस्स दायव्वं, दोवि हिंडया दोवि वा अहिं-डया, एगो पाहुणगो एगो वत्थव्वतो,पाहुणगस्स दायव्वं। एवं आयंबिलिओत्ति, छट्ठभत्तितो आयंबिलितो य अट्ठमभत्तितो आयं- ॥३२०॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]

दीप
अनुक्रम
[६३-९२]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:- 2

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥३२१॥

पारिष्ठापनिकी

बिलितो य एगट्ठाणागइतो य आयंबिलितो य निव्वीतो य आयंबिलियो य, एवं चउत्थभत्तिएणवि भंगा, एवं छट्ठभत्तिएणवि
भंगा, एवं एगट्ठाणगतित्तेणवि एवं एगासणगत्तेणवि एवं णिव्वीएणवि णायव्वा, एवं आयंबिला भासियव्वा जथाविधि, अण्णे
भणंति-एक्कासणगादिसु जेसु पारिट्ठावणियाकारो भण्णति सो केसिंचि दायव्वो,केरिसं वा पारिट्ठावणिवं दायव्वं तदर्थमिदमुच्यते-
आयंबिलणायंबिल० ॥ १७०६ ॥ एक्को आयंबिलितो एको य अणायंबिलिओ एतेसिं कस्स दायव्वं पारिट्ठावणियं ?,
आयंबिलियस्स दायव्वं, दोवि आयंबिलिया होज्जा, तेसिं एको बालो एगो बूढो कस्स दायव्वं ?, बालस्स दायव्वं, दोवि बाला
एगो सहू एगो असहू, असहूस्स दायव्वं, दोवि असहू एगो हिंडतो एगो अहिंडतो, अहिंडयस्स दायव्वं, दोवि हिंडया एगो
दोवि वा अहिंडया, एगो पाहुणओ एगो वत्थव्वओ, पाहुणगस्स दायव्वं । एसा एगा आवलिया । अहवा दोवि बूढा होज्जा,
एत्थवि सधुयादीहिं जाव पाहुणतो, एवं चउत्थभत्तीएणवि बालादी णेयव्वा, सव्वत्थवि असहूमादी णेयव्वं । तहेव छट्ठभत्ती-
एवि । अट्ठमभत्तियस्स पारिट्ठावणिया ण दिज्जति, किं कारणं ?, तस्स तं सीओणादि यच्छंतस्स पढमं पेज्जाति उण्हयं दिज्जति,
तं पुण वियट्ठं, केति आयरिया अट्ठमा पभणंति केति दसमादि,जेसिं अट्ठमं अवियट्ठं तेसिं अट्ठमेण य णायव्वं, एवं एकासणतोवि,
एगठाणेवि, णिव्वियएवि । इयाणिं संजोगो आयंबिलिएणं चउत्थभत्तिएणवि, बालादी तहेव जाव पाहुणए, एवं आयंबिलिएण
छट्ठभत्तिएण य, एवं एक्कासण एगठाणणिव्वीया जाव तहेव छट्ठभत्तीएणं णेयव्वं जाव णिव्वीयं, ताहे अट्ठमेण जाव णिव्वीतं । ॥३२१॥
ताहे एक्कासणएणवि एकठाणेणवि । तं पुण पारिट्ठावणियं जदि एवं भवेज्जा तो भुज्जति-विहिगहितं विहिभुत्तसेसं, तत्थ
विधिगहितं भिक्खं हिंडंतेहिं अलुद्धेहिं संजोयणादोसविप्पजढेहिं उग्गमियं, पच्छा मंडलीए पतरकडगच्छेदसीहखादिएण वा

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

प्रत्याख्यान-चूर्णिः ॥३२२॥

पर्यङ्कदाः

समुद्दिट्ठं, एवंविधं गुरूहिं अणुण्णायं संदिसावेतुं आवलियाए कप्पति भोत्तुं, बीयभंगे तहेव विधिगहितं, भुत्तं पुण काकसीयालादिदोसदुट्ठं एरिसं ण कप्पति, तातिए अविहिगहितं वीसुं २ उक्कोसगाणि गहियाणि, एवं से कायव्वंति, अहवा कारणे असंथरणादिसु गहियं, पच्छा मंडली रातिणिएण विधीए भुत्तं,एत्थवि आवलिया ण कप्पति,चउत्थे ण कप्पतित्ति। भावपच्चक्खाणं गतं, पच्चक्खाणंति पदं समत्तं। पच्चक्खाणेण० ॥ १७०९ ॥ तेण पच्चक्खाणेण पच्चक्खातो पच्चक्खावितत्तो पद्भृतिया भवंति, तत्थ पच्चखातओ आयरितो पच्चक्खावितओ सीसो, तत्थ भंगा- जाणतो जाणयस्स पच्चक्खाति सुद्धं पच्चक्खाणं, जाणतो अजाणयस्स जाणावेतुं पच्चक्खाति सुद्धं, अजाणतो जाणयस्स पच्चक्खाति ण सुद्धं, पभुसंदिट्ठादिसु विभासा, अयाणगो अयाणगस्स पच्चक्खाति असुद्धमेव। एत्थ गावीतो सीवीणियवीसमणत्थाणेसु ओलोएन्तो जाणति गोवालो सामी घरे,तातो सुहं रक्खिज्जति, बितियं गोवालो ण याणति कहं रक्खतु?, ततिए सामी पहितणट्ठातोवि जाणति, चउत्थे सामी ण जाणति जा गोवालेवि ण जाणतित्ति उवसंहारो कायव्वो,जाणतो जाणएणं पच्चक्खावित्ति सुद्धं१ जाणतो अजाणएणं पच्चक्खावेति, केणति कारणेण पच्चक्खावेंततो तो सुद्धं, अणिमित्तं ण सुज्झति २ अयाणतो जाणएणं पच्चक्खावेति सुद्धं ३ अयाणन्ते अयाणएणं ण सुद्धंति ४ ॥

पच्चक्खायव्वयं पुण दुविहं-दव्वंमि असणादी भावम्मि अण्णाणादित्ति ॥ इयाणिं परिसा, सा पुव्वं भणिया जहा हेट्ठा सामातियणिज्जुत्तीए सेलघणकुडगचालणि० ॥ १३९ ॥ पुव्वभणिया गाथा, इह पुण सेसो भण्णति, सा परिसा दुविहा-उवट्ठविया अणुवठविया य, उवट्ठिताए कहेयव्वं, इयराए णवि, उवट्ठिता दुविहा- संमोवट्ठिता मिच्छोवट्ठिता य, मिच्छोवट्ठिया जहा ॥३२२॥
गोविंदा, संमोवट्ठियाणं कहेयव्वं, णेतराणं, संमोवट्ठिया दुविहा- विणतोवट्ठिता अविणतोवट्ठिता य, अविणतोवट्ठियाए ण

प्रत सूत्रांक [सू.]

दीप अनुक्रम [६३-९२]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णिः- 2

प्रत्याख्यान-चूर्णिः

॥२२३॥

कथन-विधिः

वट्टति, विणतोवहिता दुविहा- वक्खित्ता य अवक्खित्ता य, वक्खित्ता जा सुणेति सिव्वति वा एवमादिया, अवक्खित्ता ण कंचिवि अन्नं करेति केवलं सुणेति, अवक्खित्ताए कहेयव्वं, जा सा अवक्खित्ता सा दुविहा-उवउत्ता अणुवउत्ता य, अणुवउत्ता जा सुणेति अण्णण्णाणि य चिन्तेति, उवउत्ता जा निचिन्ता सुणति, उवउत्ताए कहेयव्वं, पच्चक्खाणं एरिसियाए परिसाए कहेयव्वं, ण केवलं पच्चक्खाणं, सव्वं आवासयं सव्वं सुयणाणं कहेयव्वं, काए विहीए कहेयव्वं?, पुव्वं भणियं-सुत्तत्थो खलु पढमो०॥२४॥ तत्थ विसेसो जो आणाए गज्झो अत्थो भवति सो आणाए कहेतव्वो,जदि आणाए दिट्ठंतो भवति तो दिट्ठंतेण कहेयव्वो भवति, अण्णहा कहणविधि विणासिया भवति, एत्थ वाणियदारतो उदाहरणं, वाणिएण पुत्तो रयणपरिच्छितं सिक्खावितो,तस्स य बहुया रयणा, भरंतो भणति-एते रयणा, इमस्स माणिक्कस्स एत्तियं मुल्लं, एयस्स य इमंति, तं स सद्दहति, णवि तातो अलिक्कयं भण्णाहिति। एवं उवणतो वीयरागा हि सर्वज्ञा०सिलोगो,यो दृष्टान्तसाध्योऽर्थो तत्थ दिट्ठंतो भाणितव्वो, तत्थ मातंगो उदाहरणं,एगेण हरितेण भोतिए सागारियठाणं पासिऊण भणति-अहो ते सुंदरं, तीए भणियं-जदि मम खन्तीए पासेज्जासि तो ते विम्हतो होन्तो, आवत्तो तो गामं गतो जत्थ से खंती, तेणं सा णिवातिया, सा कप्पट्ठी ?, भणति-अकल्ला, तो जामो, एवं होउत्ति पट्ठियाणी, तेण य ततो पत्तएणं अन्नत्थ मंसं अन्नत्थ सुरा एवमादीणि वाट्ठिताणि, एत्तो ण भवति, एस सउणो वाहरति, भणति-मंसं लेहि, महा गया, लद्धं, एवं पुणो पत्तियावीया, ताहे ताए णायं महानेमित्ती एस, ताहे पुणोवि सउणेण वाहरितं, ताहे कण्णा ठएति, पुच्छति-किं ठएसि?, भणति-सउणो वाहरति जं तं असोतव्वं, णिब्बंधं करेति, भणति- अक्खामि, सउणो भणति- जदि ते पडिसेवामि तो तीए कप्पट्ठीए अत्थि जीवितं, अह णवि तो मरति, पडिस्सुयं, पडिसेविया, एवं उवणयविभासा ॥ इयाणिं फलं, तं दुविहं-इहलोए

॥२२३॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]

दीप
अनुक्रम
[६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः ॥३२४॥

दामन्नक-कथा

धम्मिलोदाहरणं, जहा वसुदेवहिंडिए, आतिसहा आमोसहिमादिया घेप्पंति, परलोए दामण्णगादी, तत्थोदाहरणं-रायपुरे णगरे एगो कुलपुत्तजातितो, तस्स जिणदासो मित्तो, तेण सो साहुसगासं नीतो, तेण मच्छयमंसस्स पच्चक्खाणं गहितं, दुब्भिक्खे मंससमाहारो लोगो जातो, इयरो सालेहिं महिलाए य खिंसिज्जमाणो गतो, उइण्णो दहं, मच्छं दट्ठुं पुणरावत्ती जाया, एवं तिण्णी दिवसे तिण्णी वारा गहिता मुक्का य, अणसणं काउं रायगिहे णगरे मणियारसेट्ठिपुत्तो दामन्नगो नाम जातो, अट्ठवरिसस्स कुलं मारीतो च्छिण्णं, तत्थेव सागरपोतसत्थवाहस्स गिहे चिट्ठई, तत्थ य एगेण भिक्खुणा संघाडइल्लस्स कहियं- एयस्स गिहस्स एस दारगो अहिवति भविस्सति, सुयं सत्थवाहेण, पच्छन्नं चंडालाण अप्पितो, तेहिं दूरं णेतुं अंगुले च्छेतुं भेसिउं णिव्वीसओ कतो, नासन्तो तस्सेव गोसंघिएण गहितो पुत्तोत्ति, जोव्वणत्थो जातो, अण्णया सागरपोतो तत्थेव गतो, तं दट्ठुं उवाएणं परियणं पुच्छति- कस्स एस ?, कहियं-अणाहोत्ति इहागतो, इमो सोत्ति भीतो, लेहं दाउं घरं पावेहित्ति विसज्जितो, गतो रायगिहबाहिरपरिसरे देवउले सुवति, सागरपोतधूया विसा णामं कण्णा, तीए अच्चणियवावडाए दिट्ठो, पितामुद्दमुद्दियं दट्ठुं वाएति, एतस्स दारगस्स असोहियामक्खियपादस्स विसं दायव्वं, अणुस्सारफुसणं, कण्णगदाणं, पुणोवि मुद्देति, नगरं पविट्ठो, विसाणेण विवाहिया, आगतो सागरपोतो, माइघरअच्चणियविसज्जणं, सागरपुत्तमरणं सोउं सागरपोतो हिदपुप्फालेण मतो, रण्णा दामण्णगो घरसामी कतो, भोगसमिद्धी, अन्नया पच्चावरण्हे मंगलिएहिं पुरतो से उग्गीतं-अणुपुंखमावयंतावि अणत्था तस्स बहुगुणा होंति। सुहदुक्खकच्छपुडतो जस्स कयंतो वहति पक्खं ॥१॥ सोउं सयसहस्सं मंगलियाणं देति, एवं तिण्णि वारा तिन्नि सयसहस्साणि, रण्णा सुयं, पुच्छिएणं रन्नो सिट्ठं, तुट्ठेण रन्ना सेट्ठी ठावितो। बोधिलाभो पुणो धम्माणुट्ठाणं देवलोगगमणं, एवमादि परलोए। अणुगमो

॥३२४॥

प्रत
सूत्रांक
[सू.]

दीप
अनुक्रम
[६३-९२]

प्रत्याख्यान चूर्णिः

||३२५||

सम्मत्तो ॥ इयाणिं नया। ते य जहा पुव्वं, तत्थ दुवे नया-अज्झयणणतो य करणणतो य। अज्झयणणतो णायम्मि गिण्हि- दामन्नक
यव्वे० ॥ १७१८ ॥ करणणतो य सव्वेसिंपि नयाणं० ॥१७१९ ॥ इइ पच्चक्खाणज्झयणचुण्णी सम्मत्ता ॥ कथाः
शुभं भवतु कल्याणमस्तु श्रीरस्तु । ग्रं०१९सहस्राः। यादृशं पुस्तके दृष्टं,तादृशं लिखितं मया। यदि शुद्धमशुद्धं वा,मम दोषो न दीयते
॥ १ ॥ यावल्लवणसमुद्रो यावन्नक्षत्रमंडितो मेरुः। यावच्चन्द्रादित्यौ, तावदिदं पुस्तकं जयतु ॥ २ ॥ जलाद्रक्षेत् तैलाद्रक्षेद्रक्षेच्छि-
थलबंधनात् । परहस्ते न दातव्या, एवं वदति पुस्तिका ॥ ३ ॥ सं० १७७४ वर्षे पं० दीपविजयगणिना आवश्यकचूर्णिः
पं० श्रीन्यायसागरगणिभ्यः प्रदत्ता ॥

॥ इइ आवस्सगनिज्जुत्तिचुण्णी सम्मत्ता ॥

||३२५||

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुन: संपादित: (आगमसूत्र ४०)

"आवश्यक-चूर्णि: [भाग-२]" परिसमाप्ता:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

40

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधित: संपादितश्च

“आवश्यक मूलसूत्र” [निर्युक्ति एवं जिनदासगणि-रचिता चूर्णि: (भाग-२)]

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलिता

“आवश्यक” निर्युक्ति एवं चूर्णि: नामेण

परिसमाप्ता:

Remember it's a Net Publications of 'jain_e_library's'